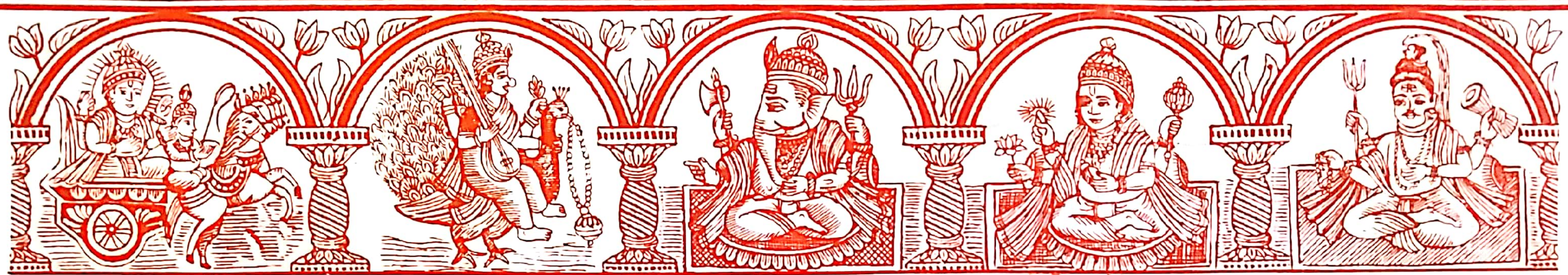
यह पञ्चाङ्ग भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य गणित से बनाया गया है । 2082



श्रीसूर्याय नमः । श्रीसरस्वत्यै नमः । श्रीगणेशाय नमः । श्री विष्णवे नमः । श्रीशंकराय नमः ।



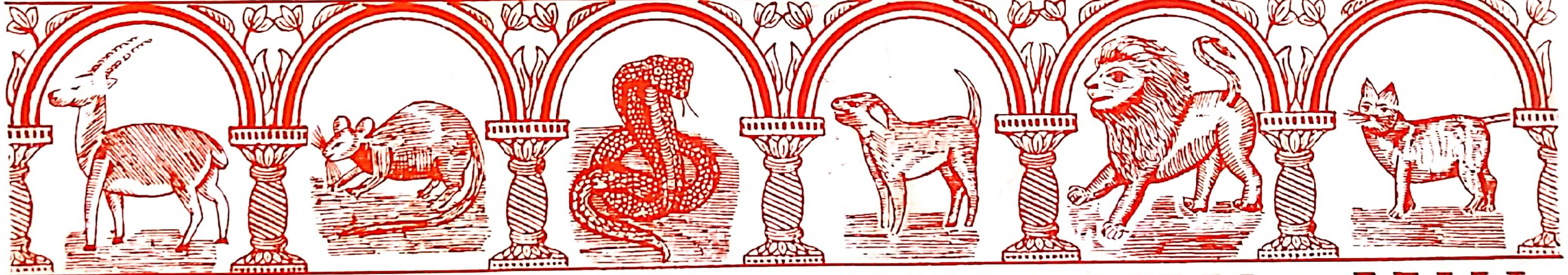
श. ष. स. ह. मेष श्वान वैर

स्वस्तिश्री सवाईजयपुरराज्यांतर्वर्ती १०५ श्रीसीकरनरेशस्य रामगढनगरे श्रीमन्मुकुटमणिच्छत्रपतिराजराजेंद्र–महाराजाधिराज १०८ श्रीसवाईमाधवसिंहजी श्रीमतां विजयराज्ये ज्यौतिषकः श्रीमनुः ।। संवत् २०८२ शके १९४७ ईसवी सन् २०२५ हिजरीसन् १४४६

रुपये ११० मात्र



अ. इ. उ. ए. ओ. गरुड सर्प वैर



य. र. ल. व. मृग सिंह वैर | प. फ. ब. भ. म. मूषक बिलाड वैर | त. थ. द. ध. न. सर्प गरुड वैर | ट. ठ. ड. ढ. ण. स्वान मेष वैर | च. छ. ज. झ. ञ. सिंह मृग वैर | क. ख. ग. घ. ङ बिलाव मूषक वैर

पं. श्रीवल्लभ मनीराम

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग की ओर बढते कदम - काल समीकरण आदि सभी तरह की पूर्व सुविधाओं सहित ।। भारतीय (डिब्रुगढ, कोलकाता, वाराणसी, ...) नगरों की ... तालिका । विदेश (लंदन, न्यूयोर्क, सिंगापुर) की त्योंहार तालिका, अनेक नगरों में श्रीमहालक्ष्मी पूजन के चौघडिये । १४ मन्वन्तरों के सप्रमाण नाम ।

श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ अंचित्याव्यक्तरुपाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥ समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ पञ्चाङ्ग रत्नं प्रसरन्मयूखं श्री केतकी दृग्गणितेन युक्तम् ॥ लोकोपकाराय कृत प्रयत्न प्रचक्रतु मोह विनाशदक्षम् ॥ २ ॥ अथास्मिन् वर्षे सृष्टितो गताब्दाः १९५५८८५१२६, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापरयुग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ५१२६ भोग्यकलिः ४२६८७४ अथास्मिन् - शुभ संवत्सरे श्रीमन्नृपतिविक्रमादित्यराज्यात् संवत् २०८२ शाकः १९४७ । अथाऽस्मिन् वर्षे राजा रविः १, मंत्री रविः २, सस्येशो बुधः ३, धान्येशश्चंद्रः ४, मेघेशो रविः ५, रसेशः शुक्रः ६, नीरसेशो बुधः ७, फलेशः शनिः ८, धनेशो भौमः ९, दुर्गेशः शनिः १०, एते दशाधिकारिणः । तत्र बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादी षष्ट्यब्दानां मध्ये रुद्र विंशतिकायां १२ काल नामाख्यः संवत्सरः (लुप्त प्लवंगपक्षे सिद्धार्थ) प्रवर्तते । तस्य मेषाऽर्क समये गत मासादि ११८४०११९ भोग्य मासादि १०११११९४१ अश्विनीकुमार दैवतं युगम् । वर्षनाम कार्तिक । चतुर्मेघनाम संवर्त्तः । रोहिणी निवासः संधौ । समय निवासो वैश्यगृहे । समय विश्वा १२ । समय वाहन अश्व । स्तंभ २ जल तृण । सोमवत्यमा. ० । सोमवती पंचमी १ । अंगारकी चतुर्थी २ । भानु सप्तमी २ । बुधाष्टमी ० । रविदशमी १ । समय मुहूर्तानि ३६० । समय दिनानि ३५५ । तिथि क्षयः १६ । तिथि वृद्धिः ११ । अष्टोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा ९९ । खपति विश्वा ९३ । विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति विश्वा १२३ । खपति विश्वा ७५ । वर्षा विश्वा ११ । धान्यम् ११ । तृणम् ५ । शीतम् १३ । तेजः १७ । वायुः १३ । वृद्धिः १५ । क्षयः १५ । विग्रह ११ । ऐक्यम् १११ । (क्षुधा ७ । तृष्णा ११ । निद्रा ९ । आलस्य १३ । उद्यम १ । शान्ति ३ । क्रोध ९ । दण्ड १५ । मैत्री ९ । उत्सव ७ । पाप ७ । पुण्य ३ । उग्रत्व १५ । रसोत्पत्तिः १७ । फलोत्पत्तिः ७ । व्याधि ७ । व्याधिनाश ५ । आचार ५ । अनाचार ११ । मृत्यु ९ । जन्म १९ । चौर ९ । उपशमन १५ । अग्निभय ५ । अग्निशमः १५ ।) सत्यम् ॥, धर्म १॥, पाप १८ । शनि दृष्टिरुत्तरे । ग्रहणं २ चन्द्रमसः । उद्रिजः १३ । जरायुजः ३ । पिण्डजः ७ । स्वदेजः ११ । इस वर्ष का फल उत्तम है । आगे गौ प्रजा भाग्य प्रबल है । **॥संवत् २०८२** शाकः १९४७ ॥ वर्षारम्भे चैत्रशुक्लप्रतिपदायाम् रविवासरे वारप्रवृत्ति (सूर्योदय) काले अहर्गणाः (ता. ३० मार्च २०२५),केतकी चक्रः ७, अहर्गणः ५१०७,सौरपक्ष चक्रः ४५,अहर्गणः ३७२९,ब्रह्मपक्ष अहर्गणः ३०७५६२.

(१) भाद्रपद शुक्ला १५ रविवार संवत् २०८२, ता. ७ सितंबर २०२५, खग्रास **चन्द्रग्रहणम्**, परमग्रास १.३९

	स्पर्श	सम्मी	मध्य	उन्मी	मोक्ष	पर्व
रामगढ घ.	३९	४१	४३	४५	४७	८
स्थानिक प.	०५	४३	२९	१५	५३	४८
रेल्वे घ.	२१	२२	२३	२४	२५	३
टाईम मि.	५३	५७	३९	२१	२५	३१

यह खग्रास चंद्रग्रहण भाद्रपद शुक्ला १५ रविवार, संवत् २०८२, ता. ७ सितंबर २०२५, को होगा । इस ग्रहण का सूतक स्टैं. १२।५३ बजे से (ग्रहण के स्पर्श समय से ९ घंटा पहले) प्रारम्भ होगा । ग्रहण के सूतक में बाल वृद्ध और अस्वस्थ जनों को छोड़कर भोजनादि निषेध है ।

(२) फाल्गुन शुक्ला १५ मंगलवार संवत् २०८२,ता. ३ मार्च २०२६, खग्रास ग्रस्तोदयं **चन्द्रग्रहणम्**, परमग्रास १.१६

	स्पर्श	सम्मी	मध्य	उन्मी	मोक्ष	पर्व
रामगढ घ.	२१	२४	२५	२६	२९	८
स्थानिक प.	१६	२२	३७	५१	५७	४१
रेल्वे घ.	१५	१६	१७	१७	१८	३
टाईम मि.	२७	४२	११	४१	५६	२८

यह ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण फाल्गुन शुक्ला १५ मंगलवार, संवत् २०८२, ता. ३ मार्च २०२६, को होगा । इस ग्रहण का सूतक स्टैं. ६।२७ बजे से (ग्रहण के स्पर्श समय से ९ घंटा पहले) प्रारम्भ होगा । ग्रहण के सूतक में बाल वृद्ध और अस्वस्थ जनों को छोड़कर भोजनादि निषेध है ।

संवत् २०८२ मध्ये सूर्यग्रहणाऽभावः

पञ्चाङ्ग गणित कर्ता -

पं. श्री रामकुवारात्मज ग्यारसीलाल शर्मा

मु. डूमोली कलाँ, पो. डूमोली खुर्द, वाया- सिंघाना, जि.झुन्झुनू (राज.) पिन.३३३५१६, **मो.** ८१०८५५४४०१, मुम्बई. फोन ०२२ २६१६६७८३, **मो.** ८९७६८५२९२०

(समय - प्रातः ९ से १, सांय ५ से ९)

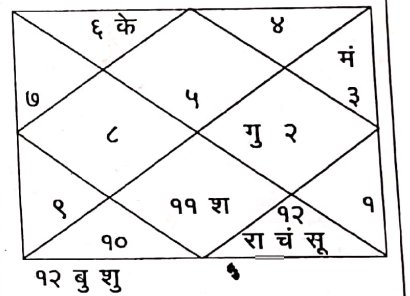
॥ अथ भैरव भवानि संवाद ॥



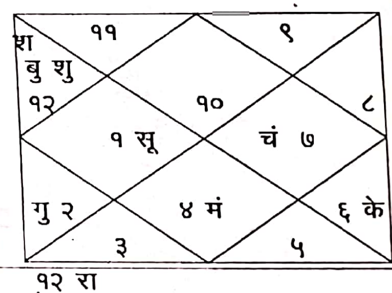
भैरव प्रश्नः जयजननी जगदीश्वरी तूं जग की प्रतिपाल ।
बियासी संवत् फल कहो श्रीमुख से सब हाल ॥
भवानी उ.: सुनले भैरव प्रेम से मैं समझावुं तोय ।
राजामंत्री देखतां मध्यम संवत होय ॥
सौम्यग्रहों ने वर्ष में लिये चार अधिकार ।
राजा-मंत्री मेघ का रवि ने लिया है भार ॥
धान्याधिप शशिराज हैं रसाधिप हैं भृगुदेव ।
मंगल धन के देव हैं दुर्ग-फल के शनिदेव ॥
एक धन की हानि करे दुर्ग करे शनि भेद
राजा और शनि की नहीं बने दूजा करदे छेद ॥
प्रजा सुखी मंगल करे रोहिणी संधि वास ।
समयनिवासो वैश्यघर संवर्त्त बंधाये आस ॥
रस नीरस और सस्य की जग में हो भरमार ।
जल तृण के २ स्तंभ हैं प्रजा में जै जै कार ॥
दशाधिकारी फल कहा जो मोहे था ज्ञान ।
ईश्वरदत्त से गुरु नहीं जो विद्यासागर जान ॥
गुरुचरणों का ध्यान धर प्रणाम करुँ साष्टाङ्ग ।
विद्यादीप जलता रहे श्रीमनीराम पञ्चाङ्ग ॥

लाभ खर्च कोष्ठक				
	अष्टोत्तरी मतेन		विंशोत्तरी मतेन	
राशि	लाभ	खर्च	लाभ	खर्च
मेष	२	१४	१४	११
वृष	११	५	८	५
मिथुन	१४	२	१४	२
कर्क	८	२	८	१४
सिंह	११	११	११	११
कन्या	१४	२	१४	२
तुला	११	५	८	५
वृश्चिक	२	१४	१४	११
धनु	५	५	११	२
मकर	८	१४	५	५
कुंभ	८	१४	५	५
मीन	५	५	११	२

वर्ष लग्नम् ४।१५



वर्षेश लग्नम् ९।१७



लाभ - खर्च देखनें की विधि और फल

जिस राशि का देखना हो उस राशि के सामनेवाले लाभ-खर्च के अंको को जोड़कर १ घटा देवें और ८ का भाग देवें यदि १ शेष रहे तो लाभ, २ शेष रहे तो सौख्य, ३ शेष रहे तो क्लेश, ४ शेष रहे तो रोग, ५ शेष रहे तो लोकापवाद (अपयश), ६ शेष रहे तो सन्मान, ७ शेष रहे तो विजय, ८ या ० शेष रहे तो हानि होती है ।

॥ संवत् २०८२, संवत्सर नाम काल ॥ **विशेष - पं. श्रीवल्लभ मनीराम पंचांग,** बाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय (B.H.U.), सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, **काशी धर्मसभा** वाराणसी और जयपुर (राज.) की दोनों वेधशालाओं में भेजा जाता है । - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग गणितकर्ता), विलेपार्ले, मुम्बई, ४०० ०५७

॥ अथ संवत् २०८२ वर्ष फलम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वर्ष फलम् ॥ अथास्मिन् संवत्सरे श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् २०८२ शाकः १९४७ काल नामास्यः संवत्सरः प्रवतर्ते तत्फलम् - वत्सरेकालयुक्तास्येसुखिनः सर्वजंतवः। सन्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥ अथास्मिन् वर्षे राजारविस्तत्फलम् - सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गौषुजनेषु पीडा। स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम् ॥ मंत्रीरविस्तत्फलम् - नृपभयं गदतोपि हि तस्करात्प्रचुरधान्यधनादि महीतले। रसचयं हि समर्घतमं तदा रविरमात्यपदं हि समागतः ॥ सस्येशोबुधस्तत्फलम् - जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्। द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदाप्रथमसस्यपतौ सति बोधने ॥ धान्येशश्चंद्रस्तत्फलम् - चन्द्रेधान्यादिपेजातेप्रजावृद्धिः प्रजायते। गोधूमाः सर्षपाश्चैवगोषुक्षीरं तदाबहु ॥ मेघेशोरविस्तत्फलम् - जलदपेयदिवासरपेतदासरसिवैरमतेजनतारसम्। यवचणेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुवि वर्तते ॥ रसेशः शुक्रस्तत्फलम् - यजनयाजनकोत्सवकोत्सुकाजनपदाजलतोषितमानसाः। सुखसुभिक्षसुमोदवतीधराधरणिपा हतपापगणप्रियाः ॥ नीरसेशोबुधस्तत्फलम् - चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि ॥ फलेशः शनिस्तत्फलम् - यदिशनिः फलपः फलहा भवेज्ञनितपुष्पगणस्य दमःसदा। हिमभयंवरतस्करजन्तुभीर्जनपदो गदराशिमहाकुलः ॥ धनेशोभौमस्तत्फलम् - असति मौल्यकरो धरणीसुतः शरदि ताम्रकरस्तुषधान्यहत्। सकलदेशगताश्चलिता नरा न रपतिर्जनशोकविधायकः ॥ दुर्गेशः शनिस्तत्फलम् - रविसुते गढपालिनि विग्रहो सकलदेशगताश्चलिता जनाः। विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनं न लभेद्भुवि कश्चन ॥ वर्षनाम कार्तिक तत्फलम् - पापबुद्धीरतालोकाभवंतिकातिर्केसदा। देवतानैवमन्यंतेराज्यंचतस्करैर्हतम् ॥ चतुर्मेघनाम संवर्त्तस्तत्फलम् - संवर्त्तेजलपूरिता। रोहिणी निवासः संधौ तत्फलम् - खंडवृष्टिश्च सन्धिषु। समय निवासो वैश्यगृहे तत्फलम् - सर्वधान्यं महर्घं स्याद्वणिग्वेश्मनि संस्थिते ॥ अपिच - वणिक्गृहे शुभंनास्ति। एवं संचित्य देवज्ञैः कथनीयं शुभाऽशुभम् ॥

॥ अथ गुरुचार शनिचारात् वर्षफलविचार ॥

राजा और मंत्री और मेघेश रवि है। धान्येश चंद्र है। धनेश मंगल है। सस्येश और नीरसेश बुध हैं। रसेश शुक्र हैं। फलेश और दुर्गेश शनि हैं। इस ग्रहमंडल की विधानसभा में ४ स्थान सौम्यग्रहों को प्राप्त हुए हैं और ६ स्थान उग्रग्रहों को उपलब्ध हुए हैं अतः वर्षफल मध्यमोत्तम होगा। वर्षलग्न सिंह होने से दक्षिण में दाढ़भय, धान्य में समर्घता और छः मास तक महाधन की प्राप्ति हो। पश्चिम में धातु की वस्तु और फल महँगे हो, उत्तर में महावृष्टि और राजा प्रजा में सुख हो। पूर्व में आधी उपज हो, आगे पांच मास में कल्याण हो, मध्य देश में ५ मास राजयुद्ध रहे। **चैत्र** - पुष्य पर मंगल होने से चौर भय हो, आपसी विरोध से क्षति हो, और राजा कमजोर हों। उत्तरा भाद्रपद में बुध होने से राजनीति में क्लेश तथा पक्षियों में आरोग्यता हो। उत्तराभाद्रपद नक्षत्र को बुध के भेदने से प्राणियों के धातुओं (वसा,रक्त,मांस,मेधा,अस्थि,मज्जा और शुक्र) की हानि हो। सुभिक्ष हो और उत्तम वर्षा हो। **बैशाख** - प्रजा में सुखों की वृद्धि और सुभिक्ष हो। उत्तरभाद्रपद में स्थित शुक्र फल-मूलों को पीड़ित करता है। श्रृंगार की वस्तुएं महंगी हो। से व्यापारी, वैद्य, नौका से जीविका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा घोड़े (अश्व) पीडित हों। उत्तराभाद्रपद में स्थित शनैश्चर नदी के किनारे निवास करने वाले, रथाधिकारी (यात्री), शिल्पी, स्त्री और सुवर्ण इन सबकी हानि करता है। जौ गेहूँ में रोग हो। ईख, दूध, रस और घी आदि सस्ते हों। व्यापारी, वैद्य, नौका से जीविका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा घोड़े (अश्व) पीडित हों। साँपों का भय अधिक हो। **ज्येष्ठ**- भरणी पर बुध होने से हाथियों को पीड़ा हो, तीव्र रोग हो, धान्य महँगे हों और परस्पर वैर बढे। रेवती में स्थित शुक्र पथिकों (यात्रियों) को पीड़ित करता है। सण सूत्र का भाव मंदा हो। सब प्रकार के बर्तन विशेष कर कांसी पीतल के बर्तनों का भाव मंदा हो। मनुष्यों में ज्वर पीड़ा हो और कहीं कुछ उपद्रव हो। कपास, तिल, सूत महँगे हों। वर्षा का अभाव और रोगोत्पत्ति हो। ब्राह्मण जाति में विरोध हो। जौ, तिल, उड़द कम हों। अश्विनी में स्थित शुक्र अश्वपालकों को पीड़ित करता है। सुभिक्ष हो, वायु से वर्षा हो। गेहूँ तिल उड़द सस्ते हों, ग्रहपात तथा पवन का प्रवाह हो। **आषाढ** - आषाढी पूर्णिमा तीस घटी से अधिक है अतः समर्घता और पीछे महर्घता हो। तुष धान्य महँगे हो और तिलों का अभाव हो। भरणी में स्थित शुक्र किरात तथा यवनों को पीड़ित करता है। आर्द्रा पर बृहस्पति होने से सुभिक्ष हो और उत्तम वर्षा हो। बालकों को पीड़ा हो, कपास सूत मंदा हो। सब लोगों में मांगलिक उत्सव हों। पुष्य नक्षत्र में बुध का सञ्चार होने से शस्त्रनिपात (युद्ध), क्षुधा, रोग, अनावृष्टि और अनेक प्रकार के दुःखो से प्रजा पीडित हो। सरसों उड़द कम हों और सब धान्य उत्पन्न हों। अतिवृष्टि हो, नदियों में बहुत बाढ़ आवे। तेल का मूल्य बढ जाय। आरोग्यता हो। **श्रावण** - कर्क राशि में बुध का अस्त होने से अनावृष्टि और चौर भय हो। श्रावण में बुध का अस्त होने से सुभिक्ष हो। रस (मधुर आदि) और धान्यों का नाश हो। उत्तरा फाल्गुनी पर मंगल होने से वर्षा के अवरोध से चौपायों में पीड़ा हो, घोड़ों का मूल्य बढे। शस्त्रनिपात (युद्ध), क्षुधा, रोग, अनावृष्टि और अनेक प्रकार के दुःखो से प्रजा पीडित हो। शुक्र आर्द्रा नक्षत्र में होने से कोसल तथा कलिङ्ग देश का नाश और अतिवृष्टि हो। प्रजा में सुख हो। श्रावण में बुध का उदय होने से कहीं भी प्राकृतिक आपदा हो। **भाद्रपद** - पुनर्वसु में शुक्र होने से अन्न का अभाव हो। अश्मक और विदर्भ देश में अनय (उपद्रव) हो। हस्त पर मंगल होने से अल्पवृष्टि हो, तुष धान्य उत्तम हो, घृत गुड़ और नमक महंगे हो। पुनर्वसु पर गुरु होने से अनावृष्टि से सर्वत्र दुर्भिक्ष हो। आश्लेषा नक्षत्र में बुध का सञ्चार होने से शस्त्रनिपात (युद्ध) हो। शुक्र पुष्य नक्षत्र में होने से अधिक वृष्टि तथा विद्याधरों के युद्ध में विमर्द हो। शस्त्रनिपात (युद्ध), क्षुधा, रोग, अनावृष्टि और अनेक प्रकार के दुःखो से प्रजा पीडित हो। चावल तथा गेहूँ महँगे हों। सर्पो से अत्यन्त पीडा हो। पूर्वाफाल्गुनी में बुध होने से क्षेत्र के बंटवारे को लेकर पडौसी देश से मनमुटाव हो, अन्न मँदा हो। **आश्विन** - उत्तराफाल्गुनी में बुध होने से उड़द मूंग कम उत्पन्न हों। मघा नक्षत्र को शुक्र के भेदन करने से हस्तिपति पीडित हों और अतिवृष्टि हो। स्नेह (तेल, घृत आदि), रस (मधुर आदि) के मुल्य में वृद्धि हो, भूमि अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण हो। स्वाती पर मंगल होने से अनावृष्टि हो। शबर-पुलिन्द जन पीड़ित हों। गणिका, शिल्पी, और विप्र वर्ग पीड़ित हो। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में शनैश्चर होने से वैद्य, कवि, शौण्डिक (मद्य बेचनेवाले), खरीद-बिक्री करने वाले और नीतिशास्त्र जानने वाले पीडित हों। कुरु देश में निवास करने वाले, जाङ्गल (स्वल्पपोदक स्थान) में निवास करने वाले और पञ्जाबस्थ जन पीड़ित हों तथा वृष्टि हो। **कार्तिक** - तुला राशि में बुध का उदय होने से भूकंप तथा युद्धादि हों। कार्तिक मास में बुध का उदय होने से शस्त्र, चोर, अग्नि, रोग, जल और दुर्भिक्ष का भय हो। कपास और गेहूँ का भाव महँगा हो। स्नेह (तेल, घृत आदि), रस (मधुर आदि) के मुल्य में वृद्धि हो, भूमि अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण हो। तुला राशि में मंगल का अस्त होने से गेहूँ और चणे महँगे हों। हस्त में शुक्र होने से मेघों की गर्जना के साथ वर्षा हो। कौरव और चित्रकार पीडित हों। कुआँ बनाने वालों और पक्षियों को पीड़ा हो तथा सुन्दर वृष्टि हो। **मार्गशीर्ष** - वृश्चिक राशि में बुध का अस्त होने से धातुओं के भाव तेज हों। कर्क का बृहस्पति वक्री होने से घोर दुर्भिक्ष हो तथा राजाओं में युद्ध हो। रसादि सब वस्तु घी तेल खांड और कपास आदि में महर्घता हो। तुष धान्य की महँगाई हो। वाणिज्य कर्म करने वाले प्रभावित हों। ज्येष्ठा पर मंगल होने से अल्पवृष्टि हो, रोगों की प्रबलता हो। स्नेह (तेल, घृत आदि), रस (मधुर आदि) के मुल्य में वृद्धि हो, भूमि अनेक प्रकार के अन्नों से परिपूर्ण हो। क्षत्रियों में परस्पर विरोध हो। **पौष** - पौष की पूर्णिमा को पुष्य का अभाव होने से महर्घता हो। मूल पर मंगल होने से क्षत्रियों में पीड़ा हो, तुष धान्य महँगा हो। लोकभय और क्षेत्रपति का क्षय हो। क्षत्रियों होने से क्षत्रियों में प्रधान का अभाव हो अनावृष्टि हो। ज्येष्ठा में बुध होने से ईख, शाली और घी महँगे हों तथा घोड़ों में रोग हो। जल बहुत हो, गायें दूध कम दें, पृथ्वी अन्न से पूरित हो। ज्येष्ठा नक्षत्र में शुक्र उड़द महँगे हो। व्यापारी, वैद्य, नौका से जीविका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा घोड़े (अश्व) पीडित हों। जल में उत्पन्न जीव पीड़ित हों। शालि, तिल, घी और शस्त्र, चोर और रोगों की वृद्धि हो। उत्तराषाढ पर मंगल होने से जल बहुत हो, गायें दूध कम दें, पृथ्वी अन्न से पूरित हो। शालि, तिल, घी और उड़द महँगे हो। **माघ**- पूर्वाषाढा में बुध होने से धान्य मन्दा हो, क्षुधा, नदी के किनारे निवास करने वाले, रथाधिकारी (यात्री), शिल्पी, स्त्री और सुवर्ण इन सबकी हानि करता है। श्रवण में बुध होने से गुड़ अलसी और चणे अदि धान्य में बर्फ (ओले) गिरने का भय हो। कर्णपीड़ा हो। उत्तराभाद्रपद में स्थित शनैश्चर मंगल होने से रोग हो, धान्योत्पत्ति कम हो, पीछे वर्षा हो। प्रजा में सुखों की वृद्धि और सुभिक्ष हो। धनिष्ठा नक्षत्र में शुक्र होने से पाखण्डियों में भय उत्पन्न हो। श्रवण पर वैद्य, नौका से जीविका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा घोड़े (अश्व) पीडित हों। शतभिषा नक्षत्र में स्थित शुक्र शौण्डिकों (मद्यविक्रेता - कलवारों) को पीड़ित करता है। **फाल्गुन** - बुध शतभिषा को भेदने से व्यापारी, से इन्द्र की भांति समृद्धि हो, धान्य सस्ता हो और गुड शक्कर भी सस्ते हों। प्रजा में सुखों की वृद्धि और सुभिक्ष हो। पूर्वभाद्रपदा में स्थित शुक्र जुआड़ी लोग, कुरु तथा पञ्जाब देश में स्थित जनों को पीड़ित करता है। धनिष्ठा पर मंगल होने वृष्टि करता है। कुम्भ राशि में बुध का अस्त होने से हवा बहुत चले और हिम (ठंढ) से वृक्ष जल जायँ। **चैत्र** - बुध शतभिषा को भेदने से व्यापारी, वैद्य, नौका से जीविका चलाने वाले, जल में उत्पन्न होने वाले द्रव्य तथा घोड़े (अश्व) पीडित हों। कहीं कहीं अल्पवृष्टि हो। कुम्भ राशि में बुध का उदय होने से मार्ग में हवा बहुत चले। रेवती में स्थित शुक्र पथिकों को पीड़ित करता है। आगे गो प्रजा भाग्य प्रबल है।

संवत् २०८२ (ई. सन २०२५ - २०२६) **॥ पञ्चाङ्ग विषयानुक्रमणिका ॥ (अतिरिक्त सुविधा सहित)**

& क्रमांक ६७, पृष्ठांकाः ६५-८८, विद्वानों की सुगमता के लिए दैनिक चन्द्र नक्षत्र से सूर्यादि ग्रहों की युति, पंच शलाका वेध और सप्त शलाका वेध का पंचांग में समावेश कर दिया है। **ज्योतिषां सुगमाय समावेशं चन्द्रार्क्षाद्विधवेधं युतिः चन्द्रऋते खाहाः ॥ जन साधारण की सरलता के लिए- चैत्रादि मास के पृष्ठों में संवत् और शाकः के अंको को संस्कृत में उल्लेख किया है। बढते कदम . . . .**

श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

इस पंचांग के अंतर्गत गणित फलित या मुहूर्तादि जो भी मेरे द्वारा किया गया है इनमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है। जो भी है उन महापुरुष प्रातः स्मरणीय, सर्वदा वंदनीय, विद्या वारिधि सुविज्ञ निधि श्री गुरु चरणों की महानता है जिन्होंने अनुग्रह करके मुझ जैसे मंदबुद्धि एवं अपरिचित को भी अपना अमुल्य समय देकर अमृतरुपी विद्या का पान करवाया लेकिन मुझ भाग्यहीन व्यक्ति का पान वैसा ही रहा जैसे समुद्र में से एक गिलास पानी। प्रथम श्री गुरु चरणों के दर्शन से ऐसा लगा कि न जाने विद्या-दान देंगे या नहीं। लेकिन चरणस्पर्श के बाद प्रार्थना करने पर मुझे जो प्रत्युत्तर मिला उससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि उतने महान् विद्वान होते हुए भी इतना कोमल स्वभाव मृदुभाषी अध्यापन में इतने सुविज्ञ कि मंदबुद्धिवाला भी सुगमतापूर्वक अध्ययन कर सकता है। अंहकार का तो स्पर्श मात्र भी नहीं है। पंचांग गणित की जिज्ञासा को लेकर मैंने कई विद्वानों से आग्रहपूर्वक संपर्क किया लेकिन वाञ्छिवाभिलाषा से वञ्चित ही रहा और संयोग से जब आपकी चरण रज का दर्शन हुआ तब से तो मेरी वही गति हो रही थी जैसे किसी धनार्थी को स्वयं कुबेरजी यह कहें कि इस खजाने से ले सके उतना धन ले ले। आपकी विद्वत्ता तो पूरा विश्व जानता है कि आपने लोगों के कल्याणार्थ "श्री वेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग" का पूर्व काल में ही निर्माण कर दिया था जो कि पूरे एक सौ वर्ष (संवत् २००१ से २१०० तक) का मात्र यही एक पञ्चाङ्ग था। इस पंचांग के निर्माण कार्य से विद्या का अनुमान लगाना वैसे ही कठिन है जैसे महासागर की गहराई का। अस्तु, उन श्री गुरु चरणों को मैं पुनः पुनः प्रणाम करता हूँ।

श्री.श्री. १०८ स्व. पं. ईश्वरदत्त शर्मणोऽनुग्रहीत शिष्यः
पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

मुम्बई पता - १
५८, रामकुटीर, ३ रा माला, हनुमान रोड़,
विलेपार्ले (पूर्व), मुम्बई - ४०० ०५७.

मुम्बई पता - २
फ्लेट न. ६०४, अंधेरी न्यू कपासवाडी, जुहू एकता - कोपरेटिव हाऊसिंग सोसायटी लिमिटेड, न्यू वर्सोवा लिंक रोड, अंधेरी (पश्चिम), मुम्बई- ४०० ०५३, क्रांची सिटिजन सोसायटी के बाद फोन ०२२ २६१६६७८३, मोबा. ८१०८५५४४०१, ८९७६८५२९२०

अथ पञ्चाङ्ग देखने की विधि

यह पञ्चाङ्ग दृश्य गणित से बनाया गया है साथ ही सौर पक्षीय एवं ब्रह्म पक्षीय सूर्योदय कालीन दैनिक सूर्य स्पष्ट भी है।

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम् ।
दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम् ॥

(इति वशिष्ठ वचनात्)

पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग का सभी गणित व्यंकटेश बापू केतकर पद्धति (केतकी, ज्योतिर्गणित, म. ग्रहगणित मालिका आदि .. ग्रंथो) से रामगढ (शेखावाटी) अक्षांशाः २८/०० उ., रेखांशाः ७४/५९ पूर्व, अं.व्यं. पलभाः ६/२३ के आधार पर किया गया है। तिथि नक्षत्र योग करण इनके घटिपल रामगढ (शेखावाटी) **स्पष्टार्कोदय** के लिखे गये हैं जब कि इससे पूर्व संवत् २०६० तक मध्यमार्कोदय के लिखे जाते थे लेकिन आपके सुझाव को ध्यान में रखकर **स्पष्टार्कोदय के घटीपल लिखे हैं**। घटि-पलों में २॥ का भाग देकर भागफल में **रामगढ (शेखावाटी) के स्टैं. सूर्योदय का घंटा मिनट जोड़कर** साधारण जनहितार्थ रेल्वे (स्टैण्डर्ड समय के घण्टा मिनट लिखे गये हैं, ये तिथ्यादि के घंटा मिनट भारतीय रेल्वे (स्टैण्डर्ड) समय से समाप्ति काल के हैं। ये स्टैं. समय के घंटा मिनट संपूर्ण भारत में समान रुप से उपयोगी होंगें। उदाहरण के लिए किसी तिथि नक्षत्र योग का स्टैण्डर्ड घं. मि. १५ बजे लिखा है तो संपूर्ण भारत (पंजाब आसाम मद्रास केरल उ.प्र. राजस्थान) में दोपहर तीन बजे ही समाप्ति होगी। इस पंचांग से भारत के किसी भी गांव या शहर के स्थानिक घटी पल बनाने हों तो अभीष्ट शहर या गांव का स्टैण्डर्ड सूर्योदय इस पंचांग के तिथ्यादि के स्टैं. समय में घटाकर (ऋण) शेष को २॥ से गुणा करने पर अभीष्ट गांव या शहर के स्थानिक घटी पल बन जायेंगे। किसी भी गांव या शहर के दिनमान एवं स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त की विधि भी इसी पंचांग में अन्यत्र लिखी हुई है।

विद्वज्जनों की आवश्यकता को देखते हुए दैनिक रविक्रांति और पूरे भारत वर्ष (अक्षांशाः ८/०० उ. से ३६/०० उ. तक) की चरपल संस्कार सारणी भी पंचांग में दे दी गई है जिससे भारतवर्ष के किसी भी गांव या शहर का सुगमता पूर्वक दिनमान बना सकते हैं। दैनिक लग्नसारणी और चंद्रचार (चंद्रराशि प्रवेश) का स्टैं. समय प्रवेशकाल दिया गया है।

सूर्योदयास्त किरण वक्री बवन संस्कार रहित भारतीय रेल्वे (स्टैण्डर्ड) टाईम रामगढ (शेखा.) के हैं। किरण वक्री भवन संस्कार करने से वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अंतर आ जाता है जिससे इष्ट बनाने तथा धार्मिक निर्णयों में त्रुटि होना संभव है परंतु स्टैं. सूर्योदयास्त समय से यदि घड़ी का मिलान करना हो तो पंचांग में लिखित सूर्योदय में दो मिनट किरण वक्री भवन संस्कार घटाकर तथा सूर्यास्त में दो मिनट जोडकर घटिका यंत्र (घड़ी) से मिलान करना चाहिए क्योंकि गणितागत सूर्य क्षितिजवृत्त के उदय से दो मिनट पहले दिखाई देता है और गणितागत सूर्यास्त के दो मिनट बाद तक दृष्टिगोचर होता है परिणामस्वरुप दश पल (चार मिनट) दिनमान भी बढ जाता है।

ग्रहचार भद्रा आदि भी स्टैण्डर्ड (रेल्वे) समय में ही लिखे गये हैं। पंक्तिस्थ ग्रहस्पष्ट रामगढ (शेखावाटी) के प्रातः सूर्योदय कालीन (इष्ट ००|००) के लिखे गये है साथ ही सर्वत्र उपयोगिता के लिए अयनांशाः (न्यूटेशन संस्कार युक्त) और सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र चरण भी दिये है।

तिथ्यादि ग्रहचार चंद्रचार भद्रादि का स्टैं समय जहाँ १३-१४-१५ आदि अंक हों वहाँ दिन के १२ बजे के बाद १-२-३ बजे समझें और जहाँ २५-२६-२७ आदि अंक लिखें हों वहाँ रात्रि के १२ बजे के बाद क्रमशः रात्रि के १-२-३ बजे समझें (१३ से २४ तक के दिन के १ बजे से रात्रि १२ बजे तक और २४ से ३० तक रात्रि के १२ बजे से दूसरे दिन प्रातः ६ बजे तक के लिखे हैं)। व्रतोत्सव-ग्रहचार में **A B C D** आदि चिन्ह दिये गये हैं इनका मतलब यह है कि उस तिथि या तारीख का मैटर उस पंक्ति (लाईन) में नहीं आ सका इसलिए वहाँ चिन्ह लगाकर शेष मैटर वैसा ही चिन्ह **[A [B** लगाकर पूरा किया गया है।

विवाह मुहूर्त्तो में दिन के विवाह लग्न तो लिखते ही थे अब महर्षि कात्यायनोक्त नक्षत्र चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्तो का समावेश भी कर दिया है इन पर विद्वज्जन आवश्यकतानुसार निर्णय कर लें। पंचांग को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए उपनयन मुहूर्त्त, देवप्रतिष्ठा (उत्तरायण दक्षिणायण) मुहूर्त्त, गेहारंभ मुहूर्त्त, नूतन और जीर्ण गृहप्रवेश मुहूर्त्त भी दे दिये हैं अतः विद्वद्गण आवश्यकतानुसार निर्णय लेकर मुहूर्त्तो का उपयोग करें। इनका अत्यधिक लाभ लेकर श्री वल्लभ मनीराम पंञ्चाङ्ग एवं प्रकाशन संस्थान **खेमराज श्रीकृष्णदास** के इस परिश्रम को सफल बनाकर कृतकृत्य करें।

जिनके लिए आप बहुत दिनों से सुझाव भेज रहे थे, वार्षिक पंञ्चाङ्ग में उन उत्कृष्ट, अलभ्य, अश्रुत, अलोकित, अज्ञात विषयों का समावेश कर दिया है। यह कोई अतिशयोक्ति या मिथ्या प्रशंसा नहीं है मेरा लक्ष्य आप तक विद्या पहुँचाना था परिणाम स्वरुप अहर्निश कार्यरत रहने से मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया है, मैं रहूँ न रहूँ मेरी विद्या लाखों करोडों विद्वानों के पास रहेगी जो मैने श्रीगुरुचरणों से प्राप्त की थी। इससे मुझे आत्मशान्ति तो प्राप्त हुई ही है बल्कि गुरुऋण और भूऋण से भी मुक्त हो गया। मेरी न्यूनताओं की जानकारी और विद्वज्जनों के उत्तम सुझाव प्राप्त होंगे तो उन्हें शिरोधार्य कर मैं आभारी रहूँगा।

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस" के मालिक संजयबाबु बजाज का मैं हृदय से साधुवाद करता हूँ, जिनके उदार विचारों से यह महत्वपूर्ण विद्या आप सभी तक पहुँचा रहा हूँ, उदारवादी विचारों के लिए ईश्वर आपको खुश रखें।

अवसान में करबद्ध प्रार्थना यही है कि इस पंचांग के निर्माण में हर तरह की सूक्ष्मता एवं सावधानी रखी गई है फिर भी अनवधान वश अथवा मुद्रणदोष से कहीं त्रुटि रह गई हो तो पक्षपात रहित बुद्धि से विद्वज्जन उसे सुधारकर उपयोग में ले लें। कहा भी है -

प्रमाददोषादिह या च काचिन्मान्यास्त्रुटिर्दृष्टिपथं व्रजेद्वै ।
ज्योतिर्विदः शास्त्र विचारदक्षाः धिया स्वयं शोधयन्तार्यवर्याः ॥
गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥

दुर्जन गण अनेक प्रकार से प्रार्थना करने पर भी अपनी आदत नहीं छोड सकते हैं; क्योकि - **खलो मृगयते दोषं गुणपूर्णेषु वस्तुषु ।**
वने पुष्पफलाकीर्णे पुरीषमिव सूकरः ॥

विद्वज्जनों को मेरा पुनः पुनः प्रणाम।

गणितकर्ता : विदुषां वशंवदः पंडित ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

मुख्य व्रतोत्सव तालिका संवत् २०८२ (ई. सन २०२५-२०२६)

व्रतोत्सव	सन २०२५	व्रतोत्सव	ता.	व्रतोत्सव	ता.	व्रतोत्सव	ता.	व्रतोत्सव	ता.	व्रतोत्सव	ता.	व्रतोत्सव	ता.
चैत्रमास	मार्च	कूर्मोत्पत्ति	१२	श्रीश्यामबाबा जागरण	६	भारतीयस्वतंत्रतादिवस	१५	वामन द्वादशी	४	रमा एका.	१७	मार्गशीर्षमास	नवंबर
नया संवत आरम्भ	३०	पूर्णिमा व्रत	१२	चतुर्मास व्रत प्रारम्भ	६	जन्माष्टमी व्रत स्मार्त	१५	प्रदोष व्रत	५	गोवत्स द्वादशी	१७	चतुर्थीव्रत	८
नवरात्र आरम्भ	३०	बैशाखस्नानपूर्ति	१२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	७	जन्माष्टमी व्रत वैष्णव	१६	अनन्त चतुर्दशी	६	प्रदोष व्रत	१८	कालभैरवाष्टमी	१२
गुड़ीपड़वा (महाराष्ट्र)	३०	ज्येष्ठमास	मई	प्रदोष व्रत	८	गोगानवमी (गुगोजी)	१७	खग्रासं चन्द्रग्रहण	७	धनतेरस	१८	नेहरुजयन्ती (बालदिवस)	१४
सिंधारा	३०	चतुर्थीव्रत	१६	पूर्णिमा व्रत	१०	अजा एका.	१९	पूर्णिमा व्रत	७	धन्वन्तरी जयंती	१८	उत्पत्ति एका.	१५
गणगोर	३१	अपरा एका.	२३	गुरु पूर्णिमा	१०	जैनपर्युषण	१९	श्राद्ध प्रारम्भ	७	छोटी दीपावली	१९	प्रदोष व्रत	१७
भवान्युत्पत्ति अप्रे.	५	प्रदोष व्रत	२४	श्रावणमास	जुलाई	वत्सपूजा(बच्छबारस)	१९	प्रौष्ठपदी	७	महालक्ष्मी पूजा	२०	अमावस्या	२०
दुर्गाष्टमी	५	भाऊका अमा.	२६	चतुर्थीव्रत	१४	प्रदोष व्रत	२०	कु. संध्यापूजा	७	कुबेर पूजा	२०	मोक्षदा एका. दिसं.	१
श्री रामनवमी	६	अमावस्या पितृकार्य	२६	नागपंचमी (राज.)	१५	कुशांग्रहणी अमा.	२२	आश्विनमास	सितंबर	अमावस्या	२१	श्रीश्यामबाबा जागरण	१
कामदा एका.	८	अमावस्या देवकार्य	२७	कामिका एका.	२१	पिठोरी अमा.	२२	चतुर्थीव्रत	१०	गोवर्धन पूजा	२२	गीता जयंती	१
श्रीश्यामबाबा जागरण	८	करिदिन	२७	प्रदोष व्रत	२२	अमावस्या पितृकार्य	२२	अशोकाष्टमी	१४	अन्नकूटं देशाचारे	२२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	२
श्रीश्यामबाबा द्वादशी	९	श्री गंगादशाश्वमेधस्नान		हरियाली अमा.	२४	भादीमावस	२३	इंदिरा एका.	१७	गुजरातियों का नूतन		प्रदोष व्रत	२
प्रदोष व्रत	१०	प्रारम्भ	२७	अमावस्या	२४	लोहार्गल स्नान	२३	प्रदोष व्रत	१९	वर्षारंभ	२२	श्री दत्त जयंती	४
जैन महावीर जयंती	१०	महाराणाप्रतापजयंती	२९	सिंधारा	२६	मातृ अमा.	२३	सर्वपितृ श्राद्ध	२१	भैयादूज	२३	पूर्णिमा व्रत	४
हनुमान जयंती	१२	गंगादशमी जून	५	तीज	२७	अमावस्या देवकार्य	२३	अमावस्या	२१	सौभाग्य पंचमी	२६	पोषमास	दिसंबर
पूर्णिमा व्रत	१२	निर्जला एका.	६	नागपंचमी	२९	गणेश चतुर्थी		नवरात्र आरम्भ	२२	गोपाष्टमी	३०	चतुर्थीव्रत	७
बैशाख स्नान प्रारम्भ	१२	श्रीश्यामबाबा जागरण	७	तिलकपुण्यतिथि अग.	१	(चंद्रदर्शननिषेध)	२७	अग्रसेन जयंती	२२	अक्षय(आंवला) नवमी	३१	तारा (शुक्र अस्त)	८
वैशाखमास	अप्रेल	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	८	पवित्रा एका.	५	जैन संवत्सरी	२७	मातामह श्राद्ध	२२	कुष्माण्ड नवमी	३१	सफला एका.	१५
चतुर्थीव्रत	१६	प्रदोष व्रत	८	श्रीश्यामबाबा जागरण	५	ऋषि पंचमी	२८	महाष्टमी (दुर्गाष्टमी)	३०	श्रीश्यामबाबाजागरण नवं.	१	सुरुप द्वादशी	१५
बूढो बास्योड़ो	२१	तारा (गुरु अस्त)	११	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	६	श्री राधाष्टमी	३१	गांधीजयन्ती अक्टु.	२	तुलसी विवाह	२	प्रदोष व्रत	१७
वरुथिनि एका.	२४	कबीर जयंती	११	प्रदोष व्रत	६	दधीची जयंती	३१	विजया दशमी	२	भीष्म पंचक प्रारम्भ	२	अमावस्या	१९
प्रदोष व्रत	२५	आषाढ़मास	जून	सूणमाण्डणा		गौरी आवाहन	३१	पापांकुशा एका.	३	चतुर्मास व्रतसमाप्ति	२	शांकभरी यात्रा	२८
अमावस्या	२७	चतुर्थीव्रत	१४	भद्रा के पहिले	८	अदुःखनवमीव्रत सितं.	१	श्रीश्यामबाबा जागरण	३	देवोत्थापन	२	पुत्रदा एका. स्मा.	३०
शिवाजी जयंती	२९	योगिनी एका. स्मा.	२१	नारियल पूर्णिमा	९	श्री चंद्र जयंती		श्रीश्यामबाबा द्वादशी	४	प्रबोधिनी एका.	२	श्रीश्यामबाबा जागरण	३०
परशुराम जयंती	२९	योगिनी एका. वै.	२२	पूर्णिमा व्रत	९	(उदासीन संप्रदाय)	१	प्रदोष व्रत	४	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	२	पुत्रदा एका. वै.	३१
अक्षय ३ (आखातीज)	३०	प्रदोष व्रत	२३	रक्षाबंधन		गौरी पूजन	१	पूर्णिमा व्रत	६	प्रदोष व्रत	३	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	३१
सीता नवमी मई	५	अमावस्या	२५	(पूरा दिन शुद्ध है)	९	श्रीरामदेवजीका मेला	२	शरद पूर्णिमा	६	वैकुण्ठ चतुर्दशी	४	जनवरी	२०२६
मोहिनी एका.	८	श्रीजगदीश रथयात्रा	२७	भाद्रपदमास	अगस्त	गौरी विसर्जन	२	कोजागरी व्रत	६	पूर्णिमा व्रत	५	प्रदोष व्रत	१
श्रीश्यामबाबा जागरण	८	भड़ली नवमी जुला.	४	कज्जली(बूढी) तीज	१२	जलझूलनी एका.	३	कार्तिकस्नान प्रारम्भ	७	पुष्कर यात्रा	५	पूर्णिमा व्रत	३
श्रीश्यामबाबा द्वादशी	९	आशा दशमी	५	चतुर्थीव्रत	१२	श्रीश्यामबाबा जागरण	३	कार्तिकमास	अक्टूबर	नानक जयंती	५		
प्रदोष व्रत	९	ताराशुद्ध (गुरुउदय)	६	हलषष्ठी	१४	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	४	करवाचतुर्थीव्रत	१०	भीष्म पंचक समाप्ति	५		
नृसिंह चतुर्दशी	११	देवशयनी एका.	६	चंद्रषष्ठी (चानाछठ)	१४			होई आठें (अष्टमी)	१३	कार्तिक स्नान पूर्ति	५		

शेष रवियोग के पृष्ठ पर देखें ...

मकरेऽर्कः १४ जनवरी २०२६ बुधवार दिन स्टै. १४।३४ ॥ **मकर सक्रांति** पुण्यकालः १४ जनवरी बुधवार स्टै. दिन १४।३४ से उत्तररात्रि स्टै. ३०।३४ तक ॥

तारा:- ता. ८।१२।२०२५ से ४। २।२०२६ तक **(शुक्र) अस्त** रहेगा ॥ **तारा:** ता. ११। ६।२०२५ से ६। ७।२०२५ २८।१८ तक **(गुरु) अस्त** रहेगा ॥

॥ अयन ज्ञानाय ॥

सायन/निरयन दो प्रकार के होते है । पहला सायन और दूसरा निरयन । सायन सूर्य से छ ऋतुओं का निर्धारण होता है और निरयन सूर्य से पंचांग (धार्मिक व्रतोत्सव, मुहूर्त्त आदि) का निर्णय किया जाता है । (पीयूषधारा पृ.१७२,श्लोक ९)
अयन - एक वर्ष में दो अयन होते हैं । उत्तरायण और दक्षिणायन । मकर सक्रान्ति से उत्तरायण प्रारम्भ होता है और सूर्य कर्क राशी पर आवे तब दक्षिणायन प्रारम्भ होता है ।
ऋतु - एक वर्ष में छ ऋतु होती हैं । उनके नाम :- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर ।

॥ नक्षत्र संख्या और अभिजित मान ॥

भारत के प्राचीन दिव्य ऋषियों ने भचक्र (बृहदाकाश) में जो अगण्य तारिकाएं दृष्टिगोचर होती है इनके प्रत्येक समूह को नक्षत्र की संज्ञा दी और इन नक्षत्रों की संख्या, स्वरूप, स्थान, वर्ण आदि निर्धारित किये । यहाँ मात्र संख्या की चर्चा होगी क्यों कि यह बहुत गहन विषय है । ग्रहमंडल, तारामंडल आदि की अधिक जानकारी के लिए वाराह मिहिर कृत बृहत्संहिता देखें । ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रों की संख्या २७ होती है प्रत्येक नक्षत्र के चार पाद (चरण) निर्धारित किये गये हैं और नो चरणों की एक राशि होती है । अस्तु । ये सत्ताईस नक्षत्र इस प्रकार है -
(१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तराफाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाति, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढा, (२१) उत्तराषाढा (२२) श्रवण, (२३) धनिष्ठा, (२४) शतभिषा, (२५) पूर्वाभाद्रपद, (२६) उत्तराभाद्रपद, (२७) रेवती ॥

अभिजिन्मानम्- "वैश्व-प्रान्त्याङ्घ्रिश्रुतितिथिभागतोऽभिजित्स्यात् ।" वैश्वेति । वैश्वमुत्तराषाढा, तस्यान्त्याङ्घ्रिः चतुर्थचरणः, श्रुतेः श्रवणस्य पञ्चदशांशो मिलित्वाऽभिजिद्भोगः स्यात । यदाह वसिष्ठः- "अभिजिद्भोगमेतद्वै वैश्वदेवान्त्यपादमखिलं तत् । आद्यचतस्रो नाड्यो हरिभस्यैतच्च रोहिणी विद्धम् ।" -पीयूषधारा पृ.३७५,श्लो.५५
अर्थ - अभिजित् नामक कोई पृथक नक्षत्र (२७ नक्षत्रों की तरह) नहीं है । उत्तराषाढा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का समय और श्रवण नक्षत्र के भभोग का १५वां-विभाग दोनों को मिलाने से जितनी घटिका होती है,उन घटिकाओं को अभिजित् नक्षत्र का मान समझना चाहिए ॥५५॥ अर्थात् अभिजित् उत्तराषाढा और श्रवण नक्षत्र के मध्य ही भुगत जाता है ।

॥ विष्कुंभ आदि योग ॥

विष्कुंभादि योग २७ होते हैं इनके नाम इस प्रकार हैं - (१) विष्कुंभ, (२) प्रीति, (३) आयुष्मान्, (४) सौभाग्य, (५) शोभन, (६) अतिगण्ड, (७) सुकर्मा, (८) धृति, (९) शूल, (१०) गण्ड, (११) वृद्धि, (१२) ध्रुव, (१३) व्याघात, (१४) हर्षण, (१५) वज्र, (१६) सिध्दि, (१७) व्यतिपात, (१८) वरीयान्, (१९) परिघ, (२०) शिव, (२१) सिद्ध, (२२) साध्य, (२३) शुभ, (२४) शुक्ल, (२५) ब्रह्म, (२६) ऐंद्र, (२७) वैधृति ॥

बव आदि करणों के नाम - सम्पूर्ण-तिथिभोग का आधा भाग करण होता है **"तिथ्यर्थ करणम्"** । करण ११ होते हैं इनके नाम - बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि (विष्टि करण को भद्रा भी कहते हैं), अतिरिक्त चार करण शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किंस्तुघ्न ।

नयाविषय- आकाशीय ग्रह मण्डल की विधान सभा के दशाधिकारियों का निर्धारण-

- वर्ष प्रबोध श्लोक ७६ से १४५, पृष्ठ १६ से ३१, श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, मुम्बई
- सांवत्सरी पद्धति - तृतीयोऽध्यायः,श्लोक १ से, पृ-८५ से ॥, श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस,मुम्बई

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो वार हो वही वर्ष का राजा होता है (चैत्रशुक्लप्रतिपदि यो वारो भूपतिर्मतः) । ७६
मेष संक्रान्ति के दिन जो बार हो वही उस वर्ष का मंत्री अथवा सेनापति होता है -(मेषसक्रांतिवारेशो भवेत्सोपि चमूपतिः) ।
कर्क संक्रान्ति के दिन जो वार हो वही सस्येश होता है (कर्कसंक्रांतिवारेशः सस्यपः परिकीर्तितः) ।
धन की संक्राति के दिन जो वार हो वही धान्येश होता है । धान्य भी अन्न का नाम है और सस्य भी अन्न का ही नाम है किन्तु गर्मी में जो जौ, गेहूँ आदि होते हैं वह सस्य में समझे गये है और जाड़े में मोठ, मूंग बाजरी आदि होते है वह धान्य में समझे गये है (धनुः सक्रान्तिवारेशो धान्येशः परिकीर्तितः) ।
आर्द्रा प्रवेश के दिन जो वार हो वही मेघेश होता है (आर्द्राप्रवेशेयोवारोमेघेशः परिकीर्तितः) ।
तुला संक्रांति के दिन जो वार हो वह रसेश होता है (तुलासंक्रान्तिदिवसेयोवारः स रसाधिपः) ।
मकर संक्रांति के दिन जो वार हो वह नीरसेश होता है (नक्रसंक्रांतिवारेशो नीरसेशः प्रकीर्तितः) ।
मीन संक्रांति के दिन जो वार हो वह फलेश होता है (मीनसंक्रांतिवारेशः फलेशः परिकीर्तितः) ।
कन्या संक्रान्ति के दिन जो वार हो वह धनेश होता है (कन्यासंक्रातिदिनपोधनेशः परिकीर्तितः) ।
सिंह संक्रांति के दिन जो वार हो वह गढपति होता है (सिंहसंक्रान्तिवारेशोदुर्गेशः कथितोबुधैः) ॥ ले.पं.ग्यारसीलाल शर्मा

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्तम्

आश्वि. का. वै. माघ. मार्ग. फा. श्रा. तथा मे. कर्क.कं.तु. वृ. म. कुम्भस्थे रवौश्रेष्ठः २।६।७।१०।१३।१५ आसुतिथिपु । अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यांवाशुभदः स्मृतः वाराः - सू. शु. बृ. । सोमो मध्यमः पुन. पु. स्वा. उ. ३ श्र. ध. श. र. अश्वि. ह. ऽनु. रो. मृ. वि. ज्ये. स्वस्वामि नक्षत्रेवा । लग्नात् ३।६।११ पापा १।४।५।७।९।१० साम्याः । चन्द्र तारानुकूले । गुरुशुक्रयोरुदितयोः शुभे लग्ने १२ शुद्धे सति मृत्यादि योग रहिते । विष्णुमत्रेस्थिरे, शिवस्यचरे। दुर्गाया द्विःस्वेलग्ने । कूर्मचक्रशुद्धौ प्रारभेत् । - परमपूज्य गुरूजी (शताब्दि पंचाग)

पापग्रहाः (उग्र/क्रूराः वा)-

सूर्य, मंग.,शनि,राहु, केतु - यथा -
सूर्यभौमशनिराहुकेतवः पापसंज्ञखचराः क्षयिचन्द्रः ।
पूर्णचन्द्रगुरुशुक्रसोमजाःसर्वकर्मसु हि सौम्यखेचराः ॥
इति वसिष्ठेन कण्ठतः क्रूरत्वाभिधानादस्ति क्रूरत्वम् । स्वरोदयेऽपि - 'बुधशुक्रेन्दुजीवाश्च सदा सौम्यग्रहा मताः ।' इति । - **पीयूषधारा (पृ.३६७)**

सोग्रांगः इति । स उग्र अंगः ॥ स सहितः, उग्र उग्रग्रहाणाम् (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु) अंगः लग्नः ॥ **भाव** - लग्न में उक्त ग्रहों में से कोई एक भी ग्रह हो तो विवाह मुहूर्तों में सोग्रांगः लिखा रहता है ।

नया विषय - ॥ चैत्रादि चान्द्रमासों के वैदिक नाम ॥

बृहन्नारदीय महापुराणम् - पूर्वभाग- द्वितीयपाद, अध्याय ५६, श्लो.१३० से १३१, पृ. ६१७

मधुश्च माधवः शुक्रः शुचिश्चाथ नभस्ततः । नभस्य इष ऊर्जश्च सहाश्चैव सहस्यकः ॥१३०॥
तपास्तपस्य क्रमशश्चैत्रादीनां समाह्वयाः । यस्मिन्मासे पौर्णमासी येन धिष्ण्येन संयुता ॥१३१॥

सूचना - स्पष्टता के लिए पृष्ठ १४ (**संवत्सरनाम तालिकावाले** पृष्ठ) पर देखें ।

अपरञ्च - पुरुषार्थचिन्तामणिः पृ. १०,तथा च हेमाद्रौ- (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी)

चैत्रो मासो मधुः प्रोक्तो वैशाखो माधवो भवेत् । ज्येष्ठो मासश्च शुक्रः स्यादाषाढः शुचिरुच्यते ।
नभो मासः श्रावणः स्यान्नभस्यो भाद्र इष्यते । इषश्चाऽऽश्वयुजो मासः कार्तिकश्चोर्जसंज्ञकः ॥
सहो मासो मार्गशिरः सहस्यः पुष्यनामकः । माघमासस्तपः प्रोक्तस्तपस्यः फाल्गुनः स्मृतः ॥ (इति स्पष्टार्थः)

नया विषय - चतुर्दश मन्वन्तरों (१४ मनुओं) के नाम -

बृहन्नारदीय महापुराणे- विष्णु माहात्म्य वर्णन,पूर्वभागे- प्रथमपादे, अध्याय ४०, श्लो.१७ से ३३, पृष्ठ ३३५-३३६

सुधर्म उवाच - चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिनमुच्यते । एकस्मिन् दिवसे शक्र मनवश्च चतुर्दश ॥१७॥
इन्द्राश्चतुर्दश प्रोक्ता देवाश्च विविधाः पृथक् । इन्द्राणां चैव सर्वषां मन्वादीनां च वासव ॥१८॥
तुल्यता तेजसा लक्ष्म्या प्रभावेण बलेन च । तेषां नामानि वक्ष्यामि श्रृणुष्व सुसमाहितः ॥१९॥

हिंदी - सुधर्मा कहते हैं - एक हजार चतुर्युग (४००० युग) ब्रह्मा का एक दिन होता है । हे इन्द्र! उनके इस एक दिन में चतुर्दश मनु होते हैं । इन्द्र भी चतुर्दश कहे गये हैं । पृथक्-पृथक् भी विविध हैं । सभी इन्द्र तथा मनु तेज, लक्ष्मी, बल, प्रभाव में समान होते हैं । उनके पृथक्-पृथक् नामों को सुसमाहित होकर श्रवण करिये ॥१७-१९॥

स्वायंभुवो मनुः पूर्वं ततः स्वारोचिषस्तथा । उत्तमस्तामसश्चैव रैवतश्चाक्षुषस्तथा ॥२०॥
वैवस्वतो मनुश्चैव सूर्यसावर्णिरष्टमः । नवमो दक्षसावर्णिः सर्वदेव हिते रतः ॥२१॥
दशमो ब्रह्मसावर्णिर्द्धर्मसावर्णिकस्ततः । ततस्तु रुद्रसावर्णी रोचमानस्ततः स्मृतः ॥२२॥
भौत्यश्चतुर्दशः प्रोक्त एते हि मनवः स्मृताः । देवानिंद्राश्च वक्ष्यामि श्रृणुष्व विबुधर्षभ ॥२३॥

हिंदी - स्वायम्भुव सबसे पहले है । तदनन्तर स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, तदनन्तर वैवस्वत मनु जन्मे । सूर्य सावर्णि अष्टम मनु है । नवम है दक्षसावर्णि । ये सर्वदेव हित कार्य में रत थे । तदनन्तर ब्रह्म सावर्णि दशम है । एकादश हैं धर्मसावर्णि । द्वादश हैं रुद्रसावर्णि, त्रयोदश हैं रोचमान मनु । चतुर्दश हैं भौत्यसावर्णि (विष्णुपुराण में भौमश्चतुर्दशश्चात्र.) मनु । ये ही **चतुर्दश मनु** कहे जाते हैं । - ले. पं. ग्यारसीलाल शर्मा, मुम्बई

राहु काल और देशाचार - इस विशेष काल में १ घंटा ३० मिनट के लिए राहुकाल का अनिष्टकारी समय होता है । किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में इस समय को टाल देना चाहिए - दक्षिण भारत (कर्नाटक आदि) में ऐसी मान्यता है अन्यत्र नहीं । देशाचार के अनुसार सभी जगह पृथक पृथक मान्यताएं रहती हैं, जैसे महाराष्ट्र में घबाड़योग-करिदिन, गुजरात में विंछुडा, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर-प्रदेश, बिहार, आन्ध्रप्रदेश, बंगाल, हिमाचल-प्रदेश, उड़ीसा आदि भारत के अधिकांश भागों में भद्राकाल (विष्टि) में शुभकार्य नहीं करते हैं । अलग अलग स्थलों में भिन्न-भिन्न मान्यताएं-भाषाएं और देशाचार के अनुसार रीती रिवाज रहते हैं । भ्रान्तियों से बचना चाहिए । अलमतिविस्तरेण

॥ अष्टादश (१८) पुराणों के नाम ॥

०२. पद्म-महापुराण पातालखण्ड में -

ब्राह्मं पुराणं प्रथमं द्वितीयं पाद्ममुच्यते । तृतीयं वैष्णवं चैव चतुर्थं शैवमुच्यते ॥११५,८९॥
अथ भागवतं प्रोक्तं पञ्चमं षष्ठमुच्यते । भविष्यं नारदीयं च सप्तमं परिकीर्तितम् ॥११५,९०॥
मार्कण्डेयमिति प्रोक्तमष्टमं नवमं तथा । आग्नेयं ब्रह्मवैवर्त्तं दशमं परिकीर्तितम् ॥११५,९१॥
लैङ्गं च वामनं चैव स्कान्दं मात्स्यमथैव च । कौर्मं वाराहमुदितं गारुडं वाथ कीर्तितम् ॥११५,९२॥
ब्रह्माण्डमित्यष्टादश पुराणानि विदुर्बुधाः । .... ॥११५,९३॥ स्पष्टार्थः ।

०३. विष्णु-महापुराण तृतीय अंश में -

आद्यं सर्वपुराणानां पुराणं ब्राह्ममुच्यते । अष्टादशपुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते ॥६,२०॥
ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा । तथान्यं नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम् ॥६,२१॥
आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यन्नवमं स्मृतम् । दशमं ब्रह्मवैवर्त्तं लैङ्गमेकादशं स्मृतम् ॥६,२२॥
वाराहं द्वादशं चैव स्कान्दं चात्र त्रयोदशम् । चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पञ्चदशं तथा ॥६,२२॥
मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डं च ततः परम् । महापुराणान्येतानि ह्यष्टादश महामुने ॥६,२३॥स्पष्टार्थः

१३. स्कन्द-महापुराण (प्रथम माहेश्वरखण्डम्) कौमारिकाखण्ड में -

ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा । तथान्यन्नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम् ॥४०,१९९॥
आग्नेयमष्टमं प्रोक्तं भविष्यं नवमं स्मृतम् । दशमं ब्रह्मवैवर्त्तं लैङ्गमेकादशं तथा ॥४०,२००॥
वाराहं द्वादशं चैव स्कान्दं चैव त्रयोदशम् । चतुर्दशं वामनं च कौर्मंपञ्चदशं स्मृतम् ॥४०,२०१॥
मात्स्यंषोडषकं प्रोक्तं गारुडं च ततः परम् । अतः परं तु ब्रह्माण्डमेवञ्चाष्टादशानिहि ॥४०,२०२॥
स्पष्टार्थः ।

०६. नारदपुराण में - (मानव चतुर्युग वर्ष-प्रमाण)

युगमानं स्मृतं विप्र खचतुष्करदार्णवा ।
तद्दशांशास्तु चत्वारः कृताख्यं पादमुच्यते ॥ २,५४,६१ ॥
त्रयस्त्रेता द्वापरः द्वौ कलिरेकः प्रकीर्तितः ।
मनुं कृताब्दसहिता युगानामेकसप्ततिः ॥ २,५४,६२ ॥

अर्थ - [चतुर्युग प्रमाण] हे विप्रवर ! चारोंयुगों का एकीकृत मान तेतालीस लाख बीस हजार वर्ष निर्धारित है । इसका जो दशांश होता है उसको चार से गुणा करने पर कृतयुग संज्ञक पाद होगा (जिसका मान १७ लाख २८ हजार वर्ष स्वीकृत हैं) । उक्त दशांश को तीन से गुणा करने पर (१२,९६००० वर्ष) त्रेतायुग का पाद होगा । उक्त दशांश को दो से गुणा किया जाए तो द्वापर का पाद (८६,४००० वर्ष) होगा । अन्त में, उक्त दशांश को एक ही गुना स्वीकारने पर कलियुग नामक पाद (४३२००० वर्ष) होगा । कृतयुग सहित (संध्या रूप में एक कृतयुग की वृद्धि समेत) ७१ चतुर्युग का एक मन्वन्तर होता है ॥६१-६२॥

१३. स्कन्द-महापुराण (प्रथम माहेश्वरखण्डम्) कौमारिकाखण्ड में - (मानव चतुर्युग वर्ष-प्रमाण)

मनुष्याणां च वर्षाणि लक्षसप्तदशैव तु । अष्टाविंशति सहस्राणि कृतं त्रेतायुगं ततः ॥३१,५६॥
लक्षद्वादशसाहस्रषण्णवत्यधिकाः पराः । अष्टौ लक्षश्चतुःषष्टिसहस्राणि च द्वापरः ॥३१,५७॥
चतुर्लक्षन्तु द्वात्रिंशत्सहस्राणि कलिः स्मृतः । ....॥३१,५८॥

अर्थ - मनुष्यों के १७ लाख २८ हजार वर्ष का सत्ययुग होता है । बारह लाख ९६ हजार वर्ष का त्रेतायुग, आठ लाख ६४ हजार वर्ष का द्वापर तथा ४ लाख ३२ हजार वर्ष का कलियुग होता है ॥५६-५७-५८॥

क्रमांक	पुराणों के नाम
१	ब्रह्मपुराण
२	पद्मपुराण
३	विष्णुपुराण
४	शिवपुराण (वायुपुराण)
५	श्रीमद्भागवतपुराण
६	नारदीयपुराण
७	मार्कण्डेयपुराण
८	अग्निपुराण
९	भविष्यपुराण
१०	ब्रह्मवैवर्तपुराण
११	लिंगपुराण
१२	वाराहपुराण
१३	स्कन्दपुराण
१४	वामनपुराण
१५	कूर्मपुराण
१६	मत्स्यपुराण
१७	गरुड़पुराण
१८	ब्रह्माण्डपुराण

मानव और दैव चतुर्युग मान

०४. वायुपुराण में -

लौकिकेन प्रमाणेन विबुद्धोऽब्दस्तु मानुषः ।
तेनाब्देन प्रसंख्याय वक्ष्यामीह चतुर्युगम् ॥५७,५॥

भाव - मानव वर्ष लौकिक प्रमाण से माना गया है । उसी मानव वर्ष के प्रमाण से इन चारों युगों का प्रमाण बतला रहा हूँ ॥५॥

लौकिकेनैव मानेन अब्दो यो मानुषः स्मृतः ।
एतद्दिव्यमहोरात्रं शास्त्रेऽस्मिन्निश्चयो मतः ॥ ५७,१२॥
दिव्ये रात्र्यहणी वर्षं प्रविभागस्तयो पुनः ।
अहस्तत्रोदगयनं रात्रिः स्याद्दक्षिणायनम् ॥५७,१३॥

अर्थ - लौकिक मान से मानव के एक वर्ष का देवताओं का एक अहोरात्र इस शास्त्र में निश्चित माना गया है । इस दिव्य (देवताओं के) वर्ष का विभाग इस प्रकार है, उसमें उत्तरायण तो दिन है और दक्षिणायन रात्रि ॥१२-१३॥

मनुस्मृति में - एदेतत्परिसंख्यातमादावेव चतुर्युगम् ।
एतद्द्वादशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते ॥१,७१॥

भाव - १२००० हजार वर्ष देवताओं के चतुर्युग हैं ॥ इति स्पष्ट ॥

ब्रह्मस्फुटसिद्धान्त-४ (आचार्य ब्रह्मगुप्त,टीका- आचार्यवर रामस्वरूप, दिल्ली, १९६६)- मानाध्याय में -

युगवर्षं विषुवदयनर्त्त्वहर्निशोवृद्धिहानयः सौरात् ।
तिथिकरणाधिकमासोनरात्रपर्वक्रियाश्चान्द्रात् ॥२३,३॥

भाव-युगादीनि कृतादीनि तेषां या वर्षसंख्या सौरेण मानेन ग्राह्या । ...॥३॥

॥ मंगल दोष अपवाद ॥

ज्ञात हुआ है कि. वर अथवा कन्या की कुण्डली में मंगलदोष अर्थात् मांगलीक बताकर इतना भ्रम पैदा कर दिया जाता है कि माता पिता तो घबराते ही है अपि तु बच्चे (वर कन्या) भी चिंतित हो जाते हैं - मांगलीक प्रमाणित करने के लिए शास्त्र में बहुमत प्राप्त होता है वह कन्या शब्द के लिए है जैसे - **"कन्याभर्त्तु विनाशाय.."** इति प्रसिद्धः ॥ शास्त्रों में हमारे ऋषिगणों ने कन्या संज्ञा के लिए कितने वर्ष की आयु निर्धारित की है पढते है -

नारद, कश्यप, श्रीपतिनिबन्ध, पराशरादि सहित - अत एवाह व्यासः - 'अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी । दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वृषली स्मृता ॥' इति । **-पीयूषधारा पृ.३१४**

अपि च - दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वम् रजस्वला ॥५॥' इति । - **निर्णयसिन्धु पृ. ४५०**

प्राचीन आचार्यों के मत से १२ वर्ष से ऊपर कन्या संज्ञा नहीं रहती है । ज्ञातव्य है कि १२ वर्ष से ऊपर रजस्वला होने के कारण कन्या संज्ञा नहीं रहती है तो मंगल दोष कहाँ से होगा । अस्तु । मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि - कन्या की आयु १२ वर्ष और वर की आयु १६ वर्ष (प्राप्ते षोडशे वर्षे..) के बाद किसी भी तरह का कोई मंगलदोष नहीं होता है । - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग गणितकर्ता)

संवत् २०७९ में भद्रापुच्छकाल के प्रारम्भ और समाप्तिकाल का उदाहरण - किसी भी संवत् के लिए (धर्मशास्त्र के अनुसार "होलिका दहन निर्णय-")

अथ चतुर्थ्यादितिथिभद्रायां मुखपुच्छविभागादिकं शार्दूलविक्रीडितेनाह -

पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शरा,
विष्टेरास्यमसद्गजेन्दुरसरामाद्र्यश्विबाणाब्धिषु ।
यामेष्वन्त्यघटीत्रयंशुभकरं पुच्छं तथा वासरे,
विष्टिस्तिथ्यपरार्धजा शुभकरी रात्रौ तु पूर्वार्धजा ॥४४॥ - पीयूषधारा पृ.४२

(मुहूर्त्तचिन्तामणि प्रमिताक्षरा,पृ.३०. प्रका.सन १९२८, धर्मसिन्धु परि.२,पृ.२१८-१९, - भारत की सभी मुहूर्त्त चिन्तामणियों में उपर लिखा श्लोक देखा जा सकता है ..आदि)

पीयूषधारा पञ्चति । चतुर्थ्यादितिथिनां क्रमशः पञ्चादिप्रहरेषु शराः पञ्च नाडयः अदिमा विष्टेर्भद्राया आस्यं सुखं । यथा चतुर्थ्याः पञ्चमप्रहर आदिभूताः पञ्च घट्यो भद्रामुखम् । एवमष्टम्या द्वितीयप्रहरे एकादश्याः सप्तमप्रहरे **पौर्णमास्याश्चतुर्थप्रहरे,** तृतीयाया अष्टमप्रहरे, सप्तम्यास्तृतीयप्रहरे, चतुर्दश्याः प्रथमप्रहरे, **भद्रामुखमित्यर्थः ।** तद्भद्राया मुखमसदशुभमित्यर्थः । अथ पुनश्चतुर्थ्यादितिथीनां क्रमेण गजादिप्रहरेषु अन्त्यं अन्ते भवमन्त्यम् । 'दिगादिभ्यो यत्' इति यत् । घटीत्रयं पुच्छं पुच्छ संज्ञं तच्छुभकरं समस्तकार्येष्वित्यर्थः । यथा चतुर्थ्या अष्टमप्रहरस्यान्त्यघटीत्रयं भद्रापुच्छं एवमष्टम्याः प्रथमहरस्य एकादश्याः षष्ठप्रहरस्य **पूर्णिमायास्तृतीयप्रहरस्य** तृतीयायाः सप्तमप्रहरस्य सप्तम्याद्वितीयप्रहस्य दशम्याः पञ्चमप्रहरस्य चतुर्दश्याश्चतुर्थप्रहरस्यान्त्याघटीत्रयं भद्रापुच्छमित्यर्थः ।

पीताम्बरा :- भद्रा मुख और पुच्छ - चतुर्थी आदिक तिथियों में 'भद्रा का मुख और पुच्छ किन - किन प्रहरों में होता है ?' उन प्रहरों का उल्लेख किया जा रहा है । जैसे, शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि की पाँचवीं प्रहर के आदि की ५ घटी में भद्रा का मुख होता है । इस प्रकार अष्टमी के दूसरे प्रहर में, एकादशी के सातवें प्रहर में, **पौर्णमासी के चतुर्थ प्रहर** और कृष्णपक्ष की तृतीया में आठवें प्रहर, सप्तमी के तीसरे प्रहर, दशमी के छठे प्रहर और चतुर्दशी के प्रथम प्रहर की **आदि की ५ घटियों** में भद्रा का मुख होता है, जो शुभ कार्यों में अशुभ होता है ।

शुक्लपक्ष की पुनः चतुर्थी तिथि के अष्टम प्रहर की अन्त्य की ३ घटी, अष्टमी के प्रथम प्रहर के, एकादशी के छठे प्रहर की, **पूर्णिमा के तीसरे प्रहर** की और कृष्णपक्ष की तृतीया के सप्तम प्रहर की, सप्तमी के द्वितीय प्रहर की, दशमी के पाँचवे प्रहर की और चतुर्दशी के चौथे प्रहर के अन्त्य की ३ घटियों में भद्रा का पुच्छ होता है जो शुभ कहा गया है । तिथि के सम्पूर्ण मान (भोग घटी) में आठ से विभक्त लब्धि का मान गत प्रहर होता है ।

सूचना- पं.श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग में आदिकाल से "भद्रा-मुख-पुच्छ-घटी-ज्ञान" का कोष्टक दिया जाता रहा है । उपर दिया गया पीयूषधारा मु. का श्लोक इस कोष्टक की पुष्टी करता है । सम्प्रति संवत २०७८ के पृष्ठ ४८ और सं. २०७९ के पृष्ठ ४६ पर भी भद्रा-मुख-पुच्छ-घटी-ज्ञान का स्पष्ट विवरण देखा जा सकता है [१] ।

सूत्र - भद्रापुच्छ प्रारम्भकाल = तिथिभोग ÷ ८ x ३ – ३ (घट्यादि)

सूत्र - भद्रापुच्छ समाप्तिकाल = तिथिभोग ÷ ८ x ३

सूत्र - भद्रामुख समाप्तिकाल = तिथिभोग ÷ ८ x ३ + ५ (घट्यादि)

विशेषः - तिथिभोगः तृतीय प्रहर के समाप्तिकाल में, ४ प्रहर के आदि की ५ घटी जोड़ने से भद्रामुख का समाप्तिकाल होगा अर्थात् भद्रापुच्छ समाप्तिकाल के २ घंटे बाद भद्रामुख का समाप्तिकाल होगा. समझने के लिए यह २ घंटे वाला सूत्र सुगम है ।)

तिथिभोग (तिथि का भुक्त और भोग्य) में ८ (दिन और रात में ८ पहर होती हैं) का भाग देने से १ पहर का मान प्राप्त होगा (यहाँ पूर्णिमा का गणित करना है अतः पूर्णिमा के तीसरे पहर के अन्त की ३ घटी को पुच्छकाल कहा है जैसा कि उपर श्लोक में है "पूर्णिमायास्तृतीयप्रहरस्यान्त्याघटीत्रयं") १ पहर के मान को ३ से गुणा करने पर पूर्णिमा के ३ रे पहर का मान प्राप्त होगा और यही भद्रापुच्छ काल का समाप्तिकाल भी होगा, इस ३ रे पहर के मान में ३ घटी घटाने से भद्रापुच्छ काल का प्रवेशकाल होगा । स्पष्टता के लिए यहाँ एक **उदाहरण** दे रहा हूँ -

मिति - फाल्गुन शुक्ला १४ तदुपरान्त पूर्णिमा सोमवार संवत् २०७९, तारीख ६ मार्च २०२३

घटी पल
६०।००
– २३।३४ चतुर्दशी समाप्तिकाल, सोमवार
३६।२६ पूर्णिमा का भुक्तकाल, सोमवार
+ २८।१४ पूर्णिमा का भोग्यकाल, मंगलवार

पूर्णिमा का सम्पूर्णभोग ६४।४० ÷ ८ = ८।०५ पूर्णिमा के एक प्रहर का घट्यात्मक मान

८।०५ पूर्णिमा के एक प्रहर का घट्यात्मक मान
x ३
२४।१५ पूर्णिमा के तीन प्रहर का घट्यात्मक मान

२३।३४ घट्यात्मक, चतुर्दशी समाप्तिकाल सोमवार
+ २४।१५ घट्यात्मक, पूर्णिमा के तीन प्रहर का मान
४७।४९ सोमवार को सूर्योदय से पूर्णिमा के तृतीय प्रहर का घट्यात्मक समाप्तिकाल

४७।४९ ÷ २.५ (घंटा मिनट के लिए घटी में ढाई का भाग दिया = १९।०८)

घंटा मिनट
= १९।०८ सोमवार को सूर्योदय से पूर्णिमा के तृतीय प्रहर का घंटा-मिनटात्मक समाप्तिकाल
+ ६।५४ सूर्योदय
= २६।०२ सोमवार को उत्तररात्री भद्रापुच्छ काल का घंटा-मिनटात्मक समाप्तिकाल
– १।१२ तीन घटी का घंटा मिनट ऋण किया (पूर्णिमा के तृतीय प्रहर की अन्तिम ३ घटी)
२४।५० भद्रापुच्छ काल का घंटा-मिनटात्मक प्रारम्भकाल

गणित द्वारा होलिका दहन के लिए स्पष्ट स्टैं. समय :-

भद्रापुच्छ का समय रात्री २४।५० से २६।०२. (रात्री १२।५० बजे से २।०२ बजे तक)

भद्रामुख का प्रवेशकाल और समाप्तिकात

२६।०२ सोमवार को उत्तररात्री भद्रापुच्छ काल का घंटा-मिनट. समाप्तिकाल (भद्रामुख का प्रवेशकाल)
+ २।०० दो घंटा जोड़ने से भद्रामुख का घंटा-मिनटात्मक समाप्तिकाल होगा ।
२८।०२ सोमवार को उत्तररात्री भद्रामुख काल का घंटा-मिनटात्मक समाप्तिकाल

लेखक - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग गणितकर्ता)

१. **परम पूज्य श्रीगुरुजी द्वारा निर्मित विश्व विख्यात "वेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग मुम्बई, सरस्वती पंचांग नवलगढ़ और चण्डू पंचांग जोधपुर आदि . ."** में उपर लिखे सूत्रों के अनुसार ही आदिकाल से होलिका दहन दिया जाता रहा है । हमारे धर्म शास्त्रों में **ऋषियों** का परस्पर मत मतान्तर है लेकिन ग्राह्य उसे ही किया गया है जिस निर्णय में बहुमत प्राप्त हो । जैसा कि उपरोक्त सभी विद्वानों की एक वाक्यता है, परम पूज्य श्रीगुरुचरणों ने भी यही पक्ष ग्रहण किया है । कहा भी है - सारं ततो ग्राह्यमपास्यफल्गु,हंसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ॥ -गणितकर्ता

॥ अधिकमाससारणी ॥ ३०० वर्ष

- मानद् वें.बा. केतकर पद्धति

संवत्	शाकः	अधिकमास	प्रारम्भ तारीख	समाप्ति तारीख
१९५०	१८१५	आषाढ़	१४। ६।१८९३	१३। ७।१८९३
१९५३	१८१८	ज्येष्ठ	१२। ५।१८९६	११। ६।१८९६
१९५५	१८२०	आश्विन	१५। ९।१८९८	१५।१०।१८९८
१९५८	१८२३	श्रावण	१५। ७।१९०१	१४। ८।१९०१
१९६१	१८२६	ज्येष्ठ	१५। ५।१९०४	१३। ६।१९०४
१९६३	१८२८	फाल्गुन	१२। २।१९०७	१४। ३।१९०७
१९६६	१८३१	श्रावण	१७। ७।१९०९	१५। ८।१९०९
१९६९	१८३४	आषाढ़	१५। ६।१९१२	१४। ७।१९१२
१९७२	१८३७	वैशाख	१४। ४।१९१५	१४। ५।१९१५
१९७४	१८३९	आश्विन	१६। ९।१९१७	१६।१०।१९१७
१९७७	१८४२	श्रावण	१५। ७।१९२०	१४। ८।१९२०
१९८०	१८४५	ज्येष्ठ	१५। ५।१९२३	१४। ६।१९२३
१९८२	१८४७	फाल्गुन	१२। २।१९२६	१४। ३।१९२६
१९८५	१८५०	श्रावण	१७। ७।१९२८	१५। ८।१९२८
१९८८	१८५३	आषाढ़	१६। ६।१९३१	१५। ७।१९३१
१९९१	१८५६	वैशाख	१३। ४।१९३४	१३। ५।१९३४
१९९३	१८५८	भाद्रपद	१७। ८।१९३६	१५। ९।१९३६
१९९६	१८६१	श्रावण	१६। ७।१९३९	१५। ८।१९३९
१९९९	१८६४	ज्येष्ठ	१५। ५।१९४२	१३। ६।१९४२
२००२	१८६७	चैत्र	१४। ३।१९४५	१२। ४।१९४५
२००४	१८६९	श्रावण	१८। ७।१९४७	१६। ८।१९४७
२००७	१८७२	आषाढ़	१५। ६।१९५०	१५। ७।१९५०
२०१०	१८७५	वैशाख	१३। ४।१९५३	१३। ५।१९५३
२०१२	१८७७	भाद्रपद	१७। ८।१९५५	१६। ९।१९५५
२०१५	१८८०	श्रावण	१६। ७।१९५८	१५। ८।१९५८
२०१८	१८८३	ज्येष्ठ	१४। ५।१९६१	१३। ६।१९६१
२०२०	१८८५	कार्तिक	१७।१०।१९६३	१६।११।१९६३
२०२१	१८८६	चैत्र	१४। ३।१९६४	१२। ४।१९६४
२०२३	१८८८	श्रावण	१८। ७।१९६६	१६। ८।१९६६
२०२६	१८९१	आषाढ़	१४। ६।१९६९	१४। ७।१९६९
२०२९	१८९४	वैशाख	१३। ४।१९७२	१३। ५।१९७२
२०३१	१८९६	भाद्रपद	१७। ८।१९७४	१६। ९।१९७४
२०३४	१८९९	श्रावण	१६। ७।१९७७	१४। ८।१९७७
२०३७	१९०२	ज्येष्ठ	१४। ५।१९८०	१२। ६।१९८०
२०३९	१९०४	आश्विन	१७। ९।१९८२	१६।१०।१९८२
		फाल्गुन	१२। २।१९८३	१४। ३।१९८३
२०४२	१९०७	श्रावण	१७। ७।१९८५	१६। ८।१९८५
२०४५	१९१०	ज्येष्ठ	१५। ५।१९८८	१४। ६।१९८८
२०४८	१९१३	वैशाख	१४। ४।१९९१	१४। ५।१९९१
२०५०	१९१५	भाद्रपद	१७। ८।१९९३	१६। ९।१९९३
२०५३	१९१८	आषाढ़	१६। ६।१९९६	१५। ७।१९९६

संवत्	शाकः	अधिकमास	प्रारम्भ तारीख	समाप्ति तारीख
२०५६	१९२१	ज्येष्ठ	१५। ५।१९९९	१३। ६।१९९९
२०५८	१९२३	आश्विन	१७। ९।२००१	१६।१०।२००१
२०६१	१९२६	श्रावण	१७। ७।२००४	१६। ८।२००४
२०६४	१९२९	ज्येष्ठ	१६। ५।२००७	१५। ६।२००७
२०६७	१९३२	वैशाख	१४। ४।२०१०	१४। ५।२०१०
२०६९	१९३४	भाद्रपद	१७। ८।२०१२	१६। ९।२०१२
२०७२	१९३७	आषाढ़	१६। ६।२०१५	१६। ७।२०१५
२०७५	१९४०	ज्येष्ठ	१५। ५।२०१८	१३। ६।२०१८
२०७७	१९४२	आश्विन	१७। ९।२०२०	१६।१०।२०२०
२०८०	१९४५	श्रावण	१७। ७।२०२३	१६। ८।२०२३
२०८३	१९४८	ज्येष्ठ	१६। ५।२०२६	१५। ६।२०२६
२०८६	१९५१	चैत्र(शताब्दि)	१५। ३।२०२९	१३। ४।२०२९
२०८८	१९५३	भाद्रपद	१८। ८।२०३१	१६। ९।२०३१
२०९१	१९५६	आषाढ़	१६। ६।२०३४	१५। ७।२०३४
२०९४	१९५९	ज्येष्ठ	१५। ५।२०३७	१३। ६।२०३७
२०९६	१९६१	आश्विन	१८। ९।२०३९	१७।१०।२०३९
२०९९	१९६४	श्रावण	१७। ७।२०४२	१५। ८।२०४२
२१०२	१९६७	ज्येष्ठ	१६। ५।२०४५	१५। ६।२०४५
२१०५	१९७०	चैत्र	१४। ३।२०४८	१३। ४।२०४८
२१०७	१९७२	भाद्रपद	१७। ८।२०५०	१६। ९।२०५०
२११०	१९७५	आषाढ़	१६। ६।२०५३	१५। ७।२०५३
२११३	१९७८	वैशाख	१४। ४।२०५६	१४। ५।२०५६
२११५	१९८०	आश्विन	१७। ९।२०५८	१७।१०।२०५८
२११८	१९८३	श्रावण	१७। ७।२०६१	१५। ८।२०६१
२१२१	१९८६	ज्येष्ठ	१६। ५।२०६४	१४। ६।२०६४
२१२४	१९८९	चैत्र	१५। ३।२०६७	१३। ४।२०६७
२१२६	१९९१	श्रावण	१८। ७।२०६९	१६। ८।२०६९
२१२९	१९९४	आषाढ़	१६। ६।२०७२	१५। ७।२०७२
२१३२	१९९७	वैशाख	१५। ४।२०७५	१४। ५।२०७५
२१३४	१९९९	आश्विन	१७। ९।२०७७	१६।१०।२०७७
२१३७	२००२	श्रावण	१७। ७।२०८०	१५। ८।२०८०
२१४०	२००५	ज्येष्ठ	१६। ५।२०८३	१५। ६।२०८३
२१४३	२००८	चैत्र	१५। ३।२०८६	१३। ४।२०८६
२१४५	२०१०	श्रावण	१८। ७।२०८८	१६। ८।२०८८
२१४८	२०१३	आषाढ़	१७। ६।२०९१	१६। ७।२०९१
२१५१	२०१६	वैशाख	१५। ४।२०९४	१४। ५।२०९४
२१५३	२०१८	भाद्रपद	१८। ८।२०९६	१६। ९।२०९६
२१५६	२०२१	श्रावण	१८। ७।२०९९	१६। ८।२०९९
२१५९	२०२४	ज्येष्ठ	१७। ५।२१०२	१५। ६।२१०२
२१६२	२०२७	चैत्र	१६। ३।२१०५	१४। ४।२१०५
२१६४	२०२९	श्रावण	२०। ७।२१०७	१८। ८।२१०७
२१६७	२०३२	आषाढ़	१७। ६।२११०	१७। ७।२११०
२१७०	२०३५	वैशाख	१६। ४।२११३	१५। ५।२११३
२१७२	२०३७	भाद्रपद	१९। ८।२११५	१८। ९।२११५

संवत्	शाकः	अधिकमास	प्रारम्भ तारीख	समाप्ति तारीख
२१७५	२०४०	श्रावण	१८। ७।२११८	१७। ८।२११८
२१७८	२०४३	ज्येष्ठ	१६। ५।२१२१	१५। ६।२१२१
२१८०	२०४५	आश्विन	१९। ९।२१२३	१९।१०।२१२३
२१८१	२०४६	चैत्र	१६। ३।२१२४	१४। ४।२१२४
२१८३	२०४८	श्रावण	२०। ७।२१२६	१८। ८।२१२६
२१८६	२०५१	आषाढ़	१६। ६।२१२९	१६। ७।२१२९
२१८९	२०५४	वैशाख	१६। ४।२१३२	१५। ५।२१३२
२१९१	२०५६	भाद्रपद	१९। ८।२१३४	१८। ९।२१३४
२१९४	२०५९	श्रावण	१८। ७।२१३७	१६। ८।२१३७
२१९७	२०६२	ज्येष्ठ	१६। ५।२१४०	१४। ६।२१४०
२१९९	२०६४	आश्विन	१९। ९।२१४२	१९।१०।२१४२
२२०२	२०६७	श्रावण	१९। ७।२१४५	१८। ८।२१४५
२२०५	२०७०	ज्येष्ठ	१८। ५।२१४८	१६। ६।२१४८
२२०८	२०७३	वैशाख	१६। ४।२१५१	१६। ५।२१५१
२२१०	२०७५	भाद्रपद	१९। ८।२१५३	१८। ९।२१५३
२२१३	२०७८	आषाढ़	१७। ६।२१५६	१७। ७।२१५६
२२१६	२०८१	ज्येष्ठ	१७। ५।२१५९	१६। ६।२१५९
२२१८	२०८३	आश्विन	१९। ९।२१६१	१८।१०।२१६१
२२२१	२०८६	श्रावण	१९। ७।२१६४	१७। ८।२१६४
२२२४	२०८९	ज्येष्ठ	१८। ५।२१६७	१७। ६।२१६७
२२२७	२०९२	वैशाख	१६। ४।२१७०	१६। ५।२१७०
२२२९	२०९४	भाद्रपद	१९। ८।२१७२	१८। ९।२१७२
२२३२	२०९७	आषाढ़	१८। ६।२१७५	१८। ७।२१७५
२२३५	२१००	ज्येष्ठ	१७। ५।२१७८	१५। ६।२१७८
२२३७	२१०२	आश्विन	१९। ९।२१८०	१८।१०।२१८०
२२४०	२१०५	श्रावण	१९। ७।२१८३	१८। ८।२१८३
२२४३	२१०८	आषाढ़	१७। ६।२१८६	१६। ७।२१८६
२२४६	२१११	चैत्र	१६। ३।२१८९	१५। ४।२१८९
२२४८	२११३	भाद्रपद	१९। ८।२१९१	१८। ९।२१९१
२२५१	२११६	आषाढ़	१८। ६।२१९४	१७। ७।२१९४

॥ क्षयमाससारणी ॥ ६२० वर्ष

संवत्	शाकः	क्षयमास	प्रारम्भ तारीख	समाप्ति ता.
१८७९	१७४४	मार्गशीर्ष	१३।१२।१८२२	१२। १।१८२३
२०२०	१८८५	कार्तिक	१६।११।१९६३	१६।१२।१९६३
२०३९	१९०४	पोष	१४। १।१९८३	१२। २।१९८३
२१८०	२०४५	मार्गशीर्ष	१७।१२।२१२३	१६। १।२१२४
२३४०	२२०५	मार्गशीर्ष	१९।१२।२२८३	१८। १।२२८४
२४८१	२३४६	कार्तिक	२१।११।२४२४	२१।१२।२४२४
२५००	२३६५	पोष	२०। १।२४४४	१९। २।२४४४

(दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभिः)

गणितकर्ता - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री), मुम्बई. ४०० ०५७

विशेष सूचना - मानद् वे.बा. केतकर पद्धति से मेरे द्वारा अधिकमास और क्षयमास का गणित किया हुआ ५००० (पाँच हजार) वर्ष का उपलब्ध है. किसी भी पंचांग कर्ता या इस विषय से संबंधित व्यक्ति को आवश्यकता हो तो संपर्क करें। मूल्य श्रीगुरुचरणों में सस्नेह प्रणाम होगा अर्थात् निशुल्क होगा। मेरे द्वारा दिनरात परिश्रम करके जो अर्जित अनमोल धरोहर के रुप में विद्या ... मेरा परिश्रम सफल होगा और भ्रऋण से मुक्त हो जउँगा। कहा भी है - अध्यापनमध्ययनम् यजनं याजनं तथा। दानं ...॥

॥ संवत्सरनाम तालिका ॥ (संवत् १९८५ से २०९६ तक), पृ. १

	१	२				
संवत्	संवत्सरनाम सामान्यसूत्र	मेषाऽर्क तारीख	समय	मध्यम गुरु राशि अंश क.वि.	गत मासादि मास दिन घ.प.	संवत्सरनाम मध्यमगुरु
१९८५	वृष	१२/ ४/१९२८	२९।४८	मीन २९।५४।५३	११।२८।५६।३८	विक्रम
						लुप्त वृष
१९८६	चित्रभानु	१३/ ४/१९२९	११।५७	वृष ००।१६।००	००।०३।१०।०५	चित्रभानु
१९८७	सुभानु	१३/ ४/१९३०	१८।०६	मिथुन ००।३७।०७	००।०७।२३।३१	सुभानु
१९८८	तारण	१३/ ४/१९३१	२४।१५	कर्क ००।५८।१५	००।११।३६।५८	तारण
१९८९	पार्थिव	१२/ ४/१९३२	३०।२४	सिंह ०१।१९।२२	००।१५।५०।२४	पार्थिव
१९९०	व्यय	१३/ ४/१९३३	१२।३३	कन्या ०१।४०।२९	००।२०।०३।५०	व्यय
१९९१	सर्वजित्	१३/ ४/१९३४	१८।४२	तुला ०२।०१।३६	००।२४।१७।१७	सर्वजित्
१९९२	सर्वधारी	१३/ ४/१९३५	२४।५२	वृश्चिक ०२।२२।४३	००।२८।३०।४३	सर्वधारी
१९९३	विरोधी	१३/ ४/१९३६	७।०१	धनु ०२।४३।५०	०१।०२।४४।१०	विरोधी
१९९४	विकृति	१३/ ४/१९३७	१३।१०	मकर ०३।०४।५८	०१।०६।५७।३६	विकृति
१९९५	स्वर	१३/ ४/१९३८	१९।१९	कुंभ ०३।२६।०५	०१।११।११।०२	स्वर
१९९६	नन्दन.	१३/ ४/१९३९	२५।२८	मीन ०३।४७।१२	०१।१५।२४।२९	नन्दन
१९९७	विजय	१३/ ४/१९४०	७।३७	मेष ०४।०८।१९	०१।१९।३७।५५	विजय
१९९८	जय	१३/ ४/१९४१	१३।४६	वृष ०४।२९।२६	०१।२३।५१।२२	जय
१९९९	मन्मथ	१३/ ४/१९४२	१९।५५	मिथुन ०४।५०।३४	०१।२८।०४।४८	मन्मथ
२०००	दुर्मुख	१३/ ४/१९४३	२६।०५	कर्क ०५।११।४१	०२।०२।१८।१४	दुर्मुख
२००१	हेमलम्बी	१३/ ४/१९४४	८।१४	सिंह ०५।३२।४८	०२।०६।३१।४१	हेमलम्बी
२००२	विलम्बी	१३/ ४/१९४५	१४।२३	कन्या ०५।५३।५५	०२।१०।४५।०७	विलम्बी
२००३	विकारी	१३/ ४/१९४६	२०।३२	तुला ०६।१५।०२	०२।१४।५८।३४	विकारी
२००४	शार्वरी	१३/ ४/१९४७	२६।४१	वृश्चिक ०६।३६।१०	०२।१९।१२।००	शार्वरी
२००५	प्लव	१३/ ४/१९४८	८।५०	धनु ०६।५७।१७	०२।२३।२५।२६	प्लव
२००६	शुभकृत्	१३/ ४/१९४९	१४।५९	मकर ०७।१८।२४	०२।२७।३८।५३	शुभकृत्
२००७	शोभकृत्	१३/ ४/१९५०	२१।०८	कुंभ ०७।३९।३१	०३।०१।५२।१९	शोभकृत्
२००८	क्रोधी	१३/ ४/१९५१	२७।१८	मीन ०८।००।३८	०३।०६।०५।४६	क्रोधी
२००९	विश्वावसु	१३/ ४/१९५२	९।२७	मेष ०८।२१।४६	०३।१०।१९।१२	विश्वावसु
२०१०	पराभव	१३/ ४/१९५३	१५।३६	वृष ०८।४२।५३	०३।१४।३२।३८	पराभव
२०११	प्लवङ्ग	१३/ ४/१९५४	२१।४५	मिथुन ०९।०४।००	०३।१८।४६।०५	प्लवङ्ग
२०१२	कीलक	१३/ ४/१९५५	२७।५४	कर्क ०९।२५।०७	०३।२२।५९।३१	कीलक
२०१३	सौम्य	१३/ ४/१९५६	१०।०३	सिंह ०९।४६।१४	०३।२७।१२।५८	सौम्य
२०१४	साधारण	१३/ ४/१९५७	१६।१२	कन्या १०।०७।२२	०४।०१।२६।२४	साधारण
२०१५	विरोधकृत्	१३/ ४/१९५८	२२।२२	तुला १०।२८।२९	०४।०५।३९।५०	विरोधकृत्
२०१६	परिधावी	१३/ ४/१९५९	२८।३१	वृश्चिक १०।४९।३६	०४।०९।५३।१७	परिधावी
२०१७	प्रमादी	१३/ ४/१९६०	१०।४०	धनु ११।१०।४३	०४।१४।०६।४३	प्रमादी
२०१८	आनन्द	१३/ ४/१९६१	१६।४९	मकर ११।३१।५०	०४।१८।२०।१०	आनन्द
२०१९	राक्षस	१३/ ४/१९६२	२२।५८	कुंभ ११।५२।५८	०४।२२।३३।३६	राक्षस
२०२०	नल	१३/ ४/१९६३	२९।०७	मीन १२।१४।०५	०४।२६।४७।०२	नल

३		
स्पष्ट गुरु राशि अंश क.वि.	गत मासादि मास दिन घ.प.	संवत्सरनाम स्पष्टगुरु
मीन २५।२०।१४	१०।०४।०२।५१	विक्रम
मेष २३।०६।०५	०९।०७।१२।५४	वृष
वृष २१।०२।३९	०८।१२।३१।४३	चित्रभानु
मिथुन १९।४२।०१	०७।२६।२४।१३	सुभानु
कर्क १९।४०।३६	०७।२६।०७।११	तारण
सिंह २१।२४।३०	०८।१६।५४।००	पार्थिव
कन्या २४।४३।०८	०९।२६।३७।४१	व्यय
तुला २८।३२।४६	११।१२।३३।०८	सर्वजित्
		लुप्त सर्वधारी
धनु ०१।३०।३९	००।१८।०७।५४	विरोधी
मकर ०२।५०।१५	०१।०४।०३।०१	विकृति
कुंभ ०२।३४।५६	०१।००।५९।१३	स्वर
मीन ०१।१२।१७	००।१४।२७।१८	नन्दन
		वृद्धि नन्दन
मीन २९।११।४१	११।२०।२०।१०	नन्दन
मेष २६।५८।३०	१०।२३।४१।५५	विजय
वृष २४।५९।०७	०९।२९।४९।२२	जय
मिथुन २३।४६।०४	०९।१५।१२।४८	मन्मथ
कर्क २३।५५।१८	०९।१७।०३।३२	दुर्मुख
सिंह २५।५०।४०	१०।१०।०८।०२	हेमलम्बी
कन्या २९।१५।२०	११।२१।०४।०४	विलम्बी
		लुप्त विकारी
वृश्चिक ०३।०१।२८	०१।०६।१७।३९	शार्वरी
धनु ०५।४८।५६	०२।०९।४७।१०	प्लव
मकर ०६।५७।२९	०२।२३।२९।४३	शुभकृत्
कुंभ ०६।३४।१८	०२।१८।५१।३२	शोभकृत्
मीन ०५।०७।०९	०२।०१।२५।५०	क्रोधी
मेष ०३।०४।२३	०१।०६।५२।३९	विश्वावसु
वृष ००।५१।०८	००।१०।१३।३२	पराभव
		वृद्धि पराभव
वृष २८।५४।५०	११।१६।५७।५६	पराभव
मिथुन २७।४९।३१	११।०३।५४।१३	प्लवङ्ग
कर्क २८।११।१७	११।०८।१५।३०	कीलक
		लुप्त सौम्य
कन्या ००।२०।४२	००।०४।०८।२४	साधारण
तुला ०३।५३।५३	०१।१६।४६।३५	विरोधकृत्
वृश्चिक ०७।३७।४२	०३।०१।३२।१९	परिधावी
धनु १०।१४।२२	०४।०२।५२।२०	प्रमादी
मकर ११।१०।०७	०४।१४।०१।२८	आनन्द
कुंभ १०।३६।१२	०४।०७।१४।२०	राक्षस
मीन ०९।०१।०३	०३।१८।१२।३४	नल

प्रभवादि संवत्सर सूत्र

संवत्सरनाम के गणित हेतु अनेक ग्रंथ हैं लेकिन यहाँ मुख्य रुप से तीन ग्रंथो की चर्चा करता हूँ ।

(१) वर्षप्रबोध और सावंत्सरी पद्धति

(२) मानसागरी

(३) बृहद् वाराहमिहिर संहिता ।

पं. श्रीबल्लभ मनीराम पंचांग में वर्षप्रबोध और सावंत्सरी पद्धति का सामान्य सूत्र उपयोग में लिया है जिसमें न कोई लुप्त है न कोई वृद्धि इसका विस्तार से वर्णन इन्ही पृष्टों पर संवत् २०८० के पंचांग में करूँगा । गुरु कृपा से अभी **संवत् २०८१ से २०९० के पंचांग** का गणित कर रहा हूँ अतः समय का अभाव है ।

(१) वर्षप्रबोध और सावंत्सरी पद्धति में सामान्य सूत्र दिया है जो न कभी लुप्त होता है और न कभी वृद्धि होती है, **दूसरा सूत्र** मध्यम गुरु के आधार पर भी दिया है जो लगभग ८५ वर्ष में मात्र लुप्त होता है वृद्धि कभी नहीं होती है, जैसा कि संवत्सरनाम तालिका में (संवत् १९८५ में वृष और संवत् २०७० में प्लवंग) का लुप्त दर्शाया गया है ।

(२) मानसागरी में सामान्य सूत्र दिया है जो न कभी लुप्त होता है और न कभी वृद्धि होती है, **दूसरा सूत्र मध्यम गुरु** के आधार पर दिया है, जो मात्र लुप्त होता है वृद्धि कभी नहीं होती है ।

(३) बृहद् वाराहमिहिर संहिता (यथा नाम तथा गुणा) में बहुत विस्तार से और बहुत प्रकार से दिया है, जिसमें सामान्य सूत्र और मध्यम गुरु के आधार पर तो लिखा ही है अन्य भी गुरुचाराधाय में गुरु के विषय में बहुत कुछ विषय लिखा है उसके लिए अभी समय का अभाव है, अलमिति ।

भूमण्डल की सम्पूर्ण आकांक्षायें (इच्छाएं) सर्वशक्तिमान ईश्वराधीन हैं - ।

- शेष अगले पृष्ठ पर . . .

॥ संवत्सरनाम तालिका ॥ (संवत् १९८५ से २०९६ तक), पृ. २

	१	२					३		
संवत्	संवत्सरनाम सामान्यसूत्र	मेषार्क तारीख	समय	मध्यम गुरु राशि अंश क.वि.	गत मासादि मास दिन घ.प.	संवत्सरनाम मध्यमगुरु	स्पष्ट गुरु राशि अंश क.वि.	गत मासादि मास दिन घ.प.	संवत्सरनाम स्पष्टगुरु
२०२१	पिङ्गल	१३/ ४/१९६४	११।१६	मेष १२।३५।१२	०५।०१।००।२९	पिङ्गल	मेष ०६।५२।४६	०२।२२।३३।०७	पिङ्गल
२०२२	कालयुक्त	१३/ ४/१९६५	१७।२५	वृष १२।५६।१९	०५।०५।१३।५५	कालयुक्त	वृष ०४।३७।०७	०१।२५।२५।२४	कालयुक्त
२०२३	सिद्धार्थी	१३/ ४/१९६६	२३।३५	मिथुन १३।१७।२६	०५।०९।२७।२२	सिद्धार्थी	मिथुन ०२।४३।१९	०१।०२।३९।४३	सिद्धार्थी
२०२४	रौद्र	१३/ ४/१९६७	२९।४४	कर्क १३।३८।३४	०५।१३।४०।४८	रौद्र	कर्क ०१।४७।०४	००।२१।२४।४७	रौद्र
२०२५	दुर्मति	१३/ ४/१९६८	११।५३	सिंह १३।५९।४१	०५।१७।५४।१४	दुर्मति	सिंह ०२।२४।१०	००।२८।४९।५८	दुर्मति
२०२६	दुन्दुभि	१३/ ४/१९६९	१८।०२	कन्या १४।२०।४८	०५।२२।०७।४१	दुन्दुभि	कन्या ०४।५०।३५	०१।२८।०७।००	दुन्दुभि
२०२७	रुधिरोद्गारी	१३/ ४/१९७०	२४।११	तुला १४।४१।५५	०५।२६।२१।०७	रुधिरोद्गारी	तुला ०८।३३।५१	०३।१२।४६।१०	रुधिरोद्गारी
२०२८	रक्ताक्षी	१३/ ४/१९७१	३०।२०	वृश्चिक १५।०३।०२	०६।००।३४।३४	रक्ताक्षी	वृश्चिक १२।१४।५७	०४।२६।५९।२६	रक्ताक्षी
२०२९	क्रोधन	१३/ ४/१९७२	१२।२९	धनु १५।२४।०९	०६।०४।४८।००	क्रोधन	धनु १४।३९।२०	०५।२५।५२।०१	क्रोधन
२०३०	क्षय	१३/ ४/१९७३	१८।३८	मकर १५।४५।१७	०६।०९।०१।२६	क्षय	मकर १५।२०।४२	०६।०४।०८।२५	क्षय
२०३१	प्रभव	१३/ ४/१९७४	२४।४८	कुंभ १६।०६।२४	०६।१३।१४।५३	प्रभव	कुंभ १४।३५।०६	०५।२५।०१।१०	प्रभव
२०३२	विभव	१४/ ४/१९७५	६।५७	मीन १६।२७।३१	०६।१७।२८।१९	विभव	मीन १२।५२।२२	०५।०४।२८।२१	विभव
२०३३	शुक्ल	१३/ ४/१९७६	१३।०६	मेष १६।४८।३८	०६।२१।४१।४६	शुक्ल	मेष १०।४०।२८	०४।०८।०५।३६	शुक्ल
२०३४	प्रमोद	१३/ ४/१९७७	१९।१५	वृष १७।०९।४५	०६।२५।५५।१२	प्रमोद	वृष ०८।२५।४५	०३।११।०९।००	प्रमोद
२०३५	प्रजापति	१३/ ४/१९७८	२५।२४	मिथुन १७।३०।५३	०७।००।०८।३८	प्रजापति	मिथुन ०६।३८।१६	०२।१९।३९।१५	प्रजापति
२०३६	अङ्गिरा	१४/ ४/१९७९	७।३३	कर्क १७।५२।००	०७।०४।२२।०५	अङ्गिरा	कर्क ०५।५४।०८	०२।१०।४९।३८	अङ्गिरा
२०३७	श्रीमुख	१३/ ४/१९८०	१३।४२	सिंह १८।१३।०७	०७।०८।३५।३१	श्रीमुख	सिंह ०६।४८।०३	०२।२१।३६।३२	श्रीमुख
२०३८	भाव	१३/ ४/१९८१	१९।५२	कन्या १८।३४।१४	०७।१२।४८।५८	भाव	कन्या ०९।२९।३०	०३।२३।५४।०३	भाव
२०३९	युवा	१३/ ४/१९८२	२६।०१	तुला १८।५५।२१	०७।१७।०२।२४	युवा	तुला १३।१७।३३	०५।०९।३०।३४	युवा
२०४०	धाता	१४/ ४/१९८३	८।१०	वृश्चिक १९।१६।२९	०७।२१।१५।५०	धाता	वृश्चिक १६।४९।४७	०६।२१।५७।२२	धाता
२०४१	ईश्वर	१३/ ४/१९८४	१४।१९	धनु १९।३७।३६	०७।२५।२९।१७	ईश्वर	धनु १८।५७।०३	०७।१७।२४।४०	ईश्वर
२०४२	बहुधान्य	१३/ ४/१९८५	२०।२८	मकर १९।५८।४३	०७।२९।४२।४३	बहुधान्य	मकर १९।२१।५४	०७।२२।२२।४८	बहुधान्य
२०४३	प्रमाथी	१३/ ४/१९८६	२६।३७	कुंभ २०।१९।५०	०८।०३।५६।१०	प्रमाथी	कुंभ १८।२४।४३	०७।१०।५६।३९	प्रमाथी
२०४४	विक्रम	१४/ ४/१९८७	८।४६	मीन २०।४०।५७	०८।०८।०९।३६	विक्रम	मीन १६।३६।१५	०६।१९।१५।००	विक्रम
२०४५	वृष	१३/ ४/१९८८	१४।५५	मेष २१।०२।०५	०८।१२।२३।०२	वृष	मेष १४।२३।५९	०५।२२।४७।४५	वृष
२०४६	चित्रभानु	१३/ ४/१९८९	२१।०५	वृष २१।२३।१२	०८।१६।३६।२९	चित्रभानु	वृष १२।१३।४८	०४।२६।४५।३९	चित्रभानु
२०४७	सुभानु	१३/ ४/१९९०	२७।१४	मिथुन २१।४४।१९	०८।२०।४९।५५	सुभानु	मिथुन १०।३५।४४	०४।०७।०८।४९	सुभानु
२०४८	तारण	१४/ ४/१९९१	९।२३	कर्क २२।०५।२६	०८।२५।०३।२२	तारण	कर्क १०।०५।३०	०४।०१।०६।०२	तारण
२०४९	पार्थिव	१३/ ४/१९९२	१५।३२	सिंह २२।२६।३३	०८।२९।१६।४८	पार्थिव	सिंह ११।१५।२७	०४।१५।०५।२९	पार्थिव
२०५०	व्यय	१३/ ४/१९९३	२१।४१	कन्या २२।४७।४१	०९।०३।३०।१४	व्यय	कन्या १४।०९।११	०५।१९।५०।१५	व्यय
२०५१	सर्वजित्	१३/ ४/१९९४	२७।५०	तुला २३।०८।४८	०९।०७।४३।४१	सर्वजित्	तुला १७।५८।३८	०७।०५।४३।४१	सर्वजित्
२०५२	सर्वधारी	१४/ ४/१९९५	९।५९	वृश्चिक २३।२९।५५	०९।११।५७।०७	सर्वधारी	वृश्चिक २१।२०।३३	०८।१६।०६।३२	सर्वधारी
२०५३	विरोधी	१३/ ४/१९९६	१६।०८	धनु २३।५१।०२	०९।१६।१०।३४	विरोधी	धनु २३।१२।३६	०९।०८।३१।१३	विरोधी
२०५४	विकृति	१३/ ४/१९९७	२२।१८	मकर २४।१२।०९	०९।२०।२४।००	विकृति	मकर २३।२४।२८	०९।१०।५३।३१	विकृति
२०५५	खर	१३/ ४/१९९८	२८।२७	कुंभ २४।३३।१७	०९।२४।३७।२६	खर	कुंभ २२।१९।१६	०८।२७।५१।०८	खर
२०५६	नन्दन	१४/ ४/१९९९	१०।३६	मीन २४।५४।२४	०९।२८।५०।५३	नन्दन	मीन २०।२७।२२	०८।०५।२८।२८	नन्दन
२०५७	विजय	१३/ ४/२०००	१६।४५	मेष २५।१५।३१	१०।०३।०४।१९	विजय	मेष १८।१५।१६	०७।०९।०३।१०	विजय
२०५८	जय	१३/ ४/२००१	२२।५४	वृष २५।३६।३८	१०।०७।१७।४६	जय	वृष १६।०८।२५	०६।१३।४१।०५	जय
२०५९	मन्मथ	१३/ ४/२००२	२९।०३	मिथुन २५।५७।४५	१०।११।३१।१२	मन्मथ	मिथुन १४।३७।१२	०५।२५।२६।१९	मन्मथ
२०६०	दुर्मुख	१४/ ४/२००३	११।१२	कर्क २६।१८।५२	१०।१५।४४।३८	दुर्मुख	कर्क १४।१७।१९	०५।२१।२७।४४	दुर्मुख
२०६१	हेमलम्बी	१३/ ४/२००४	१७।२२	सिंह २६।४०।००	१०।१९।५८।०५	हेमलम्बी	सिंह १५।३९।०७	०६।०७।४९।२७	हेमलम्बी
२०६२	विलम्बी	१३/ ४/२००५	२३।३१	कन्या २७।०१।०७	१०।२४।११।३१	विलम्बी	कन्या १८।४१।०३	०७।१४।१२।३२	विलम्बी

पिछले पृष्ठ का शेष -

विशेष - पूर्वकाल में केल्कुलेटर या कम्प्यूटर नहीं था तब तो कष्टप्रद होने के कारण मध्यम गुरु से संवत्सर का गणित ठीक था जैसा कि वेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग में श्रीगुरुचरणों ने किया। मैं अध्ययन करने (मुरारका हाऊस) जाता था तब परम पूज्य श्रीगुरुजी ने सन १९८२ (yr-1982) में पहली बार केल्कुलेटर देखा था और अद्भुत आश्चर्य व्यक्त किया था और **परमपूज्य श्रीगुरुजी ने कहा कि -**

शताब्दि पंचांग का निर्माण कर रहा था यदि उस समय मुझे यह मशीन (केल्कुलेटर) मिल जाती तो मैं १000 एक हजार वर्ष (विक्रम संवत् २001 से 3000 तक) का पञ्चाङ्ग बना देता. तो मैंने श्रीगुरुचरणों में निवेदन किया था कि आपका वरद् आशिर्वाद रहा और स्वास्थ्य व सामर्थ्य रही तो यह कार्य मैं पूरा करने का प्रयास करूँगा। उन बातों को ३९ वर्ष पूरे हो गये लेकिन-'हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार' (अर्थात् समाज के सामने लाने में असमर्थ रहा) गणित किया हुआ पञ्चाङ्ग वर्षों से तैयार है लेकिन DTP नहीं करवा सका, . . . ? ? ?

जो स्वयं पञ्चाङ्गगणितकर्ता हैं वे ही असाध्य परिश्रम की कल्पना कर सकते हैं कि श्रीगुरुजी ने केल्कुलेटर और कम्प्यूटर की सहायता के बिना शताब्दि पंचांग कैसे तैयार किया होगा, श्रीगुरुजी का बहु-परिश्रम पञ्चाङ्गगणितकर्ताओं के लिए सर्वदा स्तुत्य है और रहेगा। श्री गुरोरर्पणमस्तु।

सारांश - मेरे मत से सामान्यसूत्र के आधार पर संवत्सर का नाम दें. जिसमें न लुप्त है, न वृद्धि। आपका मत यदि स्पष्टगुरु के आधार पर संवत्सर का नाम देना है जिसमें लुप्त संवत्सर भी है और वृद्धि भी है। भारत के सभी पंचांगकर्ताओं से निवेदन है कि यदि एक मत हों तो? कृपया पत्र या फोन से सम्पर्क कर जानकारी दें। आपका मत स्पष्टगुरु के आधार पर संवत्सर का नाम देना उचित है तो आगामी संवत् २०८० में संवत् २०९७ से २२०० तक की संवत्सरनाम तालिका आजायेगी लेकिन एक वाक्यता होना वर्तमान समय की आवश्यकता है।

सर्वदा श्री गुरुचरणध्यानस्थ -

पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री), मुम्बई.
Mob. +91 8976852920

॥ संवत्सरनाम तालिका ॥ (संवत् १९८५ से २०९६ तक), पृ. ३

	१	२					३		
संवत्	संवत्सरनाम सामान्यसूत्र	मेषाऽर्क तारीख	समय	मध्यम गुरु राशि अंश क.वि.	गत मासादि मास दिन घ.प.	संवत्सरनाम मध्यमगुरु	स्पष्ट गुरु राशि अंश क.वि.	गत मासादि मास दिन घ.प.	संवत्सरनाम स्पष्टगुरु
२०६३	विकारी	१३/ ४/२००६	२९।४०	तुला २७।२२।१४	१०।२८।२४।५८	विकारी	तुला २२।२९।३४	०८।२९।५४।४८	विकारी
२०६४	शार्वरी	१४/ ४/२००७	११।४९	वृश्चिक २७।४३।२१	११।०२।३८।२४	शार्वरी	वृश्चिक २५।४१।५७	१०।०८।२३।२५	शार्वरी
२०६५	प्लव	१३/ ४/२००८	१७।५८	धनु २८।०४।२९	११।०६।५१।५०	प्लव	धनु २७।२२।०८	१०।२८।२५।३४	प्लव
२०६६	शुभकृत्	१३/ ४/२००९	२४।०७	मकर २८।२५।३६	११।११।०५।१७	शुभकृत्	मकर २७।२४।५३	१०।२८।५८।३७	शुभकृत्
२०६७	शोभकृत्	१३/ ४/२०१०	३०।१६	कुंभ २८।४६।४३	११।१५।१८।४३	शोभकृत्	कुंभ २६।१४।२७	१०।१४।५३।२८	शोभकृत्
२०६८	क्रोधी	१४/ ४/२०११	१२।२५	मीन २९।०७।५०	११।१९।३२।१०	क्रोधी	मीन २४।२०।०९	०९।२२।०१।४५	क्रोधी
२०६९	विश्वावसु	१३/ ४/२०१२	१८।३५	मेष २९।२८।५७	११।२३।४५।३६	विश्वावसु	मेष २२।०७।३८	०८।२५।३१।४१	विश्वावसु
२०७०	पराभव	१३/ ४/२०१३	२४।४४	वृष २९।५०।०४	११।२७।५९।०२	पराभव	वृष २०।०३।००	०८।००।३५।५४	पराभव
						लुप्त प्लवङ्ग			
२०७१	प्लवङ्ग	१४/ ४/२०१४	६।५३	कर्क ००।११।१२	००।०२।१२।२९	कीलक	मिथुन १८।३७।५०	०७।१३।३३।५८	प्लवङ्ग
२०७२	कीलक	१४/ ४/२०१५	१३।०२	सिंह ००।३२।१९	००।०६।२५।५५	सौम्य	कर्क १८।२९।१४	०७।११।५०।४३	कीलक
२०७३	सौम्य	१३/ ४/२०१६	१९।११	कन्या ००।५३।२६	००।१०।३९।२२	साधारण	सिंह २०।०४।५९	०८।००।५९।४७	सौम्य
२०७४	साधारण	१३/ ४/२०१७	२५।२०	तुला ०१।१४।३३	००।१४।५२।४८	विरोधकृत्	कन्या २३।१७।३९	०९।०९।३१।४८	साधारण
२०७५	विरोधकृत्	१४/ ४/२०१८	७।२९	वृश्चिक ०१।३५।४०	००।१९।०६।१४	परिधावी	तुला २७।०७।१४	१०।२५।२६।५३	विरोधकृत्
									लुप्त परिधावी
२०७६	परिधावी	१४/ ४/२०१९	१३।३८	धनु ०१।५६।४८	००।२३।१९।४१	प्रमादी	धनु ००।१०।४१	००।०२।०८।०९	प्रमादी
२०७७	प्रमादी	१३/ ४/२०२०	१९।४८	मकर ०२।१७।५५	००।२७।३३।०७	आनन्द	मकर ०१।३८।१५	००।१९।३८।५८	आनन्द
२०७८	आनन्द	१३/ ४/२०२१	२५।५७	कुंभ ०२।३९।०२	०१।०१।४६।३४	राक्षस	कुंभ ०१।२९।४६	००।१७।५७।१५	राक्षस
२०७९	राक्षस	१४/ ४/२०२२	८।०६	मीन ०३।००।०९	०१।०६।००।००	नल	मीन ००।११।००	००।०२।१२।०५	नल
									वृद्धि नल
२०८०	नल	१४/ ४/२०२३	१४।१५	मेष ०३।२१।१६	०१।१०।१३।२६	पिङ्गल	मीन २८।१०।३८	११।०८।०७।३३	नल
२०८१	पिङ्गल	१३/ ४/२०२४	२०।२४	वृष ०३।४२।२४	०१।१४।२६।५३	कालयुक्त	मेष २५।५४।४३	१०।१०।५६।३३	पिङ्गल
२०८२	कालयुक्त	१३/ ४/२०२५	२६।३३	मिथुन ०४।०३।३१	०१।१८।४०।१९	सिद्धार्थी	वृष २३।५०।३७	०९।१६।०७।२६	कालयुक्त
२०८३	सिद्धार्थी	१४/ ४/२०२६	८।४२	कर्क ०४।२४।३८	०१।२२।५३।४६	रौद्र	मिथुन २२।३१।५४	०९।००।२२।५२	सिद्धार्थी
२०८४	रौद्र	१४/ ४/२०२७	१४।५२	सिंह ०४।४५।४५	०१।२७।०७।१२	दुर्मति	कर्क २२।३६।२१	०९।०१।१६।१७	रौद्र
२०८५	दुर्मति	१३/ ४/२०२८	२१।०१	कन्या ०५।०६।५२	०२।०१।२०।३८	दुन्दुभि	सिंह २४।२८।५६	०९।२३।४७।१८	दुर्मति
२०८६	दुन्दुभि	१३/ ४/२०२९	२७।१०	तुला ०५।२८।००	०२।०५।३४।०५	रुधिरोद्गारी	कन्या २७।५४।४१	११।०४।५६।१०	दुन्दुभि
									लुप्त रुधिरोद्गारी
२०८७	रुधिरोद्गारी	१४/ ४/२०३०	९।१९	वृश्चिक ०५।४९।०७	०२।०९।४७।३१	रक्ताक्षी	वृश्चिक ०१।४५।५७	००।२१।११।२०	रक्ताक्षी
२०८८	रक्ताक्षी	१४/ ४/२०३१	१५।२८	धनु ०६।१०।१४	०२।१४।००।५८	क्रोधन	धनु ०४।३९।४७	०१।२५।५७।१९	क्रोधन
२०८९	क्रोधन	१३/ ४/२०३२	२१।३७	मकर ०६।३१।२१	०२।१८।१४।२४	क्षय	मकर ०५।५३।२०	०२।१०।३९।५९	क्षय
२०९०	क्षय	१३/ ४/२०३३	२७।४६	कुंभ ०६।५२।२८	०२।२२।२७।५०	प्रभव	कुंभ ०५।३२।१९	०२।०६।२७।४४	प्रभव
२०९१	प्रभव	१४/ ४/२०३४	९।५५	मीन ०७।१३।३६	०२।२६।४१।१७	विभव	मीन ०४।०४।३९	०१।१८।५५।५१	विभव
२०९२	विभव	१४/ ४/२०३५	१६।०५	मेष ०७।३४।४३	०३।००।५४।४३	शुक्ल	मेष ०१।५९।१८	००।२३।५१।३८	शुक्ल
									वृद्धि शुक्ल
२०९३	शुक्ल	१३/ ४/२०३६	२२।१४	वृष ०७।५५।५०	०३।०५।०८।१०	प्रमोद	मेष २९।४२।३६	११।२६।३१।०८	शुक्ल
२०९४	प्रमोद	१३/ ४/२०३७	२८।२३	मिथुन ०८।१६।५७	०३।०९।२१।३६	प्रजापति	वृष २७।४२।४६	११।०२।३३।१५	प्रमोद
२०९५	प्रजापति	१४/ ४/२०३८	१०।३२	कर्क ०८।३८।०४	०३।१३।३५।०२	अङ्गिरा	मिथुन २६।३४।१८	१०।१८।५१।३५	प्रजापति
२०९६	अङ्गिरा	१४/ ४/२०३९	१६।४१	सिंह ०८।५९।११	०३।१७।४८।२९	श्रीमुख	कर्क २६।५४।२१	१०।२२।५२।१५	अङ्गिरा

अलम् अतिविस्तरेण

पृष्ठ ८ का शेष . . . . . .

चैत्रादि चान्द्रमासों के वैदिक नाम

चैत्र मास - मधु मास
वैशाख मास - माधव मास
ज्येष्ठ मास - शुक्र मास
आषाढ़ मास - शुचि मास
श्रावण मास - नभः मास
भाद्रपद मास - नभस्य मास
आश्विन मास - इष मास
कार्तिक मास - उर्ज मास
अग्रहायण (मार्गशीर्ष) मास - सहः मास
पौष मास - सहस्य मास
माघ मास - तप मास
फाल्गुन मास - तपस्य मास

अपि च - बृहन्नारदीय महापुराणे, श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस, मुम्बई

धनुर्गतपौषो विवाहे निषिद्धः -

धनुषि पौषस्त्वत्यन्तं निषिद्धः 'मीने धनुषि सिंहे च स्थिते सप्ततुरङ्गमे । क्षौरमन्नं न कुर्वीत विवाहं गृहकर्म च ॥' इति गर्गोक्तेः । अन्नमन्नप्राशनं विहितकालातिक्रान्तं क्षौरं चौलं च स्वतंत्रम । यत्तूपनयनाङ्गं क्षौरं तस्य न निषेधः 'चैत्रे मीनगते रवौ' इति विहितोपनयनस्य विषयालाभात् । अथोत्तरार्धं व्याख्यायते - अलीति । अलिमृगाजाः प्राग्व्याख्याताः । एतद्राशिगते सूर्ये सति कार्तिकपौषमधुष्वपि करपीडनंभवति । यथा वृश्चिके कार्त्तिकः, मकरे पौषः, तथा मेषे चैत्रोऽपीत्यर्थः । इदं तु सौरमासग्राहिणां मतम् । अत एवाधुनोक्त-चूडारत्नस्थवाक्ये 'केप्याहुः परपीडनम' इत्युक्तम् । **श्रीधरोऽपि** -'पौषे च कुर्यान्मकरस्थितेऽर्के चैत्रे भवन्मेषगतो यदा स्यात् । प्रशस्तमाषाढकृतं विवाहं वदन्ति गर्गा मिथुनस्थितेऽर्के ॥'इति तदेतत्प्रागभिहितन्यायादुपेक्ष्यम् । अत्यन्तातिक्रमेऽयं कालः -

अथ वा केवलमातङ्गीकारेण मध्यमत्वमङ्गीकृत्य कालान्तरानपेक्षिण्य-वश्यदेयकन्याविषयम् । अत्र 'गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठा' इत्यादीना मासनिर्णयः सामान्यतः कृतोप्येतादृशविशेषाभिधानार्थं पुनर्ग्रन्थकृतोक्तः ॥१३॥

पीताम्बरा - वैवाहिक मास - सूर्य संक्रमण की, मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष और मेष राशियों के चान्द्र मासों में विवाह लग्न शुभ होते हैं ।

मिथुन राशि गत सूर्य में आषाढ शुक्ल प्रतिपद से आषाढ़ शुक्ल दशमी तक, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक मास, मकर के सूर्य में पौष मास और मेष के सूर्य में चैत्र चान्द्रमास में विवाह लग्न होते हैं । सौर चान्द्रमासों की एकता के मास में विवाह उत्तम है । मास शब्द से सामान्यतः चान्द्रमास ही गृहीत होता है ॥१३॥ - **पीयूषधारा मु.चि. (पृ.३१६-१७)**

॥ लंदन (इग्लैण्ड) के लिए - प्रमुख त्योंहार तालिका, विदेश ॥

संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ (विदेश के, स्टै. समय में)

स्थल लंदन (इग्लैण्ड) ॥ विदेश ॥ (अक्षांशाः ५१° ३०' , रेखांशाः -.०८३° ०')

City: London, Videsh, (Lat 51° 30', Lon -.083° 0'), Zone Time (Hours) 0

त्योंहार	तारीख	वार	मास पक्ष	तिथि घं.मि.	नक्षत्र घं.मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त
गुड़ीपड़वा	३० मार्च २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	१ ७।२१	रेव ११।०३	५।४५	६।२५
चैत्रीयनवरात्रारंभ	३० मार्च २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	१ ७।२१	रेव ११।०३	५।४५	६।२५
श्रीरामनवमी	६ अप्रेल २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	९ १३।५४	पुष्य २४।५२	५।३०	६।३७
महावीर जयन्ती	१० अप्रेल २०२५	गुरु	चैत्र शुक्ल	१३ ११।३६	पूफा ६।५६	५।२१	६।४३
हनुमान जयन्ती	१२ अप्रेल २०२५	शनि	चैत्र शुक्ल	१५ २४।२२	हस्त १२।३५	५।१७	६।४७
अक्षय तृतीया	३० अप्रेल २०२५	बुध	वैशाख शुक्ल	३ ८।४५	रोहि १०।४७	४।४०	७।१६
बुद्ध पूर्णिमा	१२ मई २०२५	सोम	वैशाख शुक्ल	१५ १६।५५	विशा २७।३४	४।२०	७।३५
रक्षाबंधन	९ अगस्त २०२५	शनि	श्रावण शुंक्ल	१५ ७।५१	श्रव ८।४८	४।४३	७।२८
	(पूरादिन शुद्ध है)						
जन्माष्टमी व्रतं स्मार्त्तानाम्	१५ अगस्त २०२५	शुक्र	भाद्रपद कृष्ण	७ १८।२१	भर २४।३५	४।५३	७।१६
जन्माष्टमी व्रतं वैष्णवानाम्	१६ अगस्त २०२५	शनि	भाद्रपद कृष्ण	८ १६।०४	कृति २३।०६	४।५४	७।१४
हरितालिका	२६ अगस्त २०२५	मंगल	भाद्रपद शुक्ल	३ ८।२१	हस्त २४।२८	५।१०	६।५४
गणेशचतुर्थी	२६ अगस्त २०२५	मंगल	भाद्रपद शुक्ल	३ ८।२१	हस्त २४।२८	५।१०	६।५४
शारदीय नवरात्रारंभ	२२ सितंबर २०२५	सोम	आश्विन शुक्ल	१ २१।२६	उफा ५।५४	५।५२	५।५३
विजया दशमी	१ अक्टूबर २०२५	बुध	आश्विन शुक्ल	९ १३।३१	उषा २७।४२	६।०६	५।३२
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	२० अक्टूबर २०२५	सोम	कार्तिक कृष्ण	१४ १०।१७	हस्त १४।४७	६।३८	४।५१
गुर्जराणाम् नूतनसंवत्सरारम्भः	२२ अक्टूबर २०२५	वुध	कार्तिक शुक्ल	१ १४।४५	स्वा २०।१८	६।४२	४।४७
नानक जयन्ती	५ नवंबर २०२५	बुध	कार्तिक शुक्ल	१५ १३।२२	भर २५।०६	७।०६	४।२१
शकम्भरी जयन्ती	२ जनवरी २०२६	शुक्र	पोष शुक्ल	१४ १३।२४	मृग १४।३२	८।१२	३।५७
मकरेऽर्कः	१४ जनवरी २०२६	बुध	माघ कृष्ण	११ १२।२६	अनु २१।३४	८।०६	४।१४
	मकरे रवि ९।०४, (पुण्यकालः स्टें. ९।०४ तः २५।०४ यावत्)						
मकर सक्रान्ति	१४ जनवरी २०२६	बुध	माघ कृष्ण	११ १२।२६	अनु २१।३४	८।०६	४।१४
महाशिवरात्री	१५ फरवरी २०२६	रवि	फाल्गुन कृष्ण	१३ ११।३६	उषा १४।१६	७।२०	५।१०
होलिका दहन	२ मार्च २०२६	सोम	फाल्गुन शुक्ल	१४ १२।३०	मघा २६।०२	६।४९	५।३७
	होलिका दहन भद्रा के बाद (भद्रा समाप्ति २४।०३ बजे)						

परामर्शदाता - श्रीयुत विशालबाबू श्यामसुन्दरजी रूईया, ओर्चिट टावर मुम्बई

स्थल - लंदन (इग्लैण्ड), स्टै. समय में

संवत् २०८२, आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्धतिथि निर्णय, सन २०२५

पूर्णिमा	(पूनम) का श्राद्ध	रविवार	७ सितंबर	(भाद्रपद शुक्लपक्ष)
प्रतिपदा	(एकम) ”	सोमवार	८ सितंबर	
द्वितीया	(दूज). ”	मंगलवार	९ सितंबर	मध्यान्ह १२।५८ बजे के पहले
तृतीया	(तीज) ”	बुधवार	१० सितंबर	दिन १०।०८ बजे के पहले
चतुर्थी	(चोथ) ”	बुधवार	१० सितंबर	दिन १०।०८ बजे के बाद
पंचमी	(पांच) ”	गुरुवार	११ सितंबर	प्रातः७।१६ बजे के बाद
षष्ठी	(छठ) ”	शुक्रवार	१२ सितंबर	
सप्तमी	(सातं) ”	शनिवार	१३ सितंबर	
अष्ठमी	(आठं) ”	रविवार	१४ सितंबर	
नवमी	(नौमी) ”	सोमवार	१५ सितंबर	
दशमी	(दस) ”	मंगलवार	१६ सितंबर	
एकादशी	”	बुधवार	१७ सितंबर	
द्वादशी	(बारस) ”	गुरुवार	१८ सितंबर	
त्रयोदशी	(तेरस) ”	शुक्रवार	१९ सितंबर	
चतुर्दशी	(चौदस) ”	शनिवार	२० सितंबर	
अमावस्या	(मावस) ”	रविवार	२१ सितंबर	

॥ शुभम् ॥

पञ्चाङ्गगणितकर्ता :- पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

- *वैजयन्ती संगणक (Vaijayanti Computers)*

॥ न्यूयॉर्क (अमेरिका) के लिए - प्रमुख त्योंहार तालिका, विदेश ॥

संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ (विदेश के, स्टै. समय में)

स्थल न्यूयॉर्क (अमेरिका) ॥ विदेश ॥ (अक्षांशाः ४०° ४३' , रेखांशाः -७४° १')

City: Newyork, Videsh, (Lat 40° 43', Lon -74° 1'), Zone Time (Hours)-5

त्योंहार	तारीख	वार	मास पक्ष	तिथि घं.मि.	नक्षत्र घं.मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त
गुड़ीपड़वा	२९ मार्च २०२५	शनि	चैत्र कृष्ण	३० ५।५७	उभा ८।५३	५।४८	६।१३
चैत्रीयनवरात्रारंभ	२९ मार्च २०२५	शनि	चैत्र कृष्ण	३० ५।५७	उभा ८।५३	५।४८	६।१३
श्रीरामनवमी	५ अप्रेल २०२५	शनि	चैत्र शुक्ल	८ ८।५६	पुन १८।५८	५।३७	६।२१
महावीर जयन्ती	१० अप्रेल २०२५	गुरु	चैत्र शुक्ल	१३ १४।३६	उफा २८।४१	५।२९	६।२६
हनुमान जयन्ती	१२ अप्रेल २०२५	शनि	चैत्र शुक्ल	१५ १९।२२	हस्त ७।३५	५।२६	६।२८
अक्षय तृतीया	२९ अप्रेल २०२५	मंगल	वैशाख शुक्ल	२ ७।०५	कृति ८।१७	५।०२	६।४५
बुद्ध पूर्णिमा	१२ मई २०२५	सोम	वैशाख शुक्ल	१५ ११।५५	विशा २२।३४	४।४७	६।५८
रक्षाबंधन	८ अगस्त २०२५	शुक्र	श्रावण शुक्ल	१५ २६।५१	श्रव २७।४८	५।०५	६।५८
	भद्रा के बाद (भद्रा समाप्ति १५।१८ बजे)						
जन्माष्टमी व्रतं स्मार्त्तानाम्	१५ अगस्त २०२५	शुक्र	भाद्रपद कृष्ण	७ १३।२१	भर १९।३५	५।१२	६।४९
जन्माष्टमी व्रतं वैष्णवानाम्	१६ अगस्त २०२५	शनि	भाद्रपद कृष्ण	८ ११।०४	कृति १८।०६	५।१३	६।४७
हरितालिका	२५ अगस्त २०२५	सोम	भाद्रपद शुक्ल	३ २७।२१	उफा १७।१६	५।२१	६।३४
गणेशचतुर्थी	२६ अगस्त २०२५	मंगल	भाद्रपद शुक्ल	४ २९।०८	हस्त १९।२८	५।२२	६।३२
शारदीय नवरात्रारंभ	२२ सितंबर २०२५	सोम	आश्विन शुक्ल	१ १६।२५	हस्त २७।०७	५।४८	५।४८
विजया दशमी	१ अक्टूबर २०२५	बुध	आश्विन शुक्ल	९ ८।३२	उषा २२।४२	५।५७	५।३३
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	२० अक्टूबर २०२५	सोम	कार्तिक कृष्ण	३० अहोरात्र	हस्त ९।४७	६।१७	५।०३
गुर्जराणाम् नूतनसंवत्सरारम्भः	२२ अक्टूबर २०२५	बुध	कार्तिक शुक्ल	१ ९।४५	स्वा १५।१८	६।१९	५।०१
नानक जयन्ती	५ नवंबर २०२५	बुध	कार्तिक शुक्ल	१५ ८।२२	भर २०।०६	६।३६	४।४३
शकम्भरी जयन्ती	२ जनवरी २०२६	शुक्र	पोष शुक्ल	१४ ८।२४	मृग ९।३२	७।२५	४।३६
मकरेऽर्कः	१३ जनवरी २०२६	मंगल	माघ कृष्ण	११ अहोरात्र	विशा १३।३५	७।२३	४।४७
	मकरे रवि २८।०४, (पुण्यकालः स्टें. २८।०४ तः बुधवासरे १४ जनवरी २०।०४ यावत्)						
मकर सक्रान्ति	१४ जनवरी २०२६	बुध	माघ कृष्ण	११ ७।२६	अनु १६।३४	७।२३	४।४८
महाशिवरात्री	१५ फरवरी २०२६	रवि	फाल्गुन कृष्ण	१४ अहोरात्र	उषा ९।१६	६।५४	५।२७
होलिका दहन	२ मार्च २०२६	सोम	फाल्गुन शुक्ल	१४ ७।३०	मघा २१।०२	६।३३	५।४४
	होलिका दहन भद्रा के बाद (भद्रा समाप्ति १९।०३ बजे)						

परामर्शदाता - श्रीयुत विशालबाबू श्यामसुन्दरजी रूईया, ओर्चिट टावर मुम्बई

स्थल - न्यूयॉर्क (अमेरिका), स्टै. समय में

संवत् २०८२, आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्धतिथि निर्णय, सन २०२५

पूर्णिमा (पूनम) का श्राद्ध	रविवार	७ सितंबर	मध्यान्ह १।०४ बजे के पहले (भाद्रपद शुक्लपक्ष)
प्रतिपदा (एकम) ”	सोमवार	८ सितंबर	मध्यान्ह १०।३९ बजे के पहले
द्वितीया (दूज) ”	सोमवार	८ सितंबर	मध्यान्ह १०।३९ बजे के बाद
तृतीया (तीज) ”	मंगलवार	९ सितंबर	प्रातः७।५८ बजे के बाद
चतुर्थी (चोथ) ”	बुधवार	१० सितंबर	
पंचमी (पांच) ”	गुरुवार	११ सितंबर	
षष्ठी (छठ) ”	शुक्रवार	१२ सितंबर	
सप्तमी (सातं) ”	शनिवार	१३ सितंबर	
अष्ठमी (आठं) ”	रविवार	१४ सितंबर	
नवमी (नौमी) ”	सोमवार	१५ सितंबर	
दशमी (दस) ”	मंगलवार	१६ सितंबर	मध्यान्ह १।४८ बजे के पहले
एकादशी ”	बुधवार	१७ सितंबर	मध्यान्ह १।०६ बजे के पहले
द्वादशी (बारस) ”	गुरुवार	१८ सितंबर	मध्यान्ह १२।५३ बजे के पहले
त्रयोदशी (तेरस) ”	शुक्रवार	१९ सितंबर	मध्यान्ह १।०८ बजे के पहले
चतुर्दशी (चौदस) ”	शनिवार	२० सितंबर	मध्यान्ह १।४९ बजे के पहले
अमावस्या (मावस) ”	रविवार	२१ सितंबर	

॥ शुभम् ॥

पञ्चाङ्गगणितकर्ता :- पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

- वैजयन्ती संगणक (*Vaijayanti Computers*)

।। नम्र निवेदन ।।

हेतु - भारत में प्रमुख व्रतोत्सव एकता

आदरणीय दैवज्ञ पञ्चाङ्गकर्ता एवं विद्वानों को
सस्नेह हृदयालिङ्गनम् नतोऽस्मिच ।

जैसे गणित में समय समय पर कालान्तर संस्कार देना आवश्यक है ठीक वैसे ही समय समय पर युगाऽनुधर्म के अनुसार युगान्तर संस्कार देना भी आवश्यक है अन्यथा जैसे विना कालान्तर संस्कार के स्थूल गणित की उपेक्षा कर दी जाती है . . . . ।

ज्ञातव्य है कि गत ६-७ वर्षों से भारत के प्रमुख त्योंहारों में निरन्तर मत-मतान्तर बढ रहे हैं, यह पंचांगकर्त्ताओं के लिए दूर गामी शुभ संकेत नहीं हैं । संवत् २०६५ से समय समय पर प्रमुख त्योंहारों की एकता के लिए निरंतर प्रयास करता रहा हूँ (संवत् २०७२ में होलिका दहन का मत-मतान्तर हुआ था, तब भी **"पं श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग"** संवत् २०७३ के पृष्ठ ९ में जो मैंने लिखा था, वे ही पक्तियाँ यहाँ द्रष्टव्य हैं -
विशेष - कोई भी पञ्चाङ्गकर्ता आगामी ५/१० या अधिक वर्षों के उक्त राष्ट्रीय त्योंहार लेना चाहे तो निशुल्क भेज दूंगा ताकि **जन हित में 'प्रमुख व्रतोत्सवों (त्योंहारों) को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोया जा सके'** अलमतिविस्तरेण ।। अस्तु ।।

इतना सहयोग करने पर भी यदि मत-मतान्तर रहता है तो यह दुर्भाग्य है । कुछ बालमति पंचांगकर्त्ता अहम्-पूर्वम् अहम्-पूर्वम् में उत्तरोत्तर धर्मशास्त्र को क्षीण और समाज में आनास्था का काम करते हैं, इसके दूरगामी परिणाम पंचांगकर्त्ताओं के हित में नहीं होंगें ।
ये सब जनहित में लिखा है यथा - अध्यापनं-अध्ययनम् यजनं याजनं तथा । दानं प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयेत् । (म. ८८,१) ।। फिर भी मेरे शब्दों से किसी भी व्यक्ति को आघात (बुरा) लगे तो क्षमा चाहूँगा । **यद् भावि तद् भवतु ।**
भारत के सभी पंचांगकर्त्ताओं से नम्रनिवेदन है कि अल्पशब्दों को अधिक समझें ।

जो ग्रहण भारत के किसी भी भाग में दिखाई देने वाला नहीं है फिर भी आजकल प्रचार-प्रसार, दूरदर्शन आदि माध्यमों से भारत में उसकी भ्रांति फैला देते हैं, यह किसी भी दृष्टि से उचित नही । जैसे कि अभी २० अप्रेल २०२३ को सूर्यग्रहण भारत में दिखाई न देने पर भी भ्रांति फैलाई गई । प्रसंग वश यहाँ पर स्पष्ट कर दूँ - **संवत् २०८४, श्रावण कृष्णा अमावस्या (३०) सोमवार, ता. २ अगस्त २०२७ को होने वाला खण्डग्रास सूर्यग्रहण भारत में दिखाई देगा उसके पहिले कोई भी सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा ।** भ्रांतियों से बचना चाहिए ।
प्रमुख त्योंहारों के निर्णय में सूत्र रचना - निर्णयसिंघु, धर्मसिंधु, जयसिंह कल्पद्रुम, पुरुषार्थ चिंतामणि, संग्रहशिरोमणि, सनत्कुमार संहिता, पीयूषधारा मुहूर्त्तचिन्तामणि और वाराहमिहिर संहिता आदि के आधार पर की गई है ।।*दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभिः।।*
आशा करता हूँ - ईश्वर की कृपा और आप सभी के आशिर्वाद से मनोरथ सिद्ध होंगे ।

- भवदीय वरदभावाकॉक्षी – पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्री),मुम्बई.,संपर्क न. +91 8976852920

धर्मशास्त्र के अनुसार- "श्रीरामनवमी" की मिति और तारीख -

।। दृक्सिद्ध चित्रापक्षीय पञ्चाङ्ग ।। स्थल रामगढ (शेखा.)
(अक्षांशाः २८° ०' उ., रेखांशाः ७४° ५९'पू.) स्टै. समय में

सूत्र - चैत्र और द्वितीयचैत्र शुक्लपक्ष नवमी -
(मुख्यकालः- मध्यान्हकालिनी ग्राह्या, द्वे सत्वे अभावे वा परा ग्राह्या)

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	दिनमान	सूर्योदय	सूर्यास्त
२०८१	१७ ४ २०२४	श्रीरामनवमी	९ बुध	१५।१७	१२।४६	६।०७	६।५३
२०८२	६ ४ २०२५	श्रीरामनवमी	९ रवि	१९।२४	१२।२८	६।१९	६।४७
२०८३	२६ ३ २०२६	श्रीरामनवमी	८ गुरु	११।४९	१२।०९	६।३१	६।४१
२०८४	१५ ४ २०२७	श्रीरामनवमी	९ गुरु	१३।२३	१२।४१	६।१०	६।५१
२०८५	४ ४ २०२८	श्रीरामनवमी	९ मंग.	१०।११	१२।२५	६।२१	६।४६
२०८६	२३ ४ २०२९	श्रीरामनवमी	९ सोम	११।३४	१२।५४	६।०१	६।५६
२०८७	१२ ४ २०३०	श्रीरामनवमी	९ शुक्र	२१।३५	१२।३७	६।१३	६।५०
२०८८	१ ४ २०३१	श्रीरामनवमी	९ मंग.	२१।३६	१२।१९	६।२५	६।४४
२०८९	१९ ४ २०३२	श्रीरामनवमी	९ सोम	१२।३१	१२।४९	६।०५	६।५४
२०९०	८ ४ २०३३	श्रीरामनवमी	९ शुक्र	१०।३०	१२।३१	६।१७	६।४८

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	दिनमान	सूर्योदय	सूर्यास्त
२०९१	२८ ३ २०३४	श्रीरामनवमी	९ मंग.	१७।३५	१२।१३	६।२९	६।४२
२०९२	१६ ४ २०३५	श्रीरामनवमी	९ सोम	१८।१०	१२।४३	६।०९	६।५२
२०९३	५ ४ २०३६	श्रीरामनवमी	९ शनि	१४।२३	१२।२७	६।२०	६।४६
२०९४	२५ ३ २०३७	श्रीरामनवमी	८ बुध	११।३९	१२।०८	६।३२	६।४०
२०९५	१४ ४ २०३८	श्रीरामनवमी	९ बुध	१०।३४	१२।४०	६।१०	६।५१
२०९६	३ ४ २०३९	श्रीरामनवमी	९ रवि	१७।३१	१२।२२	६।२३	६।४५
२०९७	२१ ४ २०४०	श्रीरामनवमी	९ शनि	१०।१४	१२।५२	६।०३	६।५५
२०९८	९ ४ २०४१	श्रीरामनवमी	९ मंग.	दिनरात	१२।३३	६।१५	६।४८
२०९९	२९ ३ २०४२	श्रीरामनवमी	९ शनि	३०।२६	१२।१५	६।२८	६।४२
२१००	१७ ४ २०४३	श्रीरामनवमी	९ शुक्र	२७।०४	१२।४५	६।०८	६।५२

प्रदोषकालः- सूर्यास्तोत्तरं त्रिमुहुर्तः प्रदोषः ।। दिनस्य पंचदशो भागो मुहूर्तः ।। दिन के पन्द्रहवें (१५) भाग को मुहूर्त कहते हैं । - **धर्मसिंधु ।। प्रदोषकालः-** सूर्यास्त से १ घंटा १२ मि. (३ घटी) तक के समय को प्रदोष मध्यकाल कहते हैं, विषम स्थिति में इसी सूत्र से निर्णय होता है जिसे अर्धादिक कहते है । - **धर्मसिंधु**

- शेष आगे देखें

धर्मशास्त्र के अनुसार - रक्षा बंधन की मिति और तारीख -

॥ दृक्सिद्ध चित्रापक्षीय पञ्चाङ्ग ॥ स्थल रामगढ (शेखा.)
(अक्षांशाः २८° ०' उ. , रेखांशाः ७४° ५९'पू.) स्टै. समय में

सूत्र - श्रावण और द्वितीयश्रावण शुक्लपक्ष पूर्णिमा। भद्रा रहित, चन्द्रग्रहणादि दोष रहित -
(मुख्यकालः- उदया पूर्णिमा ग्राह्या, द्वे सत्वे अभावे वा पूर्वा ग्राह्या)

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	
२०८१	१९ ८ २०२४	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (१३।२९ के बाद)	१५ सोम	२३।५२	सूर्योदय ६।०६
२०८२	९ ८ २०२५	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ शनि	१३।२१	सूर्योदय ६।०१
२०८३	२८ ८ २०२६	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ शुक्र	९।४५	सूर्योदय ६।११
२०८४	१७ ८ २०२७	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ मंग.	१२।५७	सूर्योदय ६।०५
२०८५	५ ८ २०२८	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ शनि	१३।४१	सूर्योदय ५।५९
२०८६	२४ ८ २०२९	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ शुक्र	७।२२	सूर्योदय ६।०९
२०८७	१३ ८ २०३०	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ मंग.	१६।१६	सूर्योदय ६।०३
२०८८	३ ८ २०३१	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ रवि	७।१८	सूर्योदय ५।५८
२०८९	२१ ८ २०३२	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ शनि	७।१७	सूर्योदय ६।०७
२०९०	१० ८ २०३३	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (१२।५७ के बाद)	१५ बुध	२३।३४	सूर्योदय ६।०२

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	
२०९१	२९ ८ २०३४	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (१०।५९ के बाद)	१५ मंग.	२२।१४	सूर्योदय ६।११
२०९२	१८ ८ २०३५	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (१७।५० के बाद)	१५ शनि	दिनरात	सूर्योदय ६।०६
२०९३	६ ८ २०३६	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (१९।०३ के बाद)	१५ बुध	दिनरात	सूर्योदय ६।००
२०९४	२५ ८ २०३७	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (११।३५ के बाद)	१५ मंग.	२४।३९	सूर्योदय ६।०९
२०९५	१४ ८ २०३८	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (१६।३० के बाद)	१५ शनि	२८।२८	सूर्योदय ६।०४
२०९६	४ ८ २०३९	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ गुरु	१५।३०	सूर्योदय ५।५८
२०९७	२२ ८ २०४०	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ बुध	१४।४२	सूर्योदय ६।०८
२०९८	१२ ८ २०४१	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ सोम	७।३४	सूर्योदय ६।०३
२०९९	३१ ८ २०४२	रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है)	१५ रवि	७।२९	सूर्योदय ६।१२
२१००	२० ८ २०४३	रक्षाबंधनं (भद्रोत्तरं) (८।५३ के बाद)	१५ गुरु	२०।३०	सूर्योदय ६।०७

धर्मसिन्धु परिच्छेद ३ पू.

[2]ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय श्रीविष्णु स्मृत्वा गजेन्द्रमोक्षादि पठित्वा इष्टदेवतादि स्मरेत् ।

२. विष्णुपुरोणोक्त ब्राह्ममुहूर्त - रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः । स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने । पञ्च पञ्च उषःकालः सप्तपञ्चारुणोदयः । अष्टपञ्च भवेत् प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः ॥

धर्मशास्त्र के अनुसार - विजया-दशमी की मिति और तारीख -

॥ दृक्सिद्ध चित्रापक्षीय पञ्चाङ्ग ॥ स्थल रामगढ (शेखा.)
(अक्षांशाः २८° ०' उ. , रेखांशाः ७४° ५९'पू.) स्टै. समय में

सूत्र - आश्विन और द्वितीय आश्विन शुक्लपक्ष दशमी और श्रवण नक्षत्र, यदि हो तो
(मुख्यकालः अपरान्हकाल व्यापिनी दशमी ग्राह्या, द्वे सत्वे अभावे वा पूर्वा

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	सूर्योदय	सूर्यास्त
२०८१	१२ १० २०२४	विजया दशमी	९ शनि	११।००	६।३२	६।००
२०८२	२ १० २०२५	विजया दशमी	१० गुरु	१९।१०	६।२७	६।११
२०८३	२० १० २०२६	विजया दशमी	९ मंग.	१२।५२	६।३७	५।५२
२०८४	९ १० २०२७	विजया दशमी	९ शनि	९।०३	६।३०	६।०४
२०८५	२७ ९ २०२८	विजया दशमी	९ बुध	८।०९	६।२५	६।१७
२०८६	१६ १० २०२९	विजया दशमी	१० मंग.	२९।२१	६।३५	५।५६
२०८७	६ १० २०३०	विजया दशमी	१० रवि	१७।२९	६।२९	६।०७
२०८८	२५ १० २०३१	विजया दशमी	१० शनि	१९।४३	६।४०	५।४८
२०८९	१४ १० २०३२	विजया दशमी	१० गुरु	१५।४९	६।३४	५।५८
२०९०	३ १० २०३३	विजया दशमी	९ सोम	९।२२	६।२८	६।१०

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	सूर्योदय	सूर्यास्त
२०९१	२२ १० २०३४	विजया दशमी	१० रवि	३०।१६	६।३८	५।५१
२०९२	११ १० २०३५	विजया दशमी	९ गुरु	६।५५	६।३२	६।०२
२०९३	२९ ९ २०३६	विजया दशमी	१० सोम	२९।३६	६।२६	६।१४
२०९४	१८ १० २०३७	विजया दशमी	१० रवि	२२।०८	६।३६	५।५४
२०९५	७ १० २०३८	विजया दशमी	१० गुरु	२६।४१	६।३०	६।०६
२०९६	२६ १० २०३९	विजया दशमी	१० बुध	२६।१२	६।४१	५।४७
२०९७	१५ १० २०४०	विजया दशमी	१० सोम	२०।२६	६।३४	५।५७
२०९८	५ १० २०४१	विजया दशमी	१० शनि	१६।१०	६।२९	६।०८
२०९९	२४ १० २०४२	विजया दशमी	१० शुक्र	१७।२२	६।३९	५।४९
२१००	१३ १० २०४३	विजया दशमी	१० मंग.	२६।४२	६।३३	६।००

॥ कालांशेन कालभेदः ॥

नाड़ी(घड़ी), विनाड़ी(पल), प्राण और घटी, पल, विपल तथा घंटा, मिनट, सेकण्ड के बा
तो (दिनमान सूर्योदय-सूर्यास्त पृष्ठ पर) बता ही चुका हूँ आगे ...

घटी १, (२४ मिनट) = नाड़ी, घड़ी, दण्ड एक ही संख्या के संबोधक हैं। (घटी को ही
घड़ी, दण्ड कहते हैं)।

प्रहर को ही याम कहते हैं (यथा - यामार्धः) -

- शेष आगे

धर्मशास्त्र के अनुसार - श्रीमहालक्ष्मीजी (दीपावली) पूजन की मिति और तारीख -

॥ दृक्सिद्ध चित्रापक्षीय पञ्चाङ्ग ॥ स्थल रामगढ (शेखा.)

(अक्षांशः २८° ०′ उ. , रेखांशः ७४° ५९′पू.) स्टै. समय में

सूत्र - कार्तिक और प्रथमकार्तिक कृष्णपक्ष अमावस्या । भद्रा और सूर्यग्रहणादि दोष रहित अमावस्या ग्राह्या -

(मुख्यकालः- प्रदोष और निशीथकाल व्यापिनी ग्राह्या, प्रदोषाऽभावे निशीथ-काल ग्राह्या । द्वे सत्वे परा अभावे वा पूर्वा)

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	
२०८१	३१ १० २०२४	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ गुरु	१५।५४	सूर्यास्त ५।४३
२०८२	२० १० २०२५	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ सोम	१५।४७	सूर्यास्त ५।५२
२०८३	८ ११ २०२६	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ रवि	११।२७	सूर्यास्त ५।३७
२०८४	२९ १० २०२७	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० शुक्र	१९।०६	सूर्यास्त ५।४५
२०८५	१७ १० २०२८	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ मंग.	१२।०८	सूर्यास्त ५।५५
२०८६	५ ११ २०२९	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ सोम	१३।४६	सूर्यास्त ५।३९
२०८७	२६ १० २०३०	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० शनि	२५।४४	सूर्यास्त ५।४७
२०८८	१४ ११ २०३१	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० शुक्र	२६।३८	सूर्यास्त ५।३४
२०८९	२ ११ २०३२	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ मंग.	१०।१४	सूर्यास्त ५।४१
२०९०	२२ १० २०३३	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ शनि	१०।२०	सूर्यास्त ५।५०

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	
२०९१	१० ११ २०३४	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० शुक्र	३०।४६	सूर्यास्त ५।३६
२०९२	३० १० २०३५	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ मंग.	८।०८	सूर्यास्त ५।४४
२०९३	१८ १० २०३६	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ शनि	१९।४५	सूर्यास्त ५।५४
२०९४	६ ११ २०३७	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ शुक्र	२०।५४	सूर्यास्त ५।३८
२०९५	२७ १० २०३८	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ बुध	१३।१४	सूर्यास्त ५।४६
२०९६	१५ ११ २०३९	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	१४ मंग.	१४।२९	सूर्यास्त ५।३४
२०९७	४ ११ २०४०	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० रवि	२४।२३	सूर्यास्त ५।४०
२०९८	२४ १० २०४१	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० गुरु	दिनरात	सूर्यास्त ५।४८
२०९९	१२ ११ २०४२	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० बुध	२५।५७	सूर्यास्त ५।३५
२१००	१ ११ २०४३	श्रीमहालक्ष्मी पूजा, कुबेर पूजा	३० रवि	२५।२८	सूर्यास्त ५।४२

एक अहोरात्र (दिनरात) में आठ प्रहर (चार प्रहर दिन की और चार प्रहर रात्री की) होती हैं यह प्रसिद्ध है । एक प्रहर मध्यम मान से ८ घटी का मानते हैं लेकिन यह स्थूल है

जैसे (मध्यम मान घटी ६० ÷ ८ = एक प्रहर ७ घटी, ३० पल का अर्थात् ३ घंटा)

प्राचीन काल में गणित की क्रिया बहुत श्रमसाध्य थी जैसे वर्गमूल आदि .., लीलावती । आधुनिक समय में स्वचालित यन्त्रो की सहायता से सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित जाना जा सकता है ।

धर्मशास्त्र के अनुसार - होलिका दहन की मिति और तारीख -

॥ दृक्सिद्ध चित्रापक्षीय पञ्चाङ्ग ॥ स्थल रामगढ (शेखा.)

(अक्षांशः २८° ०′ उ. , रेखांशः ७४° ५९′पू.) स्टै. समय में

सूत्र - फाल्गुन और द्वितीयफाल्गुन शुक्लपक्ष पूर्णिमा । भद्रा, दिन और प्रतिपदा रहित पूर्णिमा ग्राह्या -

(मुख्यकालः- प्रदोषकाल, भद्रापुच्छ और चन्द्रग्रहण में काल का अभाव हो तो भद्रामुखं त्यक्त्वाऽपि, पूर्णिमा ग्राह्या । द्वे सत्वे परा, अभावे पूर्वा)

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	सूर्योदय	सूर्यास्त
२०८१	१३ ३ २०२५	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (२३।३१ के बाद)	१४ गुरु	१०।४१	६।४६	६।३४
२०८२	२ ३ २०२६	होलिका दहनं भद्रापुच्छे (२५।२३)	१४ सोम	१८।००	६।५८	६।२७
२०८३	२१ ३ २०२७	होलिका दहनं भद्रापुच्छे (२५।२३)	१४ रवि	१८।२६	६।३७	६।३८
२०८४	१० ३ २०२८	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (२०।३१ के बाद)	१४ शुक्र	१०।२३	६।४९	६।३२
२०८५	२८ २ २०२९	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ बुध	२२।४०	६।५९	६।२६
२०८६	१९ ३ २०३०	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ मंग.	२३।२६	६।३९	६।३७
२०८७	८ ३ २०३१	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (२२।०२ के बाद)	१४ शनि	९।५६	६।५२	६।३१
२०८८	२६ ३ २०३२	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ शुक्र	३०।१५	६।३१	६।४१
२०८९	१५ ३ २०३३	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ मंग.	दिनरात	६।४३	६।३५
२०९०	४ ३ २०३४	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (१९।०७ के बाद)	१५ शनि	दिनरात	६।५६	६।२८

संवत्	तारीख	पर्व	तिथिवार	ति.समाप्ति	सूर्योदय	सूर्यास्त
२०९१	२३ ३ २०३५	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ शुक्र	२८।१६	६।३५	६।३९
२०९२	११ ३ २०३६	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (२८।०४ के बाद)	१४ मंग.	१७।२७	६।४८	६।३३
२०९३	१ ३ २०३७	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (१९।५४ के बाद)	१४ रवि	९।४७	६।५८	६।२७
२०९४	२० ३ २०३८	होलिका दहनं भद्रोत्तरम् (२१।३४ के बाद)	१४ शनि	११।२३	६।३८	६।३८
२०९५	१० ३ २०३९	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ गुरु	२२।०६	६।४९	६।३२
२०९६	२८ ३ २०४०	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ बुध	२०।४२	६।२८	६।४२
२०९७	१७ ३ २०४१	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ रवि	२५।४९	६।४१	६।३६
२०९८	६ ३ २०४२	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ गुरु	२५।४१	६।५३	६।३०
२०९९	२४ ३ २०४३	होलिका दहनं भद्रापुच्छे (२६।३८)	१४ मंग.	१८।१९	६।३४	६।४०
२१००	१३ ३ २०४४	होलिका दहनं प्रदोषे (सूर्यास्त के बाद)	१५ रवि	२५।१५	६।४५	६।३४

अस्तु । दिन के एक प्रहर का स्पष्ट मान (दिनमान ÷ ४ = दिन के एक प्रहर का स्पष्ट मान)

ऐसे ही- रात्री के एक प्रहर का स्पष्ट मान (रात्रीमान ÷ ४ = रात्री के एक प्रहर का स्पष्ट मान)

दिनमान = सूर्योदय से सूर्यास्त के समय को दिनमान कहते हैं ।

रात्रीमान = सूर्यास्त से अगले दिन सूर्योदय के समय को रात्रीमान कहते है ।

अहोरात्र = आज के सूर्योदय से अगले दिन के सूर्योदय तक के समय को अहोरात्र कहते हैं ।

॥ अलमिति ॥

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ मध्ये उपनयनादि मुहूर्त्ताः शुद्धाः ॥

॥ उपनयन ॥

चैत्र मासः

सन२०२५ ७ अप्रे.
शु. १० चंद्रे श्लेषा. लग्न २, अभिजिति, ४ (कर्क लग्नस्थ चंद्रः ग्राह्यः)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः वृष- प्रातः ८।१३ से १०।०९, अभि.- दिवा १२।०८ से १२।५६,
कर्क- दिवा १२।२४ से २।३७ अपरान्ह

९ अप्रे.
शु. १२ बुधे पूफा. लग्न ४ (महापात स्पर्शः १८।४३ मोक्षः २२।५९)
यजमान राशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि सिंह
समयः कर्क- दिवा १२।१६ से २।३६

वैशाख मासः

सन२०२५ १४ अप्रे.
कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ अभिजिति, ४
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५, कर्क- दिवा ११।५६ से २।१६

१८ अप्रे.
कृ. ०५ शुक्रे मूले अभिजिति
यजमान राशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि धनु
समयः अभि.- दिवा १२।०६ से १२।५४

७ मई
शु. १० बुधे पूफा. लग्न ४
यजमान राशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि सिंह
समयः कर्क- दिवा १०।२६ से १२।४५

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ २९ मई
शु. ०३ गुरौ आर्द्रा. लग्न २, अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि मिथुन
समयः वृष- प्रातः ५।३९ उपरांत ६।४५, अभि.- दिवा १२।०४ से १२।५२

४ सितं
शु. १२ गुरौ उषा. अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३ : सूर्यराशि सिंह
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे

कार्तिक मासः

सन२०२५ ३ नवं.
शु. १३ चंद्रे उभा. अभिजिति, ११
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः अभि.- दिवा ११।४९ से १२।३७, कुंभ- दिवा १।५४ से ३।०५ यावत् : सूर्यराशि तुला
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५ ७ नवं.
कृ. ०२ शुक्रे रोहि. लग्न ११
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः कुंभ- दिवा २।३३ उपरांत ३।०६ : सूर्यराशि तुला
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे

पोष मासः

सन२०२५ ५ दिसं
कृ. ०१ शुक्रे मृगे अभिजिति, ११, २
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः अभि.- दिवा ११।५७ से १२।४५, कुंभ- दिवा ११।४८ से १।१६,
वृष- दिवा ४।१८ से ५।३० सूर्यास्त
भूमि-पूजन (शिलान्यास) ईशान कोणे : सूर्यराशि वृश्चिक

॥ संवत् २०८२ मध्ये गेहारंभ (भूमि पूजन) मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ १४ अप्रे.
कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ अभिजिति
यजमान राशि- मेष-वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५
भूमि-पूजन (शिलान्यास) वायव्य कोणे : सूर्यराशि मेष

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ ७ जून
शु. १२ शनौ स्वातौ अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि वृष

भाद्रपद मासः

सन२०२५ ११ अग.
कृ. ०२ चंद्रे शते अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः अभि.- दिवा १२।११ से १२।५७ यावत्
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि कर्क

॥ वृषचक्र-रहिताः गेहारंभ मुहूर्त्ताः ॥

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ ३१ मई
शु. ०५ शनौ पुष्ये लग्न २ (महापात स्पर्शः ११।२० मोक्षः १६।५५)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः वृष- प्रातः ५।३९ से ६।३७
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि वृष

श्रावण मासः

सन२०२५ २१ जुला
कृ. ११ चंद्रे रोहि. अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः अभि.- दिवा १२।१२ से १।००
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि कर्क

भाद्रपद मासः

सन२०२५ २५ अग.
शु. ०२ चंद्रे उफा. अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या
समयः अभि.- दिवा १२।०८ से १२।५६
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि सिंह

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ मध्ये उपनयनादि मुहूर्त्ताः शुद्धाः ॥

कार्तिक मासः

सन२०२५ **२४ अक्टु** **शु. ०३ शुक्रे अनुरा.** अभिजिति
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि वृश्चिक
समयः अभि.- दिवा ११।५० से १२।३८
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि तुला

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५ **१५ नवं.** **कृ. ११ शनौ उफा.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या
समयः अभि.- दिवा ११।५१ से १२।३९
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि तुला

॥ नूतनगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताऽभावः ॥

अग्रे गुरोरस्तत्वादभावः (११ जून २०२५, स्टै. २३।३३)
गुरोरुदयः (६ जुला २०२५, स्टै. २८।१८)
अग्रे शुक्रास्तत्वादभावः (८ दिसं २०२५, स्टै. ३१।११)
शुक्रोदयः (४ फर. २०२६, स्टै. १०।२८)

॥ कुंभचक्ररहिताः नूतनगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ **२१ अप्रे.** **कृ. ०८ चंद्रे उषा.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।३७ यावत्

फाल्गुन मासः

सन२०२६ **७ फर.** **कृ. ०६ शनौ चित्रा.** अभिजिति, २
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या
समयः अभि.- दिवा १२।२० से १।०८, वृष- दिवा १२।०६ से १।१६ यावत् : १३।१६ यावत्

यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः वृष- दिवा १।१६ उपरांत २।०२ : १३।१६ उपरांत

॥ जीर्णगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ॥

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ **७ जून** **शु. १२ शनौ स्वातौ** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५ **२७ नवं.** **शु. ०७ गुरौ धनि.** अभिजिति, २
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा ११।५४ से १२।४२ : १४।०५ यावत्

यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः वृष- दिवा ४।४९ से ५।३० सूर्यास्त : १४।०५ उपरांत

॥ कुंभचक्ररहिताः जीर्णगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ **१४ अप्रे.** **कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ **३१ मई** **शु. ०५ शनौ पुष्ये** लग्न २ (महापात स्पर्शः ११।२० मोक्षः १६।५५)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः वृष- प्रातः ५।३९ से ६।३७

॥ देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ **१४ अप्रे.** **कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५

२० अप्रे. **कृ. ०७ रवौ उषा.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि धनु
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ **१८ मई** **कृ. ०५ रवौ उषा.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।०३ से १२।५१

३१ मई **शु. ०५ शनौ पुष्ये** लग्न २ (महापात स्पर्शः ११।२० मोक्षः १६।५५)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः वृष- प्रातः ५।३९ से ६।३७

७ जून **शु. १२ शनौ स्वातौ** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३

८ जून **शु. १२ रवौ स्वातौ** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।४१ यावत्

श्रावण मासः

सन२०२५ **१२ जुला** **कृ. ०२ शनौ श्रवणे** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।१२ से १।००

१३ जुला **कृ. ०३ रवौ धनि.** अभिजिति (भद्रा १३।२७ से)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।१२ से १।००

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ मध्ये उपनयनादि मुहूर्त्ताः शुद्धाः ॥

फाल्गुन मासः

सन२०२६ ७ फर. **कृ. ०६ शनौ चित्रा.** अभिजिति, २
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या
समयः अभि.-दिवा १२।२० से १।०८, वृष-दिवा १२।०६ से १।१६ यावत् : १३।१६ यावत्

यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः वृष- दिवा १।१६ उपरांत २।०२ : १३।१६ उपरांत

॥ दक्षिणायने (देवी, वाराह, नृसिंहादि) उग्रदेवानां प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः ॥

श्रावण मासः

सन२०२५ ९ अग. **शु. १५ शनौ श्रवणे** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।११ से १२।५९

भाद्रपद मासः

सन२०२५ १० अग. **कृ. ०१ रवौ धनि.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः अभि.- दिवा १२।११ से १२।५९

११ अग. **कृ. ०२ चंद्रे शते** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः अभि.- दिवा १२।११ से १२।५७ यावत्

२५ अग. **शु. ०२ चंद्रे उफा.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या
समयः अभि.- दिवा १२।०८ से १२।५६

२८ अग. **शु. ०५ गुरौ स्वातौ** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५

४ सितं **शु. १२ गुरौ उषा.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३

५ सितं **शु. १३ शुक्रे श्रवणे** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा १२।०५ से १२।५३

आश्विन मासः

सन२०२५ २७ सितं **शु. ०५ शनौ अनुरा.** अभिजिति
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि वृश्चिक
समयः अभि.- दिवा ११।५७ से १२।४५

२ अक्टु **शु. १० गुरौ श्रवणे** अभिजिति, ९
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः अभि.- दिवा ११।५५ से १२।४३, धनु- दिवा १२।१२ से २।१७

कार्तिक मासः

सन२०२५ १२ अक्टु **कृ. ०६ रवौ मृगे** अभिजिति, ९
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि मिथुन
समयः अभि.- दिवा ११।५२ से १२।४०, धनु- दिवा ११।३३ से १।३४ यावत्

२४ अक्टु **शु. ०३ शुक्रे अनुरा.** अभिजिति
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि वृश्चिक
समयः अभि.- दिवा ११।५० से १२।३८

३ नवं. **शु. १३ चंद्रे उभा.** अभिजिति
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः अभि.- दिवा ११।४९ से १२।३७

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५ ७ नवं. **कृ. ०२ शुक्रे रोहि.** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः अभि.- दिवा ११।५० से १२।३८

२६ नवं. **शु. ०६ बुधे श्रवणे** लग्न २ (महापात मोक्षः ११।१९)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः वृष- दिवा ४।५३ से ५।३१ सूर्यास्त

२७ नवं. **शु. ०७ गुरौ धनि.** अभिजिति, २
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन :चंद्रराशि मकर १४।०५ यावत्
समयः अभि.- दिवा ११।५४ से १२।४२

यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ
: चंद्रराशि कुंभ १४।०५ उपरांत
समयः वृष- दिवा ४।४९ से ५।३० सूर्यास्त

३० नवं. **शु. १० रवौ उभा.** अभिजिति, २
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः अभि.- दिवा ११।५५ से १२।४३, वृष- दिवा ४।३८ से ५।३० सूर्यास्त

॥ अथ चौल (मुण्डन) मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ १४ अप्रे. **कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ** लग्न २, ३, अभिजिति, ४
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः वृष- प्रातः ८।२३ उपरांत ९।४२, मिथुन- दिवा ९।४२ से ११।५६,
अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५, कर्क- दिवा ११।५६ से २।१६

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ मध्ये उपनयनादि मुहूर्त्ताः शुद्धाः ॥

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ १५ मई	**कृ. ०३ गुरौ ज्येष्ठा.** लग्न २, ३, ४, अभिजिति **यजमान राशि-** वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि वृश्चिक **समयः** वृष- प्रातः ५।४५ से ७।४०, मिथुन- प्रातः ७।४० से ९।५४, कर्क- दिवा ९।५४ से १२।१४, अभि.- दिवा १२।०३ से १२।५१

॥ द्विरागमन मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ १४ अप्रे.	**कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ** लग्न २, ३, अभिजिति, ६ (मिथुने शु १० शुभ) **यजमान राशि-** मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला **समयः** वृष- प्रातः ७।४६ से ९।४२, मिथुन- दिवा ९।४२ से ११।५६, अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५, कन्या- दिवा ४।३२ से ६।४८
१८ अप्रे.	**कृ. ०५ शुक्रे मूले** लग्न २, ३, अभिजिति, ६ (मिथुने शु १० शुभ) **यजमान राशि-** मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि धनु **समयः** वृष- प्रातः ८।१९ उपरांत ९।२६, मिथुन- दिवा ९।२६ से ११।४०, अभि.- दिवा १२।०६ से १२।५४, कन्या- दिवा ४।१७ से ५।११ यावत्
२३ अप्रे.	**कृ. १० बुधे शते** लग्न ६, ७ (भद्रा १६।४५ तक) **यजमान राशि-** मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ **समयः** कन्या- दिवा ४।४५ उपरांत ६।१२, तुला- दिवा ६।१२ से ६।५६ सूर्यास्त
२४ अप्रे.	**कृ. ११ गुरौ शते** लग्न २, ३ (मिथुने शु १० शुभ) **यजमान राशि-** मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ **समयः** वृष- प्रातः ७।०७ से ९।०२, मिथुन- दिवा ९।०२ से १०।४७ यावत्
३० अप्रे.	**शु. ०३ बुधे रोहि.** लग्न २, ३ (मिथुने शु १० शुभ) **यजमान राशि-** मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष **समयः** वृष- प्रातः ६।४३ से ८।३९, मिथुन- दिवा ८।३९ से १०।५३

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५ २७ नवं.	**शु. ०७ गुरौ धनि.** अभिजिति, १२, २ (वृषे गु ३ शुभ) **यजमान राशि-** मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर **समयः** अभि.- दिवा ११।५४ से १२।४२, मीन- : १४।०५ यावत् **यजमान राशि-** मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ **समयः** मीन-दिवा २।०५ उपरांत ३।१३, वृष-दिवा ४।४९ से ५।३० सूर्यास्त : १४।०५ उपरांत

पोष मासः

सन२०२५ ५ दिसं	**कृ. ०१ शुक्रे मृगे** अभिजिति, १२, २ **यजमान राशि-** मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष **समयः** अभि.-दिवा ११।५७ से १२।४५, मीन-दिवा १।१६ से २।४२, वृष-दिवा ४।१८ से ५।३० सूर्यास्त

फाल्गुन मासः

सन२०२६ १३ फर.	**कृ. ११ शुक्रे मूले** लग्न १२, अभिजिति, २, ३ (वृषे शु १० शुभ) **यजमान राशि-** मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि धनु **समयः** मीन- प्रातः ८।४१ से १०।०७, अभि.- दिवा १२।२० से १।०८, वृष- दिवा ११।४३ से १।३९, मिथुन- दिवा १।३९ से २।३१ यावत्

चैत्र मासः

सन२०२६ ४ मार्च	**कृ. ०१ बुधे उफा.** लग्न १२, २, ३ (मीने शु १ शुभ, मिथुने शु १० शुभ) **यजमान राशि-** मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि सिंह **समयः** मीन- प्रातः ७।३९ उपरांत ८।५२, वृष- दिवा १०।२८ से १२।२४, : १३।४६ यावत् मिथुन- दिवा १२।२४ से १।४६ यावत् **यजमान राशि-** मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या **समयः** मिथुन- दिवा १।४६ उपरांत २।३८ : १३।४६ उपरांत
५ मार्च	**कृ. ०२ गुरौ उफा.** लग्न १२ (मीने शु १ शुभ) **यजमान राशि-** मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या **समयः** मीन- प्रातः ७।२२ से ८।१६ यावत्

(दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभिः)

अभिजित् मुहूर्त्त और चर संज्ञा -

कुछ बालमति विद्वान् अज्ञानता के कारण अभिजित् मुहूर्त्त की चर संज्ञा बताकर यजमान को भ्रमित करते हैं यह उचित नहीं है अभिजित् मुहूर्त्त एक स्वतंत्र मुहूर्त्त-है। **चर, स्थिर, द्विस्वभाव संज्ञा** मेषादि १२ राशियों की है न कि अभिजित् की। **यथा -**

गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यबस्वम्बुविश्वेऽभिजिदथ च विधातापीन्द्र इन्द्रानलौ च।
निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमाऽथो भगः स्युः क्रमश इह मुहूर्त्ता वासरे बाणचन्द्राः ॥५२॥

पीताम्बरा - दिन के १५ मुहूर्त - दिनमान में १५ का भाग देकर एक मुहूर्त का घट्यात्मक मान होता है। गिरिश, भुजग, मित्र, पितृ, वसु, अम्बु, विश्वेदेव, अभिजित, विधाता, इन्द्र, इन्द्राग्नि, निर्ऋति, उदकनाथ, अर्यमा और पन्द्रहवाँ भग ये दिन में मुहूर्त होते हैं ॥५२॥

- पीयूषधारा पृ. ३७४, श्लोक ५२ ॥ **अपि च -**

"अष्टमे दिवसस्यार्द्धे त्वभिजित् संज्ञकः क्षणः" ॥ - मुहूर्त्तचिन्तामणि - वेंकटेश्वर प्रेस

स्त्रीपुंसयोश्चचंद्रबलनिर्णयमाह राजमार्त्तण्डे -

पाणिपीडनविधेरनन्तरं भर्त्तुरेव बलमैन्दवादिकम्।
चिंतनीयमिह योषितां कश्चिन्नष्टमंगलमृते मनीषिभिः॥६२॥

विवाह के बाद गर्भाधान पुंसवनादि अभीष्ट मंगल छोड़ अन्य कार्यो में पति का ही चन्द्रबल देखना चाहिए ॥६२॥

विवाहकार्यं कुसुमप्रतिष्ठा[1] गर्भप्रतिष्ठा-वनिताविशुद्धौ[2]।
अन्यानि कार्याणि धवस्य शुद्धौ, पत्यौ विहीने प्रमदात्मशुद्ध्या ॥६३॥

विवाह, गर्भाधान, पुंसवनादि गर्भ संस्कार में स्त्री की भी चन्द्रशुद्धि और अन्य कोर्यों में मात्र पति की चन्द्रशुद्धि अपेक्षित है। पति विहिन होने पर केवल अपनी शुद्धि आवश्यक है ॥६३॥

- सङ्ग्रहशिरोमणिः (प्रथमो भाग-१), पृ. २८३

१. कुसुमप्रतिष्ठा गर्भाधानं, २. गर्भप्रतिष्ठा सीमन्तपुसंवनादिः

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ मध्ये ग्रहजपादिना- गेहारंभ (भूमि पूजन), गृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ॥

॥ ग्रहजपादिना- गेहारंभ (भूमि पूजन) मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ १४ अप्रे. **कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ** लग्न २, ३, ५, ६
(वृषे सू १२, मिथुने गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२, कन्या. सू ८)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः वृष- प्रातः ७।४६ से ९।४२, मिथुन- दिवा ९।४२ से ११।५६,
सिंह- दिवा २।१६ से ४।३२, कन्या- दिवा ४।३२ से ६।४८
भूमि-पूजन (शिलान्यास) वायव्य कोणे : सूर्यराशि मेष

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५ ७ जून **शु. १२ शनौ स्वातौ** लग्न ५, ६ (सिंहे श ८, कन्या. शु ८; मं; के १२)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः सिंह- दिवा १०।४४ से १।००, कन्या- दिवा १।०० से ३।१६
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि वृष

श्रावण मासः

सन२०२५ ९ अग. **शु. १५ शनौ धनि.** लग्न ९ (धनुषि सू; बु ८)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः धनु- दिवा ३।४५ से ५।४९
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि कर्क

भाद्रपद मासः

सन२०२५ ११ अग. **कृ. ०२ चंद्रे शते** लग्न ५, ६ (सिंहे श ८; सू; बु १२, कन्या. के १२)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः सिंह- प्रातः ६।२८ से ८।४५, कन्या- दिवा ८।४५ से ११।००
भूमि-पूजन (शिलान्यास) नैऋत्य कोणे : सूर्यराशि कर्क

४ सितं **शु. १२ गुरौ उषा.** लग्न ५, ६, ९, ११
(सिंहे श ८; शु १२, कन्या. सू; बु; के १२, धनुषि शु ८, कुंभे मं ८; चं १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः सिंह- प्रातः ६।१४ से ७।१०, कन्या- प्रातः ७।१० से ९।२६,
धनु- दिवा २।०३ से ४।०७, कुंभ- दिवा ५।५० से ६।४४ सूर्यास्त
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि सिंह

कार्तिक मासः

सन२०२५ ३ नवं. **शु. १३ चंद्रे उभा.** लग्न ९
(धनुषि गु ८; मं; बु १२)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः धनु- दिवा १०।०७ से १२।११
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि तुला

३ नवं. **शु. १३ चंद्रे रेवत्यां** लग्न १२ (मीने सू; शु ८; रा १२)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः मीन- दिवा ३।२२ से ४।४८
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि तुला

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५ ७ नवं. **कृ. ०२ शुक्रे रोहि.** लग्न १२ (मीने सू; शु ८; रा १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः मीन- दिवा ३।०६ से ४।३२
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि तुला

२७ नवं. **शु. ०७ गुरौ धनि.** लग्न ९ (धनुषि गु ८; सू; मं; शु १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः धनु- प्रातः ८।३२ से १०।३६
भूमि-पूजन (शिलान्यास) ईशान कोणे : सूर्यराशि वृश्चिक

पोष मासः

सन२०२५ ५ दिसं **कृ. ०१ शुक्रे रोहि.** लग्न ९ (धनुषि सू; मं; शु १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः धनु- प्रातः ८।०१ से १०।०५
भूमि-पूजन (शिलान्यास) ईशान कोणे : सूर्यराशि वृश्चिक

५ दिसं **कृ. ०१ शुक्रे मृगे** लग्न १२ (मीने बु ८; रा १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः मीन- दिवा १।१६ से २।४२
भूमि-पूजन (शिलान्यास) ईशान कोणे : सूर्यराशि वृश्चिक

॥ ग्रहजपादिना- नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त्ताऽभावः ॥

॥ ग्रहजपादिना- कुंभचक्ररहिताः नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५ २१ अप्रे. **कृ. ०८ चंद्रे उषा.** लग्न २, ३
(वृषे सू १२, मिथुने चं ८; गु १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः वृष- प्रातः ७।१८ से ९।१४, मिथुन- दिवा ९।१४ से ११।२९

३० अप्रे. **शु. ०३ बुधे रोहि.** लग्न २, ३, ५
(वृषे लग्नस्थ चंद्रः नेष्टः; सू १२, मिथुने चं; गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि वृष
समयः वृष-प्रातः ६।४३ से ८।३९, मिथुन-दिवा ८।३९ से १०।५३, सिंह-दिवा १।१३ से २।१५ यावत्

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ मध्ये ग्रहजपादिना- गेहारंभ (भूमि पूजन), गृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ॥

फाल्गुन मासः

सन२०२६
७ फर. **कृ. ०६ शनौ चित्रा.** लग्न ११, १२, ३
(कुंभे चं ८; सू; मं १२, मीने बु; शु; रा १२, मिथुने सू; मं ८)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि कन्या
समयः कुंभ- प्रातः ७।३६ से ९।०५, मीन- प्रातः ९।०५ से १०।३० : १३।१६ यावत्

यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः मिथुन- दिवा २।०२ से ४।१७ : १३।१६ उपरांत

२१ फर. **शु. ०४ शनौ रेवत्यां** लग्न ३, ५ (महापात स्पर्शः ८।१९ मोक्षः १२।१०)
(मिथुने मं ८, सिंहे चं; श ८)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः मिथुन- दिवा १।०७ से ३।२२, सिंह- दिवा ५।४१ से ६।२१ सूर्यास्त

॥ ग्रहजपादिना- जीर्णगृहप्रवेश मुहूर्त्ताः ॥

वैशाख मासः

सन२०२५
२३ अप्रे. **कृ. १० बुधे शते** लग्न ६ (भद्रा १६।४५ तक, महापात स्पर्शः १२।२७ मोक्षः १६।२७)
(कन्या. सू ८)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः कन्या- दिवा ४।४५ उपरांत ६।१२

२४ अप्रे. **कृ. ११ गुरौ शते** लग्न २, ३
(वृषे सू १२, मिथुने गु १२)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः वृष- प्रातः ७।०७ से ९।०२, मिथुन- दिवा ९।०२ से १०।४७ यावत्

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५
७ जून **शु. १२ शनौ स्वातौ** लग्न ५, ६, ८
(सिंहे श ८, कन्या. शु ८; मं; के १२, वृश्चिके बु; गु ८; चं १२)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः सिंह- दिवा १०।४४ से १।००, कन्या- दिवा १।०० से ३।१६,
वृश्चिक- दिवा ५।३४ से ७।२० सूर्यास्त

कार्तिक मासः

सन२०२५
१५ अक्टु **कृ. ०९ बुधे पुष्ये** लग्न ८, ९
(वृश्चिके गु ८; मं; बु १२, धनुषि चं ८)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः वृश्चिक- दिवा १०।३१ उपरांत ११।२१, धनु- दिवा ११।२१ से ११।५६ यावत्

मार्गशीर्ष मासः

सन२०२५
२७ नवं. **शु. ०७ गुरौ धनि.** लग्न ८, ९, ११, १२ (वृश्चिके बु १२, धनुषि गु ८; सू; मं; शु १२, कुंभे चं १२, मीने १४।०५ उपरांत चं १२; बु ८; रा १२)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन
: चंद्रराशि मकर १४।०५ यावत्
समयः वृश्चिक- प्रातः ७।०५ से ८।३२, धनु- प्रातः ८।३२ से १०।३६,
कुंभ- दिवा १२।१९ से १।४८

यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः मीन- दिवा २।०५ उपरांत ३।१३ : १४।०५ उपरांत

वैशाख मासः

सन२०२५
१४ अप्रे. **कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ** लग्न २, ३, ५, ६
(वृषे सू १२, मिथुने गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२, कन्या. सू ८)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः वृष- प्रातः ७।४६ से ९।४२, मिथुन- दिवा ९।४२ से ११।५६, सिंह- दिवा २।१६ से ४।३२,
कन्या- दिवा ४।३२ से ६।४८

ज्येष्ठ मासः

सन२०२५
३१ मई **शु. ०५ शनौ पुष्ये** लग्न ३, ८ (महापात स्पर्शः ११।२० मोक्षः १६।५५)
(मिथुने सू; बु १२, वृश्चिके गु ८)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः मिथुन- प्रातः ६।३७ से ८।५१, वृश्चिक- दिवा ६।०२ से ७।१७ सूर्यास्त

श्रावण मासः

सन२०२५
९ अग. **शु. १५ शनौ धनि.** लग्न ८, ९ (वृश्चिके गु; शु ८, धनुषि सू; बु ८)
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः वृश्चिक- दिवा २।१८ उपरांत ३।४५, धनु- दिवा ३।४५ से ५।४९

अग्रे अभावः

परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशम् -

व्याख्या- अथ परे आचार्या लग्नशुद्ध्या समीचीन-लग्नबलेन कुयोगानां मृत्युक्रकचादीनां नाशं भवंतीति शेषः । - पीयूषधारा (पृ.४६, श्लो.४२)

अर्थ- लग्न शुद्धि के समय तिथि, नक्षत्र और विष्कुंभादि योग द्वारा उत्पन्न हुए मृत्यु-क्रकचादि कुयोग स्वयं नष्ट हो जाते हैं (जैसे सूर्योदय होने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है) ।

विशेष- किसी एक विद्वान् के द्वारा बताये हुए शुद्धलग्न मुहूर्त्त को दूसरा विद्वान् (बालबुद्धि वाला) यजमान को यह कह कर भ्रमित (गुमराह) कर देता है कि उस दिन मृत्यु-क्रकचादि कुयोग होने से यह मुहूर्त्त अच्छा नहीं है । नोट- ऐसे बालमति के विद्वानों से करवद्ध प्रार्थना है कि ज्योतिष-शास्त्र का उपहास (मजाक) न करें । कहा भी है- "नानाशास्त्र विचक्षणश्च पुरुषांनिन्दन्ति मूर्खाः सदा इति" ।

॥ सूर्यग्रहणम् ॥
संवत् २०८२, (सन २०२५-२६)

संवत् २०८२ में भूमण्डल पर कुल दो सूर्यग्रहण होंगें। दोनों ही सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगें, विदेशों में दिखाई देंगें। जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है।

(१) रामगढ शेखा. मितिः आश्विन कृष्णा ३० रविवासरे, संवत् २०८२, ता. २१ सितंबर २०२५

॥ भूमण्डलीय सूर्यग्रहणम्, खण्डग्रासं ॥

(१) भूमण्डलीय मितिः आश्विन कृष्णा ३० रविवासरे संवत् २०८२, ता. २१ सितंबर २०२५

इस सूर्यग्रहण का भारतीय स्टैं. समय के अनुसार भूमण्डलीय स्पर्शादि इस प्रकार हैं -

	समय (स्टै.)	अक्षांशाः	रेखांशाः
स्पर्श	२३।०६	-१६.०४	-१७७.२
मोक्ष	२७।२५	-७२.६९	-५६.६९

नोट - यह ग्रहण भारत के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा। जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है।

नोट - विदेशों में जहाँ दिखाई देगा उनके कुछ नाम -

ग्रस्तोदय अल्पग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर
बोटनी बे,वाल्स

खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर
वेलिंगसेन सागर,एंथराटीका, कुक,पेसिफिक महा सागर

ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर
अल्प्स,न्यूजीलैण्ड, उकलैण्ड,न्यूजीलैण्ड, उकलैण्ड,द.पेसिफिक महासागर, केन्टरबरी बाइट, न्यूजीलैण्ड, ग्रिस्टचर्च,न्यू जीलैण्ड, कूक,न्यू जीलैण्ड, कूक स्ट्रेट,न्यू जीलैण्ड, डूनीडीन,न्यू जीलैण्ड, फीजी आइसलैण्ड,पेसिफिक महासागर, गीसबोर्न,न्यू जीलैण्ड, हयूराकी,न्यू जीलैण्ड, हवके बे,न्यू जीलैण्ड, होकीटीका,न्यू जीलैण्ड, इन्वरकार्जिल,न्यू जीलैण्ड, कर्माडेक द्वीप , पेसिफिक महा सागर

(२) रामगढ शेखा. मितिः फाल्गुन कृष्णा ३० भौमवासरे, संवत् २०८२, ता. १७ फरवरी २०२६

॥ भूमण्डलीय सूर्यग्रहणम्, कंकणाकृति ॥

(२) भूमण्डलीय मितिः फाल्गुन कृष्णा ३० भौमवासरे संवत् २०८२, ता. १७ फरवरी २०२६

. इस सूर्यग्रहण का भारतीय स्टैं. समय के अनुसार भूमण्डलीय स्पर्शादि इस प्रकार हैं -

	समय (स्टै.)	अक्षांशाः	रेखांशाः
स्पर्श	१५।२४	-६१.५५	-८१.१९
सम्मीलन	१७।२१	-७०.१७	१३४.८५
उन्मीलन	१७।५७	-५३.७४	१०४.९३
मोक्ष	१९।५४	-१३.०६	६१.८१

नोट - यह ग्रहण भारत के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा। जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है।

नोट - विदेशों में जहाँ दिखाई देगा उनके कुछ नाम -

अल्पग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर
कारिवा,जिंबाबवे

खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर
अमिरते,इंडीयन महासागर, अंताञ्नरिवो, मडागासकार, बीरा,मोजंबीक, वेलिंगसेन सागर,एंथराटीका, ब्लेन्टयार,मालावी, ब्लोमिफओटीन,द.अफ्रिका, बूलावायो,जिंबाबवे, केप प्रोविन्स,द.अफ्रीका, केप टाउन,द.अफ्रीका, कोमोरो,भारतीय महासागर, डेलगेडो,मोजम्बिक, डार्कन्सबर,द.अफ्रीका, डर्बन,द.अफ्रीका, पू.लंदन,द.अफ्रीका, गूड होप,द.अफ्रीका

ग्रस्तास्त खण्डग्रास सूर्यग्रहण वाले शहर
चानगोस आर्च,इंडियन सागर

॥ चंद्रग्रहणम् ॥ संवत् २०८२

संवत् २०८२ में भूमण्डल पर कुल दो चंद्रग्रहण होंगें। दोनों ही भारत में दिखाई देंगें।

(१) यह खग्रास चंद्रग्रहण भाद्रपद शुक्ला १५ रविवार, संवत् २०८२, ता. ७ सितंबर २०२५, को होगा। इस खग्रास चंद्रग्रहण का स्पर्श स्टैं.२१।५३ बजे, मध्य २३।३९ बजे और मोक्ष २५।२५ बजे है। इस ग्रहण का सूतक स्टैं. १२।५३ बजे से (ग्रहण के स्पर्श समय से ९ घंटा पहले) प्रारम्भ होगा। ग्रहण के सूतक में बाल वृद्ध और अस्वस्थ जनों को छोड़कर भोजनादि निषेध है।

यह खग्रास चंद्रग्रहण भारत के सभी भागों में समान रुप से दिखाई देगा।

(२) यह ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण फाल्गुन शुक्ला १५ मंगलवार, संवत् २०८२, ता. ३ मार्च २०२६,को होगा। इस खग्रास चंद्रग्रहण का स्पर्श स्टैं.१५।२७ बजे, मध्य १७।११ बजे और मोक्ष १८।५६ बजे है। इस ग्रहण का सूतक स्टैं. ६।२७ बजे से (ग्रहण के स्पर्श समय से ९ घंटा पहले) प्रारम्भ होगा। ग्रहण के सूतक में बाल वृद्ध और अस्वस्थ जनों को छोड़कर भोजनादि निषेध है।

नोट - जहाँ चंद्रोदय स्टैं. १५।२७ बजे के बाद और १८।५६ बजे के पहिले होगा वहाँ ग्रस्तोदय ग्रहण होगा।

ग्रस्तोदय खग्रास चंद्रग्रहण दिखाई देने वाले कुछ नगर - रामगढ शेखा., अजमेर (राज.), अहमदाबा. (गुज.), अयोध्या (उ.प्र.), अमृतसर (पंजा.), आकोला (महा.), आगरा (उ.प्र.), इंदौर (म.प्र.), इलाहाबा. (उ.प्र.), उज्जैन (म.प्र.), उदयपुर (राज.), कटक (उडी.), कोलकाता(प.बं.), काठमाण्डु (नेपा.), कानपुर (उ.प्र.), कोटा (राज.), गंगानगर (राज.), गोरखपुर (उ.प्र.), गौहाटी आसाम, चिन्नई (तमि.), जबलपुर

(म.प्र.), जयपुर (राज.), जींद (हरि.), जौधपुर (राज.), झरिया (बिहा.), झांसी (उ.प्र.), झुञ्झुनू (राज.), डिब्रुगढ आसाम, तेजपुर आसाम, दरभंगा (बिहा.), त्रिवेंद्रम (केर.), दिल्ली , नैनिताल (उ.प्र), पूना (महा.), प्रयाग (उ.प्र.), बीकानेर (राज.), बंगलुरू (कर्ना.), बांसवाडा (राज.), बिलासपुर (म.प्र), भिवानी (हरि.), मथुरा (उ.प्र.), मुम्बई (महा.), मैसूर द.भा., लखनऊ (उ.प्र.), वाराणसी (उ.प्र), विजयवा. (आंप्र), श्रीनगर ज.क., हरद्वार (उ.प्र.), हैदराबाद (आं.प्र.), चंढीगढ, नारनौल (हरि.), रिवाड़ी (हरि.), पानीपत (हरि.), करनाल (हरि.), सिरसा (हरि.), पटोदी (हरि.), हिंसार (हरि.), अनूपगढ (राज.), अलवर (राज.), अलीगढ टोंक (राज.), अलीगढ धौल. (राज.), किशनगढ (राज.), कुचामन (राज.), चूरु (राज.), चित्तौडगढ (राज.), जहाजपुर (राज.), जैसलमेर (राज.), डीडवाना (राज.), धौलपुर (राज.), नूरबहादरा (राज.), पाली (राज.), प्रतापगढ (राज.), बाडमेर (राज.), बालोत्रा (राज.), बाराँ (राज.), भरतपुर (राज.), फतेहपुर (राज.), भीलवाड़ा (राज.), फुलेरा (राज.), राजगढ (राज.), रतनगढ. (राज.), रिंगस (राज.), लाडनू (राज.), लक्ष्मणगढ (राज.), व्यावर (राज.), शाहाबाद (राज.), शाहगढ (राज.), शाहपुरा (राज.), शेरगढ (राज.), सांगानेर (राज.), सिक्कर (राज.), सिरोही (राज.), श्रीमाधोपुर (राज.), सोजत (राज.), सूरजगढ (राज.), सुजानगढ (राज.), हनुमानगढ (राज.), अबोहर (पंजा.), बरनाला (पंजा.), फरीदकोट (पंजा.), फिरोजपुर (पंजा.), फ्राजिल्का (पंजा.), गुरदासपुर (पंजा.), जालंधर (पंजा.), कोटकपूरा (पंजा.), पठानकोट (पंजा.), पटियाला (पंजा.), अंगूल (उडी.), बालेश्वर (उडी.), पुरी (उडी.), सिल्लीगुडी (प.बं.), कूचबिहार (प.बं.), जलपाईगुडी (प.बं.), झाडग्राम (प.बं.), दार्जीलिंग (प.बं.), मलदाह (प.बं.), कटिहार (बिहा.), किशनगंज (बिहा.), पटना (बिहा.), भागलपुर (बिहा.), पूर्णिया (बिहा.), गंगटोक (सिक्कि.), शिलांग (मेघा.), अगरतला (त्रिपुरा), इम्फाल (मणि.), इटानगर (अरु.प्र.), धूबरी (आसा.), शिवसागर (आसा.), सिलचर (आसा.), कुमारी अंतदीप (भा.), निकोबार द्वी.(भा.), केर शिखर (भारत), सदिया (असम), जोरहाट (असम) ।

जहाँ चंद्रोदय स्टैं. १८।५६ बजे के बाद होगा वहाँ ग्रहण दिखाई नहीं देगा ।

चंद्रग्रहण जहाँ बिलकुल दिखाई नहीं देगा ऐसे कुछ नगर - पोरबंदर (गुज.), द्वारका (गुज.) ।

जहाँ ग्रहण दिखाई नहीं दे वहाँ तत्सम्बंधि धार्मिक कृत्य करना आवश्यक नहीं है ।
स्पष्टता के लिए कुछ नगरों का चंद्रोदय दिया है ।

।। प्रमुख नगरों का चंद्रोदय ।। तारीख ३ मार्च २०२६, (स्टै.समय में)

शहर		चंद्रोदय घं. मि.	शहर		चंद्रोदय घं. मि.
रामगढ	शेखा.	१८।३१	अमृतसर	(पंजा.)	१८।२९
अजमेर	(राज.)	१८।३३	आकोला	(महा.)	१८।२६
अहमदाबा.	(गुज.)	१८।४४	आगरा	(उ.प्र.)	१८।१९
अयोध्या	(उ.प्र.)	१८।०१	इंदौर	(म.प्र.)	१८।३०

इलाहाबा.	(उ.प्र.)	१८।०३
उज्जैन	(म.प्र.)	१८।३०
उदयपुर	(राज.)	१८।३८
कटक	(उडी.)	१७।५०
कोलकाता	(प.बं.)	१७।३८
काठमाण्डु	(नेपा.)	१७।४९
कानपुर	(उ.प्र.)	१८।१०
कोटा	(राज.)	१८।२९
गंगानगर	(राज.)	१८।३४
गोरखपुर	(उ.प्र.)	१७।५७
गौहाटी	आसाम	१७।२२
चिन्नई	(तमि.)	१८।१७
जबलपुर	(म.प्र.)	१८।१३
जयपुर	(राज.)	१८।२८
जींद	(हरि.)	१८।२४
जौधपुर	(राज.)	१८।४२
झरिया	(बिहा.)	१७।४६
झांसी	(उ.प्र.)	१८।१७
झुञ्झुनू	(राज.)	१८।२९
डिब्रुगढ	आसाम	१७।०८
तेजपुर	आसाम	१७।१७
दरभंगा	(बिहा.)	१७।४७
त्रिवेंद्रम	(केर.)	१८।३२
दिल्ली		१८।२१
नैनिताल	(उ.प्र)	१८।११
पूना	(महा.)	१८।४०
प्रयाग	(उ.प्र.)	१८।०४
बीकानेर	(राज.)	१८।३८
बंगलुरू	(कर्ना.)	१८।२८
बांसवाडा	(राज.)	१८।३६
बिलासपुर	(म.प्र)	१८।०४
भिवानी	(हरि.)	१८।२५
मथुरा	(उ.प्र.)	१८।२०
मुम्बई	(महा.)	१८।४५
मैसूर	द.भा.	१८।३२
लखनऊ	(उ.प्र.)	१८।०७
वाराणसी	(उ.प्र)	१७।५९
विजयवा.	(आंप्र)	१८।१३
श्रीनगर	ज.क.	१८।२७
हरद्वार	(उ.प्र.)	१८।१६
हैदराबाद	(आं.प्र.)	१८।२२
चंढीगढ		१८।२१
नारनौल	(हरि.)	१८।२५
रिवाड़ी	(हरि.)	१८।२४
पानीपत	(हरि.)	१८।२१
करनाल	(हरि.)	१८।२१
सिरसा	(हरि.)	१८।२९
पटोदी	(हरि.)	१८।२३
हिंसार	(हरि.)	१८।२७
अनूपगढ	(राज.)	१८।३८
अलवर	(राज.)	१८।२४
अलीगढटोंक	(राज.)	१८।२७
अलीगढधौल	(राज.)	१८।२०
किशनगढ	(राज.)	१८।४९
कुचामन	(राज.)	१८।३२
चूरु	(राज.)	१८।३१
चित्तौडगढ	(राज.)	१८।३४
जहाजपुर	(राज.)	१८।३१
जैसलमेर	(राज.)	१८।४८
डीडवाना	(राज.)	१८।३४
धौलपुर	(राज.)	१८।१९
नूरबहादरा	(राज.)	१८।२९
पाली	(राज.)	१८।३९
प्रतापगढ	(राज.)	१८।३४
बाडमेर	(राज.)	१८।४७
बालोत्रा	(राज.)	१८।४३
बाराँ	(राज.)	१८।२६
भरतपुर	(राज.)	१८।२१
फतेहपुर	(राज.)	१८।३१
भीलवाड़ा	(राज.)	१८।३४
फुलेरा	(राज.)	१८।३०
राजगढ	(राज.)	१८।२९
रतनगढ.	(राज.)	१८।३२
रिंगस	(राज.)	१८।२९
लाडनू	(राज.)	१८।३४
लक्ष्मणगढ	(राज.)	१८।३१
व्यावर	(राज.)	१८।३५
शाहाबाद	(राज.)	१८।२३
शाहगढ	(राज.)	१८।५२
शाहपुरा	(राज.)	१८।३२
शेरगढ	(राज.)	१८।२६
सांगानेर	(राज.)	१८।२८
सिक्कर	(राज.)	१८।३०
सिरोही	(राज.)	१८।४१
श्रीमाधोपुर	(राज.)	१८।२९
सोजत	(राज.)	१८।३७
सूरजगढ	(राज.)	१८।२८
सुजानगढ	(राज.)	१८।३३
हनुमानगढ	(राज.)	१८।३३
अबोहर	(पंजा.)	१८।३३
बरनाला	(पंजा.)	१८।२७
फरीदकोट	(पंजा.)	१८।२९
फिरोजपुर	(पंजा.)	१८।३०
फ्राजिल्का	(पंजा.)	१८।३३
गुरदासपुर	(पंजा.)	१८।२६
जालंधर	(पंजा.)	१८।२६
कोटकपूरा	(पंजा.)	१८।३०
पठानकोट	(पंजा.)	१८।२५
पटियाला	(पंजा.)	१८।२३
अंगूल	(उडी.)	१७।५३
बालेश्वर	(उडी.)	१७।४५
पुरी	(उडी.)	१७।५०
सिल्लीगुडी	(प.बं.)	१७।३६
कूचबिहार	(प.बं.)	१७।३१
जलपाईगुडी	(प.बं.)	१७।३४
झाडग्राम	(प.बं.)	१७।४३
दार्जीलिंग	(प.बं.)	१७।३६
मलदाह	(प.बं.)	१७।३८
कटिहार	(बिहा.)	१७।३९
किशनगंज	(बिहा.)	१७।४२
पटना	(बिहा.)	१७।५०
भागलपुर	(बिहा.)	१७।४१
पूर्णिया	(बिहा.)	१७।४०
गंगटोक	(सिक्कि.)	१७।३४
शिलांग	(मेघा.)	१७।२२
अगरतला	(त्रिपुरा)	१७।२५
इम्फाल	(मणि.)	१७।१४
इटानगर	(अरु.प्र.)	१७।१४
धूबरी	(आसा.)	१७।२९
शिवसागर	(आसा.)	१७।०९
सिलचर	(आसा.)	१८।००
कुमारीअंत.	(भा.)	१८।३०
निकोबारद्वी	(भा.)	१७।२२
केरशिखर	(भा.)	१८।२०
पोरबंदर	(गुज.)	१८।५६
द्वारका	(गुज.)	१८।५९
सदिया	(असम)	१७।०५
जोरहाट	(असम)	१७।११

अलमतिविस्तरेण

तिथि आनयन विधि और उदाहरण (संवत् २०८२, शाक:१९४७, सन २०२५)

श्रीगुरुचरणों का ध्यान कर कमलरुपी चरणों से प्राप्त ज्ञानपुँज के प्रकाश से तिथि आनयन सूक्ष्म-गणित सोदाहरण बालबोधाय लिखने का प्रयास किया है। माँ सरस्वती से दिन-रात प्रार्थना करता हूँ कि ज्ञानपुँज के दर्शन कराने वाले श्रीगुरुचरण सर्वदा मेरे ह्रदय में निवास करें।

तिथि समाप्तिकाल सूत्र = चन्द्र - सूर्य ÷ १२ - पूर्णांक (१२ - खण्ड़ांक) x ६० x अहोरात्र ÷ गत्यन्तर

पञ्चाङ्ग - त्रिस्कन्ध ज्यौतिष की आधार शिला मात्र एक पञ्चाङ्ग गणित है। तथा वर्षारम्भ चैत्रादि चान्द्र वर्ष प्रारम्भ जो चैत्र शुक्ल प्रतिपद तिथि से प्रारम्भ होता है, उसी दिन वर्ष भर के लिए पञ्चाङ्ग फल दैवज्ञ वर्य (ज्यौतिर्विद) के मुख से सुनकर श्री देवी, कलश स्थापन, देवी पूजन प्रभृति वासन्तिक नवरात्रारम्भ होता है। इसी शुभ समय में पञ्चाङ्ग फल श्रवण भी आवश्यक कहा गया है। यथा तिथि नाम सुनने से श्री प्राप्ति, वार नाम सुनने से आयुष्य वृद्धि, नक्षत्र नाम श्रवण से पापक्षय, योग नाम श्रवण से रोग निवारण एवं करण नाम श्रवण से अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है। **जैसे** - "तिथेश्चश्रियमाप्नोति वाराद्रोयुष्य वर्द्धनम्। नक्षत्राद्धरते पापं योगाद्रोग निवारणम्॥ करणात्कार्यसिद्धिश्च पञ्चाङ्गफलमुच्यते"। इति॥

पञ्चाङ्ग में दी हुई तिथि और तिथि के समाप्तिकाल का समय, गणित द्वारा कैसे स्पष्ट करते हैं ?

पूर्णतया भारतीय पद्धति से निर्मित **पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग** में दिये हुए ग्रह स्पष्ट के आधार पर ही यहाँ तिथि आनयन गणित और संक्षेप से पाठकों के ज्ञानवर्द्धन के लिए उदाहरण दे रहा हूँ, आशा है कि जिज्ञासु-गण, विद्यार्थिगण लाभान्वित होंगें और पञ्चाङ्ग अपनी उच्चगरिमामयी सिद्धि का द्योतक होगा। अतः ज्योतिर्गणित कर्ता आचार्य **वेंकटेश बापू केतकर** की बड़ी ही देन है जिनके ग्रन्थ शक (शाक:) १८२५ से आज तक सूक्ष्म-वेध यंत्रों के समकक्ष अक्षुण्ण चले आ रहे है। अपने स्तुत्य परिश्रम से भारतीय पञ्चाङ्ग साधन में वन्दनीय योगदान दिया है, ऐसे महापुरुषों को सर्वदा ह्रदय से प्रणाम करता हूँ। महापुरुषों की श्रमोपार्जित धरोहर अर्थात् भारतीय पद्धति से पञ्चाङ्ग-गणित करते समय स्वतः गर्व की परम अनुभूति होती है जो अवर्णनीय है।

मानद वेंकटेश बापू केतकर पद्धति से निर्माण किया गया पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग धर्मशास्त्र, श्रुति-स्मृति और प्राचीन ऋषियों के आर्ष (गूढ) वचनों द्वारा त्योंहार, व्रत, उत्सव-पर्व आदि निर्णय सहित सूक्ष्म-गणित के आवरण से आवेष्टित (ओत-प्रोत) है। जैसा कि उपर त्रिस्कन्ध ज्योतिष का उल्लेख है। पञ्चाङ्ग में तिथि, नक्षत्र, योग, करण, ग्रह-स्पष्ट . . . आदि जहाँ भी चन्द्रमा का उपयोग हुआ है वहाँ चन्द्रमा में बीस संस्कार देकर काम में लिया है और इसीलिए आवरण से ओत-प्रोत शब्द का उपयोग किया है।

तिथि का आदि ज्ञान: - सूर्योदयकालीन अंशात्मक स्पष्ट चन्द्र मे से अंशात्मक स्पष्ट सूर्य को घटा दें यदि चन्द्र के अंश कम हों तो चन्द्र के अशों में ३६० जोड़कर घटावें, शेष में १२ (क्षेपक) का भाग दें, भागफल की संख्या तुल्य गत तिथि होगी और जो शेष रहा वह वर्तमान तिथि का भुक्तांश आगया. इस भुक्तांश को १२ अंश में से घटाने पर वर्तमान तिथि का भोग्यांश होगा।

वर्तमान तिथि के भुक्तांश में गत्यन्तर का भाग देने से वर्तमान तिथि का भुक्त घटी-पल होगा और भोग्यांश में गत्यन्तर का भाग देने से वर्तमान तिथि के भोग्य घटी-पल होंगें। घटी-पलों में ढाई का भाग देकर स्टैं. सूर्योदय जोड़ने से वर्तमान तिथि का भारतीय स्टैंडर्ड समय में समाप्तिकाल होगा। जो कि सूक्ष्मासन्न है। सूक्ष्म-भोग्यकाल में ७ मिनट से न्यूनाधिक अन्तर नहीं होगा।

सूक्ष्मता के लिए: - तिथि समाप्ति के समय को इष्टकाल मानकर इष्टकालीन चन्द्र स्पष्ट करने के लिए चन्द्रमा में बीस संस्कार देकर सूक्ष्म स्पष्ट चन्द्र करना चाहिए. जो श्रमसाध्य तो होगा ही अपितु ग्रंथो का भी अभाव है अतः विद्यार्थियों के लिए सूक्ष्मगणित करना संभव नहीं है। पञ्चाङ्गकर्ता अपने ग्रंथो [illegible] व्यवस्था रखते हैं इसीलिए पञ्चाङ्गों में सूक्ष्म स्पष्ट चन्द्र लिखा रहता है और यहाँ भी उदाहरण में [illegible] दिखाया है। इसीलिए पञ्चाङ्ग में दिये हुए इष्टकालीन ग्रह स्पष्ट के उदाहरण में चन्द्र स्पष्ट में मैने लि[illegible] है कि - चंद्रमा की शीघ्रगति होने से चंद्रस्पष्ट का यह साधन स्थूल है। अलमतिविस्तरेण॥

पञ्चाङ्ग मे सूर्योदयकालीन ग्रहस्पष्ट दिये हुए हैं।

उपकरण - तारीख १५ अगस्त २०२५, शुक्रवार, सूर्योदय-कालीन तिथि गणित (स्टैं. ६।०४)

पञ्चाङ्ग में चन्द्रमा बीस संस्कार देकर सूक्ष्म स्पष्ट किया हुआ है।

क्षेपक १२ (स्पष्ट-सूर्य से स्पष्ट-चंद्रमा जब १२ अंश आगे निकलता है तब शुक्ला प्रतिपदा (१) तिथि पू[illegible] होती है इसी तरह हर बारह अंश में शुक्ला १ तिथि से आगे द्वितीया आदि. बढती रहती है इसीलिए ति[illegible] का क्षेपक १२ अंश है।)

चन्द्र-सूर्य स्पष्ट - (राशि-अंश-कला-विकला)
चन्द्र ०।१२।२५।२५ गति ८५४।१९, सूर्य ३।२८।१५।३१ गति ५७।४०
अंशात्मकः स्पष्ट चन्द्र १२.४२३७४, सूर्य ११८.२५८७
भाज्यः (अंशात्मकः) २५४.१६५ (१२.४२३७४ + ३६० - ११८.२५८७)

भागफल (सावयव) २१.१८०४२ (२५४.१६५ ÷ १२)
भागफल संख्या (२१) तुल्य गत तिथि कृष्णा ६
वर्तमान तिथि कृष्णा ७
भुक्तांशः कृष्णा ७ तिथि का २.१६५०३९ = (२१.१८०४२ - २१) x १२
भोग्यांशः कृष्णा ७ तिथि का ९.८३४९६१ = (१२ - २.१६५०३९)
कलात्मकः चन्द्र-गति ८५४.३१६७, सूर्य-गति ५७.६६६६७
गत्यन्तरः ७९६.६५ (चन्द्र गति में से सूर्य गति घटाने को गत्यन्तर कहते हैं)
अहोरात्र मान = सूर्योदय से अगले दिन के सूर्योदय तक के समय को अहोरात्र कहते हैं
अहोरात्रः (घट्यादि) ६०।०३ = (अगले दिन का सूर्योदय ६।०५ + २४ — सूर्योदय ६।०४) x २॥
उदयकाल में कृष्णा ७ तिथि का भुक्तकाल-स्थूल (घट्यादि.) ९।४८
(भुक्तांशः २.१६५०३९ x ६० x अहोरात्र ६०.०५ (७८००.६३६ ÷ गत्यन्तरः ७९६.६५))
उदयकाल में कृष्णा ७ तिथि का सूक्ष्मासन्न भोग्यकाल:-
(घट्यादि.) ४४।२९, (स्टैं.) २३।५२
(भोग्यांशः ९.८३४९६१ x ६० x अहोरात्र ६०.०५ (३५४३५.३६ ÷ गत्यन्तरः ७९६.६५))
स्थूल-ऐक्यम्- कृष्णा ७ तिथि का गत ९।४८, और ऐष्य ४४।२९, तिथिभोग ५४।१६ हुआ।

नोट -स्थानिक घटी-पल और भारतीय स्टैं. समय में सूक्ष्मासन्न समाप्तिकाल प्राप्त हो गया है। सूक्ष्मासन्न तिथि का भुक्त-भोग्यकाल और सूक्ष्म भुक्त-भोग्यकाल में ७ मिनट से न्यूनाधिक अन्तर नहीं होगा।

सूक्ष्मता के लिए: - आगे की क्रिया उपर दर्शाये अनुसार करलें। मूलांक नीचे दे दिये हैं। इष्टकालीन चन्द्रमा में दुबारा बीस संस्कार देकर सूक्ष्म स्पष्ट किया है।
इष्टकालीन (स्टैं. २३।५२ के) सूर्य-चन्द्र स्पष्ट-
चन्द्र ०।२२।५८।४३, सूर्य ३।२८।५८।१६
इष्टकालीन अंशात्मकः स्पष्ट चन्द्र २२.९७८५२, सूर्य ११८.९७१
भाज्यः (अंशात्मकः) २६४.००७५ (२२.९७८५२ + ३६० - ११८.९७१)
भागफल (सावयव) २२.०००६३ (२६४.००७५ ÷ १२)

भागफल संख्या (२२) तुल्य गत तिथि कृष्णा ७
वर्तमान तिथि कृष्णा ८
भुक्तांशः कृष्णा ८ तिथि का .००७५ = (२२.०००६३ - २२) x १२
भोग्यांशः कृष्णा ८ तिथि का ११.९९२५ = (१२ - .००७५)
कलात्मकः चन्द्र-गति ८५४.३१६७, सूर्य-गति ५७.६६६६७
गत्यन्तरः ७९६.६५

इष्ट समय में कृष्णा ८ तिथि का सूक्ष्म भुक्तकाल (घट्यादि.) ०।०२
(भुक्तांशः .००७५ x ६० x अहोरात्र ६०.०५ (२७.०२२५ ÷ गत्यन्तरः ७९६.६५))
इष्ट समय में कृष्णा ८ तिथि का स्थूल भोग्यकाल (घट्यादि.) ५४।१४
(भोग्यांशः ११.९९२५ x ६० x अहोरात्र ६०.०५ (४३२०८.९८ ÷ गत्यन्तरः ७९६.६५))
अनपेक्षित (सूर्योदय-कालीन तिथि से अगली) कृष्णा ८ तिथि का भुक्तकाल (घट्यादि.) ०।०२

(**विशेष-** यहाँ उपर के सूक्ष्मासन्न-गणित में सूर्योदयकालीन कृष्णा ७ का समाप्तिकाल (स्टैं.) २३।५२ का समय है और इसी समय को इष्टकाल मानकर आगे का गणित किया है, तभी मालुम हुआ कि यहाँ (स्टैं.) २३।५२ पर तो चन्द्रमा की शीघ्रता से बदलती हुई गति के कारण कृष्णा ८ तिथि का भुक्तकाल (घट्यादि.) ०।०२ हो चुका है, इसका अर्थ ऐसा हुआ कि सूर्योदय-कालीन कृष्णा ७ तिथि तो (घट्यादि.) ०।०२ पहिले ही समाप्त हो चुकी थी अतः इसी समय को घंटा-मिनट बनाकर (स्टैं.) २३।५२ में से घटा दें तो सूर्योदय-कालीन कृष्णा ७ तिथि का सूक्ष्म स्पष्ट भोग्यकाल यानि समाप्तिकाल प्राप्त होगा, जैसा कि आगे दर्शाया है -)

इष्टकालीन सूक्ष्म अन्तर-फल (घट्यादि.) - ०।०२, (घंटा-मि.) - ०।०१
सूर्योदय-कालीन कृष्णा ७ तिथि का सूक्ष्मासन्न भोग्यकाल -
(घट्यादि.) ४४।२९, (स्टैं.) २३।५२ में क्रमशः-
इष्टकालीन सूक्ष्म अन्तर-फल का समावेश (धन या ऋण) कर दिया जैसे -
४४।२९ - ०।०२ = ४४।२७ और २३।५२ - ०।०१ = २३।५१

अतः कृष्णा ७ तिथि का सूक्ष्म स्पष्ट समाप्तिकाल **(घट्यादि.) ४४।२७, (स्टैं.) २३।५१**

ऐक्यम्- कृष्णा ७ तिथि का गत ९।४८, और ऐष्य ४४।२७, सम्पूर्ण-तिथिभोग ५४।१५ हुआ।

सूचना- पञ्चाङ्ग मे उक्त तारीख की तिथि और समाप्तिकाल का समय देखे, यही होगा। कहीं कहीं १ मिनट (३ पल) का (अर्धाधिक रुप से) न्यूनाधिक अंतर हो सकता है इससे अधिक अंतर नहीं होगा।

॥ करण साधन ॥

पञ्चाङ्ग साधन (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करणः- पञ्चानाम् अङ्गानाम् स.) क्रिया के अन्तर्गत करण साधन दिखा देना भी उचित होगा।

सम्पूर्ण-तिथिभोग का आधा भाग करण होता है **"तिथ्यर्थ करणम्"**। करण ११ होते हैं इनके नाम - बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि (विष्टि करण को भद्रा भी कहते हैं),अतिरिक्त चार करण शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किंस्तुघ्न। जिनमें बव आदि ७ करण शुक्ल. प्रतिपदा के उत्तरार्ध भाग से कृष्ण. चतुर्दशी के पूर्वार्धभाग तक यथा क्रम से आते रहते हैं। चतुर्दशी के उत्तरार्ध भाग में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्धभाग में चतुष्पाद, उत्तरार्ध में नाग और शुक्ल. प्रतिपदा के पूर्वार्धभाग में किंस्तुघ्न होता है। प्रत्येक चैत्रादि मासों में बव आदि करणों का यही स्थाई अनुक्रम है। तिथ्यर्ध के भोगानुसार इनका प्रवेशकाल और समाप्तिकाल होते रहता है। सर्वत्र एवमेव ज्ञातव्यम् ॥ अलमिति ॥

तिथि संख्या ज्ञानाय - प्रायः पञ्चाङ्गों में देखा होगा कि पूर्णिमा को १५ और अमावस्या को ३० लिखा रहता है। व्यवहारिक दृष्टि से शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से पूर्णिमा और कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से अमावस्या के नाम से जाना जाता है लेकिन गणितीय संख्यात्मक दृष्टि से शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की १ से १५ संख्या होती है और कृष्णपक्ष में प्रतिपदा से अमावस्या तक की १६ से ३० संख्या होती है। करण का निर्णय भी तिथि की इसी संख्यानुसार होता है। स्पष्टता के लिए करण सारिणी देखें।

उदाहरण- ता. १५ अगस्त २०२५, शुक्रवार तिथि (कृष्णा ७) २२ को २ से गुणा किया ४४ संख्या तुल्य बव करण का भोग कृष्णा ७ के उत्तरार्ध-भाग में स्पष्ट हो गया। ४४ में एक घटा देंगे तो ४३ संख्या तुल्य विष्टि करण का भोग कृष्णा ७ के पूर्वार्ध-भाग में स्पष्ट हो गया। **समय ज्ञान-** तिथि का आधा भाग बनाने के लिए सम्पूर्ण-तिथिभोग (घट्यादि) ५४।१५ में २ का भाग दिया तो २७।०७।३० हुए, इसी को तिथ्यर्ध कहते हैं। इसमें तिथि का भुक्तकाल-स्थूल ९।४७।३० (९।४८) घटा दिया यह विष्टि करण का समाप्तिकाल और बव का प्रवेशकाल १७।२०।०० हुआ। बव के प्रवेशकाल में तिथ्यर्ध जोड़ने से (६० से ज्यादा हो तो ६० घटा दें) बव का समाप्तिकाल ४४।२७।३० होगा। इनके (१७।२०।०० और ४४।२७।३० के) घंटा-मिनट बनाकर सूर्योदय जोड़ने से बव करण का स्पष्ट प्रारम्भ समय स्टैं. १३।०० से समाप्तिकाल २३।५१ सिद्ध हुआ।

नोट - यहाँ करण के उदाहरण की जो विधि दी है वो पुरानी पद्धति से है। पञ्चाङ्ग में जो करण का समाप्तिकाल दिया है वो तिथि के गणित की तरह सूक्ष्म किया हुआ है। इसलिए करण के समय में कहीं कहीं स्थूलता संभव है, इसमें भ्रम न करें। यहाँ प्रसंगतः ज्ञानवर्द्धन हेतु मात्र उदाहरण की क्रिया दिखाई है। यदि सूक्ष्मता लानी हो तो जैसे तिथि के उदाहरण की विधि दिखाई है उसी विधि से करण का भी गणित करेंगे तो करण का प्रवेश और समाप्तिकाल सूक्ष्म होगा। तिथि और करण में सूक्ष्म गणित की विधि समान है मात्र क्षेपक अलग (तिथि का क्षेपक १२ है और करण का क्षेपक ६) है, शेष तिथिवत्। अलमतिविस्तरेण ॥

॥ करण सारिणी ॥

शुक्लपक्ष			कृष्णपक्ष		
तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध	तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध
१	(१) किंस्तुघ्न	(२) बव	(१६) १	(३१) बालव	(३२) कौलव
२	(३) बालव	(४) कौलव	(१७) २	(३३) तैतिल	(३४) गर
३	(५) तैतिल	(६) गर	(१८) ३	(३५) वणिज	(३६) विष्टि
४	(७) वणिज	(८) विष्टि	(१९) ४	(३७) बव	(३८) बालव
५	(९) बव	(१०) बालव	(२०) ५	(३९) कौलव	(४०) तैतिल
६	(११) कौलव	(१२) तैतिल	(२१) ६	(४१) गर	(४२) वणिज
७	(१३) गर	(१४) वणिज	(२२) ७	(४३) विष्टि	(४४) बव
८	(१५) विष्टि	(१६) बव	(२३) ८	(४५) बालव	(४६) कौलव
९	(१७) बालव	(१८) कौलव	(२४) ९	(४७) तैतिल	(४८) गर
१०	(१९) तैतिल	(२०) गर	(२५)१०	(४९) वणिज	(५०) विष्टि
११	(२१) वणिज	(२२) विष्टि	(२६)११	(५१) बव	(५२) बालव
१२	(२३) बव	(२४) बालव	(२७)१२	(५३) कौलव	(५४) तैतिल
१३	(२५) कौलव	(२६) तैतिल	(२८)१३	(५५) गर	(५६) वणिज
१४	(२७) गर	(२८) वणिज	(२९)१४	(५७) विष्टि	(५८) शकुनि
१५	(२९) विष्टि	(३०) बव	(३०)१५	(५९) चतुष्पाद	(६०) नाग

कन्या के विवाह में गुरुबल और महत्वपूर्ण जानकारी :-

कन्या के विवाह में गुरुबल:-

कन्या-विवाहकालं ग्रहशुद्धिं च वसन्तमालिकाछन्दसाह -

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडशब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः ॥१२॥

नारद, कश्यप, श्रीपतिनिबन्ध, पराशरादि सहित - अत एवाह व्यासः -
'अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी । दशवर्षा भवेत्कन्या द्वादशे वृषली स्मृता ॥' इति ।

यदा तु कन्या कालातिक्रान्ता भवति तदा गुरुबलमनावश्यकमित्याह व्यासः -
'दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता । तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः॥' इति ।

अर्थ - प्राचीन आचार्यों के मत से १२ वर्ष से ऊपर की कन्याओं के विवाह में समय (अवस्था) के अतिक्रमण से गुरु शुद्धि आदिक विचार आवश्यक नहीं है । -**पीयूषधारा मु.चि. (पृष्ठ ३१४)**

अपि च- अष्टवर्षा.। दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वम् रजस्वला ॥५॥' इति ।

- **निर्णयसिन्धु (पृष्ठ ४५०)**

कालातिक्रमे निषेधमाह वाराहः-

पूजाभिलाषं प्रतिनिःस्पृहोऽपि, कुर्य्याद् गुरौ शुद्धिविवर्जितेऽपि ।
वराग्र्यलाभे शुभदं विवाहं, वदन्ति गर्गच्यवनादिमुख्याः ॥५३॥

अर्थ - आचार्य वराह के अनुसार कालातिक्रम में गुरु का निषेध- श्रेष्ठ सुयोग्य वर के प्राप्त होने पर गुरु की शुद्धि के बिना भी विवाह शुभ होता है । गर्ग, च्यवन प्रभृति मुख्य ऋषियों का यह मत है ।

- **संग्रहशिरोमणि (पृष्ठ ३५३)**

पापग्रहाः (उग्र/क्रूराः वा)- सूर्य, मंग.,शनि,राहु, केतु -
'सूर्यभौमशनिराहुकेतवः पापसंज्ञखचराः क्षयिचन्द्रः । पूर्णचन्द्रगुरुशुक्रसोमजाः सर्वकर्मसु हि सौम्यखेचराः ॥' इति वसिष्ठेन कण्ठतः क्रूरत्वाभिधानादस्ति क्रूरत्वम् । स्वरोदयेऽपि - 'बुधशुक्रेन्दुजीवाश्च सदा सौम्यग्रहा मताः ।' इति ।

- **पीयूषधारा (पृ.३६७)**

किसी भी शुभकार्य में नक्षत्रशुद्धि -

अथ क्रूराक्रान्तादिनक्षत्रदोषं सापवादमनुष्टुभाह -

ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरमुक्तादिकानि च ।
भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥५८॥

अर्थ - जिस नक्षत्र पर पापग्रह का वेध हो, जिस नक्षत्र पर पापग्रह का योग हो अर्थात् बैठा हो या जिस नक्षत्र को भोगकर पापग्रह ने उसे छोड़ दिया हो तो वह नक्षत्र यदि चन्द्रमा से भुक्त हो जाय तो ऊपर के सभी दोष मिट जाते हैं अन्यथा वह नक्षत्र संस्कार के योग्य नहीं होता है ॥५८॥

- **पीयूषधारा (पृ. ३७१)**

सोग्रांगः इति ।
स उग्र अंगः ॥ स सहितः, उग्र उग्रग्रहाणाम् (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु) अंगः लग्नः ॥
भाव - लग्न में उक्त ग्रहों में से कोई एक भी ग्रह हो तो विवाह मुहूर्त्तों में सोग्रांगः लिखा रहता है ।

॥ अयन ज्ञानाय ॥

सायन/निरयन दो प्रकार के होते हैं । पहला सायन और दूसरा निरयन । सायन सूर्य से छ ऋतुओं का निर्धारण होता है और निरयन सूर्य से पंचांग (धार्मिक व्रतोत्सव, मुहूर्त आदि) का निर्णय किया जाता है । (पीयूषधारा पृ.१७२,श्लोक १)

अयन - एक वर्ष में दो अयन होते हैं । उत्तरायण और दक्षिणायन । मकर सक्रान्ति से उत्तरायण प्रारम्भ होता है और सूर्य कर्क राशी पर आवे तब दक्षिणायन प्रारम्भ होता है ।

ऋतु - एक वर्ष में छ ऋतु होती हैं । उनके नाम :- वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त,शिशिर ।

भद्रा दोषः- भद्राकाल में किसी भी तरह का विवाह आदि शुभ कार्य सर्वथा निषेध हैं ।

यथा - न कुर्यान्मङ्गलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन ।
कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत्सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥' इति ॥ - **पीयूषधारा मु. चिन्तामणि पृ. ४१**

॥ अपि च ॥ श्रीपतिः- न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिकमत्र सिद्धम् ॥

- **निर्णयसिन्धु भाषा टीका, खेमराज., परि.१, पृ.३३**

धर्मसिन्धु परिच्छेद ३ पू., पृष्ठ ५२९ -

ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय श्रीविष्णुं स्मृत्वा गजेन्द्रमोक्षादि पठित्वा इष्टदेवतादि स्मरेत् ।
विष्णुपुराणोक्त ब्राह्ममुहूर्त - रात्रेः पश्चिमयामस्य मुहूर्तो यस्तृतीयकः । स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने। पञ्च पञ्च उषःकालः सप्तपञ्चारुणोदयः । अष्टपञ्च भवेत् प्रातस्ततः सूर्योदयः स्मृतः ॥

भूमि प्रार्थना - समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते । विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यम् पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥ इति भूमिं प्रार्थ्य गवादिमङ्गलानि' पश्येत् । ब्राह्म-मुहूर्त मे उठकर श्रीविष्णु का स्मरणपूर्वक गजेन्द्रमोक्ष आदि का पाठ कर अपने इष्टदेवता आदि का स्मरण करे । हे विष्णुपत्नि ! हे देवि ! आपका वस्त्र समुद्र है । पर्वतरूप स्तनों से भूषित हैं । आपको नमस्कार है । मेरे चरण का स्पर्श क्षम्य है । इस प्रकार भूमि की प्रार्थना गौ आदि मांगलिक द्रव्य का दर्शन करे ।

प्रातःकाल हस्तावलोकनम् - १. आदि पद से प्रभात में स्वकरतलादि का अवलोकन करे - कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम् ।

परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशम् -

व्याख्या- अथ परे आचार्या लग्नशुद्धया समीचीन लग्नबलेन कुयोगानां मृत्युक्रकचादीनां नाशं भवंतीति शेषः । - **पीयूषधारा (पृष्ठ ४६, श्लो.४२)**

अर्थ- लग्न शुद्धि के समय तिथि, नक्षत्र और विष्कुंभादि योग द्वारा उत्पन्न हुए मृत्यु-क्रकचादि कुयोग स्वयं नष्ट हो जाते हैं (जैसे सूर्योदय होने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है) ।

विशेष - किसी एक विद्वान् के द्वारा बताये हुए शुद्धलग्न वाले मुहूर्त्त को दूसरा विद्वान् (बालबुद्धि वाला) यजमान को यह कह कर भ्रमित (गुमराह) कर देता है कि उस दिन राहुकाल, मृत्यु-क्रकचादि कुयोग होने से यह मुहूर्त्त अच्छा नहीं है । नोट - ऐसे बालमति के विद्वानों से कर-वद्ध प्रार्थना है कि ज्योतिष-शास्त्र का उपहास (मजाक) न करें । कहा भी है- "नानाशास्त्र विचक्षणश्च पुरुषांनिन्दन्ति मूर्खाः सदा इति" । ॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय. ॥

पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री), मुम्बई.

संवत् २०८२, ता. २० अक्टूबर २०२५ सोमवार ॥ श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् ॥ विभिन्न नगरों में दिन के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै.घंटा-मिनट)

शहर	रामगढ	अजमेर	अहमदा.	अमृतस.	आकोला	इंदौर	उदयपुर	कोलकाता	सीकर	कानपुर	कोटा	चिन्नई	जयपुर	झरिया	झांसी	डिब्रुगढ	दिल्ली	बैंगलोर	बांसवाडा	भिवानी	मुम्बई	वाराणसी	विजयवा.	हैदराबाद
सूर्योदय	६।३७	६।३७	६।४३	६।४१	६।२२	६।२९	६।३९	५।३८	६।३६	६।१४	६।३१	६।०४	६।३३	५।४८	६।२०	५।१७	६।२९	६।१४	६।३५	६।३३	६।३८	६।०३	६।०५	६।१४
चौ.मान	१।२४	१।२५	१।२५	१।२४	१।२६	१।२६	१।२५	१।२६	१।२४	१।२५	१।२५	१।२८	१।२५	१।२५	१।२५	१।२५	१।२४	१।२८	१।२५	१।२४	१।२६	१।२५	१।२७	१।२७
अमृत	८।०१	८।०२	८।०८	८।०५	७।४८	७।५४	८।०४	७।०४	८।००	७।३९	७।५६	७।३१	७।५७	७।१३	७।४५	६।४१	७।५३	७।४२	८।०१	७।५७	८।०४	७।२८	७।३१	७।४१
काल	९।२६	९।२६	९।३४	९।२८	९।१४	९।२०	९।२९	८।२९	९।२५	९।०४	९।२१	८।५९	९।२२	८।३८	९।१०	८।०६	९।१७	९।०९	९।२६	९।२१	९।३१	८।५३	८।५८	९।०७
शुभ	१०।५०	१०।५१	१०।५९	१०।५२	१०।४०	१०।४६	१०।५५	९।५५	१०।४९	१०।२९	१०।४६	१०।२६	१०।४७	१०।०४	१०।३५	९।३०	१०।४२	१०।३७	१०।५२	१०।४६	१०।५७	१०।१८	१०।२५	१०।३४
रोग	१२।१५	१२।१६	१२।२५	१२।१५	१२।०६	१२।११	१२।२०	११।२१	१२।१४	११।५३	१२।११	११।५४	१२।११	११।२९	१२।००	१०।५५	१२।०६	१२।०४	१२।१७	१२।१०	१२।२३	११।४३	११।५२	१२।०१
उद्वेग	१३।३९	१३।४१	१३।५०	१३।३९	१३।३२	१३।३७	१३।४५	१२।४६	१३।३८	१३।१८	१३।३६	१३।२१	१३।३६	१२।५४	१३।२५	१२।१९	१३।३०	१३।३२	१३।४२	१३।३४	१३।५०	१३।०८	१३।१९	१३।२७
चल	१५।०३	१५।०५	१५।१६	१५।०२	१४।५८	१५।०२	१५।१०	१४।१२	१५।०३	१४।४३	१५।०१	१४।४९	१५।०१	१४।२०	१४।५०	१३।४४	१४।५४	१४।५९	१५।०८	१४।५८	१५।१६	१४।३३	१४।४६	१४।५४
लाभ	१६।२८	१६।३०	१६।४१	१६।२६	१६।२४	१६।२८	१६।३५	१५।३८	१६।२७	१६।०८	१६।२६	१६।१७	१६।२५	१५।४५	१६।१५	१५।०८	१६।१९	१६।२७	१६।३३	१६।२३	१६।४२	१५।५८	१६।१३	१६।२१
अमृत	१७।५२	१७।५५	१८।०६	१७।४९	१७।५०	१७।५३	१८।००	१७।०३	१७।५२	१७।३२	१७।५१	१७।४४	१७।५०	१७।१०	१७।४०	१६।३३	१७।४३	१७।५५	१७।५९	१७।४७	१८।०९	१७।२३	१७।४०	१७।४८

जिन नगरों का नहीं लिखा है वे नीचे लिखी विधि को क्रियान्वित करें। दिनमान एवं रात्रिमान का आठवाँ भाग चौघड़िया होता है। दिन का चौघड़िया :- सूर्योदय में घंटा-मिनटात्मक दिनमान का आठवाँ भाग जोड़ने से एक चौघड़िया का समय आता है। इसी संख्या में पुनः आठवाँ भाग जोड़ने से दूसरे चौघड़िये का समय आता है। इसी प्रकार क्रिया करते रहने से आठों चौघड़ियों का समय स्पष्ट होता है। रात्रि का चौघड़िया :- सूर्यास्त में रात्रिमान (सूर्यास्त से अगले दिन के सूर्योदय तक रात्रिमान होता है) का आठवाँ भाग जोड़ने से एक चौघड़िया का समय आता है। शेष क्रिया पूर्ववत्। उदाहरण-ता. २० अक्टूबर २०२५ सोमवार को रामगढ में सूर्योदय ६ बजकर ३७ मिनट और सूर्यास्त १७ बजकर ५२ मिनट है। यहाँ सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाकर आठ का भाग देने से एक चौघड़िया का मान (समय) १ घंटा २४ मिनट हुआ इसे सूर्योदय ६ बजकर ३७ मिनट में जोड़ने से प्रथम चौघड़िया अमृत का ८ बजकर ०१ मिनट पर समाप्तिकाल हुआ। इसी संख्या में दुबारा एक चौघड़िया का मान (समय) जोड़ने से दूसरा चौघड़िया काल का ९ बजकर २६ मिनट पर समाप्तिकाल हुआ। इसी तरह पुनः पुनः एक चौघड़िया का मान (समय) जोड़ने से दिन के आठों चौघड़ियों का समय जाना जा सकता है।

संवत् २०८२, ता. २० अक्टूबर २०२५ सोमवार ॥ श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् ॥ विभिन्न नगरों में लग्नप्रवेश (स्टै.घंटा-मिनट) ॥ कर्के त्याज्यम् ॥

शहर	अजमेर	अहमदा.	अयोध्या	अमृतस.	आकोला	आगरा	इंदौर	इलाहाबा.	उज्जैन	उदयपुर	कटक	कोलकाता	सीकर	कानपुर	कोटा	गंगानग.	गोरखपु.	गौहाटी	चिन्नई	जबलपु.	जयपुर	जींद	जौधपुर	झरिया
वृष	१९।२५	१९।३९	१८।५४	१९।१५	१९।२५	१९।११	१९।२६	१८।५८	१९।२६	१९।३२	१८।५०	१८।३६	१९।२१	१९।०२	१९।२२	१९।२२	१८।५०	१८।१७	१९।२४	१९।०९	१९।२०	१९।१३	१९।३४	१८।४३
मिथुन	२१।२२	२१।३७	२०।५१	२१।०९	२१।२४	२१।०७	२१।२५	२०।५५	२१।२५	२१।३०	२०।४९	२०।३५	२१।१७	२०।५९	२१।२०	२१।१७	२०।४६	२०।१४	२१।२६	२१।०८	२१।१६	२१।०९	२१।३१	२०।४१
कर्क	२३।३६	२३।५१	२३।०५	२३।२५	२३।३७	२३।२२	२३।३९	२३।०९	२३।३८	२३।४४	२३।०३	२२।४९	२३।३२	२३।१४	२३।३४	२३।३२	२३।०१	२२।२९	२३।३८	२३।२१	२३।३१	२३।२४	२३।४६	२२।५५
सिंह	२५।५५	२६।०७	२५।२५	२५।४८	२५।५२	२५।४१	२५।५५	२५।२८	२५।५५	२६।०१	२५।१७	२५।०५	२५।५२	२५।३३	२५।५२	२५।५४	२५।२०	२४।४७	२५।४८	२५।३८	२५।५०	२५।४५	२६।०४	२५।१२
कन्या	२८।१०	२८।२०	२७।४०	२८।०९	२८।०२	२७।५७	२८।०६	२७।४२	२८।०७	२८।१५	२७।२७	२७।१६	२८।०८	२७।४८	२८।०६	२८।१३	२७।३६	२७।०२	२७।५१	२७।५०	२८।०६	२८।०३	२८।१९	२७।२४
तुला	३०।२५	३०।३१	२९।५५	३०।२९	३०।१०	३०।१२	३०।१७	२९।५५	३०।१८	३०।२७	२९।३५	२९।२७	३०।२४	३०।०२	३०।१९	३०।३१	२९।५०	२९।१६	२९।५३	३०।०१	३०।२१	३०।२०	३०।३३	२९।३६
शहर	झांसी	झुञ्झुनू	डिब्रुगढ	तेजपुर	दरभंगा	त्रिवेंद्रम	दिल्ली	नैनिताल	पूना	प्रयाग	बीकानेर	बैंगलोर	बांसवाडा	बिलासपु.	भिवानी	मथुरा	मुम्बई	मैसूर	लखनऊ	वाराणसी	विजयवा.	श्रीनगर	हरद्वार	हैदराबाद
वृष	१९।११	१९।१९	१८।०२	१८।१२	१८।४१	१९।४३	१९।११	१९।००	१९।४१	१८।५८	१९।२७	१९।३४	१९।३१	१९।०२	१९।१५	१९।११	१९।४४	१९।३९	१८।५९	१८।५४	१९।१७	१९।१०	१९।०४	१९।२४
मिथुन	२१।०८	२१।१५	१९।५९	२०।०९	२०।३८	२१।४७	२१।०७	२०।५६	२१।४१	२०।५६	२१।२४	२१।३७	२१।२९	२१।०१	२१।११	२१।०८	२१।४५	२१।४२	२०।५६	२०।५१	२१।१८	२१।०३	२१।००	२१।२५
कर्क	२३।२३	२३।३०	२२।१३	२२।२४	२२।५२	२३।५८	२३।२२	२३।११	२३।५४	२३।१०	२३।३८	२३।४९	२३।४३	२३।१४	२३।२६	२३।२२	२३।५८	२३।५३	२३।११	२३।०५	२३।३१	२३।१९	२३।१५	२३।३८
सिंह	२५।४१	२५।५०	२४।३३	२४।४३	२५।११	२६।०५	२५।४२	२५।३२	२६।०७	२५।२८	२५।५९	२५।५८	२६।००	२५।३०	२५।४६	२५।४२	२६।११	२६।०२	२५।३०	२५।२३	२५।४२	२५।४४	२५।३७	२५।५०
कन्या	२७।५५	२८।०७	२६।४९	२६।५८	२७।२६	२८।०४	२८।००	२७।५१	२८।१५	२७।४२	२८।१६	२८।०१	२८।१२	२७।४१	२८।०४	२७।५८	२८।१९	२८।०५	२७।४६	२७।३७	२७।४८	२८।०८	२७।५६	२७।५७
तुला	३०।०८	३०।२३	२९।०५	२९।१२	२९।४०	३०।०२	३०।१६	३०।०८	३०।२२	२९।५५	३०।३२	३०।०३	३०।२३	२९।५१	३०।२१	३०।१३	३०।२६	३०।०६	३०।००	२९।५१	२९।५३	३०।३१	३०।१४	३०।०२

॥ संवत् २०८२ मध्ये तिथि-वार-नक्षत्रजन्य अमृतादि योगाः ॥ (स्टै. घंटा-मिनट)

अमृतसिद्धि योग

१६। ४	बुधानुराधा	६।०८ से २९।५०
२१। ४	सोमश्रवण	१२।३७ से ३०।०२
१४। ५	बुधानुराधा	५।४५ से ११।४३
१९। ५	सोमश्रवण	५।४३ से १९।३०
२३। ५	शुक्ररेवति	१६।०३ से २९।४१
२०। ६	शुक्ररेवति	५।३९ से २१।४६
२४। ७	गुरुपुष्यामृत	१६।४२ से २९।५३
१६। ८	शनिरोहिणी	२८।३६ से ३०।०५
२१। ८	गुरुपुष्यामृत	६।०७ से २४।०६
१३। ९	शनिरोहिणी	१०।०९ से ३०।१९
१८। ९	गुरुपुष्यामृत	६।२० से ६।२८
७।१०	भौमाऽश्विनि	२५।२८ से ३०।३०
११।१०	शनिरोहिणी	६।३२ से १५।१८
१९।१०	रविहस्त	१७।५१ से ३०।३७
४।११	भौमाऽश्विनि	१२।३५ से ३०।४८
१६।११	रविहस्त	६।५६ से २६।११
२।१२	भौमाऽश्विनि	७।०९ से २०।५२
१४।१२	रविहस्त	७।१७ से ८।१६
१७।१२	बुधानुराधा	१७।११ से ३१।१९
२२।१२	सोमश्रवण	२९।२९ से ३१।२२
सन	२०२६	
१४। १	बुधानुराधा	७।२७ से २७।०४
१९। १	सोमश्रवण	११।४९ से ३१।२६
११। २	बुधानुराधा	७।१५ से १०।५२
१६। २	सोमश्रवण	७।११ से २०।४४
२०। २	शुक्ररेवति	२०।०८ से ३१।०६

सर्वार्थसिद्धि योग

३०। ३	१६।३३ से ३०।२५
१। ४	११।०६ से ……
२। ४	……. ३०।२२
४। ४	२९।१६ से ३०।२०
६। ४	६।१९ से ……
७। ४	……. ६।२२
८। ४	६।१७ से ७।५४
१६। ४	६।०८ से २९।५०
२०। ४	११।४९ से ३०।०३
२१। ४	१२।३७ से ३०।०२
२७। ४	५।५८ से २४।३९
२९। ४	५।५६ से १८।४७
३०। ४	५।५५ से २९।५४
२। ५	१३।०२ से २९।५३
४। ५	५।५२ से १२।५१
१०। ५	२७।१४ से २९।४७
१४। ५	५।४५ से ११।४३
१८। ५	५।४३ से १८।५३
१९। ५	५।४३ से १९।३०
२३। ५	१६।०३ से २९।४१
२५। ५	५।४० से ११।१४
२६। ५	२९।३४ से २९।४०
२८। ५	५।३९ से २४।३०
२९। ५	२२।३९ से ……
३०। ५	……. २१।२९
४। ६	२७।३५ से २९।३८
७। ६	९।४० से २९।३८
९। ६	१५।२९ से २९।३८
१४। ६	२४।२१ से २९।३८
१९। ६	२३।१८ से ……
२०। ६	……. २९।३९
२३। ६	१५।१८ से २९।४०
२५। ६	५।४० से १०।४१
२६। ६	८।४६ से ……
२७। ६	……. ७।२२
२। ७	११।०३ से २९।४३
५। ७	५।४३ से १९।५०
७। ७	५।४४ से २५।११
१२। ७	६।३३ से २९।४७
१५। ७	२९।४७ से २९।४८
१७। ७	५।४९ से ……
१८। ७	……. २६।१४
२१। ७	५।५१ से २९।५२
२४। ७	५।५३ से २९।५३
३०। ७	५।५६ से २१।४६
४। ८	५।५९ से ९।१२
८। ८	१४।२३ से ……
९। ८	……. १४।१८
१२। ८	११।५० से ३०।०३
१४। ८	६।०४ से ……
१५। ८	……. ७।३६
१६। ८	२८।३६ से ३०।०५
१८। ८	६।०६ से २६।०१
२१। ८	६।०७ से २४।०६
२४। ८	२६।०४ से ३०।०९
५। ९	६।१४ से २३।३४
९। ९	६।१६ से १८।०५
११। ९	६।१७ से १३।५७
१३। ९	१०।०९ से ३०।१९
१५। ९	६।१९ से ७।२७
१८। ९	६।२० से ६।२८
२१। ९	९।३३ से ३०।२२
२६। ९	२२।०३ से ३०।२५
२८। ९	२७।५३ से ३०।२६
३।१०	६।२८ से ९।३२
५।१०	३०।१३ से ३०।२९
७।१०	२५।२८ से ३०।३०
११।१०	६।३२ से १५।१८
१९।१०	६।३६ से ३०।३७
२३।१०	२८।४६ से ……
२४।१०	……. ३०।४०
२६।१०	१०।४३ से ३०।४२
२।११	१७।०२ से ३०।४६
४।११	१२।३५ से ३०।४८
५।११	३०।३६ से ३०।४९
१०।११	१८।४७ से ३०।५२
११।११	१८।१६ से ३०।५३
१६।११	६।५६ से २६।११
२०।११	१०।५७ से ……
२१।११	……. १३।५३
२३।११	७।०२ से १९।२५
३०।११	७।०७ से २५।१०
२।१२	७।०९ से २०।५२
३।१२	१८।०१ से ३१।१०
७।१२	२८।१३ से ……
८।१२	……. २६।५३
९।१२	७।१४ से २६।२३
१४।१२	७।१७ से ८।१६
१७।१२	१७।११ से ……
१८।१२	……. २०।०६
२१।१२	२७।३३ से ३१।२१
२२।१२	२९।२९ से ३१।२२
२८।१२	७।२४ से ८।४४
३०।१२	२७।५८ से ……
३१।१२	……. ३१।२५
सन	२०२६
४। १	१५।११ से ……
५। १	……. १३।२५
६। १	७।२६ से १२।१९
१४। १	७।२७ से २७।०४
१८। १	१०।१२ से ३१।२६
१९। १	११।४९ से ३१।२६
२५। १	१३।३८ से ३१।२४
२७। १	११।०९ से ……
२८। १	……. ३१।२३
३०। १	२७।२५ से ३१।२२
१। २	७।२१ से २३।५७
७। २	२६।२२ से ३१।१७
११। २	७।१५ से १०।५२
१५। २	७।१२ से १९।४६
१६। २	७।११ से २०।४४
२०। २	२०।०८ से ३१।०६
२२। २	७।०६ से १७।५७
२४। २	७।०४ से १५।०७
२५। २	७।०३ से ३१।०२
२७। २	१०।४६ से ३१।००
१। ३	६।५९ से ८।३३
७। ३	११।०९ से ३०।५१
९। ३	१६।०५ से ३०।४९
१४। ३	२८।४९ से ३०।४४
१९। ३	२८।०३ से ……

सिध्दि योग

२। ४	६।२३ से ८।४८
२१। ४	१२।३७ से ३०।०२
१०। ५	२७।१४ से २९।४७
१९। ५	५।४३ से १९।३०
२९। ५	२२।३९ से २९।३९
७। ६	९।४० से २९।३८
२६। ६	८।४६ से २९।४०
५। ७	५।४३ से १९।५०
१५। ७	२९।४७ से २९।४८
२४। ७	५।५३ से १६।४२
१२। ८	११।५० से ३०।०३
९। ९	६।१६ से १८।०५
२८। ९	२७।५३ से ३०।२६
१७।१०	१३।५७ से ३०।३६
२६।१०	१०।४३ से ३०।४२
५।११	३०।३६ से ३०।४९
१४।११	६।५५ से २१।२०
२३।११	७।०२ से १९।२५
३।१२	१८।०१ से ३१।१०
२२।१२	२९।२९ से ३१।२२
३१।१२	७।२५ से २५।२९
सन	२०२६
१९। १	११।४९ से ३१।२६
२८। १	७।२३ से ९।२६
७। २	२६।२२ से ३१।१७
१६। २	७।११ से २०।४४
७। ३	११।०९ से ३०।५१

द्विपुष्कर योग

२०। ५	५।४२ से ५।५६
२७। ५	२९।०७ से २९।३९
७। ६	५।३८ से ९।४०
२२। ७	५।५२ से ७।०५
१०। ८	१२।०६ से १३।४८
२३। ९	१३।३७ से २८।४८
४।१०	६।२८ से ९।०६
१६।११	२६।११ से २८।५०
६।१२	७।१२ से ८।५०
सन	२०२६
२०। १	१३।०४ से २६।४३
१५। ३	२९।५३ से ३०।४३

त्रिपुष्कर योग

१५। ४	६।०९ से १०।५२
२०। ४	११।४९ से १९।०६
२९। ४	५।५६ से १७।३५
३। ५	७।५३ से १२।३१
१७। ६	२५।०२ से २९।३८
२२। ६	१७।४० से २५।२६
१। ७	१०।१९ से २९।४२
६। ७	२१।१७ से २२।४२
१२। ७	५।४७ से ६।३३
१९। ८	२५।०२ से ३०।०७
२४। ८	२६।०४ से ३०।०९
३०। ८	६।१२ से १४।३२
१३। ९	७।२३ से १०।०९
२८।१०	१५।४४ से ३०।४३
२।११	७।३० से १७।०२
१६।१२	१४।०९ से २३।५९
२१।१२	२७।३३ से ३१।२१
२७।१२	७।२४ से ९।०९
३०।१२	२९।०२ से ३१।२५
सन	२०२६
४। १	१२।३२ से १५।११
८। २	२८।५७ से २८।५९
२४। २	७।०४ से ७।०६
२८। २	७।०० से ९।३२

रवि योग

१। ४	११।०६ से ……
२। ४	……. ८।४८
३। ४	७।०० से २९।४७
५। ४	२९।२८ से ……
६। ४	दिनरात
७। ४	दिनरात
८। ४	……. ७।५४
१०। ४	१२।२६ से ……
११। ४	……. १५।११
१९। ४	१०।२१ से ……
२०। ४	……. ११।४९
३०। ४	१६।१७ से ……
१। ५	……. १४।१९

॥ संवत् २०८२ मध्ये रवियोग: ॥ (स्टै. घंटा-मिनट)

२। ५	१३।०२ से	१६। ७	.... २८।५२	३।१०	.... ९।३२	सन	२०२६
३। ५	.... १२।३१	२७। ७	१६।२२ से	५।१०	७।५८ से ३०।१३	१। १	२२।४७ से ......
५। ५	१४।०० से	२८। ७	.... १७।३२	१२।१०	१३।३४ से	२। १	.... २०।०२
६। ५	दिनरात	२९। ७	१९।२२ से	१३।१०	.... १२।२३	८। १	१२।२३ से ......
७। ५	.... १८।१८	३०। ७	.... २१।४६	२३।१०	२८।४६ से ३०।३१	९। १	.... १३।३८
९। ५	२४।०९ से	१। ८	२७।३६ से	२५।१०	७।४७ से	२१। १	१३।५६ से ......
१०। ५	.... २७।१४	२। ८	.... २७।५०	२६।१०	.... १०।४३	२२। १	.... १४।२६
११। ५	१२।३३ से	३। ८	६।३३ से	२७।१०	१३।२६ से	२३। १	१४।३४ से ......
१२। ५	.... ६।१४	४। ८	दिनरात	२८।१०	.... १५।४४	२४। १	.... १०।२०
१८। ५	१८।५३ से	५। ८	.... ११।२३	३०।१०	१८।३२ से	२४। १	१४।१८ से ......
१९। ५	.... १९।३०	७। ८	१३।५८ से	३१।१०	दिनरात	२५। १	.... १३।३८
२९। ५	२२।३९ से	८। ८	.... १४।२३	१।११	.... १८।१८	२७। १	११।०९ से ......
३०। ५	.... २१।२९	१४। ८	९।०६ से	३।११	१५।०५ से	२८। १	दिनरात
३१। ५	२१।०६ से	१५। ८	.... ७।३६	४।११	.... १२।३५	२९। १	.... ७।३०
१। ६	.... २१।३५	२५। ८	२७।४६ से	१०।११	१८।४७ से	३०। १	२७।२५ से ......
३। ६	२४।५७ से	२६। ८	.... २९।५८	११।११	.... १८।१६	३१। १	.... २५।३२
४। ६	दिनरात	२८। ८	८।३५ से	२३।११	१९।२५ से	७। २	२६।२२ से ......
५। ६	दिनरात	२९। ८	.... ११।३१	२४।११	.... २१।५१	८। २	.... २८।५७
६। ६	.... ६।३४	१। ९	१९।५५ से	२५।११	२३।५६ से	२०। २	२०।०८ से ......
९। ६	१५।२९ से	२। ९	दिनरात	२६।११	.... २५।३१	२१। २	.... १९।०९
१०। ६	.... १७।५९	३। ९	.... २३।०७	२८।११	२६।४८ से	२२। २	१७।५७ से ......
१६। ६	२५।१४ से	५। ९	२३।३४ से	२९।११	दिनरात	२३। २	.... १६।३५
१७। ६	.... २५।०२	६। ९	.... २२।५०	३०।११	.... २५।१०	२५। २	१३।३७ से ......
२८। ६	६।३५ से	१२। ९	११।५८ से	२।१२	२०।५२ से २४।५४	२६। २	दिनरात
२९। ६	.... ६।३३	१३। ९	.... १०।०९	३।१२	१८।०१ से	२७। २	.... १०।४६
३०। ६	७।१९ से	१३। ९	१५।३० से	४।१२	.... १४।५५	१। ३	८।३३ से ......
१। ७	.... ८।५०	१४। ९	.... ८।३८	९।१२	२६।२३ से	२। ३	.... ७।५१
३। ७	१३।४६ से	२४। ९	१६।११ से	१०।१२	.... २६।४४	९। ३	१६।०५ से ......
४। ७	दिनरात	२५। ९	.... १९।०२	२२।१२	२९।२९ से	१०। ३	.... १९।०२
५। ७	.... १९।५०	२६। ९	२२।०३ से	२३।१२	.... ३१।०५		
५। ७	२९।२३ से	२७। ९	.... ६।५७	२५।१२	८।१७ से		
६। ७	.... २२।४२	२७। ९	२५।०४ से	२६।१२	.... ९।००		
८। ७	२७।१४ से	२८। ९	.... २७।५३	२८।१२	८।४४ से ३०।०७		
९। ७	.... २८।४७	१।१०	८।०६ से	२९।१२	७।४१ से		
१५। ७	२९।४७ से	२।१०	दिनरात	३०।१२	.... २७।५८		

मुख्य व्रतोत्सव तालिका का शेष ...

पोषमास जनवरी २०२६		गणतन्त्र दिवस	२६	श्रीश्यामबाबा जागरण	२७
शाकंभरी जयंती	३	भीष्माष्टमी	२६	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	२८
माघ स्नानारंभ	३	जया एका.	२९	श्रीखाटुश्यामजी मेला	२८
माघमास जनवरी		श्रीश्यामबाबा जागरण	२९	प्रदोष व्रत मार्च	१
तिलकुटी चतुर्थीव्रत	६	भीष्मद्वादशी	२९	जेलपोणी भद्रा के पहिले	२
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	६	श्रीश्यामबाबा द्वादशी	३०	होलिका दहन भद्रापुच्छ	
स्वामीविवेकानन्द ज.	१०	प्रदोष व्रत	३०	(भद्रा २५।२३ के बाद)	२
मकर सक्रांति	१४	पूर्णिमा व्रत फर.	१	ग्रस्तोदयखग्रासंचन्द्रग्रहण	३
पुण्यकाल	१४	माघ स्नान पूर्ति	१	पूर्णिमा व्रत	३
षटतिला एका.	१४	फाल्गुनमास फरवरी		छारेंडी	३
प्रदोष व्रत	१६	तारा शुद्ध (शुक्रउदय)	४	चैत्रमास मार्च	
मौनी अमा.	१८	चतुर्थीव्रत	५	वसन्त प्रतिपदा	४
अमावस्या	१८	विजया एका.	१३	चतुर्थीव्रत	६
श्री वल्लभ जयंती	१९	प्रदोष व्रत	१४	शीतलापूजन(बास्योड़ो)	११
नेताजी जयन्ती	२३	महा शिवरात्री व्रत	१५	पापमोचनी एका.	१५
वसन्त पंचमी	२३	अमावस्या	१७	प्रदोष व्रत	१६
पुत्र सप्तमी	२५	फुलरिया दूज	१९	अमावस्या पितृकार्य	१८
सूर्य सप्तमी	२५	होलाष्टक प्रारम्भ	२४	अमावस्या देवकार्य	१९
अचला सप्तमी	२५	बिड़कुला-ढाल थापणा भद्रा		नया संवत आरम्भ	१९
भानु ७	२५	के पहिले	२७	नवरात्र आरम्भ	१९
विजया सप्तमी	२५	आमलकी एका.	२७	गुडीपड़वा (महाराष्ट्र)	१९

पं. श्री वल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग जिन ग्रंथों से बनता है उन ग्रंथों के नाम-

१. श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः
२. केतकी ग्रहगणितम्
३. वैजयन्ती पञ्चाङ्गगणितम्
४. ज्योतिर्गणितम्
५. मराठी ग्रहगणितम्
६. भारतीय भूमण्डल सूर्यग्रहणगणितम्
७. मराठी ग्रहगणितमालिका
८. बृहद् दैवज्ञ विनोद
९. सांवत्सरी पद्धत्ति
१०. निर्णय सिन्धु
११. धर्मसिन्धु
१२. सूर्य सिद्धान्त
१३. सिद्धान्त शिरोमणि
१४. मुहूर्त्त चिन्तामणि
१५. मुहूर्त्त मार्तण्ड
१६. बृहद् दैवज्ञ रंजन
१७. उपलब्ध पुराण
१८. पीयूषधारा
१९. वर्षप्रबोध
२०. वाराहमिहिर संहिता
२१. ग्रहलाघव

उक्त (क्रमाङ्क ८ से २१) ग्रंथों के प्रकाशक - खेमराज श्री कृष्णदास, मुम्बई, कल्याण, पूणे है। प्राप्तिस्थल - कल्याण के दूरध्वनि- ०२५१- २२०९०६१ हैं विशेष पं. श्री वल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग के अन्तिम पृष्ठों में देखें, प्राप्तिस्थल का दूरध्वनि क्रमाङ्क सहित सम्पूर्ण ठिकाना लिखा है।

क्रमाङ्क २ से ७ के रचयिता-
मानद् वेंकटेशबापू केतकर हैं।

उक्त ग्रंथों के प्रकाशक- **महाराष्ट्र सरकार** है, और प्राप्तिस्थल-
१. संचालक, शासन मुद्रण, लेखन सामग्री व प्रकाशन संचनालय, नेताजी सुभाष मार्ग,मुम्बई. (चर्नीरोड़), ४०० ००४, दूरध्वनी- ०२२- २३६३२६९३, २३६३०६९५, २३६३११४८, २३६३४०४९
२. सचिव महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडल, मुंबई. मराठीग्रंथ संग्रहालय इमारत, ३रा मजला १७२, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर मुंबई. ४०० ०१४ दूरध्वनी- ०२२ २४१४४०२१, २४१४६००५
३. व्यवस्थापक- शसकीय फोटोझिंको मुद्रणालय व ग्रंथागार, फोटोझिंको मुद्रणालय, आवार जी. पी. ओ. नजीक, पूणे ४११ ००१, दूरध्वनी ०२०- २६२४१५९, २६१२५८०८

नम्र निवेदन- आपका सहयोग ही परिश्रम की सफलता है। श्री श्री १००८ सन्त भातारामजी महाराज जो "बाबा श्री रामेश्वरदास धाम" के वर्तमान पदासीन और सभी सेवकों को हृदय से सादर प्रणाम करता हूँ। जिन वयोवृद्ध विद्वानों और दैवज्ञों ने पत्रों द्वारा आशिर्वाद भेजें है उनकों मैं शिरोधार्य करते हुए दण्डवत् प्रणाम करता हूँ। भवदीय - वरदभावाकाँक्षी - गणितकर्ता

॥ काल समीकरण ॥

काल यानि समय की परिवर्तन क्रिया को काल समीकरण कहते हैं। इसमें गणित की प्रधानता है। प्रत्येक कार्य में गणित की आवश्यकता होती है। आज विश्व में ज्योतिष हो या साईंस हो या वास्तु सभी गणित पर निर्भर करते हैं और यह गणित अनेक प्रकार का है। लेकिन यहाँ ज्योतिष के उसी गणित की चर्चा होगी जो कि प्रत्येक व्यक्ति के उपयोग में आता है। ज्योतिष में समय की परिवर्तन क्रिया करने के लिए मुख्य रुप से तीन तरह का गणित उपयोगी होता है।

(१) स्टैण्डर्ड समय से स्थानिक समय (२) स्थानिक समय से स्टैण्डर्ड समय
(३) स्थानिक स्पष्टग्रह से अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्पष्टग्रह (**नोट-** अग्रिम पृष्ठ पर देखें)

(१) स्टैण्डर्ड समय से स्थानिक समय बनाना हो तो रेल्वे अन्तर का चिन्ह ऋण-धन जो है वो ज्यों का त्यों संस्कार होगा और वेलान्तर का चिन्ह ऋण-धन जो है उससे विलोम (धन हो तो ऋण और ऋण हो तो धन) संस्कार करने पर स्पष्ट स्थानिक समय प्राप्त होगा। जैसे - रेल्वे अन्तर का चिन्ह ऋण है और वेलान्तर का भी ऋण है तो संस्कार करने के लिए रेल्वे अन्तर का चिन्ह ज्यों का त्यों ऋण रहेगा और वेलान्तर का चिन्ह ऋण से विलोम धन हो जायेगा।

(२) स्थानिक समय से स्टैण्डर्ड समय बनाना हो तो रेल्वे अन्तर का चिन्ह ऋण-धन जो है उससे विलोम (धन हो तो ऋण और ऋण हो तो धन) संस्कार होगा और वेलान्तर का चिन्ह ऋण-धन जो है वो ज्यों का त्यों संस्कार करने पर स्पष्ट स्टैण्डर्ड समय प्राप्त होगा। जैसे - रेल्वे अन्तर का चिन्ह ऋण है और वेलान्तर का भी ऋण है तो संस्कार करने के लिए रेल्वे अन्तर का चिन्ह ऋण से विलोम धन हो जायेगा और वेलान्तर का चिन्ह ज्यों का त्यों ऋण रहेगा।

स्टैण्डर्ड समय क्या है। - भारत अथवा संसार के नक्शे (अटलस) में देखा होगा कि आडी और खडी रेखाएँ रहती हैं, जो आडी (पूर्व-पश्चिम) रेखाएँ होती हैं वे अक्षांश कहलाते हैं और जो ऊर्ध्वाधर (उत्तर-दक्षिण) खडी रेखाएँ होती हैं वे रेखांश कहलाते हैं। ग्रीन्वीच में रेखांश ० डिग्री (अंश) हैं अतः ग्रन्वीच से पूर्व दिशा में जो रेखांश हैं वे पूर्वी रेखांश कहलाते हैं और ग्रीन्वीच से जो पश्चिम दिशा में रेखांश हैं वे पश्चिमी रेखांश कहलाते हैं। इसीलिए अटलस या पंचांगों में पूर्वी रेखांश- पश्चिमी रेखांश लिखा हुआ रहता है। पूर्वी रेखांश सदैव धनात्मक होते हैं और पश्चिमी रेखांश सदैव ऋणात्मक होते हैं। एक रेखांश से दूसरे रेखांश का अन्तरकालमान (दूरी) ४ (चार) मिनट होता है। ग्रीन्वीच को केन्द्रबिंदु मानकर (मध्यरात्री के १२।०० बजे से) संसार के सभी देशों में घड़ियों की व्यवस्था की गई है। किसी भी देश के मध्य में स्थित रेखांशों को आधार मानकर घडी का समय निर्धारित किया है। जैसे भारत ग्रीन्वीच से पूर्वदिशा में है तो ८२।३० (साढे बियासी) पूर्वी रेखांशों पर घडियों का समय आधारित है यानि कि ग्रीन्वीच से भारत का ५ घंटा ३० मिनिट का धनात्मक अंतर (८२।३० रेखांशाः x ४ मिनिट = ३३० मिनिट = घंटा ५ मिनिट ३०) है। ग्रीन्वीच की घडी से भारत की घडी ५ घंटा ३० मि. आगे (धनात्मक) रहती हैं, जैसे ग्रीन्वीच की घड़ी में मध्यरात्री १२।०० बजते हैं तो भारत की घड़ी में प्रातः ५।३० बजते हैं इसी तरह सब जानकारी करनी चाहिए। भारत की घड़ियों के इसी समय का नाम "स्टैंण्डर्ड समय" है जो कि भारत में समान रुप से है। स्टैण्डर्ड समय को ही रेल्वे समय कहते हैं। अंग्रेजी में इसे इंडियन स्टैण्डर्ड टाइम (I. S. T.) कहते हैं। सारांश यह है कि स्टैण्डर्ड समय और रेल्वे समय एक ही हैं, मात्र नाम का भेद है। हमारी घड़ियों में जो टाइम देखते हे यही स्टैण्डर्ड समय कहलाता है और रेल्वे स्टेशनों पर जो घड़ियाँ रहती हैं जिनके आधार पर हमारी रेल गाड़ियाँ चलती हैं वह रेल्वे समय कहलाता है। स्थानिक काल निकालने के लिए रेल्वे (स्टै.) समय में परिवर्तन क्रिया आवश्यक है जिसे रेल्वेऽन्तर (रेखांतर) क्रिया कहते हैं।

रेल्वे अन्तर (रेखान्तर(मिनट)) = (अभीष्ट स्थल रेखांश – ८२.५ रेखांश) x ४

अभीष्ट स्थल के रेखांश ८२.५ (साढे बियासी) रेखांश से ज्यादा हों तो रेल्वे अन्तर (रेखान्तर (मिनट)) संस्कार का चिन्ह सदैव ही धनात्मक होता है और रेखांश कम हों तो चिन्ह सदैव ही ऋणात्मक होता है। **वेलान्तर संस्कार** पञ्चाङ्ग में चिन्ह सहित लिखा रहता है।

देशान्तर (मिनट) = (अभीष्ट स्थल रेखांश – पञ्चाङ्ग स्थल रेखांश) x ४

अभीष्ट स्थल के रेखांश जिस स्थल का पञ्चाङ्ग हो उस रेखांश से ज्यादा हों तो देशान्तर संस्कार का चिन्ह सदैव ही धनात्मक होता है और रेखांश कम हों तो चिन्ह सदैव ही ऋणात्मक होता है।

चरान्तर संस्कारः अक्षांश और क्रांति को उपकरण मानकर चरपल संस्कार सारणी से प्राप्त कर सकते हैं। चरान्तर संस्कार का चिन्ह क्रांति की तरह ऋण धन होता है।

ऋण-धन के योग (जोड) और गुणाकार के चिन्हों का सूत्र

धन + धन का योग धन होता है	धन x धन का गुणाकार धन होता है
ऋण + ऋण का योग ऋण होता है	धन x ऋण का गुणाकार ऋण होता है
गुरुधन + लघुऋण का योग धन होता है	ऋण x ऋण का गुणाकार धन होता है
गुरुऋण + लघुधन का योग ऋण होता है	ऋण x धन का गुणाकार ऋण होता है

॥ चन्द्रोदय-चंद्रास्त गणित की सरलविधि ॥

चन्द्रमा की शीघ्र गति होने के कारण चन्द्रगणित बहुत ही कष्टप्रद है। यह बात सन १९९१ की है में दशवर्षीय (संवत् २०५१ से २०६० तक) के लिए गणित कर रहा था गणितान्तर्गत एक ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण में और चन्द्रोदय में २ मिनट का अन्तर आरहा था तो मुझे शंका हो गई. उस शंका समाधान के लिए महाराष्ट्र गुजरात के अनेक पञ्चाङ्गकर्ताविद्वानों से टेलिफोन पर सम्पर्क किया लेकिन उनका जबाव था क्रमशः (१) आप अपना गणित भेज दीजिए. बाद में हम देखेंगे क्या करना है। (२) हम तो गणितकर्ता का नाम सिर्फ लिखते हैं लेकिन गणित तो किसी दूसरे से लेते हैं। (३) अपनी विद्या कोई किसी को देता है क्या ! (४) हमारे पास दो वर्ष का ही गणित है आगे का नहीं, ... आदि।

विद्वानों के ऐसे भाव और भाषा सुनकर हृदय को आघात पहुँचा और उन दिनों की याद आ गई. जब मुम्बई में अंधेरी रेल्वे स्टेशन के पश्चिम में बीइएसटी के स्थानक पर बस क्रमांक ४ की प्रतीक्षारत पंक्ति में खड़े एक अद्वतीय व्यक्ति जिनके चरणों में राजस्थान में निर्मित पादत्राण

श्वेत्वर्णवाला अधोवस्त्र मंदपवन के प्रसरण से मंदमंद लहरा रहा था, श्वेत्वर्णवाला ही उपवस्त्र मानो कि मिट्टी-धूल से रक्षा करने में सक्षम हो, श्वेत्वर्णवाले राजपुत्रदेशीयरुमाल (साफा) से आवेष्टित कर्णपुट जो उनकी विद्वत्ता की गहराई का संकेत करता हो, वामस्कंध पर विराजमान रक्तवर्ण वाला उत्तरीयवस्त्र जो उक्त संकेत की पुष्टि कर रहा हो ऐसे अपरिचित महापुरुष को पंक्ति में खडे देख कर अन्तरात्मा ने प्रेरणा की कि ये सुविख्यात पञ्चाङ्गगणितकर्ता पण्डित ईश्वरदत्तजी शर्मा होने चाहिएं । पुष्टि के लिए निकट जाकर आद्यप्रणामोपरान्त मैनें पूछा पण्डितजी आपका नाम क्या है ! उन्होने कहा **"भाया मनै तो ईश्वरदत्त कव है"** । यह सुनकर मेरी बाह्याभ्यन्तर जो स्थिति हुई वह कल्पना के परे है । हृदय प्रफुल्लित हो उठा । मैने कहा - मैं पञ्चाङ्गगणित सीखना चाहता हूँ आप पढा देंगे । उन्होने कहा **"मैं तो चाहता हूँ कि कोई भी विद्यार्थी मेरे से इस विद्या को ग्रहण करे"** उनके अमृत तुल्य वचनों की याद आ गई और मैं फूट फूट कर रो पडा, शंका रुपी भंवर से उबारने वाले परम पूज्य गुरुजी का स्वर्गवास हो चुका था । धन्य हैं वे लोग जो अपना सम्पूर्ण जीवन परोपकार में लगाकर अमर हो गये । महाराष्ट्र में जन्म हुए श्रीमन्त **'वेंकटेशबापू केतकर'** द्वारा रचित **'ज्योतिर्गणित'** का वह श्लोक अहर्निश याद रहता है - "अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादास्तेषु केवलम् । प्रत्यक्षम् ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ" । ऐसे महापुरुषों को सर्वदा हृदय से प्रणाम करता हूँ ।

अतः मैं चिरकाल से प्रयत्नरत था कि थोड़े से परिश्रम से किसी भी स्थल का चन्द्रोदय ज्ञात किया जा सके. अतः जनसाधारण उपयोग हेतु चन्द्रोदय जानने की सरल विधि प्रस्तुत है । जब किसी नगर अथवा गाँव का चन्द्रोदय ज्ञात करना हो तो वल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग में दिये हुए दैनिक स्पष्ट चन्द्रोदय के साथ ही चन्द्रक्रान्ति और मध्यम चन्द्रोदय भी दिया हुआ है । मध्यम चन्द्रोदय में मात्र दो (चरान्तर और रेल्वेन्तर) संस्कार करने से स्पष्ट **चन्द्रोदय/चंद्रास्त** ज्ञात किया जा सकता है ।

(१) चन्द्रक्रान्ति और अक्षांश की सहायता से चरपल संस्कार सारणी से चरपल प्राप्त करें, चरपल मे ढाई का भाग देकर मिनट सेकण्ड बनायें इस संख्या को मध्यम चन्द्रोदय में धन या ऋण चन्द्रक्रान्ति से विलोम (चन्द्रक्रान्ति धन हो तो ऋण और चन्द्रक्रान्ति ऋण होतो धन) करें । इसे चरान्तर संस्कार कहते हैं (ये कभी द्विगुण नहीं होता मात्र दिनमान बनाने के लिए ही द्विगुण किया जाता है) । (२) दूसरा रेल्वेन्तर (रेखान्तर) **सूत्र** में बताये अनुसार (पञ्चाङ्ग में भी लिखा रहता है) प्राप्त कर विलोम संस्कार करने से अभीष्ट स्थल का (सूक्ष्मासन्न) स्पष्ट चन्द्रोदय होगा ।

इस गणितागत चन्द्रोदय में गति संस्कार धनर्ण करने से सूक्ष्म चन्द्रोदय होगा । प्रति १ घंटा की गति २ मिनट है । पञ्चाङ्ग में दिये हुए रामगढ़ (शेखावाटी) के चन्द्रोदय और अभीष्ट स्थल के गणितागत चन्द्रोदय में जितना घंटा-मिनट का अंतर हो उसी हिसाब से गति संस्कार प्राप्त करें । पञ्चाङ्गस्थ चन्द्रोदय से अभीष्ट स्थल का चन्द्रोदय कम हो तो गति संस्कार ऋण और ज्यादा हो तो गति संस्कार धन करने से सूक्ष्म स्पष्ट चन्द्रोदय होगा । **चंद्रास्त** गणित भी ऐसे ही होगा । सरलता के लिए यहाँ चन्द्रोदय का एक उदाहरण भी दिया है । **नोट-** पञ्चाङ्गस्थ चन्द्रोदय में जिस तारीख के सामने . . . यह चिन्ह हो वहाँ अगले दिन सूर्योदय के बाद चंद्रोदय होगा ऐसा समझें ।

सूत्रः स्पष्ट चन्द्रोदय = मध्यम चन्द्रोदय + (चरान्तर + रेल्वेन्तर) + गतिसंस्कार

गणितकर्ता - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

॥ कृष्णा चतुर्थी (संकष्टी) चन्द्रोदय उदाहरण, संवत् २०८२ ॥

ता. १६ अप्रेल २०२५ को कोलकाता (बंगा.) अक्षांशः २२° ३४' उ., रेखांशः ८८° २८' पू. का स्पष्ट चन्द्रोदय गणित द्वारा ज्ञात करना है । पञ्चाङ्ग में रामगढ (शेखा.) का स्पष्ट चन्द्रोदय २२ बजकर ०७ मिनट, चन्द्रक्रान्ति (ऋण) -२६ अंश १५ कला, मध्यम चन्द्रोदय २० बजकर ३६ मिनट ३६ से. है । यहाँ चन्द्रक्रान्ति और अक्षांश की सहायता से चरपल संस्कार सारणी से (ऋण) -११७ पल २९ वि. प्राप्त हुई. ढाई का भाग देने पर चरान्तर संस्कार (ऋण) -४६ मिनट ५९ से. हुए ।

कोलकाता (बंगा.) का रेखांश ८२।३० से ज्यादा है अतः ((८८।२८ - ८२।३०) x ४) रेल्वेन्तर (धन) +२३ मिनट ५२ से. है । चरान्तर (ऋण) -४६ मिनट ५९ से. और रेल्वेन्तर (धन) +२३ मिनट ५२ से. (चरान्तर + रेल्वेन्तर) ये ऋण -२३ मिनट ०७ से. का संस्कार मध्यम चन्द्रोदय २० बजकर ३६ मिनट ३६ से. में विलोम (धन) किया तो सूक्ष्मासन्न स्पष्ट चन्द्रोदय २० बजकर ५९ मिनट ४३ से. (अर्धादिकरुप से २१।००) हुआ । **नोट-** भारत के किसी भी स्थल का सूक्ष्मासन्न चन्द्रोदय और सूक्ष्म चन्द्रोदय में ५ मिनट से न्यूनाधिक अन्तर नहीं होगा ।

सूक्ष्मता के लिए इस गणितागत सूक्ष्मासन्न चन्द्रोदय में गति संस्कार

प्रति १ घंटा की गति २ मिनट है । पञ्चाङ्ग में दिये हुए रामगढ (शेखा.) के चन्द्रोदय २२।०७ और कोलकाता (बंगा.) के गणितागत चन्द्रोदय २१।०० में (पञ्चाङ्गस्थ चन्द्रोदय से अभीष्ट स्थल का चन्द्रोदय कम होने से) ऋणात्मक १ घं. ०७ मिनट का अंतर है तो गति संस्कार (ऋण) -०२ मिनट १५ से. प्राप्त हुआ । गणितागत चन्द्रोदय २० बजकर ५९ मिनट ४३ से. में गति संस्कार (ऋण) -०२ मिनट १५ से. किया तो सूक्ष्म स्पष्ट चन्द्रोदय २० बजकर ५७ मिनट २८ से. (अर्धादिकरुप से २०।५७) हुआ । **नोट-** सूक्ष्म चन्द्रोदय में १ मिनट का न्यूनाधिक अन्तर कहीं कहीं आ सकता है उससे अधिक अन्तर नहीं होगा । देखें **'विभिन्न नगरों के गुरु - शुक्रोदयास्त और कृष्णा चतुर्थी का चंद्रोदयः'** पृष्ठ में २०।५७ है । इसी विधि से भारत के किसी भी स्थल का **स्पष्ट चन्द्रोदय और चंद्रास्त** ज्ञात कर सकते हैं । **चंद्रास्त गणित** में अंतर मात्र इतना है कि रामगढ के चन्द्रोदय के स्थान पर चंद्रास्त, मध्यम चन्द्रोदय के स्थान पर मध्यम चंद्रास्त और चन्द्रोदय क्रान्ति के स्थान पर चंद्रास्त क्रान्ति लेनी चाहिए. शेष क्रिया पूर्ववत् ।

गुरु - शुक्रोदयास्त और कृष्णा चतुर्थी का शेष .. संवत् २०८२

देखने की विधि - पृष्ठारंभ में नगरों के नाम हैं और उनके सामने शुक्र के उदयास्त की तारीख और समय है तदुपरांत गुरु का उदयास्त है तदुपरांत कृष्णाचतुर्थी के चंद्रोदय का समय है । शीर्षपंक्ति में चंद्रोदय की तारीख और महिना है यानि कि एकनगर के सामने ही तीनों (गुरु - शुक्रोदयास्त और कृष्णा चतुर्थी का चंद्रोदय) देख सकते हैं । जैसे - रामगढ शेखा. में शुक्र का पूर्व.अस्त ता. ८ दिसंबर २०२५ को रात्रिअन्त ७ बजकर १२ मि. है और पश्चि.उदय ता. ४ फरवरी २०२६ को दिन १० बजकर २८ मि. है । गुरु का पश्चि.अस्त ता. ११ जून २०२५ को रात्रि ११ बजकर ३३ मि. है और पूर्व.उदय ता. ६ जुलाई २०२५ को रात्रिअन्त ४ बजकर १८ मि. है । कृष्णा चतुर्थी का चंद्रोदय ता. १६ अप्रेल (ता.उपर की पंक्ती में लिखी है) को २२।०७ (रात्रि १० बजकर ०७ मि.) पर है । इसी क्रिया से अपने अभीष्ट नगर का देखें । - गणित कर्ता

इष्टकालीन ग्रहस्पष्ट उदाहरण १, संवत् २०८२

तारीख २६ अप्रेल २०२५ को कोलकाता (बंगा.) का स्टैं. सूर्योदय ५।११ बजे है और ग्रहस्पष्ट स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे के लिए ज्ञात करना है।
पञ्चाङ्गस्थ ग्रहस्पष्ट में २६ अप्रेल २०२५ को सूर्योदय स्टैं. ५।५९ बजे है।
गतिगुणक- यहाँ ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने वाला अभीष्ट स्टैं. समय कम है और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय ज्यादा है ऐसी स्थिति में पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय ५।५९ में से स्टैण्डर्ड ५।४८ को घटाया तो ऋणात्मक घंटा-मिनटादि - ०।११ गतिगुणक प्राप्त हुआ। इसको मिनटात्मक बनाने के लिए घंटे को ६० से गुणा कर मिनट जोडने से मिनटात्मक गतिगुणक -११ हुआ।

सूर्य स्पष्ट राश्यादि ०।११।५१।२७ है और गति कला-विकलादि ५८।२१ है।
यहाँ सूर्य गति कला-विकलात्मक ५८।२१ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विकला जोडने से विकलात्मक ग्रहगति ३५०१ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया और गुणनफल -३८५११ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ०।२७ प्राप्त हुआ। इस कला-विकलात्मक भागफल - ०।२७ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह सूर्य के राशि, अंश, कला, विकला ०।११।५१।२७ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ०।११।५१।०१ स्पष्टग्रह हो गया। इसी प्रकार सभी ग्रहों को इष्टकालीन स्पष्टग्रह कर सकते हैं।

चंद्र स्पष्ट राश्यादि ११।१६।२३।०७ है और गति कला-विकलादि ९०५।०८ है।
यहाँ चंद्र गति कला-विकलात्मक ९०५।०८ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विकला जोडने से विकलात्मक ग्रहगति ५४३०८ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया और गुणनफल -५९७३८८ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ६।५५ प्राप्त हुआ। इस कला-विकलात्मक भागफल - ६।५५ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह चंद्र के राशि, अंश, कला, विकला ११।१६।२३।०७ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ११।१६।१६।१२ स्पष्टग्रह हो गया, चंद्रमा की शीघ्रगति होने से चंद्रस्पष्ट का यह साधन स्थूल है।

मंगल स्पष्ट राश्यादि ३।०९।१०।४१ है और गति कला-विकलादि २६।३५ है।
यहाँ मंगल गति कला-विकलात्मक २६।३५ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विकला जोडने से विकलात्मक ग्रहगति १५९५ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया और गुणनफल -१७५४५ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ०।१२ प्राप्त हुआ। इस कला-विकलात्मक भागफल - ०।१२ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह मंगल के राशि, अंश, कला, विकला ३।०९।१०।४१ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ३।०९।१०।२९ स्पष्टग्रह हो गया।
बुध स्पष्ट राश्यादि ११।१४।५२।२९ है और गति कला-विकलादि ७०।१७ है।
यहाँ बुध गति कला-विकलात्मक ७०।१७ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विकला जोडने से विकलात्मक ग्रहगति ४२१७ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया और गुणनफल -४६३८७ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ०।३२ प्राप्त हुआ। इस कला-विकलात्मक भागफल - ०।३२ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह बुध के राशि, अंश, कला, विकला ११।१४।५२।२९ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ११।१४।५१।५६ स्पष्टग्रह हो गया।

गुरु स्पष्ट राश्यादि १।२६।०५।५१ है और गति कला-विकलादि ११।४३ है।
यहाँ गुरु गति कला-विकलात्मक ११।४३ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर वि[illegible] जोडने से विकलात्मक ग्रहगति ७०३ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया [illegible] गुणनफल -७७३३ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ०।०५ प्राप्त [illegible]। इस कला-विकलात्मक भागफल - ०।०५ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह गुरु के राशि, अंश, क[illegible] विकला १।२६।०५।५१ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे [illegible] राश्यादि १।२६।०५।४६ स्पष्टग्रह हो गया।

शुक्र स्पष्ट राश्यादि ११।०३।१३।१६ है और गति कला-विकलादि २७।१७ है।
यहाँ शुक्र गति कला-विकलात्मक २७।१७ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विक[illegible] जोडने से विकलात्मक ग्रहगति १६३७ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया अ[illegible] गुणनफल -१८००७ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ०।१३ प्रा[illegible] हुआ। इस कला-विकलात्मक भागफल - ०।१३ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह शुक्र के राशि, अं[illegible] कला, विकला ११।०३।१३।१६ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४[illegible] बजे का राश्यादि ११।०३।१३।०३ स्पष्टग्रह हो गया।

शनि स्पष्ट राश्यादि ११।०३।०७।२१ है और गति कला-विकलादि ६।१७ है।
यहाँ शनि गति कला-विकलात्मक ६।१७ को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विकला जोड[illegible] से विकलात्मक ग्रहगति ३७७ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया और गुणनफल ४१४७ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक - ०।०३ प्राप्त हुआ। इस कला-विकलात्मक भागफल - ०।०३ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह शनि के राशि, अंश, कला, विकला ११।०३।०७।२१ में घटा दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ११।०३।०७।१८ स्पष्टग्रह हो गया।

राहु स्पष्ट राश्यादि ११।०१।१०।३९ है और गति कला-विकलादि ३।११ वक्री है।
यहाँ राहु गति कला-विकलात्मक ३।११ वक्री को भी ऐसे ही कला को ६० से गुणा कर विकला जोडने से विकलात्मक ग्रहगति -१९१ को मिनटात्मक गतिगुणक -११ से गुणा किया और गुणनफल २१०१ में क्षेपक ८६४०० का भाग दिया भागफल कला-विकलात्मक + ०।०१ प्राप्त हुआ। यहाँ गतिगुणक और ग्रहगति दोनों ही ऋणात्मक होने से भागफल धनात्मक प्राप्त हुआ। काल **समीकरण पृष्ठ देखें सूत्र लिखा है "ऋण X ऋण का गुणाकार** धन होता है"। इस कला-विकलात्मक भागफल + ०।०१ को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह राहु के राशि, अंश, कला, विकला ११।०१।१०।३९ में जोड दिया तो यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ११।०१।१०।४० स्पष्टग्रह हो गया।

केतु स्पष्ट करने के लिए स्पष्टराहु की राशि ११ में ६ राशि जोड़ने से अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे का राश्यादि ५।०१।१०।४० स्पष्ट केतु हो गया।
नोट- राहु में ६ राशि जोड़ने से केतु स्पष्ट होता है (राहु-केतु में परस्पर ६ राशि का ही अन्तर रहता है शेष अंश-कलादि समान होते हैं)। इनकी २४ घंटे की सदैव ही वक्री गति कलादि ३।११ रहती है।

॥ किसी भी स्थल के इष्टकालीन ग्रहस्पष्ट साधन ॥

श्रीगुरुचरणों का ध्यान कर कमलरुपी चरणों से प्राप्त ज्ञानपुँज के प्रकाश से इष्टकालीन ग्रहस्पष्ट सोदाहरण बालबोधाय प्रकाशित करने का प्रयास किया है। माँ सरस्वती से अहर्निश प्रार्थना करता हूँ कि ज्ञानपुँज के दर्शन कराने वाले श्रीगुरुचरण सर्वदा मेरे हृदय में निवास करें।

पञ्चाङ्ग में स्टै. सूर्योदयकालीन दैनिक निरयनग्रहस्पष्ट दिये हुए हैं और वहीं पर सूर्योदय समय भी लिख दिया है ताँकि विद्वज्जनों को भारत में किसी भी स्थल के अभीष्टसमय के ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने में कष्ट न हो, क्योंकि स्टैंडर्ड समय सम्पूर्ण भारतवर्ष में समान रुप से ग्राह्य हैं। आगे अनेक स्थानों पर प्रसंगवश पुनरुक्ति हुई है यह बालबोध के लिए आवश्यक था।

पञ्चाङ्गस्थ स्थानिक स्पष्टग्रह से अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्पष्टग्रह करने के लिए गतिगुणक, ग्रहगति और राशि, अंश, कला, विकला की आवश्यकता होती है। इष्टकाल और गतिगुणक के गणित की क्रिया एक ही है। इष्टकाल निर्माण में जातक के स्टै. जन्मसमय में उसी स्थल का सूर्योदय घटाया जाता है जहाँ जातक का जन्म हुआ है और गतिगुणक निर्माण में जातक का जन्म भारत के किसी भी नगर या गांव में हो लेकिन जातक के स्टै. जन्मसमय में मात्र पञ्चाङ्गस्थ स्टै. सूर्योदय ही घटाना चाहिए। अंतरिक्ष में ग्रहों के भ्रमण करने वाले मार्ग को भचक्र कहते हैं इस भचक्र में १२ राशी अथवा ३६० अंश होते हैं। एक राशि में ३० अंश होते हैं, एक अंश में ६० कला होते हैं, एक कला में ६० विकला होती हैं।

इष्टकालीन समय या अभीष्ट स्टैं. समयः जातक के स्टै. जन्मसमय को इष्टकालीन या अभीष्ट स्टैं. समय कहते हैं। आगे सूत्ररचना और उदाहरणों में सभी जगह स्टै. जन्मसमय को इष्टकालीन या अभीष्ट स्टैं. समय कहा गया है कारण कि ग्रहस्पष्ट किसी भी कार्य के लिए किये जा सकते हैं।

इष्टकाल के बारे में पहिले ही बता चुका हूँ। यथा - **सूर्योदय कालस्यारम्भात् जातकस्य जन्मकालावधि तयोरेव 'अन्तरकालः' इष्टकालो भवतीति।**

इष्टकाल = जन्म स्टैं. समय – सूर्योदय स्टैं. समय
गतिगुणक = अभीष्ट स्टैं. समय – पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय
इष्टकालीन स्पष्टग्रह = (ग्रहगति x गतिगुणक) ÷ क्षेपक ८६४०० + पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह

जब किसी स्थल के अभीष्ट स्टैं. समय के ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने हों तो अधो लिखित तीन ही स्थितियाँ हो सकती हैं।

(१) अभीष्ट स्टैं. समय ज्यादा हो और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय कम हो
(२) अभीष्ट स्टैं.समय अभीष्टस्थलीय सूर्योदय से पहिले का हो और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं.सूर्योदय कम हो
(३) अभीष्ट स्टैं. समय कम हो और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय ज्यादा हो

(१) जहाँ ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने वाला अभीष्ट स्टैं.समय ज्यादा हो और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं.सूर्योदय कम हो उस स्थिति में उस अभीष्ट स्टैं. समय में से पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय को घटाने से जो संख्या प्राप्त होगी उसे **गतिगुणक** कहते हैं। जैसे भारत के किसी शहर में स्टैं.रात्री २६।१० बजे एक बच्चे का जन्म हुआ है उसके लिए ग्रहस्पष्ट करने हैं। यहाँ स्टैं. रात्री २६।१० बजे में से पञ्चाङ्ग के ग्रहस्पष्ट में स्टैं. सूर्योदय प्रातः ६।३७ बजे हैं उसे घटाने से १९।३३ गतिगुणक हो गया।

(२) जहाँ ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने वाला अभीष्ट स्टैं.समय अभीष्टस्थलीय सूर्योदय से पहिले का हो और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं.सूर्योदय कम हो उस स्थिति में अभीष्ट स्टैं. समय में से २४ घंटे घटाकर अगले दिन का पञ्चाङ्गस्थ स्टैं.सूर्योदय और ग्रहस्पष्ट काम में लें। उस अभीष्ट स्टैं. समय में से पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय को घटाने से जो संख्या प्राप्त होगी उसे **गतिगुणक** कहते हैं। जैसे तारीख ४ अप्रेल २०११ को मुम्बई (महा.) का स्टैं. सूर्योदय ६।३४ बजे है और ग्रहस्पष्ट स्टैण्डर्ड ३०।२८ बजे के लिए ज्ञात करना है। पञ्चाङ्गस्थ ग्रहस्पष्ट में ४ अप्रेल २०११ को सूर्योदय स्टैं. ६।२२ बजे है और ५ अप्रेल २०११ को सूर्योदय स्टैं. ६।२१ बजे है अतः इसी दिन की क्रिया से ग्रहगणित में लाघव होगा। यहाँ गणित के लिए अभीष्ट स्टैं. ३०।२८ बजे में २४ घंटे घटाकर शेष ६।२८ में पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय ६।२१ को घटाया तो घंटा-मिनटादि + ०।०७ गतिगुणक प्राप्त हुआ।

(३) जहाँ ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने वाला अभीष्ट स्टैं. समय कम हो और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय ज्यादा हो उस स्थिति में पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय में अभीष्ट स्टैं. समय को घटाने से जो संख्या प्राप्त होगी वह ऋणात्मक **गतिगुणक** होता है। जैसे तारीख १० अप्रेल २००५ को कोलकाता (बंगा.) का स्टैं. सूर्योदय ५।२४ बजे है और ग्रहस्पष्ट स्टैण्डर्ड ५।४५ बजे के लिए ज्ञात करना है। पञ्चाङ्गस्थ ग्रहस्पष्ट में १० अप्रेल २००५ को सूर्योदय स्टैं. ६।१५ बजे है। ऐसी स्थिति में पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय ६।१५ में अभीष्ट स्टैं. समय ५।४५ घटाने से - ०।३० **ऋणात्मक गतिगुणक** हो गया।

कभी संयोग से अभीष्ट स्थलीय स्टैं. सूर्योदय और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय दौनों समान हों तो अभीष्ट स्थलीय इष्टकाल ही **गतिगुणक** होता है। और कभी ग्रहस्पष्ट ज्ञात करने वाला अभीष्ट स्टैं. समय और पञ्चाङ्गस्थ स्टैं. सूर्योदय दौनों समान हों तो पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह ही तत्कालीन स्पष्टग्रह समझना चाहिए।

गणितागत गतिगुणक के घंटा-मिनट को मिनटात्मक बनावें और जिस ग्रह को स्पष्ट करना हो उस ग्रह की गति को **ग्रहगति** कहते हैं। उस ग्रहगति के कला-विकला को विकलात्मक (घंटे को ६० से गुणा कर मिनट जोडने से मिनटात्मक गतिगुणक होता है और कला को ६० से गुणा कर विकला जोडने से विकलात्मक ग्रहगति होती है) बनावें।

विकलात्मक ग्रहगति को मिनटात्मक गतिगुणक से गुणा करके गुणनफल में क्षेपक ८६४०० का भाग देने से भागफल कलात्मक प्राप्त होगा यदि शेष हो तो शेष को ६० से गुणा कर पुनः क्षेपक का भाग देने से भागफल विकलात्मक प्राप्त होगा। इस कला-विकलात्मक भागफल को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह के राशि, अंश, कला, विकला में जोड दें और ग्रहगति यदि वक्री हो तो घटा दें।

यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह है कि गतिगुणक यदि ऋणात्मक है तो संस्कार विपरीत होंगें यानि कि भागफल को पञ्चाङ्गस्थ स्पष्टग्रह के राशि, अंश, कला, विकला में घटा दें और ग्रहगति यदि वक्री हो तो जोड दें। यह अभीष्टस्थल का इष्टकालीन स्पष्टग्रह हो गया। स्पष्टता के लिए यहाँ एक उदाहरण भी दिया है। **नोट-** पञ्चाङ्ग में स्पष्टग्रहों के साथ जो ग्रहगति दी है वो सूर्योदय से अगले दिन के सूर्योदय की है और उपर जो क्षेपक दिया है वो मध्यममान से २४ घंटे (६० घटी) का है अतः गणितागत इष्टकालीन स्पष्टग्रह में कहीं कहीं सूक्ष्म न्यूनाधिक अंतर आ सकता है।

गणितकर्ता - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

।। स्टैण्डर्ड(रेल्वे) जन्मसमय से 'इष्टकाल' साधन विधि ।।

जन्म पत्रिका बनाने के लिए इष्टकाल का महत्वपूर्ण स्थान है। जिसका गणित द्वारा साधन पंचांग अथवा अन्य ग्रंथों में जल्दी उपलब्ध नहीं होता है और जहाँ कहीं उपलब्ध होता भी है तो श्रमसाध्य होता है। अतः जनसाधारण हितार्थ सरल विधि से भारत के किसी भी स्थल के लिए "इष्टकाल" साधन यहाँ प्रस्तुत है। **"इष्टकालः" - सूर्योदय कालस्यारम्भात् जातकस्य जन्मकालावधि तयोरेव 'अन्तरकालः' इष्टकालो भवतीति** स च गणितेन साध्यः तद्यथा : - जन्मपत्रिका बनाने के लिए किसी भी नगर के अभीष्ट दिन का इष्टकाल निकालना हो उस स्थान और उस दिन का स्टैंण्डर्ड सूर्योदय (पञ्चाङ्ग में अन्यत्र पृष्ठ पर विधि है) ज्ञात करें। जिस जातक के अभीष्ट जन्म समय का इष्टकाल निकालना हो उस अभीष्ट (स्टैं.) जन्म समय में से (स्टैं.) सूर्योदय घटाने पर शेष घंटा-मिनटात्मक इष्टकाल होगा, इसको ढाई (२।।) से गुणा करने पर घटी पलात्मक इष्टकाल स्पष्ट होगा। हाँ इतना ध्यान अवश्य देना है कि जन्मसमय मध्यान्ह १।०० बजे से रात्री ११ बजकर ५९ मिनट तक हो तो १२।०० घंटा और रात्री १।०० बजे से सूर्योदय के पूर्व तक २४।०० घंटा जोड़कर (उदाहरणों में इस संख्या को 'क्षेपक' नाम दिया है) सूर्योदय घटाने से स्पष्ट **"इष्टकाल"** ज्ञात होगा। स्पष्टता के लिए न्यास १ में पृथक्-पृथक् चार उदाहरण **(उसी शहर की मिति के साथ)** दिये है। जिनका उपयोग 'भयात भभोग साधन विधि' में किया है।

उदाहरण - १. तारीख २६ अप्रेल २०२५, वैशाख कृष्णपक्ष १४ शनिवार संवत् २०८२ को कोलकाता (बंगा.) में प्रातः के (स्टैं.) ५ बजकर ४८ मिनट। **उदाहरण - २.** इसी मिति में रात्री (स्टैं.) ७ बजकर १८ मिनट। **उदाहरण - ३.** तारीख १२ मई २०२५, वैशाख शुक्लपक्ष १५ सोमवार संवत् २०८२ को कोलकाता (बंगा.) में प्रातः के (स्टैं.) ५ बजकर ३७ मिनट। **उदाहरण - ४.** इसी मिति में उत्तररात्री (स्टैं.) १ बजकर ५२ मिनट पर कोलकाता (बंगा.) में पृथक्-पृथक् बच्चो का जन्म हुआ है। इनका इष्टकाल ज्ञात करना है और भयात भभोग साधन भी स्टैण्डर्ड समय तथा घट्यात्मक क्रिया से ज्ञात करना है।

कोलकाता (बंगा.) के लिए ।। इष्टकाल साधन ।। न्यास १

उदाहरण → जन्म तारीख	१ २६ अप्रे.	२ २६ अप्रे.	३ १२ मई	४ १२ मई
सन २०२५ जन्मसमय + क्षेपक	प्रातः के ५।४८ + ००।००	रात्री ७।१८ + १२।००	प्रातः के ५।३७ + ००।००	उत्तररात्री १।५२ + २४।००
स्टैं.जन्मसमय - स्टैं. सूर्योदय	५।४८ - ५।११	१९।१८ - ५।११	५।३७ - ५।०१	२५।५२ - ५।०१
इष्टकाल घं. मि. ढाई से गुणा	०।३७ x २।।	१४।०७ x २।।	०।३६ x २।।	२०।५१ x २।।
इष्टकाल घ.प.	१।३२।३०	३५।१७।३०	१।३०।००	५२।०७।३०

संवत् २०८२, ।। भयात भभोग साधन विधि ।।

भयात भभोगयोरर्थपरं लक्षणम् - भस्य (जन्मकालिक चांद्र नक्षत्रस्य) यातं (गत भागः) भयातम्, भस्य भोगो भभोगः इत्येवं व्युत्पत्या जन्मनक्षत्रस्यारंभात् जातकस्य जन्मकालावधि तस्यैव व्यतीत भागो भयातमेवं चारम्भकालात्समाप्तिपर्यन्तं तन्नक्षत्रस्य संपूर्णमानं भभोग इति। तावतैव तयोरानयनं स्फुटीभवति यदाधारके पद्ये च तत्तदवसरसंगते यथा -

गतर्क्षनाडी स्वरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता। भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाडीसहिता भभोगः ।।
नक्षत्रमानादधिकं यदीष्टं तच्चेष्ट मानात्पतितं भयातम्। नक्षत्रमानं किल षष्टिशुद्धमैष्यर्क्षमानैः सहितं भभोगः ।।

किञ्च कुत्रचिदेकस्मिन्नेव दिने नक्षत्रत्रयस्य संपर्कस्तथैकस्यैव नक्षत्रस्य दिनत्रयेऽवस्थितिर्भवति तस्यां स्थितौ बालमतीनां पद्योक्त युक्त्या भयातभभोगानयने यथाकथञ्चिद्वैषम्यमापततीति स्फुटार्थ तेषां पृथक् पृथक् उदाहरणस्वरुपास्थाप्यन्ते। अर्थ - जन्म नक्षत्र के प्रारंभ से जातक के जन्म समय तक नक्षत्र के व्यतीत भाग को भयात कहते है। जन्म नक्षत्र के आरंभ से समाप्ति पर्यंत संपूर्ण मान को भभोग कहते है। श्लोकार्थ - पंचांग में गत नक्षत्र की घटी पल जो लिखा है, उसको ६० में घटा कर जो शेष बचे उसमें इष्ट घटी पल जोड देने से भयात होता है और उसी शेष में इष्ट कालिक नक्षत्र की घटी पल जोड देने से भभोग होता है। यदि जन्म दिन के नक्षत्रमान से इष्टकाल अधिक हो तो इष्टकाल में नक्षत्रमान घटा देने से भयात होता है। इष्टकालिक नक्षत्र के घटी पलों को ६० में घटाकर जो शेष बचे उसको अगले (पर) दिन के नक्षत्रमान में जोड देने से भभोग होता है। उपर लिखे पद्य में नक्षत्र की दो स्थिति बताई है लेकिन जहाँ एक ही दिन में तीन नक्षत्रों का संपर्क होता है या एक ही नक्षत्र का तीन दिन स्पर्श होता है उस स्थिति में जन साधारण को विषमता उत्पन्न हो जाती है इसलिए यहाँ नक्षत्र की चारों स्थितियों के अलग अलग चार उदाहरण दिये हैं।

उदा. - १: नक्षत्र का क्षय (ह्रास) होता है तो एक ही दिन में तीन नक्षत्रों का संपर्क होता है यहाँ नक्षत्रमान ज्यादा है और इष्टकाल कम है। **उदा. - २:** उसी दिन इष्टकाल से एक नक्षत्रमान कम है और दूसरा नक्षत्रमान ज्यादा है। **उदा. - ३:** नक्षत्र की वृद्धि होती है तो एक ही नक्षत्र तीन दिन स्पर्श करता है यहाँ नक्षत्रमान ज्यादा है और इष्टकाल कम है। **उदा. - ४:** नक्षत्रमान कम है और इष्टकाल ज्यादा है। जो कि घटी पल और स्टण्डर्ड काल (घंटा मिनट) दोनों ही प्रकार से दर्शाया है ताकि भारत के किसी भी स्थल का इष्टकाल और भयात भभोग साधन सुगमता पूर्वक कर सकें। पंचागस्थ स्टैण्डर्ड काल से गणित करने की क्रिया का अंतर इतना ही है कि ऊपर लिखे घटी ६० के स्थान पर घंटा २४ + सूर्योदय की संख्या काम में ले और नक्षत्र की घटी पल के स्थान पर स्थानिक घंटा मिनट काम में लें। जहाँ इष्टकाल ज्यादा है और नक्षत्रमान कम है वहाँ स्टैं. जन्म समय में से स्टैं. नक्षत्रमान घटाने से घंटा निनटात्मक भयात होता है। शेष क्रिया पूर्ववत् है।

पंचांगस्थ नक्षत्रों के स्टैण्डर्ड समय को कोलकाता (बंगा.) के लिए परिणत विधि ।। न्यास २

उदाहरण→ सन २०२५	१ २६ अप्रे.		२ २६ अप्रे.		३ १२ मई		४ १२ मई	
तारीख नक्षत्र	२५ अप्रे. पूभा घं. मि.	२६ अप्रे. उभा घं. मि.	२६ अप्रे. रेव घं. मि.	२६ अप्रे. रेव घं. मि.	१० मई चित्रा घं. मि.	१२ मई स्वा घं. मि.	१२ मई स्वा घं. मि.	१३ मई विशा घं. मि.
स्टैं. समय - सूर्योदय	८।५१ - ५।१२	६।२६ - ५।११	२७।३८ -उभा ६।२६	२७।३८ - ५।११	२७।१४ - ५।०२	६।१४ - ५।०१	६।१४ - ५।०१	९।०४ - ५।०१
स्थानिककाल ढाई से गुणा	३।३९ x २।।	१।१५ x २।।	२१।१२ x २।।	२२।२७ x २।।	२२।१२ x २।।	१।१३ x २।।	१।१३ x २।।	४।०३ x २।।
स्था.घटीपल	९।०७।३०	३।०७।३०	५३।००।००	५६।०७।३०	५५।३०।००	३।०२।३०	३।०२।३०	१०।०७।३०

स्पष्टता के लिए उदाहरण देखिये। **उदा. (न्यास २.)** में पंचागस्थ नक्षत्रों के स्टैं. समय में से सूर्योदय घटाकर स्थानिक घंटा मिनट बनाये हैं और २॥ से गुणा करके स्थानिक घटी पल किये है, 'पंचांग देखने की विधि' के पृष्ठ पर स्टैण्डर्ड समय से स्थानिक समय बनाने की क्रिया से प्रस्तुत चारों उदाहरणों का गणित दर्शाया है। जिस अभीष्ट स्थल का बनाना हो उसी स्थल का सूर्योदय घटाना चाहिए। **नक्षत्र चरण:** भयात भभोग ज्ञात करने के बाद नक्षत्र चरण ज्ञात करना है। भभोग की संख्या में चार का भाग देने से भागफल में चतुर्थांश आता है। भभोग के चतुर्थांश की संख्या के मान तक नक्षत्र का प्रथम चरण। चतुर्थांश को दुगुना करने पर द्वितीय चरण का मान, तिगुना करने पर तीसरे चरण का मान और उसी चौथे हिस्से को चौगुना करने पर चतुर्थ चरण का मान होता है। भयात की संख्या जिस नक्षत्र चरण के मान में आवे वही नक्षत्र चरण कहलाता है। उदाहरणों में किस दिन का गणित किया है इसकी स्पष्टता के लिए: - जन्मदिन से पूर्व दिन को **'गत'** नाम दिया है, जन्मदिन के गणित को **'वर्त.'** जन्मदिन से अगले (पर) दिन को **'भोग्य'** नाम दिया है। यद्यपि सविस्तार लिखने का प्रयास किया है तथापि गुरु के बिना यथावत् ज्ञान नहीं होता है। अतः किसी विज्ञज्योतिषी के समक्ष क्रियान्वित करें।

गणितकर्ता - पं. ग्यारसीलाल शर्मा

सूचना- यहाँ दिये हुए चारों उदाहरण, न्यास १ और न्यास २ के अनुसार कोलकाता(बंगा.) के हैं।

उदाहरण १: जन्म तारीख २६ अप्रेल २०२५, जन्मसमय प्रातः के (स्टैं.) ५।४८

श्रीसूर्योदयादिष्टकालः - घंटा 0 मिनट ३७ घटी १ पल ३२ विप. ३०

	भयात घंटा मि.	भभोग घंटा मि.	भयात घ. प. वि.	भभोग घ. प. वि.
२५ अप्रे. का गत				
(घंटा २४ + सूर्योदय)	२९।१२		६०।००।००	
पूभा समाप्तिकाल	- ८।५१		- ९।०७।३०	
उभा गतकाल	२०।२१	गत २०।२१	५०।५२।३०	गत ५०।५२।३०
घंटा मिनटात्मक इष्टकाल	+ ०।३७	वर्त.+ १।१५	+ १।३२।३०	वर्त. + ३।०७।३०
घंटामिनटात्मक भयात-भभोग	२०।५८।००	२१।३६।००		
ढाई से गुणा	x २॥	x २॥		
घट्यात्मक भयात-भभोग	५२।२५।००	५४।००।००	५२।२५।००	५४।००।००
तुलनात्मक उभा के	भयात	भभोग	भयात	भभोग

भभोग का ही चौथा हिस्सा नक्षत्र का चरण होता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि उत्तराभाद्रपद के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ। चतुर्थ हिस्सा = घंटा ५ मिनट २४ से. ००, घटी १३ पल ३० विप. ००

उदाहरण २: जन्म तारीख २६ अप्रेल २०२५, जन्मसमय रात्री (स्टैं.) १९।१८

श्रीसूर्योदयादिष्टकालः - घंटा १४ मिनट ०७ घटी ३५ पल १७ विप. ३०

	भयात घंटा मि.	भभोग घंटा मि.	भयात घ. प. वि.	भभोग घ. प. वि.
स्टैं.जन्मसमय	१९।१८	२७।३८	३५।१७।३०	५६।०७।३०
उभा समाप्तिकाल	- ६।२६	- ६।२६	- ३।०७।३०	- ३।०७।३०
घंटामिनटात्मक भयात-भभोग	१२।५२	२१।१२	३२।१०।००	५३।००।००
ढाई से गुणा	x २॥	x २॥		
घट्यात्मक भयात-भभोग	३२।१०।००	५३।००।००	३२।१०।००	५३।००।००
तुलनात्मक रेव के	भयात	भभोग	भयात	भभोग

यहाँ रेवती नक्षत्र का घट्यात्मक भयात ३२।१०।०० है और भभोग ५३।००।०० इसका चौथा हिस्सा घटी १३ पल १५ विप. ०० है। दुगना करने पर घटी २६ पल ३० विप. ०० तक द्वितीय चरण का मान हुआ। तिगुना करने पर भयात की संख्या से अधिक हो जायेगी अतः स्पष्ट हो गया कि जातक का जन्म रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है॥ अलम्॥

उदाहरण ३: जन्म तारीख १२ मई २०२५, जन्मसमय प्रातः के (स्टैं.) ५।३७

श्रीसूर्योदयादिष्टकालः - घंटा 0 मिनट ३६ घटी १ पल ३० विप. 00

	भयात घंटा मि.	भभोग घंटा मि.	भयात घ. प. वि.	भभोग घ. प. वि.
१० मई का गत				
(घंटा २४ + सूर्योदय)	२९।०२		६०।००।००	
चित्रा समाप्तिकाल	- २७।१४		- ५५।३०।००	
स्वा गतकाल	१।४८	गत १।४८	४।३०।००	गत ४।३०।००
११ मई दिनरात का	२४।००	गत + २४।००	६०।००।००	गत + ६०।००।००
घंटा मिनटात्मक इष्टकाल	+ ०।३६	वर्त.+ १।१३	+ १।३०।००	वर्त. + ३।०२।३०
घंटामिनटात्मक भयात-भभोग	२६।२४	२७।०१		
ढाई से गुणा	x २॥	x २॥		
घट्यात्मक भयात-भभोग	६६।००	६७।३२	६६।००	६७।३२
तुलनात्मक स्वा के	भयात	भभोग	भयात	भभोग

भभोग का ही चौथा हिस्सा नक्षत्र का चरण होता है। इससे यह सिद्ध हुआ कि स्वाति के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ। चतुर्थ हिस्सा = घंटा ६ मिनट ४५ से. १५, घटी १६ पल ५३ विप. ०७

उदाहरण ४: जन्म तारीख १२ मई २०२५, जन्मसमय उत्तररात्री (स्टैं.) २५।५२

श्रीसूर्योदयादिष्टकालः - घंटा २० मिनट ५१ घटी ५२ पल ०७ विप. ३०

	भयात घंटा मि.	भभोग घंटा मि.	भयात घ. प. वि.	भभोग घ. प. वि.
१२ मई का गत				
स्टैं.जन्मसमय	२५।५२	(सूर्योदय + २४) २९।०१	५२।०७।३०	६०।००।००
स्वा समाप्तिकाल	- ६।१४	- ६।१४	- ३।०२।३०	- ३।०२।३०
विशा का भयात	१९।३८	गत २२।४७	४९।०५।००	गत ५६।५७।३०
१३ मईका भोग्यकाल		भोग्य + ४।०३		भोग्य + १०।०७।३०
घंटामिनटात्मक भभोग		२६।५०		६७।०५।००
ढाई से गुणा	x २॥	x २॥		
घट्यात्मक भयात-भभोग	४९।०५।००	६७।०५।००	४९।०५।००	६७।०५।००
तुलनात्मक विशा के	भयात	भभोग	भयात	भभोग

भभोगस्यैव चतुर्थांशो नक्षत्रस्य चरणरुपः एतेन विशाखा नक्षत्रस्य तृतीय चरणे जन्मेत्यपि ज्ञायते। तृतीयांशः = घंटा ६ मिनट ४२ से. ३०, घटी १६ पल ४६ विप. १५

लग्न सारणी का उपयोग

प्रस्तुत लग्नसारणीचक्र आपके सुझावों पर पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग के १४ पृष्ठों में २८ लग्नसारणी मौक्तिकाक्षरों में मुद्रित हैं जो अपने आप में सूक्ष्मता और स्पष्टता समेटे हुए है। अयनांशाः २४, अक्षांशाः ८।३० से ३५।३० तक हैं। प्रत्येक लग्नसारणी १ अक्षांश के अंतर से अं. व्यंगु. पलभा, चरखण्डाः और स्वदेशोदय पलों के साथ दी गई हैं। जो लग्नसारणी जिस अक्षांश के लिए उपयोगी है उस अक्षांश का उल्लेख किया है और कुछ नगरों के नाम लिख भी दिये हैं। जैसे - कोलकाता (बंगा.) के लिए कौन सी लग्नसारणी काम में लें ! कोलकाता (बंगा.) के अक्षांशाः २२° ३४′ उ., होने से अक्षांशाः २२।३० की लग्नसारणी काम में लें, वहाँ लिखा भी है - (उत्तर अक्षांशाः २२ से २३ तक वाले सभी) नगरों के लिए। इसी तरह भारत के किसी भी स्थल का और किसी भी तरह की जन्मपत्रिका का लग्न स्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं। यदि आपका अपेक्षित सहयोग रहा तो **पं. श्रीवल्लभ मनीराम पञ्चाङ्ग के बढते कदम** उत्तरोत्तर अबाध गति से बढते ही रहेंगें। ज्योतिर्गणित का ज्ञान रुपी दीपक कभी टिमटिमायेगा नहीं।

जन्मपत्रिका के लिए लग्न स्पष्ट (जन्मांगम्) ज्ञात करने की विधि - सूर्य स्पष्ट को तत्रार्क, स्पष्टार्क, रविस्पष्ट भी कहते हैं। पञ्चाङ्ग में दिये हुए सूर्य स्पष्ट (राशि अंश कला विकला) की सहायता से अभीष्ट स्थलीय अक्षांश वाली लग्नसारणी से अंक प्राप्त करें। अंक प्राप्त करने की विधि - स्पष्ट सूर्य की जो राशि हो लग्नसारणी में उस राशि के सामने वाली पंक्ति और स्पष्ट सूर्य के जो अंश हों, लग्नसारणी में उन्ही अंशों के नीचे के अंक प्राप्त करें (सूक्ष्मता के लिए प्राप्तांक और अगले अंश की संख्या इन दोनों के अंतर का अनुपात से स्पष्ट सूर्य के कला/विकला जितना हो प्राप्त कर पहिले प्राप्तांक वाली संख्या में जोड देना चाहिए.) ये प्राप्त अंक घट्यात्मक इष्टकाल में जोड कर फिर उसी लग्नसारणी में वो अंक खोजें, जिस राशि के सामने मिलें वही लग्न की राशि होगी जिस अंश के नीचे मिलें वही उस लग्न के अंश होंगें। यदि इष्टकाल जोडी हुई संख्या और लग्नसारणी के अंक समान न हों और संख्या दो अंशों के बीच में हो या कम ज्यादा हो तो इष्टकाल जोडी हुई संख्या के नजदीक जो अंक हों उन्ही के राशि अंश लेने चाहियें। यह सूक्ष्मासन्न लग्न स्पष्ट होगा, सूक्ष्मता के लिए अभीष्ट स्थल का इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य लेना चाहिए. इसे इष्टाऽर्कः भी कहते हैं। ध्यान रहे कि ज्योतिष गणित में ग्रहस्पष्ट, लग्नस्पष्ट, तन्वादि द्वादशभावस्पष्ट आदि में राशि के अंको को इस तरह लिखते हैं- मेष को ०, वृष को १, मिथुन को २, कर्क को ३, सिंह को ४ इत्यादि।

लग्न स्पष्ट उदाहरण १, संवत् २०८२

उदाहरण - संवत् २०८२, तारीख २६ अप्रेल २०२५, शनिवार को कोलकाता (बंगा.) अक्षांशाः २२° ३४′ उ., रेखांशाः ८८° २८′ पू. में स्टैं. ५।४८ बजे किसी बच्चे का जन्म हुआ इसका इष्टकाल और जन्म कालीन लग्न स्पष्ट गणित द्वारा ज्ञात करना है। २६ अप्रेल २०२५ को पञ्चाङ्गस्थ रवि क्रान्ति अंश-कलादि (धन) +१३।३२ है यहाँ अक्षांश और रवि क्रान्ति दोनों को उपकरण मानकर इनकी सहायता से चरपल संस्कार सारणी से अनुपात सहित पलादि प्राप्त करें। यह ध्यान रहे कि जितने उपकरण होते हैं अनुपात भी उतने ही करने चाहिए. अन्यथा गणित स्थूल होगा। यहाँ उदाहरण में भी गणित की सूक्ष्मता के लिए अनुपात की चरपलों को विपल तक लिया है फिर भी अर्धादिक करते समय कहीं एक-आध पल-विपल का अंतर हो भी जाये तो विचार नहीं करना।

अनुपात विधि - किसी दो संख्या के बीच का फल त्रैराशिक क्रिया से प्राप्त हो उसे अनुपात कहते हैं। किसी दो संख्या के बीच की संख्या (मान) को अंतरसंख्या कहते हैं और जिस संख्या का अनुपात से मान निकालना हो उसे अभीष्ट संख्या कहते हैं। अंतरसंख्या में ६० का भाग (प... को ६० से गुणा कर, यदि विपल हों तो जोड दें) देकर अभीष्ट संख्या से गुणा करने प... विपलात्मक स्पष्ट अनुपात होगा (यदि ६० से अधिक हो तो ६० का भाग देकर पल-विपल बना लें) । इस अनुपात की संख्या को पूर्णांक की संख्या पलादि में जोड़ने से अनुपात सहित फल होगा।

अनुपात सूत्र = अंतरसंख्या ÷ ६० X अभीष्ट संख्या

विशेष- यद्यपि अंतरसंख्या को अभीष्ट संख्या से गुणा करके ६० का भाग देने पर भी वही संख्या (अंतरसंख्या X अभीष्ट संख्या ÷ ६०) आती है जो कि उपर के सूत्र में बताई है इस क्रिया में ... संख्या (पल-विपलादि) को पहचानने में ध्यान रखना होगा, इसके लिए गोमुत्रिका क्रम चाहिए।

जैसे - चरपल संस्कार सारणी पृष्ठ में उपर के भाग में जहाँ तीर के चिन्ह सहित अक्षांशाः लिखा हुआ है वे ८ से ३६ तक अक्षांश हैं और पृष्ठ में बांई तरफ उपर से नीचे जहाँ तीर के चिन्ह सहित क्रांत्यंशाः लिखा हुआ है वे १ से ३० तक क्रांति के अंश हैं, इन्ही (अक्षांश और क्रांति अंश) को उपकरण कहते हैं।

चरपल संस्कार सारणी के पृष्ठ में अक्षांश २२ के नीचे और क्रांति के अंश १३ के सामने की पंक्ति में ५४ पल लिखा है, (इन दोनों पूर्ण संख्याओं का फल प्राप्त हो गया. लेकिन अक्षांश के शेष कला ३४ और क्रांति के कला ३२ का फल अनुपात से लेना होगा) यहाँ अक्षांश कला का गणित पहले करते हैं: - सारणी की इसी पंक्ति में अक्षांश २३ के नीचे ५६ पल हैं दोनों का अंतर २ पल (२ = ५६ – ५४) है। यदि १ अंश (अर्थात् ६० कला) मे २ पल का अंतर है तो ३४ कला में क्या ? सूत्र (१।०८ = (२ ÷ ६०) X ३४) ३४ कला का फल १।०८ पल-विपल प्राप्त हुआ।

क्रांति कला ३२ का फल- अक्षांश २२ के नीचे और क्रांति अंश १४ के सामने की पंक्ति में (अर्थात् ५४ पल के नीचे) ५८ पल हैं दोनों का अंतर ४ पल (४ = ५८ – ५४) है। यहाँ भी उपर लिखे सूत्रानुसार है, यदि १ अंश (अर्थात् ६० कला) मे ४ पल का अंतर है तो ३२ कला में क्या ? सूत्र (२।०८ = (४ ÷ ६०) X ३२) ३२ कला का फल २।०८ पल-विपल प्राप्त हुआ। अब इन तीनों (१ अखण्ड फल और २ खण्ड फलों) को जोड दिया, अक्षांश २२ और क्रांति के अंश १३ की ५४ पल, ३४ अक्षांशकला की १।०८ पलादि, ३२ क्रांतिकला की २।०८ पलादि, (५७।१६ = ५४ + १।०८ + २।०८) यह अनुपात सहित कुल संख्या पलादि ५७।१६ प्राप्त हुई। सरलता के लिए पूर्ण चरपलों से यह गणित दर्शाया है। यदि चर की पल-विपल लेकर गणित करेंगें तो सूक्ष्म पलादि ५७।०० प्राप्त होंगे, लेकिन इसमें परिश्रम अधिक है जब कि दोनों संख्याओं का अंतर १ पल, ... विपल से अधिक नहीं होगा।

पल-विपल ५७।०० को २ से गुणा किया (११४।०० = ५७।०० X २) तो पलादि ११४।०० हुई. पल ६० से ज्यादा है अतः ६० का भाग दिया तो घट्यादि + १।५४।०० हुआ यहाँ रवि क्रान्ति उत्तर हैं अतः घटी ३० में जोड दिया (३०।००।०० + १।५४।००) तो घट्यात्मक ३१।५४।०० दिनमान हुआ। इसमें ५ का भाग दिया लब्धि घंटादि ६ घंटा २२ मिनट ४८ से. देशी सूर्यास्त टाइम हुई इसको १२ में से घटा दिया तो ५ घंटा ३७ मिनट १२ से. देशी सूर्योदय समय हो गया इसमें रेल्वेऽन्तर संस्कार के लिए -

कोलकाता (बंगा.) का रेखांश ८२।३० से ज्यादा है अतः ((८८।२८ - ८२।३०) X ४) रेल्वे मध्यान्तर मिनट (धन) +२३ सेकण्ड ५२ को व्यस्तचिन्ह (ऋण हो तो धन और धन हो तो ऋण) करके सूर्योदय/सूर्यास्त में से घटा दिया तो ५।१३।२० सूर्योदय और ५।५८।५६ सूर्यास्त कोलकाता (बंगा.) का मध्यम मान से हुआ। इसमें तारीख २६ अप्रेल २०२५ को वेलान्तर मिनट - २ सेकण्ड ०७ को धनर्ण करने से स्टैण्डर्ड (रेल्वे) ५।११।१३ सूर्योदय और ५।५६।४९ सूर्यास्त (अर्धादिक ...

से सूर्योदय ५ बजकर ११ मिनट और सूर्यास्त ५ बजकर ५७ मिनट) समय स्पष्ट हो गया ।

रामगढ (शेखा.) पञ्चाङ्गस्थ ग्रहस्पष्ट में स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।११।५१।२७ है.
कोलकाता (बंगा.) अक्षांशः २२° ३४' उ., के लिए अक्षांश २२।३० की लग्नसारणी का उपयोग-
कोलकाता (बंगा.) का इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।११।५१।०१

स्टै. जन्मसमय	५।४८
स्टै. सूर्योदय	– ५।११
इष्टकाल (घंटामिनटात्मक)	०।३७
	X २।३०
इष्टकाल (घटी-पल-विपल)	१।३२।३०

इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।११।५१।०१ है, लग्नसारणी
में राशि ० (मेष) के सामने और अंश ११ के नीचे अंक ४।३३ प्राप्त
हुए. सूर्य कलादि ५१। १ के अंक का अनुपात से ८ पल प्राप्त
होंगें, विधि - (४।४२ – ४।३३ ÷ ६० X ५१। १ + ४।३३) + ४।४१ अनुपात सहित

लग्नसारणी में खोजने वाले अंक (अर्धादिक रुप से घटी-पल) ६।१३

लग्नसारणी में राशि ० मेष के सामने और अंश २२ के नीचे ६।६ है,
लग्नसारणी में राशि ० मेष के सामने और अंश २३ के नीचे ६।१५ है
यहाँ ६।१३ की नजदीकी संख्या ६।१५ है
अतः लग्नस्पष्ट (जन्मांगम्) राश्यादि ०।२३।६।१३ (अर्थात् मेष लग्न) **हुआ ।**

इसी प्रकार भारत के किसी भी गांव या शहर का लग्नस्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं ।

लग्न स्पष्ट उदाहरण २, संवत् २०८२

उदाहरण - संवत् २०८२, तारीख १२ मई २०२५, सोमवार को कोलकाता (बंगा.) अक्षांशः २२° ३४' उ., रेखांशाः ८८° २८' पू. में स्टै. २५।५२ बजे किसी बच्चे का जन्म हुआ इसका इष्टकाल और जन्म कालीन लग्न स्पष्ट गणित द्वारा ज्ञात करना है । १२ मई २०२५ को पञ्चाङ्गस्थ रवि क्रान्ति अंश-कलादि (धन) +१८।०९ है यहाँ अक्षांश और रवि क्रान्ति दोनों को उपकरण मानकर इनकी सहायता से चरपल संस्कार सारणी से अनुपात सहित पलादि प्राप्त करें ।

चरपल संस्कार सारणी के पृष्ठ में अक्षांश २२ के नीचे और क्रांति के अंश १८ के सामने की पंक्ति में ७५ पल लिखा है, (इन दोनों पूर्ण संख्याओं का फल प्राप्त हो गया. लेकिन अक्षांश के शेष कला ३४ और क्रांति के कला ९ का फल अनुपात से लेना होगा) यहाँ अक्षांश कला का गणित पहले करते हैं: - सारणी की इसी पंक्ति में अक्षांश २३ के नीचे ७९ पल हैं दोनों का अंतर ४ पल (४ = ७९ – ७५) है । यदि १ अंश (अर्थात् ६० कला) मे ४ पल का अंतर है तो ३४ कला में क्या ? सूत्र (२।१६ = (४ ÷ ६०) X ३४) ३४ कला का फल २।१६ पल-विपल प्राप्त हुआ ।

क्रांति कला ९ का फल- अक्षांश २२ के नीचे और क्रांति अंश १९ के सामने की पंक्ति में (अर्थात् ७५ पल के नीचे) ८० पल हैं दोनों का अंतर ५ पल (५ = ८० – ७५) है । यहाँ भी उपर लिखे सूत्रानुसार है, यदि १ अंश (अर्थात् ६० कला) मे ५ पल का अंतर है तो ९ कला में क्या ? सूत्र (०।४५ = (५ ÷ ६०) X ९) ९ कला का फल ०।४५ पल-विपल प्राप्त हुआ । अब इन तीनों (१ अखण्ड फल और २ खण्ड फलों) को जोड दिया, अक्षांश २२ और क्रांति के अंश १८ की ७५ पल, ३४ अक्षांशकला की २।१६ पलादि, ९ क्रांतिकला की ०।४५ पलादि, (७८।०१ = ७५ + २।१६ + ०।४५) यह अनुपात सहित कुल संख्या पलादि ७८।०१ प्राप्त हुई । सरलता के लिए पूर्ण चरपलों से यह गणित दर्शाया है । यदि चर की पल-विपल लेकर गणित करेंगें तो सूक्ष्म पलादि ७७।४४ प्राप्त होंगे, लेकिन इसमें परिश्रम अधिक है जब कि दोनों संख्याओं का अंतर १ पल, २९ विपल से अधिक नहीं होगा ।

पल-विपल ७७।४४ को २ से गुणा किया (१५५।२८ = ७७।४४ X २) तो पलादि १५५।२८ हुई. पल ६० से ज्यादा है अतः ६० का भाग दिया तो घट्यादि + २।३५।२८ हुआ यहाँ रवि क्रान्ति उत्तर हैं अतः घटी ३० में जोड दिया (३०।००।०० + २।३५।२८) तो घट्यात्मक ३२।३५।२८ दिनमान हुआ । इसमें ५ का भाग दिया लब्धि घंटादि ६ घंटा ३१ मिनट ०६ से. देशी सूर्यास्त टाइम हुई इसको १२ में से घटा दिया तो ५ घंटा २८ मिनट ५४ से. देशी सूर्योदय समय हो गया इसमें रेल्वेऽन्तर संस्कार के लिए -

कोलकाता (बंगा.) का रेखांश ८२।३० से ज्यादा है अतः ((८८।२८ - ८२।३०) X ४) रेल्वे मध्यान्तर मिनट (धन) +२३ सेकण्ड ५२ को व्यस्तचिन्ह (ऋण हो तो धन और धन हो तो ऋण) करके सूर्योदय/सूर्यास्त में से घटा दिया तो ५।०५।०२ सूर्योदय और ६।०७।१४ सूर्यास्त कोलकाता (बंगा.) का मध्यम मान से हुआ । इसमें तारीख १२ मई २०२५ को वेलान्तर मिनट - ३ सेकण्ड ३६ को धनर्ण करने से स्टैण्डर्ड (रेल्वे) ५।०१।२६ सूर्योदय और ६।०३।३८ सूर्यास्त (अर्धादिक रुप से सूर्योदय ५ बजकर ०१ मिनट और सूर्यास्त ६ बजकर ०४ मिनट) समय स्पष्ट हो गया ।

रामगढ (शेखा.) पञ्चाङ्गस्थ ग्रहस्पष्ट में स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।२७।२१।३४ है.
कोलकाता (बंगा.) अक्षांशः २२° ३४' उ., के लिए अक्षांश २२।३० की लग्नसारणी का उपयोग-
कोलकाता (बंगा.) का इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।२८।१०।०१

स्टै. जन्मसमय	२५।५२
स्टै. सूर्योदय	– ५।०१
इष्टकाल (घंटामिनटात्मक)	२०।५१
	X २।३०
इष्टकाल (घटी-पल-विपल)	५२।०७।३०

इष्टकालीन स्पष्ट सूर्य राश्यादि ०।२८।१०।०१ है, लग्नसारणी
में राशि ० (मेष) के सामने और अंश २८ के नीचे अंक ७।०० प्राप्त
हुए. सूर्य कलादि १०। १ के अंक का अनुपात से २ पल प्राप्त
होंगें, विधि - (७।०९ – ७।०० ÷ ६० X १०। १ + ७।००) + ७।०२ अनुपात सहित

लग्नसारणी में खोजने वाले अंक (अर्धादिक रुप से घटी-पल) ५९।०९

लग्नसारणी में राशि १० कुंभ के सामने और अंश २९ के नीचे ५९।९ है
अतः लग्नस्पष्ट (जन्मांगम्) राश्यादि १०।२९।५९।०९ (अर्थात् कुंभ लग्न) **हुआ ।**

इसी प्रकार भारत के किसी भी गांव या शहर का लग्नस्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं ।

रेखाष्टक उदाहरण, संवत् २०८२

लग्नानुसार जन्मकुण्डली में लग्न सहित सभी ग्रहों की रेखा लगाना ज्ञात करना है।

इष्टकालीन ग्रहस्पष्ट उदाहरण और लग्नस्पष्ट उदाहरण से प्राप्त अङ्क :-

तारीख २६ अप्रेल २०२५ शुक्रवार को कोलकाता (बंगा.) का स्टैं. सूर्योदय ५।११ बजे है और अभीष्ट समय (स्टैण्डर्ड ५।४८ बजे) का गणितागत लग्नस्पष्ट राश्यादि ०।२३।६।१३ (अर्थात् **मेष लग्न**) है।

इष्टकालीन सूर्यादि-स्पष्टग्रहा :-

सूर्य	०।११।५१।०१	(मेष राशि)	चंद्र	११।१६।१६।१२	(मीन राशि)
मंगल	३।०९।१०।२९	(कर्क राशि)	बुध	११।१४।५१।५६	(मीन राशि)
गुरु	१।२६।०५।४६	(वृष राशि)	शुक्र	११।०३।१३।०३	(मीन राशि)
शनि	११।०३।०७।१८	(मीन राशि)	राहु	११।०१।१०।४०	(मीन राशि)
केतु	५।०१।१०।४०	(कन्या राशि)			

विशेष - यहाँ उदाहरण दिया जा रहा है इसलिए उपर सम्पूर्ण विवरण दिया गया है अन्यथा रेखाष्टक में तो मात्र लग्न की राशि मेष और सूर्यादि ग्रहों की राशि (सूर्य मेष, चंद्र मीन, मंगल कर्क, बुध मीन, गुरु वृष, शुक्र मीन, शनि मीन) की ही आवश्यकता है।

॥ अथ रेखाष्टक ज्ञानाय ॥

रेखाष्टक - लग्न, सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि

लग्न सहित सूर्यादि ७ ग्रह का नाम अष्टक है। इन आठों की आठ कुण्डलियों में रेखा लगाने को अष्टकवर्ग या रेखाष्टक कहते हैं।

सूत्रः रेखा = ग्रहाद्गणयेदङ्कान् (स्व-निर्मित सूत्र)
सूत्रः रेखा = ग्रहस्थानात् समारभ्य, अङ्कतुल्ये नियोजयेत् ॥ (स्व-निर्मित सूत्र) ॥

नोट - यदि किसी भी तरह की अशुद्धि-त्रुटि हो तो कृपया अवगत करें। आगामी संवत् में सुधार कर दिया जायेगा।

रेखाष्टक उदाहरण के गणितकर्ता- संपादकशिष्यः
चि. हेमन्तकुमार शुक्ल, आंजना, बांसवाडा (राज.), मो. ९८१९४३०५७०

अथ लग्न रेखाष्टक

पञ्चाङ्ग में जहाँ रेखाकोष्टक दिये हुए हैं वहीं **"लग्न रेखा ४९"** नाम के कोष्टक में लग्न के नीचे ३, ६, १०, ११ अंक लिखे हुए हैं, ऐसे ही - सूर्य के ३, ४, ६, १०, ११, १२ ॥ चन्द्र के ३, ६, १०, ११, १२ ॥ मंगल के १, ३, ६, १०, ११ ॥ बुध के १, २, ४, ६, ८, १०, ११ ॥ गुरु के १, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ ॥ शुक्र के १, २, ३, ४, ५, ८, ९ ॥ शनि के १, २, ४, ६, १०, ११ ॥ अंक लिखे हुए हैं।

ये जो अंक हैं ये प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि भावों को दर्शाते हैं। **जैसे** लग्न रेखाष्टक में लग्न के अंक ३, ६, १०, ११ हैं इसका अर्थ यह हो गया कि लग्न से प्रारंभ कर तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें भावों में रेखा लगेंगीं।
यथा - लग्न (प्रथम-भाव) की मेष राशि है अतः लग्न से तीसरा भाव मिथुन, छठा भाव कन्या, दशवाँ भाव मकर, ग्यारहवाँ भाव कुंभ होगा और इनमें ही रेखा लगेंगीं। यह लग्न रेखाष्टक के लग्न की रेखा हो गई।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा सूर्य की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि सूर्य कौन से भाव में बैठा है। यहाँ उदाहरण में सूर्य प्रथम भाव में है तो प्रथम भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार सूर्य के रेखा अंक ३, ४, ६, १०, ११, १२) तीसरे, चौथे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, बारहवें भावों में रेखा लगेंगीं।
सूर्य (लग्नस्थ) की मेष राशि है अतः सूर्य से तीसरा भाव मिथुन, चौथा भाव कर्क, छठा भाव कन्या, दशवाँ भाव मकर, ग्यारहवाँ भाव कुंभ, बारहवाँ भाव मीन होगा और इनमें ही रेखा लगेंगीं। यह लग्न रेखाष्टक के सूर्य की रेखा हो गई।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा चन्द्र की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि चन्द्र कौन से भाव में बैठा है। यहाँ उदाहरण में चन्द्र द्वादश भाव में है तो द्वादश भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार चन्द्र के रेखा अंक ३, ६, १०, ११, १२) तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, बारहवें भावों में रेखा लगेंगीं।
चन्द्र (द्वादशभावस्थ) की मीन राशि है अतः चन्द्र से तीसरा भाव वृष, छठा भाव सिंह, दशवाँ भाव धनु, ग्यारहवाँ भाव मकर, बारहवाँ भाव कुंभ होगा और इनमें ही रेखा लगेंगीं। यह लग्न रेखाष्टक के चन्द्र की रेखा हो गई।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा मंगल की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि मंगल कौन से भाव में बैठा है। यहाँ उदाहरण में मंगल चतुर्थ भाव में है तो चतुर्थ भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार मंगल के रेखा अंक १, ३, ६, १०, ११) पहिले, तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें भावों में रेखा लगेंगीं।
मंगल (चतुर्थभावस्थ) की कर्क राशि है अतः मंगल से पहला भाव कर्क, तीसरा भाव कन्या, छठा भाव धनु, दशवाँ भाव मेष, ग्यारहवाँ भाव वृष होगा और इनमें ही रेखा लगेंगीं। यह लग्न रेखाष्टक के मंगल की रेखा हो गई।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा बुध की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि बुध कौन से भाव में बैठा है। यहाँ उदाहरण में बुध द्वादश भाव में है तो द्वादश भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार बुध के रेखा अंक १, २, ४, ६, ८, १०, ११) पहिले, दूसरे, चौथे, छठे, आठवें, दशवें, ग्यारहवें भावों में रेखा लगेंगीं।
बुध (द्वादशभावस्थ) की मीन राशि है अतः बुध से पहला भाव मीन, दूसरा भाव मेष, चौथा भाव मिथुन, छठा भाव सिंह, आठवाँ भाव तुला, दशवाँ भाव धनु, ग्यारहवाँ भाव मकर होगा और इनमें ही रेखा लगेंगीं। यह लग्न रेखाष्टक के बुध की रेखा हो गई।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा गुरु की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि गुरु कौन से भाव में बैठा है। यहाँ उदाहरण में गुरु द्वितीय भाव में है तो द्वितीय भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार गुरु के रेखा अंक १, २, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११) पहिले, दूसरे, चौथे, पांचवें, छठे,

सातवें, नोवें, दशवें, ग्यारहवें भावों में रेखा लगेंगी ।

गुरु (द्वितीयभावस्थ) की वृष राशि है अतः गुरु से पहला भाव वृष, दूसरा भाव मिथुन, चौथा भाव सिंह, पाँचवां भाव कन्या, छठा भाव तुला, सातवाँ भाव वृश्चिक, नोवाँ भाव मकर, दशवाँ भाव कुंभ, ग्यारहवाँ भाव मीन होगा और इनमें ही रेखा लगेंगी । यह लग्न रेखाष्टक के गुरु की रेखा हो गई ।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा शुक्र की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि शुक्र कौन से भाव में बैठा है । यहाँ उदाहरण में शुक्र द्वादश भाव में है तो द्वादश भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार शुक्र के रेखा अंक १, २, ३, ४, ५, ८, ९) पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, आठवें, नोवें भावों में रेखा लगेंगी ।

शुक्र (द्वादशभावस्थ) की मीन राशि है अतः शुक्र से पहला भाव मीन, दूसरा भाव मेष, तीसरा भाव वृष, चौथा भाव मिथुन, पाँचवां भाव कर्क, आठवाँ भाव तुला, नोवाँ भाव वृश्चिक होगा और इनमें ही रेखा लगेंगी । यह लग्न रेखाष्टक के शुक्र की रेखा हो गई ।

लग्न रेखाष्टक में आगे की रेखा शनि की हैं. तो पहले यह देखना चाहिए कि शनि कौन से भाव में बैठा है । यहाँ उदाहरण में शनि द्वादश भाव में है तो द्वादश भाव से प्रारम्भ कर (उपर बताये अनुसार शनि के रेखा अंक १, २, ४, ६, १०, ११) पहिले, दूसरे, चौथे, छठे, दशवें, ग्यारहवें भावों में रेखा लगेंगी ।

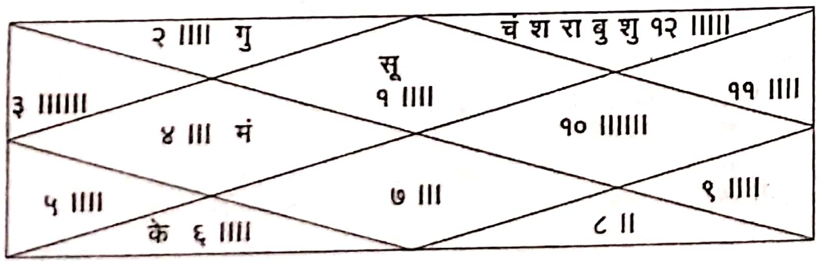
शनि (द्वादशभावस्थ) की मीन राशि है अतः शनि से पहला भाव मीन, दूसरा भाव मेष, चौथा भाव मिथुन, छठा भाव सिंह, दशवाँ भाव धनु, ग्यारहवाँ भाव मकर होगा और इनमें ही रेखा लगेंगी । यह लग्न रेखाष्टक के शनि की रेखा हो गई ।

आगे सूर्य आदि रेखाष्टक की भी रेखा ऐसे ही लगानी चाहिए । ध्यान रखने योग्य इतना ही है कि जिस रेखाष्टक की रेखा लगानी हो उसी रेखाष्टक के अंक हों. और सूर्यादि ग्रहों में से जिस ग्रह की रेखा लगानी हो वह ग्रह कुण्ड़ली के जिस भाव में हो उसी भाव से प्रथम भाव की गणना प्रारम्भ करें और पंचांग में दिये हुए रेखाष्टक के अंकों के अनुसार भावों (अंको को प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि भाव समझते हुए भावों) में रेखा स्थापित करें । जैसा कि उपर बताया गया है ।

इस तरह रेखाष्टकों में रेखा लगाकर मानसागरी आदि ज्योतिष-ग्रन्थों से फलादेश करें । ज्योतिष-ग्रन्थों की जानकारी प्रकाशक से प्राप्त करें ।

यहाँ उदाहरण के साथ कुण्ड़ली भी दी है । आशा है कि जिज्ञासुगण लाभान्वित होंगें ।

लग्न रेखाष्टक ४९



॥ अथ विंशोत्तरीक्रमेण भुक्त-भोग्य दशा आनयन विधि ॥

गतर्क्षनाडी निहिता दशाब्दैः सर्वर्क्षनाडीविहृता फलं यत् ।
वर्षादिकं भुक्तमिति प्रकल्प्य स्वाब्दादपास्यं भवतीह भोग्यम् ॥६॥

अथाऽऽनीतभयातभभोगाभ्यां जन्मकालिकग्रहदशाया भुक्तभोग्यानयनप्रकारः —

उपकरण - संवत् २०८२ (भयात भभोग पृष्ठ, उदाहरण १ का), कोलकाता (बंगा.) जन्म तारीख २६ अप्रेल २०२५, जन्मसमय प्रातः के (स्टैं.) ५।४८

यथा भयातं घट्यादि ५२।२५ पलीकृतम् ३१४५ भभोगश्च घट्यादिकः ५४।०० पलीकृतः ३२४० ततः पद्यानुसारेण दशेशशनिवर्षाणि १९ भयातगुणितानि १९ X ३१४५ = ५९७५५ अत्र भभोगेन भागार्थन्यासः- ५९७५५ ÷ ३२४० .. लब्धं वर्षादि १८। ५। ९।२६।४० भुक्तं दशायाः, इदमेव दशावर्षेभ्यः १९ शुद्धं सद्भोग्यं वर्षादि ०। ६।२०।३३।२०.

घट्यात्मक भयात् को पलात्मक बनाकर जिस ग्रह की महादशा हो उस महादशा वर्ष से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग देवे-भागफल में भुक्त अन्तर्दशा के वर्ष आयेगें । शेष बचे हुए को १२ से गुणा कर पुनः भभोग का भाग देने से भागफल में महिने आयेंगे । शेष को ३० से गुणा कर पुनः भभोग का भाग देने से भागफल में दिन आयेंगे । इसी क्रम से शेष को ६० से गुणा और भभोग का भाग देने से भागफल में घटी-पल और विपल आजायेंगी । गणितागत अन्तर्दशा के भुक्त वर्षादि को अभीष्ट ग्रह के महादशा वर्ष में से घटाने पर स्पष्ट भोग्य वर्ष, माह, दिनादि आजायेंगे ।

भुक्तदशा सूत्र = पलात्मक भयात X दशाधीशवर्ष ÷ पलात्मक-भभोग (लब्धं वर्षादि..)
भोग्यदशा सूत्र = दशाधीशवर्ष — भुक्तदशावर्षादि (लब्धं वर्षादि..)

अथान्तर्दशानयनम् -

दशा दशाहता कार्या दशभिर्भागमाहरेत् । यल्लब्धं सो भवेन्मासस्त्रिंशन्निघ्नं दिनं भवेत् ॥१॥

अन्तर्दशा-आनयन सूत्र १ = ग्रहदशा वर्षात्मक X ग्रहदशा वर्षात्मक ÷ १०
(लब्धी मासादि)

अपरञ्च- अन्तर्दशानयनम् -

दशा दशाहता कार्या विहृता परमायुषा । लब्धमन्तर्दशामानं वर्षादिकमिहेरितम् ॥७॥

अन्तर्दशा-आनयन सूत्र २ = ग्रहदशा वर्षात्मक X ग्रहदशा वर्षात्मक ÷ १२०
(लब्धी वर्षादि)

यस्मिन्मित्रगृहे स्वकीयभवने तुङ्गे त्रिकोणेऽपिवा, तत्सर्वं विदधाति जन्मसमये षडवर्गशुद्धो ग्रहः । एकस्तत्र हि सर्वभूरिनिकरो हस्तेषु कोषान्वितो, द्वाभ्यां किन्नरमत्र सिद्धसदृशं कुर्वन्ति मर्त्यं भुवि॥३॥

जिसके जन्मकालिक कोई ग्रह अपने मित्रों के गृह में वा अपने घर में, त्रिकोण (अपने स्थान से पञ्चम, नवम) में, वा अपने उच्च में स्थित देखा जाय वह ग्रह उस जातक के सब कामों को करने वाला होता है । यदि किसी आदमी को एक षडवर्गशुद्ध ग्रह कुण्डली में पड़ जाय तो सब प्रकार की सम्पत्ति खजाने से सहित बड़ा ऐश्वर्यशाली जातक होता है । इसी तरह जिसको दो षडवर्गशुद्ध पड़ जाँय वह सिद्ध किन्नर के सदृश उच्च विभूतिमान् प्रतापी हो यह कहना ही क्या है अवश्यमेव वैसा होगा, सो जानना चाहिए ॥ ३॥ - मानसागरी

॥ संवत् २०८२ में विभिन्न नगरों के गुरु -शुक्रोदयास्त और कृष्णा चतुर्थी का चंद्रोदयः ॥ (स्टै.समय में) ई.सन् २०२५-२६, (उन्नतांशाः गु.८.२, शु.६.४)

शुक्र	पूर्व.अस्त		पश्चि.उदय		गुरु पश्चि.अस्त		पूर्व.उदय		१६अप्रे	१६मई	१४जून	१४जुला	१२अग	१०सितं	१०अक्टू	८नवं	७दिसं	६जन	५फर	६मार्च
शहर	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	तारीख	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
रामगढ शेखा.	८।१२।२०२५	३१।१२	४। २।२०२६	१०।२८	११। ६।२०२५	२३।३३	६। ७।२०२५	२८।१८	२२।०७	२२।४६	२२।१५	२२।०३	२१।०९	२०।१६	२०।२४	२०।१०	२०।०६	२१।०४	२१।४३	२१।२२
अजमेर (राज.)	९।१२।२०२५	१४।०४	३। २।२०२६	२७।०३	११। ६।२०२५	२७।५७	६। ७।२०२५	२४।३१	२२।०४	२२।४२	२२।१२	२२।०३	२१।१०	२०।१९	२०।२९	२०।१६	२०।११	२१।०७	२१।४४	२१।२१
अहमदा. (गुज.)	९।१२।२०२५	२६।१०	३। २।२०२६	१३।४३	१२। ६।२०२५	११।४५	६। ७।२०२५	१७।५४	२२।०५	२२।४३	२२।१५	२२।१०	२१।२०	२०।३२	२०।४६	२०।३४	२०।२८	२१।२०	२१।५२	२१।२७
अमृतसर (पंजा.)	८।१२।२०२५	१२।५२	४। २।२०२६	२९।५५	११। ६।२०२५	११।४४	७। ७।२०२५	१४।२९	२२।१८	२२।५७	२२।२४	२२।०७	२१।०९	२०।१२	२०।१५	२०।००	१९।५७	२१।००	२१।४५	२१।२७
आकोला (महा.)	१०।१२।२०२५	१०।४२	२। २।२०२६	२८।०४	१२। ६।२०२५	१७।१८	६। ७।२०२५	१३।१५	२१।४०	२२।१७	२१।५०	२१।४९	२१।०१	२०।१६	२०।३४	२०।२२	२०।१५	२१।०४	२१।३३	२१।०५
इंदौर (म.प्र.)	९।१२।२०२५	२८।१५	३। २।२०२६	११।२४	१२। ६।२०२५	१३।०६	६। ७।२०२५	१६।४६	२१।५०	२२।२८	२२।००	२१।५६	२१।०६	२०।१९	२०।३४	२०।२१	२०।१५	२१।०७	२१।३८	२१।१२
उज्जैन (म.प्र.)	९।१२।२०२५	२६।४९	३। २।२०२६	१३।००	१२। ६।२०२५	१२।१०	६। ७।२०२५	१७।३३	२१।५२	२२।२९	२२।०१	२१।५७	२१।०७	२०।१९	२०।३४	२०।२१	२०।१५	२१।०७	२१।३९	२१।१३
कटक (उडी.)	१०।१२।२०२५	११।२३	२। २।२०२६	२७।१७	१२। ६।२०२५	१७।४५	६। ७।२०२५	१२।५२	२१।०३	२१।४०	२१।१३	२१।१३	२०।२५	१९।४०	१९।५८	१९।४५	१९।३९	२०।२७	२०।५६	२०।२८
कोलकाता	९।१२।२०२५	२८।४९	३। २।२०२६	१०।४६	१२। ६।२०२५	१३।२८	६। ७।२०२५	१६।२७	२०।५७	२१।३५	२१।०७	२१।०४	२०।१४	१९।२७	१९।४२	१९।२९	१९।२३	२०।१४	२०।४६	२०।२०
कानपुर (उ.प्र.)	९।१२।२०२५	१४।००	३। २।२०२६	२७।०८	११। ६।२०२५	२७।५४	६। ७।२०२५	२४।३३	२१।४१	२२।१९	२१।४९	२१।४०	२०।४७	१९।५६	२०।०६	१९।५२	१९।४८	२०।४४	२१।२१	२०।५८
कोटा (राज.)	९।१२।२०२५	१९।१९	३। २।२०२६	२१।१८	१२। ६।२०२५	७।२०	६। ७।२०२५	२१।३८	२१।५६	२२।३४	२२।०५	२१।५८	२१।०६	२०।१६	२०।२८	२०।१५	२०।१०	२१।०४	२१।३९	२१।१५
गंगानगर (राज.)	८।१२।२०२५	२१।३३	४। २।२०२६	२०।४५	११। ६।२०२५	१७।२१	७। ७।२०२५	९।३८	२२।१७	२२।५६	२२।२४	२२।१०	२१।१३	२०।१८	२०।२३	२०।०९	२०।०५	२१।०७	२१।४९	२१।२९
गुडगावाँ (हरि.)	८।१२।२०२५	२८।१८	४। २।२०२६	१३।३४	११। ६।२०२५	२१।४२	७। ७।२०२५	५।५४	२२।००	२२।३९	२२।०८	२१।५६	२१।००	२०।०७	२०।१४	२०।००	१९।५६	२०।५५	२१।३४	२१।१४
गौहाटी आसाम	९।१२।२०२५	१५।११	३। २।२०२६	२५।४९	१२। ६।२०२५	४।४०	६। ७।२०२५	२३।५४	२०।५२	२१।३१	२१।०२	२०।५३	२०।००	१९।०९	१९।१९	१९।०५	१९।००	१९।५६	२०।३३	२०।१०
जयपुर (राज.)	९।१२।२०२५	१२।०३	३। २।२०२६	२९।१३	११। ६।२०२५	२६।४०	६। ७।२०२५	२५।३७	२२।०१	२२।३९	२२।०९	२१।५९	२१।०६	२०।१४	२०।२४	२०।१०	२०।०५	२१।०२	२१।४०	२१।१७
जबलपुर (न.प्र.)	९।१२।२०२५	२६।४५	३। २।२०२६	१३।०४	१२। ६।२०२५	१२।०८	६। ७।२०२५	१७।३५	२१।३४	२२।१२	२१।४४	२१।३९	२०।४९	२०।०२	२०।१६	२०।०३	१९।५७	२०।४९	२१।२९	२०।५६
जौधपुर (राज.)	९।१२।२०२५	१५।१५	३। २।२०२६	२५।४५	११। ६।२०२५	२८।४३	६। ७।२०२५	२३।५२	२२।१३	२२।५१	२२।२१	२२।१२	२१।१९	२०।२९	२०।३९	२०।२६	२०।२१	२१।१७	२१।५३	२१।३०
झरिया (बिहा.)	९।१२।२०२५	२४।४१	३। २।२०२६	१५।२३	१२। ६।२०२५	१०।४७	६। ७।२०२५	१८।४३	२१।०९	२१।४७	२१।१८	२१।१३	२०।२३	१९।३४	१९।४८	१९।३५	१९।२९	२०।२२	२०।५५	२०।३०
झुन्झुनू (राज.)	८।१२।२०२५	३०।४४	४। २।२०२६	१०।५८	११। ६।२०२५	२३।१५	६। ७।२०२५	२८।३३	२२।०६	२२।४४	२२।१३	२२।०२	२१।०७	२०।१४	२०।२२	२०।०८	२०।०४	२१।०२	२१।४२	२१।२०
डिब्रुगढ आसाम	९।१२।२०२५	९।३३	४। २।२०२६	७।५६	११। ६।२०२५	२५।०३	६। ७।२०२५	२७।००	२०।४३	२१।२२	२०।५१	२०।४१	१९।४७	१८।५५	१९।०३	१८।४८	१८।४३	१९।४२	२०।२०	१९।५८
दिल्ली	८।१२।२०२५	२८।१३	४। २।२०२६	१३।३९	११। ६।२०२५	२१।३९	७। ७।२०२५	५।५७	२२।००	२२।३८	२२।०७	२१।५५	२०।५९	२०।०६	२०।१३	१९।५९	१९।५५	२०।५४	२१।३८	२१।१३
नासिक (महा.)	१०।१२।२०२५	१२।४३	२। २।२०२६	२५।४४	१२। ६।२०२५	१८।३८	६। ७।२०२५	१२।०९	२१।५२	२२।२९	२२।०३	२२।०३	२१।१६	२०।३१	२०।४९	२०।३८	२०।३१	२१।१९	२१।४७	२१।१८
चिन्नई (तमि.)	१०।१२।२०२५	२७।००	२। २।२०२६	८।००	१२। ६।२०२५	२८।४७	५। ७।२०२५	२८।०६	२१।१०	२१।४६	२१।२३	२१।३१	२०।५०	२०।११	२०।३८	२०।२८	२०।१९	२०।५९	२१।५८	२०।४५
बांसवाडा (राज.)	९।१२।२०२५	२५।३५	३। २।२०२६	१४।२३	१२। ६।२०२५	११।२२	६। ७।२०२५	१८।१३	२१।५८	२२।३६	२२।०७	२२।०२	२१।१२	२०।२४	२०।३८	२०।२५	२०।२०	२१।१२	२१।४५	२१।१९
बिलासपु (म.प्र)	९।१२।२०२५	३०।२४	३। २।२०२६	८।५८	१२। ६।२०२५	१४।३०	६। ७।२०२५	१५।३५	२१।२२	२२।००	२१।३२	२१।२९	२०।४०	१९।५४	२०।०९	१९।५७	१९।५०	२०।४१	२१।१२	२०।४५
भिवानी (हरि.)	८।१२।२०२५	२७।३५	४। २।२०२६	१४।२०	११। ६।२०२५	२९।१४	७। ७।२०२५	६।१८	२२।०४	२२।४३	२२।१२	२१।५९	२१।०४	२०।१०	२०।१७	२०।०३	१९।५९	२०।५८	२१।३९	२१।१८
मुम्बई (महा.)	१०।१२।२०२५	१५।३२	२। २।२०२६	२२।२६	१२। ६।२०२५	२०।३१	६। ७।२०२५	१०।३६	२१।५४	२२।३०	२२।०४	२२।०५	२१।१९	२०।३६	२०।५६	२०।४४	२०।३७	२१।२३	२१।४०	२१।२१
वाराणसी (उ.प्र)	९।१२।२०२५	१८।४०	३। २।२०२६	२२।०२	१२। ६।२०२५	६।५४	६। ७।२०२५	२२।००	२१।२७	२२।०५	२१।३६	२१।२९	२०।३६	१९।४७	१९।५८	१९।४४	१९।३९	२०।३४	२१।०९	२०।४६
विजयवा. (आं.प्र)	१०।१२।२०२५	२१।१०	२। २।२०२६	१५।३८	१२। ६।२०२५	२४।२४	६। ७।२०२५	७।२८	२१।१६	२१।५२	२१।२७	२१।३२	२०।४८	२०।०६	२०।२९	२०।१७	२०।०९	२०।५३	२१।१७	२०।४६
हैदराबाद (आं.प्र)	१०।१२।२०२५	१९।२५	२। २।२०२६	१७।४७	१२। ६।२०२५	२३।११	६। ७।२०२५	८।२८	२१।२६	२२।०३	२१।३८	२१।४१	२०।५६	२०।१४	२०।३६	२०।२४	२०।१७	२१।०२	२१।२६	२०।५९
दरभंगा (बिहा.)	९।१२।२०२५	१५।१६	३। २।२०२६	२५।४५	११। ६।२०२५	२८।४३	६। ७।२०२५	२३।५२	२१।१७	२१।५५	२१।२६	२१।१८	२०।२५	१९।३४	१९।४४	१९।३०	१९।२५	२०।२१	२०।५८	२०।३५
बीकानेर (राज.)	८।१२।२०२५	३०।२५	४। २।२०२६	११।१८	११। ६।२०२५	२३।०३	६। ७।२०२५	२८।४४	२२।१५	२२।५३	२२।२२	२२।११	२१।१५	२०।२३	२०।३१	२०।१७	२०।१३	२१।११	२१।५९	२१।२९
बैंगलोर (कर्ना.)	१०।१२।२०२५	२७।०८	२। २।२०२६	७।४९	१२। ६।२०२५	२८।५३	५। ७।२०२५	२८।०२	२१।२०	२१।५६	२१।३३	२१।४२	२१।०१	२०।२२	२०।४९	२०।३९	२०।३०	२१।१०	२१।२९	२०।५५
उदयपुर (राज.)	९।१२।२०२५	२१।२७	३। २।२०२६	१८।५७	१२। ६।२०२५	८।४२	६। ७।२०२५	२०।२८	२२।०४	२२।४२	२२।१३	२२।०६	२१।१५	२०।२६	२०।३८	२०।२५	२०।२०	२१।१४	२१।४८	२१।२३
सीकर (राज.)	९।१२।२०२५	९।०१	४। २।२०२६	८।३०	११। ६।२०२५	२४।४३	६। ७।२०२५	२७।१७	२२।०५	२२।४४	२२।१३	२२।०२	२१।०८	२०।१६	२०।२४	२०।११	२०।०६	२१।०४	२१।४३	२१।२१

नोट - देखने की विधि - चन्द्रोदय उदाहरण के पृष्ठ पर देखें।

॥ अथ अवकहडाचक्रम् विंशोत्तरी-अष्टोत्तरी-योगिनीमहादशा सहितम् ॥ (जन्मकुण्डली के महत्वपूर्ण कोष्टक)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
राशीनास्वामिनः अयन गोल ऋतु वर्ण हंसकादि	स्वा मंगल ऋतु बसंत	अयन उत्तर वर्णः क्षत्रि.	गोलः उत्तर हंसक अग्नि	स्वा शुक्र ऋतु ग्रीष्म	अयन उत्तर वर्णः वैश्य	गोलः उत्तर हंसकः भूमिः	स्वा बुध ऋतु ग्रीष्म	अयन उत्तर वर्णः शूद्रः	गोलः उत्तर हंसकः वायु	स्वा चंद्र ऋतु वर्षा	अयन दक्षिण वर्णः विप्रः	गोलः उत्तर हंसकः वारि	स्वा सूर्य ऋतु वर्षा	अयन दक्षिण वर्णः क्षत्रिय	गोलः उत्तर हंसक अग्नि	स्वा बुध ऋतु शरद्	अयन दक्षिण वर्णः वैश्यः	गोलः उत्तर हंसक भूमिः
घातादयः	माह कार्ति नक्षत्र मघा प्रहर १	तिथि नंदा योग विष्कुं पु.चंद्रः १	वार रवि करण बव स्त्री १	माह मार्ग नक्षत्र हस्त प्रहर ४	तिथि पूर्णा योग शूल पु.चंद्रः ५	वार शनि करण शकु स्त्री ८	माह आषा नक्षत्र स्वा. प्रहर ३	तिथि भद्रा योग परि. पु.चंद्रः ९	वार चंद्र. करण चतु. स्त्री ७	माह पोष नक्षत्र अनु प्रहर १	तिथि भद्रा योग व्याघा पु.चंद्रः २	वार बुध करण नाग स्त्री ९	माह ज्येष्ठ नक्षत्र मूल प्रहर १	तिथि जया योग धृति पु.चंद्रः ६	वार शनि करण वणि. स्त्री ५	माह भाद्र नक्षत्र श्रवण प्रहर १	तिथि पूर्णा योग शूल पु.चंद्रः १०	वार शनि करण कौल स्त्री ३

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुंभ			मीन		
राशीनास्वामिनः अयन गोल ऋतु वर्ण हंसकादि	स्वा शुक्र ऋतु शरद्	अयन दक्षिण वर्णः शूद्रः	गोलः दक्षिण हंसकः वायु	स्वा मंगल ऋतु हेमन्त	अयन दक्षिण वर्णः विप्रः	गोलः दक्षिण हंसकः वारि	स्वा बृह. ऋतु हेमंत	अयन दक्षिण वर्णः क्षत्रिय	गोलः दक्षिण हंसकः अग्नि	स्वा शनि ऋतु शिशि	अयन उत्तर वर्णः वैश्यः	गोलः दक्षिण हंसकः भूमिः	स्वा शनि ऋतु शिशि	अयन उत्तर वर्णः शूद्रः	गोलः दक्षिण हंसकः वायु	स्वा बृह. ऋतु बसंत	अयन उत्तर वर्णः विप्र	गोलः दक्षिण हंसकः वारि
घातादयः	माह माघ नक्षत्र शत प्रहर ४	तिथि रिक्ता योग शूल पु.चंद्रः ३	वार बृह. करण तैतिल स्त्री ६	माह आश्वि नक्षत्र रेवति प्रहर १	तिथि नंदा योग व्यति पु.चंद्रः ७	वार शुक्र करण गर स्त्री २	माह श्राव नक्षत्र भर प्रहर १	तिथि जया योग वरीया पु.चंद्रः ४	वार शुक्र करण तैति स्त्री १०	म्मह वैशा नक्षत्र रोहि प्रहर ४	तिथि रिक्ता योग वैधृ पु.चंद्रः ८	वार भौम करण शकु. स्त्री ११	माह चैत्र नक्षत्र आर्द्रा प्रहर ३	तिथि जया योग गंड पु.चंद्रः ११	वार बृह. करण किंस्तु स्त्री ५	माह फाल्गु नक्षत्र श्ले प्रहर ४	तिथि पूर्णा योग वैधृति पु.चंद्रः १२	वार शुक्र करण चतुष्पा स्त्री १२

नक्षत्र चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
नक्षत्रनाम-संख्या	अश्वि१	भरणी२	कृति.३	रोहि.४	मृग.५	आर्द्रा६	पुन.७	पुष्य ८	श्ले.९
नक्षत्र-अक्षर	चू चे	ली लू	अ ई	ओ वा	वे वो	कु घ	के को	हू हे	डी डू
नक्षत्र-अक्षर	चो ला	ले लो	उ ए	वि बु	क की	ङ छ	ह ही	हो डा	डे डो
योनि	अश्वः	गजः	मेषः	सर्पः	सर्पः	श्वान्	मार्जारः	मेषः	मार्जारः
गण	देव	मनुष्यः	राक्षसः	मनुष्यः	देवः	मनुष्यः	देवः	देवः	राक्षसः
वर्ग	सिंह३ मृग.१	मृग	गरूड	गरू.१ मृग.३	मृग२ मार्जा.२	मार्जा३ सिंहः१	मार्जा२ मेषः२	मेषः३ श्वा.१	श्वान्
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य
नाडी	आद्य	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अंत्य
वश्य वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु,.२ मान.२	मानव	मान.३ जल.१	जलचर	जलचर
वैरयोनि	महिषः	सिंहः	वानरः	नकुलः	नकुलः	मृगः	मूषकः	वानर	मूषकः
शुभाऽशु.	शुभ	नाश	कार्यना.	सिद्धिः	शुभः	शुभः	मध्यम	शुभः	शोक
देवता	अश्विकु	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्रः	शिवः	अदिति	गुरुः	सर्पः
मुख	तिर्यक	अधः	अधः	उर्ध्व	तिर्यक	उर्ध्व	तिर्यक	उर्ध्व	अधः
नेत्र (लोचन)	मन्दलो.	मध्य	सुलो.	अन्ध.	मन्द.	मध्य	सुलो.	अन्ध.	मन्द.
ध्रुवक्षिप्रनामादि.	क्षिप्र	उ.क्रू.	मि.सा.	ध्रुवस्थि	मृदुमै	ती.दा.	चर,च.	क्षिप्र	ति.दा
स्वरूप-	अश्वमु.	योनिस्व.	क्षुराकृति	शकट	मृगमु.	मणिसदृ	गृहाका.	शराका.	चक्राका.
तारासंख्या	३	३	६	५	३	१	४	३	५
विंशो. महादशा प्रमाणवर्षाणि	केतु ७	शुक्र २०	सूर्य ६	चंद्र १०	मंगल ७	राहु १८	बृहस्प. १६	शनि १९	बुध १७
योगिनी नाम योगि. दशा-वर्ष	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	सङ्कटा ८	मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४
अष्टोत्त. दशा-वर्ष	राहु-१२	राहु-१२	शुक्र-२१	शुक्र-२१	शुक्र-२१	सूर्य-६	सूर्य-६	सूर्य-६	सूर्य-६
अष्टो. नक्षत्रमास	३६	३६	८४	८४	८४	१८	१८	१८	१८

नक्षत्र चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
नक्षत्रनाम-संख्या	मघा१०	पूफा११	उफा१२	हस्त१३	चि.१४	स्वा.१५	वि.१६	अनु.१७	ज्ये.१८
नक्षत्र-अक्षर	म मी	मो टा	टे टो	पु ष	पे पो	रू रे	ती तू	न नी	नो या
नक्षत्र-अक्षर	मु मे	टी टू	प पी	ण ठ	र री	रो ता	ते तो	नू ने	यी यू
योनि	मूषकः	मूषकः	गौ	महिषः	व्याघ्रः	महिषः	व्याघ्रः	मृगः	मृगः
गण	राक्षसः	मनुष्यः	मनुष्यः	देवः	राक्षसः	देवः	राक्षसः	देवः	राक्षसः
वर्ग	मूषकः	मूष.१ श्वा.३	श्वान२ मूष.२	मू१मे१ श्वा.२	मूषक२ मृगः२	मृगः३ सर्पः१	सर्पः	सर्पः	सर्पः१ मृगः३
युंजा	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अंत्य
नाडी	अंत्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आद्य
वश्य वश्य	वनचर	वनचर	वन.१ मान.३	मानव	मानव	मानव	मान.३ कीट.१	कीट.	कीट
वैरयोनि	मार्जारः	मार्जारः	व्याघ्रः	अश्वः	गौ	अश्वः	गौ	श्वान्	श्वान्
शुभाऽशु.	नाश	मृत्यु	विद्या	लक्ष्मी	शुभ	अशुभ	अशुभ	सर्वसि.	क्षय
देवता	पितर	भगः	अर्यम्	रविः	त्वष्टा	वायु	इन्द्राग्निः	मित्र	इन्द्रः
मुख	अधः	अधः	उर्ध्व	तिर्यक	तिर्यक	तिर्यक	अधः	तिर्यक	तिर्यक
नेत्र (लोचन)	मध्य.	सुलो.	अन्ध.	मन्द.	मध्य.	सुलो.	अन्ध.	मन्द.	मध्य.
ध्रुवक्षिप्रनामादि.	उ.क्रू.	उ.क्रू.	ध्रुवस्थि	क्षिप्र	मृदु,मै	चर,च.	मिश्र	मृदु,मै.	ती.दा.
स्वरूप-	शाला.	शय्या.	खट्वाका.	हस्ताका.	मौक्तिकं	प्रवाला.	तोरणसदृ	बलिसदृ	कुंडला.
तारासंख्या	५	२	२	५	१	१	४	४	३
विंशो. महादशा प्रमाणवर्षाणि	केतु ७	शुक्र २०	सूर्य ६	चंद्र १०	मंगल ७	राहु १८	बृहस्प. १६	शनि १९	बुध १७
योगिनी नाम योगि. दशा-वर्ष	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	सङ्कटा ८	मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५
अष्टोत्त. दशा-वर्ष	चंद्र-१५	चंद्र-१५	चंद्र-१५	मंग-८	मंग-८	मंग-८	मंग-८	बुध-१७	बुध-१७
अष्टो. नक्षत्रमास	६०	६०	६०	२४	२४	२४	२४	६८	६८

नक्षत्र चरण	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४	१ २ ३ ४
नक्षत्रनाम-संख्या	मूल१९	पूषा२०	उषा२१	श्र.२२	धनि२३	शत.२४	पूभा२५	उभा.२६	रेव.२७
नक्षत्र-अक्षर	ये यो	भू धा	भे भो	खी खु	ग गी	गो सा	से सो	दु थ	दे दो
नक्षत्र-अक्षर	भ भी	फा ढा	ज जी	खे खो	गु गे	सी सु	द दी	झ ञ	चा ची
योनि	श्वान्	वानरः	नकुलः	वानरः	सिंहः	अश्वः	सिंहः	गौ	गजः
गण	राक्षसः	मनुष्यः	मनुष्यः	देवः	राक्षसः	राक्षसः	मनुष्यः	मनुष्यः	देवः
वर्ग	मृगः२ मूष.२	मू.१स.१ मू.१श्वा.१	मूष.२ सिंहः२	मार्जारः	मार्जारः	मार्जा.१ मेषः ३	मेषः२ सर्पः२	सर्पः२ सिंहः२	सर्पः२ सिंहः२
युंजा	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	अंत्य	पूर्व
नाडी	आद्य	मध्य	अंत्य	अंत्य	मध्य	आद्य	आद्य	मध्य	अंत्य
वश्य वश्य	मानव	मान ॥ चतु.३॥	चतुष्प.	चतु.१॥ जल२॥	जलचर२ मान.२	मानव	मान.३ जल.१	जलचर	जलचर
वैरयोनि	मृगः	मेषः	व्याघ्रः	मेषः	गजः	महिषः	गजः	व्याघ्रः	सिंहः
शुभाऽशु.	हानिः	हानिः	बुद्धिः	सुस्य	शुभ	कल्याण	मृत्यु	लक्ष्मी	काम.
देवता	राक्षसः	उदक्	विश्वेदे.	विष्णु	वसु	वरुणः	अजैक.	अहिर्बु.	पूषा.
मुख	अधः	अधः	उर्ध्व	उर्ध्व	उर्ध्व	उर्ध्व	अधः	उर्ध्व	तिर्यक
नेत्र (लोचन)	सूलो.	अन्ध.	मन्द.	सूलो.	अन्ध.	मन्द.	मध्य.	सुलो.	अन्ध.
ध्रुवक्षिप्रनामादि.	ती.दा.	उग्रक्रू.	ध्रुवस्थि	चर,च.	चर,च.	चर,च.	उग्रक्रू.	ध्रुवस्थि	मृदु,मै.
स्वरूप-	सिंहपुच्छा.	हस्तिदं	शय्याका.	त्रिकोण	मृदंगाका.	वर्तुला	मंचाका.	यमलसदृ.	मृदंगाका.
तारासंख्या	११	२	२	३	४	१००	२	२	३२
विंशो. महादशा प्रमाणवर्षाणि	केतु ७	शुक्र २०	सूर्य ६	चंद्र १०	मंगल ७	राहु १८	बृहस्प. १६	शनि १९	बुध १७
योगिनी नाम योगि. दशा-वर्ष	उल्का ६	सिद्धा ७	सङ्कटा ८	मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६
अष्टोत्त. दशा-वर्ष	बुध-१७	शनि-१०	शनि-१०	शनि-१०	बृह.१९	बृह.१९	बृह.१९	राहु-१२	राहु-१२
अष्टो. नक्षत्रमास	६८	३०	३०-३०	३०	७६	७६	७६	३६	३६

पञ्चाङ्गस्थ रामगढ (शेखा.) की दैनिक लग्नप्रवेश सारणी से निम्नलिखित नगरों के लग्नसपष्ट संस्कार कोष्ठक (मिनट), सूक्ष्म गणित, (— = ऋण, + = धन)

नगरों के नाम / राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
१. अहमदाबाद (गुज.)	+ १४	+ १८	+ २०	+ १९	+ १५	+ ११	+ ६	+ २	— ०	+ १	+ ४	+ ९
२. अमृतसर (पंजा.)	— २	— ६	— ८	— ७	— ४	— ०	+ ४	+ ७	+ ९	+ ८	+ ५	+ २
३. अजमेर (राज.)	+ २	+ ४	+ ५	+ ४	+ ३	+ १	— ०	— २	— २	— २	— १	+ १
४. अलवर (राज.)	— ६	— ६	— ६	— ६	— ६	— ७	— ७	— ७	— ८	— ७	— ७	— ७
५. अंबिकापुर (म.प्र.)	— २९	— २५	— २३	— २४	— २७	— ३२	— ३७	— ४१	— ४३	— ४२	— ३९	— ३४
६. अनंतपुर (आं.प्र)	— ०	+ ११	+ १६	+ १४	+ ४	— ८	— २१	— ३२	— ३७	— ३५	— २५	— १३
७. अयोध्या (उ.प्र.)	— २८	— २७	— २६	— २७	— २८	— २९	— ३०	— ३१	— ३२	— ३१	— ३०	— २९
८. आकोला (महा.)	— ३	+ ४	+ ७	+ ५	— ०	— ७	— १४	— २१	— २४	— २२	— १७	— १०
९. आगरा (उ.प्र.)	— ११	— १०	— १०	— १०	— ११	— ११	— १२	— १३	— १४	— १३	— १३	— १२
१०. आजमगढ (उ.प्र.)	— ३१	— ३०	— २९	— २९	— ३१	— ३२	— ३४	— ३६	— ३७	— ३७	— ३५	— ३३
११. आबू रोड (राज.)	+ १२	+ १५	+ १६	+ १६	+ १३	+ १०	+ ६	+ ३	+ २	+ २	+ ५	+ ८
१२. इंदौर (म.प्र.)	+ १	+ ५	+ ८	+ ७	+ ३	— २	— ८	— १२	— १५	— १४	— १०	— ५
१३. इटारसी (म.प्र.)	— ६	+ १	+ ४	+ २	— ३	— १०	— १८	— २४	— २८	— २६	— २०	— १३
१४. इलाहाबाद (उ.प्र.)	— २६	— २३	— २२	— २३	— २५	— २७	— ३०	— ३२	— ३३	— ३३	— ३१	— २८
१५. उज्जैन (म.प्र.)	+ १	+ ५	+ ८	+ ६	+ ३	— २	— ७	— ११	— १३	— १२	— ९	— ४
१६. उदयपुर (राज.)	+ ८	+ ११	+ १३	+ १२	+ ९	+ ६	+ २	— १	— २	— २	+ १	+ ४
१७. औरंगाबाद (महा.)	+ ५	+ १२	+ १६	+ १४	+ ८	+ ०	— ८	— १५	— १८	— १७	— ११	— ३
१८. कटक (उडी.)	— ३८	— ३१	— २८	— २९	— ३५	— ४२	— ५०	— ५६	— ६०	— ५८	— ५२	— ४५
१९. कोलकाता (बंगा.)	— ५०	— ४५	— ४२	— ४३	— ४८	— ५३	— ५८	— ६३	— ६६	— ६४	— ६०	— ५५
२०. कानपुर (उ.प्र.)	— २०	— १९	— १८	— १८	— १९	— २१	— २३	— २४	— २५	— २४	— २३	— २२
२१. कुचामन (राज.)	+ १	+ २	+ २	+ २	+ २	+ १	— ०	— १	— १	— १	— ०	+ ०
२२. कोल्हापुर (महा.)	+ १२	+ २१	+ २६	+ २४	+ १६	+ ५	— ६	— १५	— २०	— १८	— १०	+ १
२३. कोटा (राज.)	— १	+ १	+ ३	+ २	— ०	— ३	— ६	— ८	— १०	— ९	— ७	— ४
२४. गंगानगर (राज.)	+ ३	+ १	+ ०	+ ०	+ २	+ ४	+ ६	+ ८	+ ९	+ ९	+ ७	+ ५
२५. ग्वालियर (म.प्र.)	— ११	— १०	— ९	— ९	— ११	— १२	— १३	— १६	— १७	— १६	— १५	— १३
२६. गया (म.प्र.)	— ३८	— ३५	— ३३	— ३४	— ३६	— ३९	— ४३	— ४६	— ४७	— ४६	— ४४	— ४१
२७. गुडगावाँ (हरि.)	— ९	— ९	— १०	— ९	— ९	— ८	— ८	— ७	— ७	— ७	— ७	— ८
२८. गोरखपुर (उ.प्र.)	— ३३	— ३१	— ३१	— ३१	— ३२	— ३३	— ३५	— ३६	— ३६	— ३६	— ३५	— ३४
२९. गौहाटी (आसा)	— ६६	— ६४	— ६३	— ६४	— ६५	— ६७	— ६९	— ७०	— ७१	— ७१	— ६९	— ६८
३०. गोवा (भारत)	+ १४	+ २५	+ ३०	+ २८	+ १९	+ ७	— ५	— १५	— २१	— १८	— ९	+ २
३१. चंडीगढ (पंजा.)	— १०	— १३	— १४	— १३	— ११	— ८	— ५	— ३	— १	— २	— ४	— ७
३२. चित्तौडगढ (राज.)	+ ४	+ ६	+ ८	+ ७	+ ५	+ २	— १	— ४	— ६	— ५	— ३	+ १
३३. चिन्नई (तमि.)	— १०	+ ३	+ ९	+ ६	— ४	— १८	— ३२	— ४४	— ५१	— ४८	— ३७	— २४
३४. जयपुर (राज.)	— २	— १	— १	— १	— २	— ३	— ४	— ५	— ६	— ५	— ५	— ३
३५. जबलपुर (म.प्र.)	— १६	— १२	— १०	— ११	— १४	— १९	— २४	— २८	— ३०	— २९	— २६	— २१
३६. जमशेदपुर (बिहा.)	— ४१	— ३६	— ३४	— ३५	— ३९	— ४४	— ४९	— ५४	— ५६	— ५५	— ५१	— ४६
३७. जलगाँव (महा.)	+ २	+ ८	+ १०	+ ९	+ ५	— १	— ७	— १२	— १५	— १४	— ९	— ४

नगरों के नाम / राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
३८. जालंधर (पंजा.)	— ५	— ८	— १०	— ९	— ७	— ३	+ ०	+ ४	+ ५	+ ५	+ २	— २
३९. जैसलमेर (राज.)	+ १७	+ १८	+ १९	+ १९	+ १८	+ १७	+ १५	+ १४	+ १४	+ १४	+ १५	+ १६
४०. जोधपुर (राज.)	+ ११	+ १३	+ १४	+ १४	+ १२	+ १०	+ ८	+ ७	+ ६	+ ६	+ ८	+ १०
४१. झांसी (उ.प्र.)	— १२	— १०	— ९	— ९	— ११	— १४	— १७	— १९	— २०	— २०	— १८	— १५
४२. झुन्झुनू (राज.)	— २	— २	— २	— २	— २	— २	— २	— २	— २	— २	— २	— २
४३. झरिया (बिहा.)	— ४२	— ३८	— ३६	— ३७	— ४१	— ४५	— ४९	— ५३	— ५५	— ५४	— ५१	— ४७
४४. डिब्रुगढ (आसा)	— ७९	— ७९	— ७९	— ७९	— ७९	— ८०	— ८०	— ८१	— ८१	— ८१	— ८१	— ८०
४५. डूंगरपुर (राज)	+ ८	+ १२	+ १४	+ १३	+ १०	+ ६	+ २	— २	— ४	— ३	+ ०	+ ४
४६. दरभंगा (बिहा.)	— ४२	— ४०	— ३९	— ४०	— ४१	— ४३	— ४५	— ४७	— ४८	— ४७	— ४६	— ४४
४७. दिल्ली	— ९	— १०	— १०	— १०	— १०	— ९	— ८	— ८	— ७	— ८	— ८	— ९
४८. देवरिया (उ.प्र.)	— ३४	— ३२	— ३१	— ३२	— ३३	— ३५	— ३६	— ३८	— ३८	— ३८	— ३७	— ३५
४९. नागपुर (महा.)	— ११	— ५	— २	— ४	— ९	— १५	— २२	— २८	— ३१	— ३०	— २५	— १८
५०. नागौर (राज.)	+ ६	+ ७	+ ७	+ ७	+ ६	+ ५	+ ४	+ ४	+ ३	+ ३	+ ४	+ ५
५१. नारनौल (हरि.)	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५
५२. नासिक (महा.)	+ ११	+ १८	+ २२	+ २०	+ १४	+ ७	— १	— ८	— १२	— १०	— ४	+ ४
५३. नैनिताल (उ.प्र.)	— १९	— २१	— २१	— २१	— २०	— १८	— १७	— १६	— १५	— १५	— १६	— १८
५४. नैल्लोर (आं.प्र)	— ११	+ ०	+ ६	+ ३	— ६	— १९	— ३२	— ४३	— ४९	— ४६	— ३६	— २४
५५. पटना (बिहा.)	— ३९	— ३७	— ३६	— ३६	— ३८	— ४०	— ४३	— ४५	— ४६	— ४६	— ४४	— ४१
५६. पटियाला (पंजा.)	— ८	— १०	— ११	— ११	— ९	— ६	— ४	— २	— ०	— १	— ३	— ५
५७. प्रतापगढ (उ.प्र.)	— २७	— २५	— २४	— २४	— २६	— २८	— ३०	— ३२	— ३३	— ३३	— ३१	— २९
५८. प्रयाग (उ.प्र.)	— २५	— २३	— २२	— २२	— २४	— २७	— २९	— ३२	— ३३	— ३२	— ३०	— २८
५९. पाली (राज.)	+ ८	+ १०	+ ११	+ ११	+ ९	+ ७	+ ४	+ २	+ १	+ २	+ ४	+ ६
६०. पूना (महा.)	+ १२	+ २०	+ २४	+ २२	+ १५	+ ६	— ३	— ११	— १५	— १३	— ६	+ ३
६१. बडौदा (गुज.)	+ १२	+ १७	+ २०	+ १९	+ १४	+ ८	+ २	— ३	— ६	— ४	+ ०	+ ६
६२. बद्रीनाथ (उ.प्र.)	— २१	— २३	— २५	— २४	— २२	— १९	— १६	— १३	— १२	— १२	— १५	— १८
६३. बरैली (उ.प्र.)	— १८	— १९	— १९	— १९	— १८	— १८	— १८	— १७	— १७	— १७	— १७	— १८
६४. वारंगल (आं.प्र)	— ११	— २	+ २	— ०	— ७	— १७	— २७	— ३५	— ३९	— ३७	— ३०	— २१
६५. बांसवाडा (राज.)	+ ६	+ १०	+ १२	+ ११	+ ८	+ ३	— १	— ५	— ७	— ६	— ३	+ १
६६. बिलासपुर (म.प्र.)	— २४	— १९	— १६	— १८	— २२	— २८	— ३४	— ३९	— ४२	— ४०	— ३६	— ३०
६७. बीकानेर (राज.)	+ ७	+ ६	+ ६	+ ६	+ ७	+ ७	+ ७	+ ७	+ ७	+ ७	+ ७	+ ७
६८. बेलगाँव (कर्ना.)	+ ११	+ २१	+ २६	+ २४	+ १५	+ ४	— ८	— १८	— २३	— २१	— १२	— १
६९. बैंगलोर (कर्ना.)	+ १	+ १३	+ २०	+ १७	+ ६	— ८	— २२	— ३४	— ४०	— ३८	— २७	— १३
७०. बैलारी (कर्ना.)	+ २	+ १३	+ १८	+ १६	+ ७	— ५	— १८	— २८	— ३४	— ३१	— २२	— १०
७१. भागलपुर (बिहा.)	— ४६	— ४३	— ४२	— ४३	— ४५	— ४८	— ५०	— ५३	— ५४	— ५४	— ५१	— ४९
७२. भावनगर (गुज.)	+ १६	+ २२	+ २४	+ २३	+ १८	+ १२	+ ६	+ १	— २	— १	+ ४	+ १०
७३. भिवानी (हरि.)	— ५	— ६	— ६	— ६	— ६	— ५	— ४	— ३	— ३	— ३	— ४	— ५
७४. भुवनेश्वर (उडी.)	— ३८	— ३१	— २८	— २९	— ३५	— ४२	— ५०	— ५६	— ६०	— ५८	— ५२	— ४५

संवत् २०८२ पञ्चाङ्गस्थ रामगढ (शेखा.) की दैनिक लग्नप्रवेश सारणी से निम्नलिखित नगरों के लग्नसपष्ट संस्कार कोष्ठक (मिनट), सूक्ष्म गणित

नगरों के नाम / राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
७५. भोपाल	(म.प्र.)	– ५	– १	+ १	– ०	– ४	– ८	– १३	– १७	– २०	– १९	– १५	– १०
७६. मथुरा	(उ.प्र.)	– १०	– १०	– १०	– १०	– १०	– ११	– ११	– १२	– १२	– १२	– ११	– ११
७७. मंडला	(म.प्र.)	– १८	– १४	– ११	– १२	– १६	– २१	– २७	– ३१	– ३४	– ३३	– २९	– २३
७८. मारवाड	(राज.)	+ ८	+ ११	+ १२	+ ११	+ ९	+ ६	+ ३	+ ०	– १	– ०	+ २	+ ५
७९. मेहसाणा	(गुज.)	+ ११	+ ११	+ ११	+ ११	+ ११	+ ११	+ १०	+ १०	+ ९	+ १०	+ १०	+ १०
८०. मुम्बई	(महा.)	+ १६	+ २३	+ २७	+ २६	+ १९	+ १०	+ १	– ६	– १०	– ८	– २	+ ७
८१. रतलाम	(म.प्र.)	+ ४	+ ८	+ १०	+ ९	+ ५	+ १	– ४	– ८	– १०	– ९	– ६	– १
८२. रायपुर	(म.प्र.)	– २१	– १६	– १३	– १४	– १९	– २५	– ३२	– ३८	– ४१	– ४०	– ३५	– २८
८३. राजगढ	(राज.)	– २	– ३	– ३	– ३	– ३	– २	– १	– १	– ०	– ०	– १	– २
८४. रिंगस	(राज.)	– २	– १	– १	– १	– १	– २	– ३	– ३	– ४	– ३	– ३	– २
८५. लखनऊ	(उ.प्र.)	– २३	– २२	– २१	– २१	– २२	– २३	– २५	– २६	– २६	– २६	– २५	– २४
८६. लुधियाना	(पंजा.)	– ६	– ९	– १०	– १०	– ७	– ४	– १	+ २	+ ३	+ २	+ ०	– ३
८७. वाराणसी	(उ.प्र.)	– ३०	– २७	– २६	– २७	– २९	– ३२	– ३४	– ३७	– ३८	– ३७	– ३५	– ३३
८८. विजयवाडा	(आं.प्र)	– १४	– ४	+ १	– २	– १०	– २१	– ३२	– ४१	– ४६	– ४४	– ३६	– २५
८९. शिमला	(हि.प्र)	– १२	– १५	– १६	– १५	– १३	– १०	– ६	– ३	– २	– २	– ५	– ८
९०. श्रीनगर	(ज.क)	– ५	– ११	– १४	– १३	– ८	– १	+ ६	+ १२	+ १५	+ १४	+ ८	+ २
९१. सागर	(म.प्र.)	– ११	– ८	– ६	– ७	– १०	– १४	– १८	– २२	– २४	– २३	– २०	– १६
९२. सीकर	(राज.)	– ०	+ ०	+ ०	+ ०	– ०	– १	– १	– १	– २	– १	– १	– १
९३. सिंघाना	(राज.)	– ३	– ३	– ३	– ३	– ३	– ३	– ३	– ४	– ४	– ४	– ४	– ३
९४. सिरोही	(राज.)	+ ११	+ १४	+ १५	+ १५	+ १२	+ ९	+ ६	+ ३	+ २	+ २	+ ५	+ ८
९५. सिल्लीगु.	(प.बंगा)	– ५३	– ५१	– ५१	– ५१	– ५२	– ५३	– ५५	– ५६	– ५७	– ५६	– ५५	– ५४
९६. सूरत	(गुज.)	+ १५	+ २१	+ २४	+ २३	+ १८	+ ११	+ ४	– १	– ५	– ३	+ २	+ ९
९७. सोलापुर	(महा.)	+ ४	+ १३	+ १७	+ १५	+ ८	– २	– १२	– २१	– २५	– २३	– १५	– ६
९८. हरद्वार	(उ.प्र.)	– १५	– १६	– १७	– १७	– १५	– १३	– ११	– ९	– ८	– ९	– १०	– १३
९९. हैदराबाद	(आं.प्र)	– ६	+ ३	+ ८	+ ६	– २	– १२	– २२	– ३१	– ३६	– ३४	– २६	– १६
१००. हिंसार	(हरि.)	– ४	– ५	– ६	– ६	– ५	– ३	– २	– १	– ०	– १	– २	– ३

संस्कार कोष्ठक ज्ञानाय:- पञ्चाङ्गस्थ रामगढ (शेखा.) की दैनिक लग्न प्रवेश सारणी से उपर लिखे नगरों का प्रवेश व समाप्ति काल संस्कार कोष्ठक की सहायता से किसी भी दिन का स्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण - तारीख २६ अप्रेल २०२५ को कोलकाता (बंगा.) में मकर लग्न का प्रवेश और समाप्ति काल ज्ञात करना है। पंचांग में २६ अप्रेल २०२५ को मकर का प्रवेश काल रात्रौ घंटा १२ मिनट ४५ और समाप्ति काल रात्रौ घंटा २ मिनट २८ लिखा हुआ है। संस्कार कोष्ठक में कोलकाता (बंगा.) के मकर में – ६४ मि. और कुंभ में – ६० मि. है (कुंभ का प्रवेश काल ही मकर का समाप्ति काल है)। अतः मकर के प्रवेश रात्रौ १२।४५ में – ६४ मि. का संस्कार किया (यदि – हो तो घटा दें और + हो तो जोड दें) तो कोलकाता (बंगा.) का स्पष्ट प्रवेश काल रात्रौ ११।४१ हो गया मकर के समाप्ति काल रात्रौ घंटा २ मिनट २८ में – ६० मि. का संस्कार किया तो मकर का समाप्ति काल रात्रौ १।२८ स्पष्ट हो गया। ऐसे ही संस्कार कोष्ठक में लिखे हुए १०० नगरों में से किसी भी नगर का कोई भी लग्न स्पष्ट ज्ञात कर सकते हैं। - पं. ग्यारसीलाल शर्मा, मुम्बई.

॥ अथ विंशोत्तरी क्रमेण महादशा-अन्तर्दशा चक्राणि ॥

॥ अथ विंशोत्तरीक्रमेण महादशाचक्रम् ॥

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
माह	००	००	००	००	००	००	००	००	००
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य महादशा वर्ष ६ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = कृतिका, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
माह	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

चंद्र महादशा वर्ष १० तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = रोहिणी, हस्त, श्रवण

ग्रहाः	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
माह	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

भौम महादशा वर्ष ७ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा

ग्रहाः	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
माह	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

राहु महादशा वर्ष १८ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा

ग्रहाः	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
माह	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

गुरु महादशा वर्ष १६ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद

ग्रहाः	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
माह	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

शनि महादशा वर्ष १९ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद

ग्रहाः	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
माह	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

बुध महादशा वर्ष १७ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

ग्रहाः	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
माह	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

केतु महादशा वर्ष ७ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = मघा, मूल, अश्विनी

ग्रहाः	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
माह	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

शुक्र महादशा वर्ष २० तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, भरणी

ग्रहाः	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
माह	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

रवियोग : सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनती करने से यदि सूर्य से चन्द्रमा का नक्षत्र ४, ६, ९, १०, १३ २० इन संख्याओं में पडे तो उसदिन रवियोग होगा जो समग्र दोषों को अच्छी प्रकार दूर करता है।

द्विपुष्कर - त्रिपुष्करयोग :
भद्रातिथि (२ / ७ / १२) शनि मंगल और रविवार के दिन कृतिका, पुन., उफा., विशाखा, उषा., पूभा. ये छ नक्षत्रों की स्थिति आती हो तो त्रिपुष्कर योग तथा उक्त भद्रातिथि, शनि मंगल और रविवार के दिन मृग, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों का योग होता है तो द्विपुष्कर योग बनता है। त्रिपुष्कर योग में होनेवाले किसी भी कार्य का त्रिगुणित फल और द्विपुष्कर में होनेवाले का दुगुना फल होता है।

॥ अष्टोत्तरीमतेन दशा-अन्तर्दशा चक्रम् नक्षत्रसहितम् ॥

सूर्य महादशा वर्ष ६ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास १८)

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष	०	०	०	०	०	१	०	१
माह	४	१०	५	११	६	०	८	२
दिन	०	०	१०	१०	२०	२०	०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र महादशा वर्ष १५ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास ६०)

ग्रहाः	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	२	१	२	१	२	१	२	०
माह	१	१	४	४	७	८	११	१०
दिन	०	१०	१०	२०	२०	०	०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

भौम महादशा वर्ष ८ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास २४)

ग्रहाः	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
वर्ष	०	१	०	१	०	१	०	१
माह	७	३	८	४	१०	६	५	१
दिन	३	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०
घटी	२०	२०	४०	४०	०	०	०	०

बुध महादशा वर्ष १७ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास ६८)

ग्रहाः	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम
वर्ष	२	१	२	१	३	०	२	१
माह	८	६	११	१०	३	११	४	३
दिन	३	२६	२६	२०	२०	१०	१०	३
घटी	२०	४०	४०	०	०	०	०	२०

शनि महादशा वर्ष १० तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास ३०)

ग्रहाः	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध
वर्ष	०	१	१	१	०	१	०	१
माह	११	९	१	११	६	४	८	६
दिन	३	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६
घटी	२०	२०	०	०	०	०	४०	४०

गुरु महादशा वर्ष १९ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मारा ७६)

ग्रहाः	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि
वर्ष	३	२	३	१	२	१	२	१
माह	४	१	८	०	७	४	११	९
दिन	३	१०	१०	२०	२०	२६	२६	३
घटी	२०	०	०	०	०	४०	४०	२०

राहु महादशा वर्ष १२ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास ३६)

ग्रहाः	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु
वर्ष	१	२	०	१	०	१	१	२
माह	४	४	८	८	१०	१०	१	१
दिन	०	०	०	०	२०	२०	१०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र महादशा वर्ष २१ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा

(प्रति एक नक्षत्र महादशा-मास ८४)

ग्रहाः	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु
वर्ष	४	१	२	१	३	१	३	२
माह	१	२	११	६	३	११	८	४
दिन	०	०	०	२०	२०	१०	१०	०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०

अथान्तदर्शाकरणम्- दशा दशाहता कार्या नवभिर्भागमाहरेत् । यल्लब्धं सो भवेन्मासस्त्रिंशन्निघ्नं दिनं भवेत् ॥

॥ योगिनी दशा-अन्तर्दशा चक्रम् नक्षत्रसहितम् ॥

मंगला महादशा वर्ष १ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = आर्द्रा चित्रा श्रवण

योगि.	मंग	पिंग	धान्या	भ्रान	भद्रि	उल्का	सिद्धा	सङ्क
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	०	०	१	१	१	२	२	२
दिन	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

पिंगला महादशा वर्ष २ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = पुनर्वसु स्वाती धनिष्ठा

योगि.	पिंग	धान्या	भ्राम	भद्रि	उल्का	सिद्धा	सङ्क	मंग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	१	२	२	३	४	४	५	०
दिन	१०	०	२०	१०	०	२०	१०	२०

धान्या महादशा वर्ष ३ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = पुष्य विशाखा शतभिषा

योगि.	धान्या	भ्राम	भद्रि	उल्का	सिद्धा	सङ्क	मंग	पिंग
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	३	४	५	६	७	८	१	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

भ्रामरी महादशा वर्ष ४ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = अश्विनी आश्लेषा अनुराधा पूर्वाभाद्रपद

योगि.	भ्राम	भद्रि	उल्का	सिद्धा	सङ्क	मंग	पिंग	धान्या
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०
माह	५	६	८	९	१०	१	२	४
दिन	१०	२०	०	१०	२०	१०	२०	०

भद्रिका महादशा वर्ष ५ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = भरणी मघा ज्येष्ठा उत्तराभाद्रपद

योगि.	भद्रि	उल्का	सिद्धा	सङ्क	मंग	पिंग	धान्या	भ्राम
वर्ष	०	०	०	१	०	०	०	०
माह	८	१०	११	१	१	३	५	६
दिन	१०	०	२०	१०	२०	१०	०	२०

उल्का महादशा वर्ष ६ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = कृत्तिका पूर्वाफाल्गुनी मूल रेवती

योगि.	उल्का	सिद्धा	सङ्क	मंग	पिंग	धान्या	भ्राम	भद्रि
वर्ष	१	१	१	०	०	०	०	०
माह	०	२	४	२	४	६	८	१०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०

सिद्धा महादशा वर्ष ७ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = रोहिणी उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढा

योगि.	सिद्धा	सङ्क	मंग	पिंग	धान्या	भ्राम	भद्रि	उल्का
वर्ष	१	१	०	०	०	०	०	१
माह	४	६	२	४	७	९	११	२
दिन	१०	२०	१०	२०	०	१०	२०	०

सङ्कटा महादशा वर्ष ८ तन्मध्येऽन्तरम्

नक्षत्र = मृगशिरा हस्त उत्तराषाढा

योगि.	सङ्क	मंग	पिंग	धान्या	भ्राम	भद्रि	उल्का	सिद्धा
वर्ष	१	०	०	०	०	१	१	१
माह	९	२	५	८	१०	१	४	६
दिन	१०	२०	१०	०	२०	१०	०	२०

अथ योगिनी दशानामानि- मङ्गला पिङ्गला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा । उल्का सिद्धा सङ्कटा च एतासां नामवत्फलम् ॥४॥ **हिन्दी** - मङ्गला, पिङ्गला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, सङ्कटा ये आठों योगिनी है। इनके अनुसार शुभाशुभ फल जाने ॥४॥

योगिनी नक्षत्र आनयन सूत्र = जन्मनक्षत्रसंख्या (अश्विनी से) + ३ ÷ ८ (शेषवत् योगिनीदशा)

उदाहरण — जैसे किसी जातक का जन्मनक्षत्र पुष्य है जो कि अश्विनी से गिनने पर ८ हुआ, इसमें ३ और मिलाया तब ११ हुआ, इसमें आठ से (योगिनी की संख्या आठ ही है इसलिए) भाग दिया तो लब्धि १ (अनपेक्षित) आई, शेष ३ रहा अतः क्रमानुसार गिनने से धान्या योगिनी की दशा जन्मसमय में आई, ऐसे ही सर्वत्र समझना चाहिये ॥२-३॥

॥ अथ अष्टोत्तरीक्रमेण भुक्त-भोग्य दशा आनयन विधि ॥

अष्टोत्तरी दशाधीशाः-

सूर्यश्चन्द्रः कुजः सौम्यः शनिर्जीवस्तमो भृगुः । अष्टोत्तरी-दशाधीशाः केतुहीना नवग्रहाः ॥

प्रथम सूर्य, दूसरे चन्द्रमा, तीसरे मङ्गल, चतुर्थ बुध, पञ्चम शनिश्चर, षष्ठ बृहस्पति, सप्तम राहु एवं अष्टम शुक्र ये क्रम से आठ ग्रह दशाधीपति माने गये हैं (इसमें केतु का परिगणन नहीं है) ॥४॥

सूचना- यहाँ जो भयात भभोग लिखा है वह उदाहरण हेतु है,भयात भभोग साधन विधि पिछले पृष्ठों पर है।

अष्टोत्तरी क्रम से ग्रह दशा के भुक्त-भोग्य की विधि विंशोत्तरी की तरह है। अन्तर इतना है कि पलात्मक भयात को दशाधीश के वर्ष से गुणा करने की जगह जिस ग्रह की महादशा हो उस महादशा के मास से गुणा करें। जैसे - धनिष्ठा नक्षत्र का घट्यादि भयात ३७।५८ पलात्मक २२७८, भभोग ५६।१४ पलात्मक ३३७४ हुआ यहाँ गुरु की महादशावर्ष १९ है।

गुरु के दशावर्ष १९ और नक्षत्र तीन (धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद) होने से १९ वर्ष के तीन भाग (यदि नक्षत्र चार हों तो इसी विधि से चार भाग करें) करने के लिए- १९ वर्ष को १२ से गुणाकर मास बनाये, क्रिया- (१९ X १२ =) २२८ मास हुए इनमें तीन का भाग दिया (२२८ ÷ ३ =) ७६ मास हुआ। गुरु के तीन नक्षत्रों में से प्रत्येक नक्षत्र का ७६ दशा-मास ही मान होगा, **पंचांगस्थ कोष्टक "अष्टोत्तरीमतेन ग्रहाणां दशावर्षचक्रम् नक्षत्रसहितम्"** में देखें, गुरु का नक्षत्रदशा-मास ७६ ही है। अष्टोत्तरी भुक्त-भोग्य दशा के लिए सभी ग्रहों का नक्षत्रदशा-मास गणित इसी तरह करें। अस्तु।

पलात्मक भयात को जिस ग्रह की महादशा हो उस दशाधीश (नक्षत्रदशा) मास से गुणा कर पलात्मक भभोग का भाग दें. भागफल में मास आयेंगें (मासादि लब्धि यदि १२ से अधिक हो तो बारह का भाग देकर वर्षादि बना लें)। शेष को ३० से गुणा कर पुनः भभोग का भाग देने से भागफल में दिन आयेंगे। इसी क्रम से शेष को ६० से गुणा और भभोग का भाग देने से भागफल में घटी-पल और विपल आजायेंगी। गणितागत दशा के भुक्त वर्षादि को नीचे लिखी क्रिया द्वारा अभीष्ट ग्रह के महादशा वर्ष में से घटाने पर स्पष्ट भोग्यदशा के वर्ष, माह, दिनादि आजायेंगे।

भुक्त- भोग्य के विशेष निर्देश - अष्टोत्तरी में तीन अथवा चार नक्षत्रों में एकग्रह के दशावर्ष प्राप्त होते हैं और (जैसे गुरु के दशावर्ष १९ और नक्षत्र तीन धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद ॥ अपि च- राहु के दशावर्ष १२ और नक्षत्र चार उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी) यही कारण है कि दशाधीश के वर्षों को तीन या चार भाग करने पड़ते हैं इसी से भुक्त- भोग्य की क्रिया भी विंशोत्तरी से अलग होगी। जहाँ प्रथम नक्षत्र होगा वहाँ विंशोत्तरी की तरह भोग्यकाल आयेगा लेकिन दूसरा, तीसरा,चोथा नक्षत्र होने से क्रिया अलग होगी।

(१) जैसे - धनिष्ठा में जातक हो तो गणितागत दशा के भुक्त वर्षादि को दशाधीश के महादशा वर्ष में से घटाने पर स्पष्ट भोग्य वर्ष, माह, दिनादि आजायेंगे।

(२) जैसे - शतभिषा में जातक हो तो गणितागत दशा के भुक्त वर्षादि में (गत नक्षत्र के प्रथम भाग को जोड़कर) दशाधीश के महादशा वर्ष में से घटाने पर स्पष्ट भोग्य वर्ष, माह, दिनादि आजायेंगे।

(३) जैसे - पूर्वाभाद्रपद में जातक हो तो गणितागत दशा के भुक्त वर्षादि में (गत प्रथम नक्षत्र के प्रथम भाग और द्वितीय नक्षत्र के द्वितीय भाग को जोड़कर) दशाधीश के महादशा वर्ष में से घटाने पर स्पष्ट भोग्य वर्ष, माह, दिनादि आजायेंगे।

सारांश यह है कि जातक का जन्म प्रथम नक्षत्र के बाद किसी भी नक्षत्र में हो भुक्त वर्षादि में (जितने गत नक्षत्र हों उतने ही दशाधीश की दशा के भाग) जोड़ कर दशाधीश के महादशा वर्ष में से घटाने पर स्पष्ट भोग्य वर्ष, माह, दिनादि आजायेंगे। स्पष्टता के लिए सूत्र दिये हैं -

(१) भोग्यदशा सूत्र = दशाधीशवर्ष — भुक्तदशा (लब्ध वर्षादि..)
(२) भोग्यदशा सूत्र = दशाधीशवर्ष — भुक्तदशा + (लब्ध वर्षादि + गत एक नक्षत्र दशामान)
(३) भोग्यदशा सूत्र = दशाधीशवर्ष — भुक्तदशा + (लब्ध वर्षादि + गत दो नक्षत्र दशामान
(४) भोग्यदशा सूत्र = दशाधीशवर्ष — भुक्तदशा + (लब्ध वर्षादि + गत तीन नक्षत्र दशामान

उदाहरण(१) - पलात्मक भयात २२७८ को ७६ से गुणा किया. १७३१२८ में पलात्मक भभोग ३३७४ का भाग दिया, भागफल ५१ मास प्राप्त हुआ, शेष को ३० से गुणाकर भभोग ३३७४ का भाग दिया, भागफल में ९ दिन आया, शेष को ६० से गुणाकर भभोग ३३७४ का भाग दिया, भागफल २२ घटी प्राप्त हुई, शेष को ६० से गुणाकर फिर भभोग ३३७४ का भाग दिया, भागफल १७ पल प्राप्त हुई, शेष को ६० से गुणाकर भभोग ३३७४ का भाग दिया, भागफल ५९ विपल प्राप्त हुई। (नोट - उपर मासादि लब्धि १२ से अधिक ५१ मास है अतः बारह का भाग दिया तो ४ वर्ष हुए शेष ३ माह बच गये)। गुरु के भुक्त वर्षादि ४। ३। ९।२२।१७।५९ को १९ वर्ष में से घटा दिया तो भोग्य वर्षादि १४।०८।२०।३७।४२।०१ स्पष्ट हो गये।

क्रिया(१) धनिष्ठा-भयात २२७८ X ७६ ÷ भभोग ३३७४ = भुक्त वर्षादि ४। ३। ९।२२।१७।५९
भोग्यदशा(वर्षादि १४।८।२०।३७।४५। १) = दशाधीशवर्ष १९ — भुक्तदशा-
वर्षादि ४। ३। ९।२२।१७।५९

क्रिया(२) शतभिषा-भयात २२७८ X ७६ ÷ भभोग ३३७४ = भुक्त वर्षादि ४। ३। ९।२२।१७।५९
भोग्यदशा(वर्षादि ८। ४।२०।३७।४५। १) = दशाधीशवर्ष १९ — (भुक्तदशा-
वर्षादि ४।३।९।२२।१७।५९ + गत एकनक्षत्र धनिष्ठा दशामानवर्षादि ६।४ = १०। ७। ९।२२।१७।५९)

क्रिया(३) पूभा-भयात २२७८ X ७६ ÷ भभोग ३३७४ = भुक्त वर्षादि ४। ३। ९।२२।१७।५९
भोग्यदशा(वर्षादि २।००।२०।३७।४५। १) = दशाधीशवर्ष १९ — (भुक्तदशा-
वर्षादि ४।३।९।२२।१७।५९ + गत दो नक्षत्र धनिष्ठा-शतभिषा दशामानवर्षादि १२।८ = १६।११। ९।२२।१७।५९)

॥ अथ योगिनी भुक्त-भोग्य दशा आनयन विधि ॥

गतर्क्षनाडी गुणिता दशाब्दैः सर्वर्क्षनाडीविहृता फलं यत् ।
वर्षादिकं भुक्तफलं ततश्च भोग्यं दशाब्दात्प्रविशोध्य लेख्यम् ॥

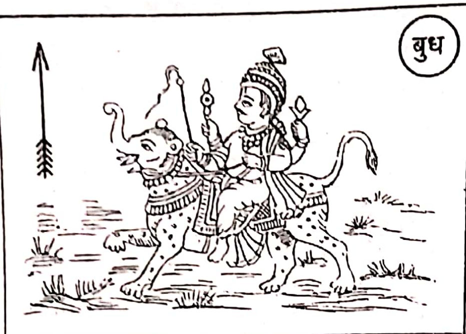
हिन्दी- सर्वप्रथम जन्मकालीन नक्षत्र का भयात और भभोग ठीक तरह से (भयात और भभोग के घटी-पलों को पलात्मक) बनाकर जिस योगिनी की महादशा में जन्म सिद्ध हुआ हो उसके महादशावर्ष से (भयात को) गुणा दें और भभोग से भाग दें तब जो लब्धि आवे (वह वर्षात्मक होगा शेष को १२ से गुणा कर फिर भभोग का भाग देने से भागफल में माह होगा, शेष को ३० से गुणा कर फिर भभोग का भाग देने से भागफल में दिन आयेगा, ऐसें ही शेष को ६० से गुणा और भभोग से भाग देने पर घटी-पल-विपल होगा) वही उस योगिनी का भुक्त होगा, इसे महादशावर्ष में घटाने से शेष भोग्यकाल रहेगा अर्थात् भुक्त के तुल्य जन्मकाल से पहिले ही गुजर गया है और भोग्यकाल के समान जन्मसमय के आगे बीतेगा, यह सिद्ध होता है ॥६॥

उदाहरण — जैसे किसी जन्मकालीन भयात १५ घटी, ३० पल और भभोग ६० घटी, ५० पल तथा जन्मदशा भद्रिका की है अतः भयात-भभोग का पलात्मक वनाया (भयात ९३० = १५ X ६० + ३०, भभोग ३६५० = ६० X ६० + ५०) अब पलात्मक भयात ९३० को भद्रिका के महादशावर्ष ५ से गुणा किया तो ४६५० हुआ। इस ४६५० में पूर्वोक्त क्रिया से पलात्मक भभोग ३६५० का भाग दिया तो प्राप्तांक १।३।८।३७।४८ वर्षादि भुक्त महादशा होगी। इस प्रकार भुक्तदशा को भद्रिका की महादशावर्ष ५ में घटा दिया तो भोग्य महादशा वर्षादि ३।८।२१।२२।१२ हुई। ऐसे ही सर्वत्र गणित के द्वारा भुक्त-भोग्य लाना चाहिये ॥६॥

एवं सर्वत्र करणीयम् ।

- पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)

१ मूंग
२ हरितवस्त्र
३ सुवर्ण
४ कांस्य
५ मृगमद
६ आज्य
७ पंचरत्न
८ दासी
९ हस्तिदंत



ईशान्यांबाणाकारमंडल अंगुल ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुनको स्वामी जप ४०००

१ चित्रांबर
२ श्वेताश्व
३ धेनु
४ हीरा
५ रौप्य
६ सुवर्ण
७ तंदुल
८ सुगंध
९ घृत



पूर्वे पंचकोणमंडल वृष तुलाको स्वामी भोजकट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१ वशपात्र
२ तंदुल
३ कर्पूर
४ मौक्तिक
५ श्वेतवस्त्र
६ वृषभ
७ रौप्य
८ धृतकुंभ
९ शंख



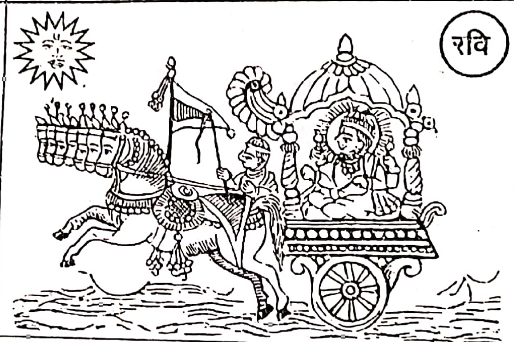
आग्नेय्यां चतुरस्रमंडल अंगुल ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप ११०००

१ अश्व
२ शर्करा
३ हलद
४ पीतधान्य
५ पीतवस्त्र
६ पुष्पराग
७ लवण
८ कांचन



उत्तरदाघचतुरस्रमंडल अंगुल ६ सिंधुदेशाद्भव आंगिरस गोत्र पीतवर्ण धनु मीनका स्वामी जप१९०००

१ माणिक
२ गेहूं
३ धेनु
४ कुसुंभ
५ गुड
६ ताम्र
७ रक्तवस्त्र
८ रक्तपुष्प
९ सुवर्ण



मध्यवर्तुलमंडल अंगुल १२ कलिंगदेशाद्भव काश्यपसगोत्र रक्तवर्ण सिंहको स्वामी जप ७०००

१ प्रवाल
२ गेहूँ
३ मसूर
४ ताम्रवस्त्र
५ गुड
६ सुवर्ण
७ ताम्र
८ कण्हेर
९ वृषभ



द. त्रिकोणमंडल अंगुल ३ अवंतीदेशाद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिक मेषको स्वामी जप १००००

१ वैडूर्य
२ तिल
३ कंबल
४ कस्तूरी
५ शस्त्र
६ कृष्णवस्त्र
७ तैल
८ कृष्णपुष्प
९ छाग
१० लोहपात्र



वायव्य ध्वजाकारमंडल केतु अंगुल ६ अवंतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१ माष
२ तिल
३ तैल
४ कुलित्थ
५ महिषी
६ लोहू
७ कृष्णागौ
८ इंद्रनील
९ शामवस्त्र



प. धनुराकारमंडल अंगुल २ सौराष्ट्रदेश काश्यपसगोत्र मकर कुंभको स्वामी कृष्णवर्ण जप २३०००

१ गोमेदरत्न
२ अश्व
३ नीलवस्त्र
४ कंबल
५ तिल
६ तैल
७ लोह
८ अभ्रक



नैऋत्या शूर्पाकारमंडल अंगुल १२ काश्मीरदेश पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००

॥ आवश्यक मुहूर्ताः ॥

ता.	मुहूर्त	नक्षत्रादि	ति.	वार	लग्न
१	रजोदर्शन	अश्वि.मृ. ह.चि. स्वा.अनु. उत्तरा ३ श्र.ध. श. रे. माघ.फाल्गुन मार्गशीर्ष बैशाख ज्येष्ठ आश्विन शुक्ल.	शुभ	चं. बु. गु. शु.	शुभ
२	रज स्नान	अश्वि.रो. मृ. उत्तरा. ह. स्वा. अनु. ज्ये. धनि. रे.	शुभ	शु.	शु.
३	गर्भाधान	रो. मृ. उ. ३. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. शत.	शुभ	शु.	शु.
४	पुंसवन	मृ. पुन. पुष्य हस्त मूल श्र. मास ३ शुक्ल पक्ष	शुभ	सू.बृ.मं.	शु.
५	सीमंत(अगरणी)	मृ. पुन. पुष्य ह. मू. श्र. मास. ८ शुक्ल पक्ष	शुभ	सू.बृ.मं.	शुभ
६	जातकर्म	अश्वि.रो.,पुन.पुष्य,मघा,उ.३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्रव.,ध.,शत.,रे.	शुभ	शु.	शु.
७	नामकरण	जातकर्म नक्षत्रादि लेना,जन्माशौच के अन्त में चारों वर्णों के करना, जैसे ब्रा. ११ दि., क्ष. १३ दि. वै. १६ दि., शू. १ मास	शुभ	शु.	शु.
८	पालना में सुलाना	अश्वि. रो.मृ.पु. उत्तरा ३ ह.चि.अनु.रे. रवि भाद् गणना आरोग्य ५, कष्ट ५, मृ. ५ रो. ५, सु. ७	शुभ	शु.	शु.
९	अन्न प्राशन	अश्वि. रो. मृ.पुन. उत्तरा ३ ह.चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. पुरुष ६-८ मास, स्त्री के ५-७ मास, पुरुष सम - स्त्री विषम मास	२-३-५-७	शु.	शु.
१०	चौलकर्म	अश्वि.मृ.पुन.पुष्य,ह.चि.स्वा.ज्ये.अभि.श्र.ध.शत.रे. वर्ष ३।५।७ विषमवर्षे,चान्द्रमासाः- माघ,फा.बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, चैत्र रहित उत्तरायणे	२-३-५-७ १०,११,१३	चन्द्र,बुध गुरु,शुक्र	शु.
११	विद्यारंभ	अश्वि. रो. मृ.आर्द्रा पुन.पु.श्ले. पू. ३ उ. ३ ह. चि. स्वा. श्र.ध. शत. अनु. मूल. रे. (उत्तरायने)	२,३,५,६ १०,११,१२	सू. गू. शुक्र	शु. शु.
१२	वापी-कूपतडाग	रो. मृग,पुष्य,मघा,उ. ३ ह. अनु.पू.षा.ध. शत.रे.	शुभ	शु.	शु.
१३	**गृहारंभ** सक्रान्तिमास-युता-चान्द्र-मासाः ग्राह्या	रो.मृ.पुष्य,उत्तरा.३ हस्त चि.स्वा.अनु.धनि.शत.रे. मेष,वृष,कर्क,सिंह,तुला,वृश्चि,मक,कुंभ,संक्रा.मासाः जाग्रतिभूमौ,वत्स चक्रशुद्धे,विपञ्चके(अग्निबाण रहिते) चैत्र-वैशा,ज्येष्ठ,आषा-श्रा,भाद्र,आश्वि,कार्ति-मार्ग,पौष-माघ,फा	२,३,५,७ १०,११,१२ १३,१५,कृ१	चं.बु.गु. शु.श.	२।३।५ ६।९ ११।१२ दिवा
१४	क्रय	अश्वि. चि. स्वा. शत. रे.	शुभ	शु.	शु.
१५	विक्रय	कृ. भ. आश्ले. पूर्वा. ३ विशाखा	शुभ	सू.चं.बु. बृ.शु.श.	शु.
१६	नौकर रखने	अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. रे.	शुभ	शु.सू.बु.बृ	शु.
१७	बीज बोना राहु भाद्रगणना	अश्वि.रो.मृ.पुष्य म.उ. ३ ह.चि.स्वा.अनु.मू.रे.ने ८ श्रे. ३ ने. १,श्रे. ३ ने. १,श्रे. ३ ने. १,श्रे. ३ ने. ४	शुभ	सू.चं.बु. बृ.शु.श.	शुभ
१८	रोग मुक्त स्ना.	अश्वि. भ.कृ.मृ. आर्द्रा, पुष्य पु. ३ ह.चि.वि. अनु. ज्ये. मू. श्र. ३	अशुभ	सू.म.बु. बृ.श.	अशुभ (चर)
१९	देवस्थापन (प्रतिष्ठा)	अश्वि. रो.मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा. ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. शत. रे. उत्तरायणे	शुभ	सू.चं.बु. बृ.शु.श.	शु.
२०	भूषणादिधारण	अश्वि. रो. पुन. उ. ३ ह.चि. स्वा.वि. अनु. ध. रे. सौभाग्यवती को. रो. पुन. पुष्य उत्तरा ३ त्याज्या	शुभ	सु. बु. बृ. श.	शु.
२१	औषधसेवन	अश्वि.मृ.पुन.पुष्य,ह.चि.स्वा.अनु.मू. श्र. ध.श. रे.	शुभ	शु.	द्वि.स्व.

॥ गृहप्रवेश मुहूर्तम् ॥

मासाः	वै. ज्ये.माघ फा.उत्तरायणे रवौ श्रेष्ठा जीर्णे गृहेतु कार्तिक,मार्ग.,श्रावणमासाः अपिग्राह्याः
भानि:	उत्तरा ३ अनु.रो. मृ. चि. रे. एषुद्वारस्थभेषु च कुम्भ चक्रशुद्धौ जीर्णे तु पुष्य.स्वा. धनि. शत. अपिग्राह्याः पापरहितेष्वविद्धभेषु ।
वाराः	चं. बु. बृ. शु. शनि तिथयः १।२।३।५।६।७।८। १०।११।१२।१३ ग्राह्याः (शुक्ला १ नेष्टा) $
लग्न	२।५।८।११ सत् ३।६।९।१२ मध्या तत्र लग्नस्थचन्द्रः न शुभः
	लग्नात् ४।८ शुद्धयोः १।२।३।५।७।९।१०।११ एषु शुभैः ३।६।११ एषु पापैः वामार्के सति शुभः दिवाकाले वा गुरुशुक्रयोरुदितयोः ।

$ **गृहप्रवेशे विशेषः** - कहीं कहीं लोकाचार (राजस्थान आदि) में बुधवार को गृहप्रवेश नहीं करते हैं लेकिन व्यापारगृह का शुभारम्भ लाभदायक समझते हैं । अस्तु । देशाचारानुसार निर्णय लें । शास्त्रीय दृष्टि- से रवि, मंगल को छोड़कर सभी वार ग्राह्य है । यथा - "व्यर्कारररिक्ताचरदर्शचैत्रे । अर्कारौ प्रसिद्धौ वारौ (रवि,मंगल) । अर्कादयः प्रवेशदिने निषिद्धा इत्यर्थः" । - पीयूषधारा (श्लो.४, पृ.५८७)

गृहप्रवेशे कालशुद्धिः-

सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तौ नृपतेर्नव गृहे ।
स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्ष-लग्नोपचयोदये स्थिते ॥

॥ अथ यज्ञोपवीत धारण महूर्त चक्रम् ॥

सर्वेषां ग्राह्य	अश्वि.रो.मृ.आर्द्रा.पुन.पुष्य.श्ले.पू. ३ उ. ३
नक्षत्राणि	ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे.
वर्ज्य नक्षत्रा	कृ. भ. म. ज्येष्ठा विशा.
ऋग्वेदिनां न	मृ. आर्द्रा. श्ले. पू. ३ ह. चि. स्वा. मू.
यजूषां ग्राह्य	मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा. ३ ह. अनु. रे.
सामगानाम्	अश्वि. आर्द्रा. पुष्य. उ. ३ ह. श्र. ध.
अथर्वणाम्	अश्वि. पुन. मृ. ह. अनु. ध. रे.
सर्वेषां वाराः	सू. चंद्र.बु. गु. शुक्र,लग्न १।३।५।६।९ (२)
तिथ्यादि	कृ. २, ३, ५ शुक्ल २, ३, ५, १०, ११, १२ उत्तरायणे, चैत्ररहिते परं मीनार्के चैत्रं शुभम्
वर्ज्यतिथ्यादि.	४।७।८।९।१३।१४।१५।३०,रात्रिः,प्रदो.,अप.,भद्रा अनध्या,रुग्वाण,गुरु-शु.वृद्धत्वं.,अस्त.शिशुत्व.

गृहप्रवेशकलशचक्रम् सूर्यनक्षत्रात् (अभि.रहित)

नक्ष.	अंग	फलं
१	मुख	मृत्यु
४	पूर्व	गमन
४	दक्षिण	धन
४	पश्चिम	लक्ष्मी
४	उत्तर	वैर
४	गर्भ	शोक
३	कंठ	स्थिरता
३	गुद	सुख

गृहारंभे वृष चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्(साभिजि.)

नक्ष.	अंगानि	फलम्
३	शिरसि	दाहः
४	अग्रपादे	शून्यम्
४	पृष्ठपादे	स्थिरता
३	पृष्ठे	श्रीः
४	दक्षिणकु.	लाभ
३	पुच्छे	स्वामिनाश
४	वाम कु.	दारिद्रम्
३	मुखे	पीडा

गेहारम्भे - कैश्चिन्मेषरवौ मधौ इति1 मेषसंस्थे रवौ मधौ चैत्रे मासि गेहप्रारम्भं शुभं स्यात् इत्यादि ॥१६॥ - पीयूषधारा (पृ.५६८)

अथ गृहारम्भे पञ्चाङ्गशुद्धिं चानुष्टुभाह - भौमार्करिक्तामाद्यूने चरोने च विपञ्चकः । व्यष्टान्त्यस्थैः शुभैर्गेहारम्भस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥१८॥ भौमार्केति । भौमार्कौ वारौ रिक्ताश्च प्रसिद्धाः । चरोने चरराशिभिः मेषकर्कतुलामकरैरूनेऽङ्गे लग्ने स्थिरे द्विस्वभावे च गृहारम्भः कार्यः । विवाहप्रकरणोक्तानि पञ्चकानि रोगाग्निराजचोरमृत्युसंज्ञानि तैः रहितेऽङ्गे लग्ने पञ्चकरहिते लग्ने इत्यर्थः ॥१८॥ - पीयूषधारा (पृ.५७१) **हिन्दी**-ग्राह्य राशिलग्न. स्थिर,द्विस्वभाव । **त्याज्याः** वृश्चि.लग्न और चरलग्न (मेष,कर्क,तुला,मक), अग्निवाण, सक्रांतिरहिता-चांद्रमासाः ॥

होमादौ ग्रहमुखे[illegible]चक्रम् ।

सूर्यभात्त्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपङ्गवः।
चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥३५॥ - पीयूष पृ.१०४

ग्रहाः	नक्ष.संख्या	फलम्
सूर्य	३	धननाशः
बुध	३	बुद्धिवर्धन
शुक्र	३	सम्पत्तिः
शनि	३	धननाशः
चंद्र	३	कृषिलाभः
मंगल	३	अग्निदाहः
बृह.	३	अभीष्टसिद्धिः
राहु	३	हानिः
केतु	३	दुर्भिक्षम्

सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक (जिस दिन का देखना हो उस दिन के चन्द्र नक्षत्र तक) अभि. रहित गणना करें, १ से ३ में सूर्य, ४ से ६ बुध, ७ से ९ शुक्र १० से १२ शनि के मुख में,शेष ग्रहों का भी ऐसे ही होगा ।

होलिका विषये- जब मुख्य कर्म का समय मिले तो गौण समय (भद्रा,दिन और प्रतिपदा) क्यों ? - निर्णयसिंधु (परि.२,पृष्ठ ३४१-२) यथा - भद्रायां दीपिता होली राष्ट्रभङ्गं करोति वै । नगरस्य च नैवेष्टा तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ तथा- भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा । श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ॥ -निर्णयसिंधु (परि.२) **गौण समय** - धर्मशास्त्रों में जिस कर्म (व्रतोत्सव,त्योंहार आदि) का ग्राह्य-काल नहीं लिखा हो या जिस काल के लिए मना किया हो. ..A

A उसे गौणकाल या गौण समय कहते है । जैसे होली के लिए ज्योतिर्निबन्ध मे कहा है ज्योतिर्निबन्धे तु - प्रतिपद्भूतभद्रासु यार्चिता होलिका दिवा । संवत्सरं च तद्राष्ट्रं पुरं दहति सा द्रुतम् ॥ प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या पौर्णिमा फाल्गुनी सदा । तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे ॥ २॥ इति नारदवचनात् प्रदोषव्यापिनीत्युक्तम् । भद्रामुखं त्यक्त्वा इति रात्रिपर्यन्त भद्रापक्षे । **प्रदोषकालः**- सूर्यास्तोत्तरं त्रिमुहुर्तः प्रदोषः॥ दिनस्य पंचदशो भागो मुहूर्तः ॥ दिन के पन्द्रहवें(१५)भाग को मुहूर्त कहते है । -**धर्मसिंधु** ॥ **प्रदोषकालः**- सूर्यास्त से १ घंटा १२ मि. (३ घटी) तक के समय को प्रदोष मध्यकाल कहते हैं, विषम स्थिति में इसी सूत्र से निर्णय होता है जिसे अर्धादिक कहते है ।

हद्दासारिणी १

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
बृ.६	शु.८	बु.६	मं.७	गु.६	बु.७	श.६	मं.७	गु१२	बु.७	बु.७	शु१२	स्वामि - अंश
शु.६	बु.६	शु.६	शु.६	शु.५	शु१०	बु.८	शु.४	शु.५	गु.७	शु.६	गु.४	स्वामि - अंश
बु.८	बृ.८	बृ.५	बु.६	श.७	गु.५	गु.७	बु.८	बु.४	शु.८	गु.७	बु.३	स्वामि - अंश
मं.५	श.५	मं.७	बृ.७	बु.६	मं.७	शु.७	गु.५	मं.५	श.४	मं.५	मं.९	स्वामि - अंश
श.५	मं.३	श.६	श.४	मं.६	श.२	मं.२	श.६	श.४	श.४	श.५	श.२	स्वामि - अंश

होरा सारिणी २

मेष	वृष.	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	अंशाः १५
४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	४	५	अंशाः ३०

त्रिशांश सारिणी ३

विषमे त्रिशांशाः							समे त्रिशांशाः						
अंशाः	मेष	मि.	सिंह	तुला	धनु	कुंभ	वृष	कर्क	क.	वृ.	म.	मी.	अंशाः
५	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	५
१०	११	११	११	११	११	११	६	६	६	६	६	६	१२
१८	९	९	९	९	९	९	१२	१२	१२	१२	१२	१२	२०
२५	३	३	३	३	३	३	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२५
३०	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	३०

सप्तमांश सारिणी ४

मेष	वृष.	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	४।१७।८।३४
२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	८।३४।१७।०८
३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	१२।५१।२५।२३
४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	१७।८।३४।१७
५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	२१।२५।४२।५१
६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	२५।४२।५१।२६
७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	३०।००।००।००

द्रेष्काण सारिणी ५

मेष	वृष.	मि.	कर्क	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मं.१	शु.२	बु.३	चं.४	सू.५	बु.६	शु.७	मं.८	गु.९	श१०	श११	गु१२	अंशाः१०
सू.५	बु.६	शु.७	मं.८	गु.९	श१०	श११	गु१२	मं.१	शु.२	बु.३	चं.४	२०
गु.९	श१०	श११	गु१२	मं.१	शु.२	बु.३	चं.४	सू.५	बु.६	शु.७	मं.८	३०

तारा बोधाय ६

वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक और कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें शेष बचे उसके अनुसार तारागुण चक्र द्वारा गुण देखें। ध्यान रहे शेष शून्य बचे तो ९ संख्या का फल देखें।

नवमांश सारिणी ७

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः अंश- क.
१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	३।२०
२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	६।४०
३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	१०।००
४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	१३।२०
५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	१६।४०
६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	२०।००
७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	२३।२०
८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	२६।४०
९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	३०।००

द्वादशांश सारिणी ८

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः अंश- क
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	२।३०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	५।००
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	७।३०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	१०।००
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	१२।३०
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	१५।००
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	१७।३०
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	२०।००
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	२२।३०
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	२५।००
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२७।३०
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	३०।००

त्रिराशिपतिचक्रम् ९

मेष	वृष	मि.	कर्क	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
सू.	शू.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु.	चं.	दिने
गु.	चं	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	गु.	श.	मं.	गु.	चं.	रात्रौ

अथ हर्षबलम्- नंदत्रिषड्लग्नभवर्क्षपुत्रव्यया इनाद्धर्षपदं स्वभोच्चम् ॥
त्रिभंत्रिभंलग्नभतः क्रमेण स्त्रीणां नृणां रात्रिदिनेषु तेषाम् ॥१॥

अर्थ - वर्ष लग्न में सूर्य ९, चन्द्र ३, मंग ६, बुध १, गुरु ११ भृगु ५ शनि १२ वें स्थान में होय तो हर्षता है और स्वगृही उच्च का ग्रह होता है सो हर्षबल देता है और लग्नकुण्डली में स्त्री. स्त्री. स्त्री. पु. पु. पु. ऐसी द्वितीयावृत्ति करके स्त्री गृह स्त्री गणना में आवे तो हर्षबल देता है और पुरुष ग्रह पु. गणना में आवे तो हर्षबल देता है और दिन में प्रवेश होय तो पुरुषग्रह हर्षबल देता है और रात्रि में वर्ष प्रवेश होय तो स्त्री ग्रह हर्षबल देता है। इसी तरह एक एक का हर्षबल ५ पांच का होता है जब चारों में बल आने से २० का पूर्ण बल होता है।

पंचवर्गी बलम् / नवांशा १०

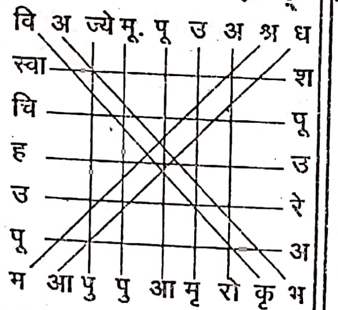
पंचवर्गी बलम्					नवांशा १०					
स्वक्षे	उच्च	हद्दा	द्रेष्का.	नवां.	सं.	मे.	वृष	मि.	कर्क	
३० ०	२० ०	१५ ०	१० ०	५ ०	स्व.	सिं.	क.	तु.	वृश्चि.	
२२ ३०	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५	मित्र	ध.	म	कु	मी.	
१५ ०	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०	सम.	३ २०	६ ४०	१० ०	१३ २०	
७ ३०	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५	शत्रु	१६ ४०	२० ०	२३ २०	२६ ४०	३० ०

भद्रा-मुख-पुच्छ-घटी-ज्ञान ११

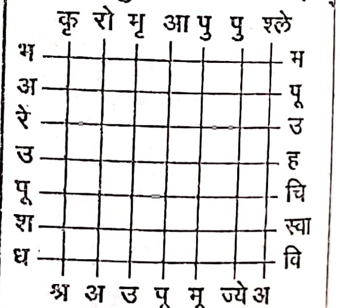
	शुक्ल पक्ष				कृष्ण पक्ष			
तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	५	२	७	४	८	३	६	१
आदि मुख घटी	५	५	५	५	५	५	५	५
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
अंत पुच्छ घटी	३	३	३	३	३	३	३	३

तिथिभोग (आरंभ से अंत तक) के घट्यादि मान में ८ के भाग से लब्धांक १ प्रहर का मान होता है। तिथि के आरंभ से प्रहर की गणना करनी चाहिये।

विवाहे पंचशलाकाचक्रम्



सर्वकार्येषु सप्तशलाकाचक्रम्



अथ मांगलिक बोधाय (पूर्वपाठः)

लग्ने व्यये च पाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे।
कन्या भर्त्तुर्विनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशकः ॥

वर कन्या के परस्पर जन्मांग और राशिचक्र के लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् और द्वादशभावों में अवस्थित मंगल परस्पर विनाशकारी है।

द्वादशराशिपरत्वे नवग्रहादिघातचक्रे मासतिथिनक्षत्रादिस्त्रीणां घातचन्द्रकोष्टकम् ल.भा.

राशि	मास	तिथि	वार	नक्षत्र	योग	करण	प्र.	ल.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	स्त्री.	घ.	प.
मेष	कार्तिक	नंदा	रवि	मघा	विष्कं.	बव	१	१	४	१	५	२	६	७	३	८	१	३	३८
वृषभ	मार्ग.	पूर्णा	शनि	हस्त	शू.	श.	४	२	८	५	९	६	१०	१०	७	१२	८	४	११
मिथुन	आषाढ	भद्रा	चंद्र	स्वाती	परि.	चं.	३	४	१२	९	१	१०	२	३	११	४	७	५	२३
कर्क	पौष	भद्रा	बुध	अनु.	व्या.	ना.	१	७	५	२	६	३	७	८	४	९	९	५	४४
सिंह	ज्येष्ठ	जया	शनि	मूल	धृ.	व.	१	१०	९	६	१०	७	११	१२	८	१	५	५	५०
कन्या	भाद्र.	पूर्णा	शनि	श्रवण	शू.	कौ.	१	१२	१	१०	२	११	३	४	१२	५	३	५	४१
तुला	माघ	रिक्ता	गुरु	शत.	शू.	तै.	४	६	६	३	७	४	८	९	५	१०	६	५	४१
वृश्चिक	आश्वि.	नंदा	भृगु	रेवती	व्यती	ग.	१	८	१०	७	११	८	१२	१	९	२	२	५	५०
धनु	श्रावण	जया	शु.	भरणी	वरी	तै.	१	९	७	४	८	५	९	१०	६	११	१०	५	४२
मकर	वैशारव	रिक्ता	भौम	रोहिणी	वै.	श.	४	११	१२	८	१२	९	१	२	१०	३	११	५	२
कुंभ	चैत्र	जया	गुरु	आर्द्रा	गं.	किं.	३	३	२	११	३	१२	४	५	१	६	५	४	८
मीन	फाल्गुन	पूर्णा	शुक्र	आश्ले.	वै.	चं.	४	५	६	१२	४	१	५	६	२	७	१२	३	३५

चोरी लाभालाभ कोष्ठकम्

अंध	मन्द	मध्य	सुलो.
रोहि.	मृग.	आ	पु.
पु.	आ.	म.	पू.
उ.	ह.	चि.	स्वा.
वि.	ऽनु.	ज्ये.	मू.
पू.	उ.	भि.	श्र.
ध.	श	पू	उ
रे.	अ.	भ.	कृ.
शीघ्र मि.पू.	दिन३ मि.द.	मा.१ मि.प.	मिले नहीं उ

॥ अथ ग्रहाणां मित्र सम शत्रूच्च-नीच-स्वगृह दृष्टि रत्नादि कोष्टकम् ॥

ग्रहाणां नाम	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्रग्रहाः	चं.मं.गु.	सू.बु.	र.गु.चं.	सू.रा.शु.	सू.चं.मं.	बु.रा.श.	बु.रा.शु.	बु.श.शु.	बु.श.शु
समग्रहाः	बु	मं.शु.गु.श.	शु.श.	श.मं.गु.	श.रा.	मं.गु.	गु.	गु.	गु.
शत्रुग्रहाः	श.रा.शु.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.	सू.चं.मं.	सू.चं.मं.
उच्चराशयः परमोच्चांशाः	मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन ०	धनु १५
नीचराशयः नीचांशाः	तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु ०	मिथुन १५
ग्रहाणां स्वगृहाणि	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	कन्या मिथुन	धनु मीन	तुला वृषभ	मकर कुंभ	कन्या	मीन
एकपाददृष्टिः	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०।०	३।१०	३।१०
द्विपाददृष्टिः	५।९	५।९	५।९	५।९	०।०	५।९	५।९	५।९	५।९
त्रिपाददृष्टिः	४।८	४।८	०।०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८
संपूर्णदृष्टिः	७	७	४।७।८	७	५।९।७	७	३।१०।७	७	७
ग्रहाणांवर्षाणि	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२
नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधन	हरिवंश श्रवण	रुद्रार्चन	रुद्रज	कांस्य-दान	अमावस्या व्रत	गोप्रति पालन	मृत्युंजय जप	भुजंग दान	ध्वजा दान
राशी भु.प्राक्	मास १	दिन २।	मा.१।।	मास१	मा.१३	मास १	मा.३०	मा.१८	मा.१८
ग्रह रत्नानि.	माणक	मोति	प्रवाल	पन्ना	पुष्परा.	हीरा	नीलम	पिरोज	लसाठी
समय	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न
अष्टोत्तरीदशा	६	१५	८	१७	१९	२१	१०	१२	०
योगिनीदशा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	
वर्ष ३६	१	२	३	४	५	६	७	८	
जन्मनक्षत्र वशात-	आर्द्रा चि. श्र.	पुन स्वा. ध.	पु. वि. शत.	अश्वि.श्ले. अनु.पूभा.	भ.म.ज्ये. उ.भा.	कृ.पू.फा. मू.रे.	रो.उफा. पू.षा.	मृ.ह उ.षा.	

॥ वर्ण गुण चक्रम् १ ॥

वरस्य	→	विप्र	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
कन्यायाः	विप्र	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

॥ गणगुण चक्रम् ६ ॥

वरस्य	→	देव	मनुष्य	राक्षस
कन्यायाः	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

॥ ग्रहगुण चक्रम् ५ ॥

वरस्य	→	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कन्यायाः	सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
	चंद्र	५	५	४	१	४	॥	॥
	मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
	बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
	गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
	शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
	शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥

॥ नाड़ीगुण चक्रम् ८ ॥

वरस्य	→	आद्य	मध्य	अंत्य
कन्यायाः	आद्य	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अंत्य	८	८	०

॥ भकूट गुण बोधाय ७ ॥

वर कन्या की परस्पर राशि ३/११, ४/१० तथा ७/७ हों तो ७ गुण लेना अन्यथा शून्य गण लेना, द्विर्द्वादश, षडाष्टक,नव-पंचम (२/१२, ६/८, ९/५) में राशि स्वामी एक हो तो भी ग्राह्य है अन्यथा नहीं ।

॥ योनि गुण चक्रम् ४ ॥

वरस्य	→	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान्	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
कन्यायाः	अश्व	४	२	३	२	२	३	३	२	०	१	३	२	२	१
	गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
	मेष	३	३	४	२	२	३	३	३	३	१	३	०	१	१
	सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	१	०	२
	श्वान्	२	२	२	२	४	१	१	२	२	२	०	२	२	२
	मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	३	३	२	३	२	२	२
	मूषक	३	३	३	१	१	०	४	३	३	२	३	२	१	२
	गौ	२	३	३	२	२	३	३	४	३	०	३	२	२	१
	महिष	०	३	३	२	२	३	३	३	४	१	३	२	२	१
	व्याघ्र	१	१	१	२	२	२	२	०	१	४	१	२	२	३
	मृग	३	३	३	२	०	३	३	३	३	१	४	२	२	१
	वानर	२	२	०	१	२	२	२	२	२	२	२	४	२	२
	नकुल	२	२	१	०	२	२	१	२	२	२	२	२	४	२
	सिंह	१	०	१	२	२	२	२	१	१	३	१	२	२	४

॥ वश्य गुण चक्रम् २ ॥

वरस्य	→	चतुष्पद	मानव	जलचर	वनचर	कीट.
कन्यायाः	चतुष्पद	२	१	१	०	१
	मानव	१	२	॥	०	१
	जलचर	१	॥	२	१	१
	वनचर	०	०	१	२	०
	कीट.	१	१	१	०	२

॥ तारा गुण चक्रम् ३ ॥

वरस्य	→	१	२	३	४	५	६	७	८	९
कन्यायाः	१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
	८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
	९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तात्कालिक मैत्री चक्रम्

मित्र	शत्रु
२, ३	१, ५
४, १०	६, ७
११, १२	८, ९

पञ्चधा मैत्री चक्रम्

१	मित्र + मित्र	अतिमित्र
२	मित्र + सम	मित्र
३	मित्र + शत्रु	सम
४	सम + शत्रु	शत्रु
५	शत्रु + शत्रु	अतिशत्रु

ज.जाग्रताद्यवस्था

विषमे	अंशाः	समे
जाग्रत्	१०	सुसुप्तिः
स्वप्न	२०	स्वप्न
सुषुप्तिः	३०	जाग्रत्

बालाद्यवस्था

विषमे	अंशाः	समे
बाला.	६	मृता.
कुमारा	१२	वृद्धा.
युवा.	१८	युवा.
वृद्धा.	२४	कुमारा
मृता.	३०	बाला.

अश्वचक्रम्

सूर्यभात	५	१०	२	४	५	२
अंगानि	स्कंधे	पृष्ठे	पुच्छे	चतु.	उदरे	मुखे
फलम्	लक्ष्मी	अर्थसिद्धि	स्त्रीनाश	रणभङ्ग	अश्वनाश	अर्थलाभ

अथ घातचन्द्रारव्यं शालिन्याह - भूपञ्चाङ्कद्व्यङ्गदिग्वह्निसप्तवेदाष्टेशार्काश्च घातास्यचन्द्रः । मेषादीनां राजसेवाविवादे यात्रायुद्धाद्ये च नान्यत्र वर्ज्यः ।।२७।। **पीयूष.- भूपञ्चाङ्केति । मेषादीनां.. ।**

पीताम्वरा - चन्द्रघात दोष - मेषादिक द्वादश राशियों के लिए क्रमशः १, ५, ९, २, ६, १०, ३, ७, ४, ८, ११, १२ घात चन्द्र दोष होता है । जैसे मेष राशि के लिए मेष का, वृषभ राशि का वृषभ से पञ्चम कन्या राशि इत्यादि का चन्द्रमा घात चन्द्रमा होता है । राजसेवा युद्ध यात्रा और विवाद में घात चन्द्रमा वर्ज्य है अन्यत्र वर्ज्य नहीं है ।।२७।। **- पीयूषधारा पृ. ४६९, निर्णयसिन्धु परि.३, पृ.५५७**

भ्रात्रादीनां दायविभागमुहूर्त्तयन्त्रम् । (सम्पत्ति का बटवारा)

मासाः	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
मासफल	शोक	रोग	मरण	पशुनाश	धनसंप.	दरिद्र	कलहं	वृद्धि	धन	आनन्द	अग्निभय	सिद्धि
नक्षत्राणि	पुष्य	अनुराधा	श्रवण	चित्रा	रेवती	मूल	उत्तरा	धनिष्ठा	मृग.	शत.	०	०
वार	सोम	वुध	गुरु	शुक्र	चंद्रवल	तारावल	शुभयोग	०	शुभतिथि	०	०	०
वर्ज्यतिथि	१	४	९	१४	८	६	१२	३०	१५	भद्रा	अपयो	०

गृहारंभादिखननेशेषचक्रम् ।

दिशाकोण	अग्नौ स्वातः	ऐशान्यां स्वातः	वायौ स्वातः	नैऋत्या स्वातः
गृहारंभे संक्रांति	५। ६। ७	८। ९ ।१०	११।१२। १	२। ३। ४
देवालये संक्रांति	१२। १। २	३। ४ । ५	६। ७। ८	९।१०।११
जलाशये संक्रांति	१०।११।१२	१। २ । ३	४। ५। ६	७। ८। ९

कूप-वापी चक्रम्

रो. नक्ष.	३	३	३	३	३	३	३	३	३
दिशा	मध्ये	पूर्वे	आग्ने	दक्षिण	निर्ऋतौ	पश्चि.	वायौ	उत्तरे	ईशा.
फलम्	शीघ्र जल	जलं नास्ति	मध्यम जल	जल नाश	वहु जल	अमृत जल	क्षार जल	जल	मध्य जल

चुल्लीचक्रम् ।

सूर्यनक्षत्रात्	६	४	८	५	२	२
फल	सुख	मृत्यु	सौख्य	नाश	भोग	मृत्यु
अंग	पृष्ठ	शिर	बाहु	गर्भ	कर	पाद

चुल्लीस्थापनमहूर्तयन्त्रम् ।

वाराः	सू.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
वारफल	रोग	धनधान्य	भार्यानाश	लाभ	लक्ष्मी	धननाश	दरिद्र
ग्राह्यनक्षत्र	पूर्वा-३	आर्द्रा	रो. पु.	उत्तरा	अश्विनी	चं.बल	शु.तिथि

द्वारशाखा (चोगट) रोपणमुहूर्तयन्त्रम् ।

काष्ठशाखा रोपण नक्षत्र	अश्वि. ह.	पु. श्र.	मृ. स्वा.		पाषाणशाखा नक्षत्र	ध. श.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
तिथिफल	१ दुःख	२।१० धननाश	३ शुभ		४।१४ अशुभ	५।१५ धनलाभ	६ अशुभ	७ धन	८।९ शुभ
त्याज्यवारादि	मं.	श.	चं.		सू.	त्रिपुष्कर	कृत्तिका	पंचक	०

स्त्रीणांचोटीआटीचम्बरमुहूर्त ।

हस्त, मूल, रोहिणी, विशाखा, श्रवण, स्वाति, उत्तरा ३, मृग, बृहस्पति, चन्द्र, शुक्र, सूर्यवार, लग्न ५।४।१२।८।२।३, इन नक्षत्रादिकों में स्त्रियों ने आटी माथा गुथाणा ।

विपणी (दुकान) वाणिज्य मुहूर्त ।

अनु. उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहिणी, मृग, चित्रा, अश्विनी, अभिजित्, हस्त यह नक्षत्र, बृहस्पति, शुक्र, बुध, सोम, शुभ तिथि, शुभलग्न, लग्न में चंद्र शुक्र हो तो दुकान बैठाना श्रेष्ठ है ।

तडागारंभे तडागचक्रम्

सूर्यनक्षत्रात्	दिशा	फल
२	पूर्व	जलशोष
२	अग्नि	बहुजल
२	दक्षिण	जलनाश
२	निर्ऋति	शुद्धजल
२	पश्चिम	स्वादु
२	वायु	जलशोष
२	उत्तर	स्थिरजल
२	ईशान्य	कुत्सितजल
५	मध्य	पूर्णजल
६	वारिवाह	अमृतजल

गृहप्रवेशे वामार्कज्ञानचक्रम् ।

दिशा	पूर्वमुखे	दक्षिणमुखे	पश्चिममुखे	उत्तरमुखे
लग्नात्सूर्य स्थानि	८।९।१० ११।१२	५।६।७ ८।९	२।३।४ ५।६	११।१२।१ २।३
वामो रविः	रवि	रवि	रवि	रवि

स्तंभस्थापने स्तंभचक्रम् ।

सूर्यनक्षत्रात्	२	२०	६	०
फल	धननाश	सौख्य	मृत्यु	०
काष्टस्तंभस्थापने त्याज्यनक्षत्र	धनिष्ठा	शत-भिषा	पू.भा.	उ.भा. रेवती

द्वारशाखाचक्रम् ।

सूर्यभात् गणना	४	८	८	३	४
अंग	शिर	कोण	शाखा	देहली	मध्य
फलं	लक्ष्मीप्राप्ति	उद्वसन	सौख्य	स्वामीनाश	सौख्य

यात्रा मुहूर्त विचार

अश्विनी, मृग, पुष्य, पुनर्वसु, हस्त,अनुराधा, श्रवण, धनिष्टा,रेवती यह नक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ हैं । रोहिणी. उ.३, पू.३, मू. मध्यम और आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाखा,ज्येष्ठा नेष्ट हैं । तिथि ४।९।१४।६।१२।३० नेष्ट है । जन्म लग्न और राशि से अष्टम ८ लग्न नेष्ट, कुंभ लग्न और कुंभ नवमांश में मीन पृष्ठोदय लग्न और घात चन्द्र नेष्ट हैं । लग्न से शुभ ग्रह १।४।७।१०।९।५ श्रेष्ठ । पापग्रह ३।६।१०।११ श्रेष्ठ । शनि १०, शुक्र ७, चन्द्र १।६।८।१२, लग्नेश ६।७।८।१२ नेष्ट हैं ।

नूतनशकट (गाडा) चलाणेरा मुहूर्त ।

अदितितिक्षिप्रभशाक्रमृदुस्तथा
भृगुजवाक्पतिपूर्णजयातिथौ ॥
शकटनावसुखासनशिल्पिका
भ्रमणिकाद्यरहट्टकसिद्धिदम् ॥१॥

टीका - पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी, हस्त, ज्येष्ठा, मृग, चित्रा, अनुराधा, रेवती, शुक्रवार, गुरुवार, ५।१०।१५।३।८।१३ यह तिथि गाडी, नौका, आसण, पालखी,हिंडोरा, रहट इत्यादि शु० काम में शुभ ।

कर्ण वेध मु. चक्रम्

नक्षत्राणि	अश्वि.पुन.पुष्य.हस्त,चित्रा अनु.मूल,श्रव,धनि.रेवती
वाराः	सोम, बुध, गुरु, शुक्र.
शुभ तिथि	२, ३, ५, ७ १०, ११, १३ कृ. १

(१) सूर्यसंक्रान्ति से ५।७।९।१५। २१।२४ दिन धरती सूती जानना. (२)सूर्यनक्षत्रात् ५।७।९।१२।१९।२६ भूशयनं केचित् । नोट-पञ्चाङ्ग मे प्रथमपक्ष का ग्रहण किया है ।

भद्राअंगविभागफलचक्रम् ।

घडी	५	१	११	४	६	३
अंग	मुख	गल	वक्ष	नाभि	कटि	पुच्छ
फल	हानि	मृत्यु	दरिद्र	उन्मत्तता	नाश	जय

सूर्यभात् काष्ठगोमयसंचयचक्रम्

नक्षत्र	६	२	४	४
फल	रसपाक	शवदाह	सर्पभय	सुहृत्संगम
नक्षत्र	४	४	०	४
फल	रोग	भय	०	सुख

ग्रहणे चूडामणियोगः- व्यासः-"रविग्रहः सूर्यवारे सोमे सोमग्रहस्तथा । चूडामणिरिति ख्यातस्तत्र दत्तमनन्तकम् वारेष्वन्येषु यत्पुण्यं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ तत्पुण्यं कोटिगुणितं योगे चूडामणौ स्मृतम् ॥ व्यासजी कहते हैं कि, रविवार को सूर्य और सोमवार को चन्द्रग्रहण होय तो यह चूडामणियोग है इसमें दिया हुआ अनन्त होता है जो और वारों मे चन्द्र-सूर्य के ग्रहण में दान जप का फल है उससे चूडामणियोग में करोड गुणा फल है ॥

अथ मासेश्वरान् स्त्रीणां चन्द्रबलं च वसन्ततिलकयाह - मासेश्वराः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराः स्युः । स्त्रीणां विधोर्बलमुशन्ति विवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसु भर्तुरेव ॥९॥ - पीयू.२३५
भावार्थ - विवाह गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्त संस्कारों में दोनों पतिपत्नियों का चन्द्रबल ग्रहण करना चाहिए । अन्य कर्मो में वस्त्रपरिधान अलंकार (आभूषण) धारण में पति का ही चन्द्रबल विचारणीय होता है ॥९॥
राजमार्त्तण्डे-पाणिपीडनविधेरनन्तरं भर्तुरेव बलमैन्दवादिकम् । चिंतनीयमिह योषितां कश्चिन्नष्टमंगलमृते मनीषिभिः॥६२॥ विवाह के बाद गर्भाधान पुंसवनादि अभीष्ट मंगल छोड़ अन्य कार्यो में पति का ही चन्द्रबल देखना चाहिए ॥६२॥

वर्षप्रवेशसारिणी

वर्ष	**१**	**२**	**३**	**४**	**५**	**६**	**७**	**८**	**९**	**१०**	**११**	**१२**	**१३**	**१४**	**१५**	**१६**	**१७**	**१८**	**१९**	**२०**	**२१**	**२२**	**२३**	**२४**	**२५**	**२६**	**२७**	**२८**	**२९**	**३०**
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५
विप.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
वर्ष	**३१**	**३२**	**३३**	**३४**	**३५**	**३६**	**३७**	**३८**	**३९**	**४०**	**४१**	**४२**	**४३**	**४४**	**४५**	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**	**६०**
दिन	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विप.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
वर्ष	**६१**	**६२**	**६३**	**६४**	**६५**	**६६**	**६७**	**६८**	**६९**	**७०**	**७१**	**७२**	**७३**	**७४**	**७५**	**७६**	**७७**	**७८**	**७९**	**८०**	**८१**	**८२**	**८३**	**८४**	**८५**	**८६**	**८७**	**८८**	**८९**	**९०**
दिन	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विप.	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

जब किसी को वर्ष निकालना हो तो इस सारिणी से उसी वक्त निकाल लेना चाहिये । क्रिया - वर्तमान सम्वत् में जन्म समय का सम्वत् घटाने से गत वर्ष होता है उसी गत वर्ष के अंक के नीचे सारिणी में अंक, वारादि है, सो पाटी पै लिख के जन्म का वार इष्ट घटी जोड़ने से वर्षप्रवेष होता है, परंतु इतना ध्यान रक्खै कि, उपरके अंक में ७ से अधिक होवे तो ७ का भाग देना, लब्ध त्याग देना और नीचे साठि से ज्यादा हो तोसाठि के भाग से लब्ध ऊपर युक्त करने से वर्षप्रवेश का वारादि होगा । जन्म सूर्य स्पष्ट से देखना वार मिलेगा । इत्यलम् ।

राशि अक्षर विशेषः -

नक्षत्र व राशि में (श) और (स) तथा (ब) एवं (व) एक समझना । नाम में जहां दो अक्षर (क्ष,ज्ञ,द्य,त्र) जुड़े हों वहां पहले अक्षर से देखना चाहिये (संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्य तत्र आदिम् अक्षरम्) । यथा - ज्ञानचन्द्र की (जञोर्ज्ञः) मकर राशिः । क्षेमचन्द्र की (क.ख. संयोगे क्ष) मिथुन राशि द्यालाराम की (द. य. संयोगे द्य) कुम्भराशि । राशि के अक्षरों में ऋलृक् या अनुस्वार,मात्रा नहीं होती हैं, इ उ ए ओ व आदि होते हैं । जैसे ऋषिकुमार ।

राशि चक्रम् ।

चु	चे	चो	ला	लि	लु	ले	लो	अ	**मेषः**
इ	उ	ए	ओ	व	वि	वु	वे	वो	**वृषः**
क	कि	कु	घ	ङ	छ	के	को	ह	**मिथुन**
हि	हु	हे	हो	ड	डि	डु	डे	डो	**कर्कः**
म	मि	मु	मे	मो	ट	टि	टु	टे	**सिंहः**
टो	प	पि	पू	ष	ण	ठ	पी	पो	**कन्या**
र	रि	रु	रे	रो	त	ति	तु	ते	**तुला**
तो	न	नि	नु	ने	नो	या	यि	यु	**वृश्चिकः**
ये	यो	भ	भि	भू	धा	फा	ढा	भे	**धनुः**
भो	ज	जी	जु	जे जो	ख खि	खु खे	खो ग	गि	**मकरः**
गु	गे	गो	स	सि	सु	से	सो	द	**कुंभः**
दि	दु	थ	झ	ञ	दे	दो	च	चि	**मीनः**

छिक्काशब्दस्य फलज्ञानचक्रम् ।

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	ईशान	अग्नि	नैऋति	वायव्य	ऊर्ध्व	मध्य	आत्मछिंका
फल	अशुभ	अग्नि	मिष्टान्न प्राप्ति	कलह	शुभ	शोक	शुभ	धन लाभ	शुभ	भय	भय

त्रिविष-घटी चक्रम् ।

नक्षत्र	घटी	नक्षत्र	घटी
अश्विनी	५०	स्वाती	१४
भरणी	२४	विशाखा	११
कृतिका	३०	अनुराधा	१०
रोहिणी	४०	ज्येष्ठा	१४
मृग	१४	मूल	५६
आर्द्रा	२१	पू.षा.	२४
पुनर्वसु	३०	उ.षा.	२१
पुष्य	२०	श्रवण	१०
आश्लेषा	३२	धनिष्ठा	१०
मघा	३०	शतभि	१८
पू.फा.	२०	पू.भा.	१६
उ.फा.	१८	उ.भा.	२४
हस्त	२१	रेवती	३०
चित्रा	२०	००	००

तिथि-विष घटीचक्रम्

तिथि	घटी
प्रतिपदा	१५
द्वितीया	५
तृतीया	८
चतुर्थी	७
पंचमी	६
षष्ठी	५
सप्तमी	४
अष्टमी	८
नवमी	७
दशमी	१०
एकादशी	३
द्वादशी	१२
त्रयोदशी	१४
चतुर्दशी	७
पौर्णि.अमा.	८

॥ ग्रामवाससेवा-चक्रम् (साभि.) ॥

ग्राम-नक्षत्रात्	७ मस्तके	७ पृष्ठे	७ हृदि	७ पादे
फलं	धनीमान्य	हीनदरिद्र	सुखसंपत	पर्यटन
स्वामि-नक्षत्रात्	७ मस्तक	७ पृष्ठ	७ कुक्षि	७ पाद
फलं	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

विवाह में विहित मास - मिथुनकुम्भमृगाऽलिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः । अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्तिकपौषमधुष्वपि ॥१३॥ **भावार्थः** - मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष और मेष इन छै राशियों में सूर्य के रहने पर विवाह होता है । यदि सूर्य मिथुन राशि में रहे तो आषाढ़ मास के प्रथम त्रिभाग में (अर्थात् शुक्ल पक्ष की पड़िवा से १० मी तक) वृश्चिक में रहे तो कार्तिक-मार्ग. मास में मकर में रहे तो पौष मास और मेष राशि में रहें तो चैत्रमास में विवाह करना चाहिये (अपिच- सौरमास व देशाचार प्रधान है)।

विवाहादि शुभकार्यों में होलाष्टक का त्याग - विपाशेरावतीतीरे शुतुद्र्वाश्च त्रिपुष्करे । विवाहादिशुभे नेष्टं होलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥४०॥ **भावार्थः** - बिपाशा, इरावती और शुतुद्रु नदियों के तट में वसने वाले देशों में और त्रिपुष्कर देश में होलिका (फाल्गुन की पूर्णमासी) से आठ दिन पूर्व (अर्थात् फाल्गुन शुक्ला ८मी से पूर्णमासी तक) विवाह आदि शुभकार्य में निन्दित हैं ।

हलप्रवाहमुहूर्तः

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, मघा, पुनवर्सु, पुष्य, हस्त, स्वाति, श्रवण, रोहिणी, मृग, रेवती, उत्तरा-फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तरा-भाद्रपदा यह नक्षत्र शुभ है । गुरु, शुक्र, बुध, सोम, रवि यह वार शुभ है । ७।८।१०।११।१३।५।१ यह तिथि श्रेष्ठ है । २।३।६।१२ लग्न शुभ है ।

सूर्यभात् हलचक्रम् ।

नक्षत्र	३	३	३	५
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि
नक्षत्र	३	५	३	२
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि

॥ देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त्तः ॥ (पीयूषधारा पृ.१४९-५१)

मासशुद्धि	उत्तरायणे- मेष, वृष, मिथुन, मकर, कुंभ उग्रदेवानां दक्षिणायने तु कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक सक्रांतिमासाः अपि ग्राह्याः
नक्षत्राणि	अश्वि,रोहि, मृग, पुन, पुष्य, उफा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, उषा, श्रव, धनि, शत, उभा, रेव,
तिथयः	कृष्णा - शुक्ला २, ३, ५, ६, ७ शुक्ला १०, ११, १२, १३, १५ ग्राह्याः
वाराः	रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
लग्नादि-शुद्धिः	लग्न - २, ३, ६, ९, १२, लग्नात् ८, १२ भावरिक्तौ । दिवाकाले, पापरहितेष्वविद्धभेषु गुरुशुक्रयोरुदितयोः । नूतने तु वास्तुशांतिमपि.

पापग्रहाः (उग्र/क्रूराः वा)- सूर्य, मंग.,शनि,राहु, केतु

अथ क्रूराक्रान्तादिनक्षत्रदोषं सापवादमनुष्टुभाह - ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरमुक्तादिकानि च । भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥५८॥ **अर्थ** - जिस नक्षत्र पर पापग्रह का वेध हो, जिस नक्षत्र पर पापग्रह का योग हो अर्थात् बैठा हो या जिस नक्षत्र को भोगकर पापग्रह ने उसे छोड़ दिया हो तो वह नक्षत्र यदि चन्द्रमा से भुक्त हो जाय तो ऊपर के सभी दोष मिट जाते है अन्यथा वह नक्षत्र संस्कार के योग्य नहीं होता है । **पीयूषधारा पृ.३७९**

दशमसारिणी सुगमा.

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
९ मकर	४ १९	४ ३०	४ ४१	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३	६ ५३	७ २	७ १२	७ २२	७ ३२	७ ४२	७ ५२	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुंभ	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४०	१० ४९	१० ५९	११ ८	११ १७	११ २६	११ ३६	११ ४५	११ ५४	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३१	१२ ४१	१२ ५०	१२ ५९	१३ ८	१३ १८	१३ २७	१३ ३६	१३ ४६	१३ ५५
११ मिन	१४ ४	१४ १३	१४ २२	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५०	१५ ०	१५ ९	१५ १८	१५ १७	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५५	१६ ४	१६ १४	१६ २३	१६ ३२	१६ ४१	१६ ५१	१७ ०	१७ ९	१७ १९	१७ २८	१७ ३७	१७ ४६	१७ ५६	१८ ५	१८ १४	१८ २३	१८ ३३
० मेष	१८ ४२	१८ ५१	१९ ०	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८	२१ ८	२१ १८	२१ २७	२१ ३७	२१ ४७	२१ ५७	२२ ७	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृषभ	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ १०	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३	२६ १३	२६ २४	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५६	२७ ७	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५०	२८ १	२८ १२	२८ २३	२८ ३३	२८ ४४
२ मिथुन	२८ ५५	२९ ६	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० १०	३० २१	३० ३२	३० ४३	३० ५३	३१ ४	३१ १५	३१ २६	३१ ३६	३१ ४७	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १३	३३ २४	३३ ३५	३३ ४६	३३ ५६	३४ ७
३ कर्क	३४ १८	३४ २९	३४ ३९	३४ ५०	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३	३६ ५३	३७ २	३७ १२	३७ २२	३७ ३२	३७ ४२	३७ ५२	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४०	४० ४९	४० ५९	४१ ८	४१ १७	४१ २६	४१ ३६	४१ ४५	४१ ५४	४२ ३	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ८	४३ १८	४३ २७	४३ ३६	४३ ४५	४३ ५५
५ कन्या	४४ ४	४४ १३	४४ २२	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५०	४५ ०	४५ ९	४५ १८	४५ २७	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५५	४६ ४	४६ १४	४६ २३	४६ ३२	४६ ४१	४६ ५१	४७ ०	४७ ८	४७ १८	४७ २७	४७ ३७	४७ ४६	४७ ५५	४८ ४	४८ १४	४८ २३	४८ ३२
६ तुला	४८ ४१	४८ ५१	४९ ०	४९ १०	४९ १९	४९ २८	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३७	५१ ४७	५१ ५७	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४८	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३०	५५ ४१	५५ ५२	५६ ३	५६ १३	५६ २४	५६ ३५	५६ ४६	५६ ५६	५७ ७	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५०	५८ १	५८ १२	५८ २३	५८ ३३	५८ ४४
८ धनु	५८ ५५	५९ ६	५९ १६	५९ २७	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० १०	० २१	० ३२	० ४३	० ५३	१ ४	१ १५	१ २६	१ ३६	१ ४७	१ ५८	२ ९	२ १९	२ ३०	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १३	३ २४	३ ३५	३ ११	३ ५८	४ ९

देखिये न नतका काम न उन्नतका काम फक्त लग्नसारिणी में जिन अंकोंसे लग्न मालुम हुआ है उन्ही अंकोसे इस सारिणी में दशम सिद्ध होगा. उदाहरण जैसे सूर्य० मेषराशिका०अंशके दिन १५ पंद्रह घटी ४५ पैंतालीस पलमें दशम ० मेषराशिका ० पुर्ण अंश सिद्ध हुआ। **ज्योतिषी पण्डित हरदेवशर्मा** (दांता रामगढ़)

मुम्बई लग्नसारिणी अयनांशा: २४ चरखंडानि ४०।३२।१३ अक्षभा ४।७

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
मेष ०	३ १०	३ १८	३ २६	३ ३४	३ ४२	३ ५०	३ ५८	४ ६	४ १५	४ २४	४ ३६	४ ४२	४ ५१	५ ०	५ ९	५ १८	५ २७	५ ३६	५ ४५	५ ५३	६ २	६ ११	६ २०	६ २९	६ ३८	६ ४७	६ ५६	७ ५	७ १३	७ २२	२३८
वृष. १	७ ३१	७ ४०	७ ४९	७ ५८	८ ७	८ १६	८ २५	८ ३५	८ ४५	८ ५६	९ ६	९ १६	९ २७	९ ३८	९ ४७	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २९	१० ३९	१० ४९	११ ०	११ १०	११ २०	११ ३१	११ ४१	११ ५१	१२ २	१२ १२	१२ २२	२६७
मिथुन २	१२ ३३	१२ ४३	१२ ५३	१३ ४	१३ १४	१३ २४	१३ ३५	१३ ४६	१३ ५७	१४ ८	१४ १९	१४ ३१	१४ ४२	१४ ५३	१५ ४	१५ १५	१५ २७	१५ ३८	१५ ४९	१६ ०	१६ ११	१६ २३	१६ ३४	१६ ४५	१६ ५६	१७ ७	१७ १९	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५२	३१०
कर्क ३	१८ ३	१८ १५	१८ २६	१८ ३७	१८ ४८	१८ ५९	१९ ११	१९ २२	१९ ३३	१९ ४४	१९ ५५	२० ६	२० १७	२० २८	२० ३९	२० ५०	२१ १	२१ १२	२१ २३	२१ ३४	२१ ४५	२१ ५६	२२ ७	२२ १८	२२ २९	२२ ४०	[illegible] ५१	२३ २	२३ १३	२३ २४	३३६
सिंह ४	२३ ३५	२३ ४७	२३ ५८	२४ ९	२४ २०	२४ ३१	२४ ४२	२४ ५२	२५ ३	२५ १३	२५ २४	२५ ३५	२५ ४५	२५ ५६	२६ ६	२६ १७	२६ २८	२६ ३८	२६ ४९	२६ ५०	२७ १०	२७ २१	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५२	२८ ३	२८ १४	२८ २४	२८ ३५	२८ ४५	३३१
कन्या ५	२८ ५६	२९ ७	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० १०	३० २१	३० ३१	३० ४२	३० ५३	३१ ३	३१ १४	३१ २४	३१ ३५	३१ ४६	३१ ५६	३२ ७	३२ १७	३२ २८	३२ ३९	३२ ४९	३३ ०	३३ १०	३३ २१	३३ ३२	३३ ४२	३३ ५३	३४ ३	३१८
तुला ६	३४ १४	३४ २५	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५६	३५ ७	३५ १८	३५ २९	३५ ४०	३५ ५१	३६ २	३६ १३	३६ २४	३६ ३५	३६ ४६	३६ ५७	३७ ८	३७ १९	३७ ३०	३७ ४१	३७ ५२	३८ ३	३८ १४	३८ २५	३८ ३६	३८ ४७	३८ ५८	३९ ९	३९ २०	३९ ३१	३१८
वृश्चिक ७	३९ ४२	३९ ५४	४० ५	४० १६	४० २७	४० ३८	४० ३९	४१ ०	४१ ११	४१ २२	४१ ३४	४१ ४५	४१ ५६	४२ ७	४२ १९	४२ ३०	४२ ४१	४२ ५२	४३ ३	४३ १५	४३ २६	४३ ३७	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३३	४४ ४४	४४ ५५	४५ ७	३३१
धनु ८	४५ १८	४५ २९	४५ ४०	४५ ५१	४६ ३	४६ १४	४६ २५	४६ ३५	४६ ४६	४६ ५६	४७ ६	४७ १७	४७ २७	४७ ३७	४७ ४८	४७ ५८	४८ ८	४८ १९	४८ २९	४८ ३९	४८ ५०	४९ ०	४९ १०	४९ २१	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५२	५० २	५० १२	५० २३	३३६
मकर ९	५० ३३	५० ४३	५० ५४	५१ ४	५१ १४	५१ २५	५१ ३५	५१ ४४	५१ ५३	५२ २	५२ ११	५२ २०	५२ २८	५२ ३७	५२ ४६	५२ ५५	५३ ४	५३ १३	५३ २२	५३ ३१	५३ ४०	५३ ४९	५३ ५७	५४ ६	५४ १५	५४ २४	५४ ३३	५४ ४२	५४ ५१	५५ ०	३१०
कुंभ १०	५५ ९	५५ १८	५५ २६	५५ ३५	५५ ४४	५५ ५३	५६ २	५६ १०	५६ १८	५६ २६	५६ ३४	५६ ४२	५६ ४९	५६ ५७	५७ ५	५७ १३	५७ २१	५७ २९	५७ ३७	५७ ४५	५७ ५३	५८ १	५८ ९	५८ १७	५८ २५	५८ ३३	५८ ४१	५८ ४८	५८ ५६	५९ ४	२६७
मीन ११	५९ १२	५९ २०	५९ २८	५९ ३६	५९ ४४	५९ ५२	० ०	० ८	० १६	० २४	० ३२	० ४०	० ४७	० ५५	१ ३	१ ११	१ १९	१ २७	१ ३५	१ ४३	१ ५१	१ ५९	२ ७	२ १५	२ २३	२ ३१	२ ३९	२ ४६	२ ५४	३ १	२६८

श्रीगणेशाय नमः ॥ लग्न सारणी ॥घटी-पल॥ रामगढ़ शेखावाटी (राज.),परमरविक्रान्ति २३° २६' १५"

भूगोलिक अक्षांशाः २८° ०',अयनांशाः२४° १५',अं.व्यंगु.पलभा ६।२०,चरखण्डाः६१।३१,५०।१३,२०।३७, (खगोलिक अक्षांशाः२७° ५०' २५")

राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वदेशोदयपलानि
मेष	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	२१७।३५
०	५४	१	९	१६	२४	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	३०	३८	४६	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	७।१५
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	२४८।५२
१	५४	३	१२	२१	३०	३९	४८	५७	६	१६	२५	३४	४४	५४	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३	५३	३	१४	२४	३४	८।१८
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	३०१।११
२	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	१०।०२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	३४२।२६
३	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	११।२५
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	३४९।१८
४	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३२	४३	११।३९
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४०।३८
५	५४	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	११।२१
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३४०।३८
६	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	११।२१
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	३४९।१८
७	२२	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	११।३९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	३४२।२६
८	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५०	१	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२१	३१	४१	५१	०	१०	११।२५
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	३०१।११
९	१९	२९	३८	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	०	९	१७	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	१०।०२
कुंभ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	२४८।५२
१०	३७	४५	५३	१	८	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	९	१६	२४	३१	३८	४६	५३	०	७	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	५	१२	८।१८
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२१७।३५
११	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	७।१५

यामार्द्धकुलिकादिचक्रम्

वारः	यामार्द्ध घ.			कुलिकाः	कालवेला	यमघण्टः	कंटकः
	सं.	प्रह	नि.	कु.	का.	य.	क.
सूर्यः	४	१२	१६	१४	८	१०	६
सोमः	७	२४	२८	१२	६	८	४
मंगलः	२	४	८	१०	४	६	२
बुधः	५	१६	१०	८	२	४	१४
गुरुः	८	८	३	६	१४	२	१२
शुक्रः	३	८	१२	४	१२	१४	१०
शनिः	६	०	२४	२	१०	१३	८

यामार्द्ध ४।४ घटी के अन्यकुलिकादि २।२ घटी के ६ मुहूर्त उक्त वारों के उक्त समय में होते है। शु. कृ. वे है।

तीक्ष्णदारुणनक्षत्राणि तत्कृत्यं च.

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥
मूल ज्येष्ठा आर्द्रा ऽश्लेषे शनिवार इनकी तीक्ष्ण तथा दारुण संज्ञा है इनमें अभिचार, घात, उग्र, भेद, पशुदमादिक कर्म करना श्रेष्ठ है ॥

ध्रुवसंज्ञकनक्षत्राणि तत्कृत्यं च

उत्तरात्रय-रोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।
तत्र स्थिरं बीजगेहशान्त्यारामादि सिद्धये ॥
तीनों उत्तरा (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा और उत्तरा भाद्रपद) और रोहिणी और रविवार इनकी ध्रुव तथा सिथर संज्ञा है. इनमें स्थिर कार्य, बीज बोना, गृहारम्भ, शान्तिकर्म इत्यादि कार्य शुभ होते हैं।

उग्रसंज्ञकनक्षत्राणि तत्कृत्यं च

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ॥
तीनों पूर्वा (पूर्वाफाल्गुनी,पूर्वाषाढ, पूर्वाभाद्रपद) भरणी और मघा मंगलवार इनकी उग्र तथा क्रूर संज्ञा है. इनमें उग्र (शस्त्रादि निर्माण कार्य) और क्रूर कार्य होते हैं।

चरसंज्ञकनक्षत्राणि तत्कृत्यं च

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन्गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥
स्वाती, पुनवसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र और चन्द्रवार इनकी चर और चल संज्ञा है। इन नक्षत्रों में हाथी, घोड़े आदि सवारी (मोटरगाड़ी आदि सभी तरह की सवारियाँ) शुभ होता है।

मिश्रसंज्ञकनक्षत्राणि तत्कृत्यं च

विशाखाग्नेयमे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति ॥
विशाखा, कृत्तिका तथा बुधवार इनकी मिश्र और साधारण संज्ञा है इनमें अग्निकार्य (अग्निहोत्र अर्थात् यज्ञ, हवनादि) मिश्रकार्य और वृषोत्सर्ग (मनोरथ पूर्ति के लिए वृषोत्सर्ग) करना शुभ है।

मृदुसंज्ञकनक्षत्राणि तत्कृत्यं च

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदु मैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यं विभूषणम् ॥
मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा तथा शुक्रवार इनकी मृदु और मैत्र संज्ञा है इनमें गीत गाना, वस्त्र बनाना और पहनना, खेल खेलना, मित्र सम्बन्धी कार्य और भूषणों का बनाना तथा पहनना ये सब शुभ होते है.।

क्षिप्रसंज्ञकनक्षत्राणि तत्कृत्यं च

हस्ताश्वि-पुष्याभिजितः क्षिप्रं लघु गुरुस्तथा।
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम्।
हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित नक्षत्र और गुरुवार इनकी क्षिप्र और लघु संज्ञा है। इनमें पण्य (दुकान) खोलना, रति, शास्त्रविद्या का ज्ञान, भूषणों का बनाना और पहनना, शिल्प (चित्रकारी) कला (गान वाद्य नृत्यादि कला) कर्म शुभ होते हैं।

वर्षा-विषये **स्वामीसूर्य**- रोहि., मृग., पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाति, विशा., अनु., ज्येष्ठा, मूल, शत., उ.भा.॥ **स्वामीचन्द्र**- अश्वि., भर., कृति., आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्लेे., मघा, पू.षा., उ.षा., श्रव., धनि., पू.भा., रेवती। **स्त्रीसंज्ञक नक्षत्र** - आर्द्रादि स्वात्यन्त १० नक्षत्र (आर्द्रा, पुन., पुष्य, आश्ले, मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती), **नपुंसक संज्ञक नक्षत्र**- विशाखादि ज्येष्ठान्त ३ नक्षत्र (विशा., अनु., ज्येष्ठा) **पुरुष संज्ञक नक्षत्र** - मूलादि मृगशीर्ष पर्यन्त १४ नक्षत्र (मूल, पू.षा., उ.षा., श्रव., धनि., शत., पू.भा., उ.भा., रेवती, अश्वि., भर., कृति., रोहि., मृग.) - **बृहद् दैवज्ञ विनोद, पृष्ठ २७०** **वाहन**- सूर्य के नक्षत्र से दिन (चन्द्र) के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग दें। १ शेष रहे तो अश्व, २ जम्बूक, ३ मंडूक, ४ मेष, ५ चातक, ६ मूषक (ग्रंथांतर मृग), ७ महिष, ८ खर, ९ या ० नाग। **बृ.दै.वि.**

वर्षा देखने की विधि - जिस दिन (वर्षाऋतु में) देखना हो उस दिन का - सूर्य जिस नक्षत्र पर हो वह नक्षत्र और चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर हो वह नक्षत्र ग्रहण करें। दोनों के नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हों तो अल्पवृष्टि, एक स्त्रीसंज्ञक और दूसरा पुरुष संज्ञक हो तो उत्तमवृष्टि और एक स्त्रीसंज्ञक दूसरा नपुंसक संज्ञक हो तो अनावृष्टि हो। जैसे कि सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर है (स्त्रीसंज्ञक, स्वामी चन्द्र) और चन्द्रमा पू.फा. पर है (स्त्रीसंज्ञक, स्वामी सूर्य) तो पंक्ति बन गई - "संज्ञा स्त्री.स्त्री., स्वामी चं.सू., वाहन (सूर्य नक्षत्र आर्द्रा से चन्द्रमा नक्षत्र पू.फा., संख्या ६) मूषक, अल्पवृष्टिः" ॥

संवत् २०८२ मध्ये ग्रहक्रमांकेन ग्रहाणाम् स्फुटीकृतं ॥ ग्रहों के राशी, नक्षत्र, (गुरु, शनि, राहु, केतु के चरण) वक्री, मार्गी, उदय और अस्त के परिवर्तन समय (सन २०२५-२६)

सूर्य राशि प्रवेश

१३। ४	मेषे	२६।३३
१४। ५	वृषे	२३।२७
१५। ६	मिथुने	६।०७
१६। ७	कर्के	१७।०४
१६। ८	सिंहे	२५।३४
१६। ९	कन्या.	२५।३५
१७।१०	तुलायां	१३।३३
१६।११	वृश्चिके	१३।१२
१५।१२	धनुषि	२७।५४
१४। १	मकरे	१४।३४
१२। २	कुंभे	२७।२७
१४। ३	मीने	२४।१५

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

३१। ३	रेव.	१३।१४
१३। ४	अश्वि.	२६।३३
२७। ४	भर.	१८।२३
११। ५	कृत्ति.	१२।३४
२५। ५	रोहि.	८।४८
८। ६	मृगे	६।४२
२२। ६	आर्द्रा.	५।४४
५। ७	पुन.	२१।२१
१९। ७	पुष्ये	२८।५५
२। ८	श्लेषा.	२७।५१
१६। ८	मघा.	२५।३४
३०। ८	पूफा.	२१।३४
१३। ९	उफा.	१५।२८
२७। ९	हस्ते	६।५३
१०।१०	चित्रा.	२०।००
२३।१०	स्वा.	३०।३०
६।११	विशा.	१४।३८
१९।११	अनु.	२०।३९
२।१२	ज्येष्ठा.	२४।५६
१५।१२	मूले	२७।५४
२८।१२	पूषा.	३०।०६
११। १	उषा.	८।०३
२०। १	अभि.प्र.	२७।४१
२४। १	श्रव.	१०।१८
२४। १	अभि.नि.	३१।१७
६। २	धनि.	१३।२५
१९। २	शत.	१७।५४
४। ३	पूभा.	२४।०९
१८। ३	उभा.	८।३४

भौम राशि प्रवेश

२। ४	कर्के	२१।४२
६। ६	सिंहे	२४।५८
२८। ७	कन्या.	१८।५५
१३। ९	तुलायां	२०।४२
२७।१०	वृश्चिके	१५।२६
७।१२	धनुषि	२०।००
१५। १	मकरे	२८।०१
२३। २	कुंभे	११।२३

भौम नक्षत्र प्रवेश

११। ४	पुष्ये	२७।२४
१२। ५	श्लेषा.	७।०५
६। ६	मघा.	२४।५८
३०। ६	पूफा.	१९।०३
२३। ७	उफा.	७।३०
१३। ८	हस्ते	२१।३५
३। ९	चित्रा.	१७।०८
२३। ९	स्वा.	२०।२३
१३।१०	विशा.	८।५३
१।११	अनु.	८।०२
१९।११	ज्येष्ठा.	१९।१४
७।१२	मूले	२०।००
२५।१२	पूषा.	११।५५
११। १	उषा.	२०।४३
२४। १	अभि.प्र.	१७।४३
२८। १	श्रव.	२४।११
२९। १	अभि.नि.	२७।२९
१४। २	धनि.	२४।०९
३। ३	शत.	२२।२७

भौम वक्री-मार्गी नहीं है।

भौम अस्तोदय

१७।१०	पश्चि. अस्त:	१६।२८

बुध राशि प्रवेश

७। ५	मेषे	६।२९
२३। ५	वृषे	१२।३१
६। ६	मिथुने	८।३१
२२। ६	कर्के	१९।५९
३०। ८	सिंहे	१७।३६
१५। ९	कन्या.	१०।५०
२।१०	तुलायां	२७।२९
२४।१०	वृश्चिके	८।४९
२३।११	तुलायां	(व)१८।५१
६।१२	वृश्चिके	२१।५३
२८।१२	धनुषि	३१।०५
१७। १	मकरे	१०।०९
३। २	कुंभे	२१।१२

बुध नक्षत्र प्रवेश

३। ४	पूभा.	(व)१६।११
११। ४	उभा.	१४।२३
२७। ४	रेव.	१८।१४
७। ५	अश्वि.	६।२९
१४। ५	भर.	२५।०६
२१। ५	कृत्ति.	२१।४५
२७। ५	रोहि.	२८।४३
३। ६	मृगे	६।१४
९। ६	आर्द्रा.	१३।५६
१६। ६	पुन.	१६।०३
२४। ६	पुष्ये	२७।१६
६। ७	श्लेषा.	२१।२४
२३। ७	पुष्ये	(व)१८।२५
२१। ८	श्लेषा.	२८।३७
३०। ८	मघा.	१७।३६
६। ९	पूफा.	१६।४७
१३। ९	उफा.	१५।४७
२०। ९	हस्ते	२४।२६
२८। ९	चित्रा.	२२।४०
७।१०	स्वा.	१२।१३
१६।१०	विशा.	१७।५४
२६।१०	अनु.	२८।५०
२०।११	विशा.	(व)२७।५१
९।१२	अनु.	२७।१३
१९।१२	ज्येष्ठा.	३०।३७
२८।१२	मूले	३१।०५
६। १	पूषा.	२३।३३
१५। १	उषा.	९।०६
२१। १	अभि.प्र.	१०।३१
२३। १	श्रव.	९।५२
२३। १	अभि.नि.	२२।२४
३०। १	धनि.	२६।३६
७। २	शत.	१६।०५
१५। २	पूभा.	२०।१९
१०। ३	शत.	(व) ८।१२

बुध वक्री-मार्गी

७। ४	मार्गी	२५।२५
१८। ७	वक्री	२७।३९
११। ८	मार्गी	२१।०४
१०।११	वक्री	९।३१
३०।११	मार्गी	१०।१८
२६। २	वक्री	२२।०९

बुध अस्तोदय.

३। ४	पूर्वस्यामुदय:	१२।५०
१३। ५	पूर्वस्यामस्त:	२६।५२
८। ६	पश्चि. उदय:	१९।३९
१९। ७	पश्चि. अस्त:	२७।०७
८। ८	पूर्वस्यामुदय:	२६।४०
९। ९	पूर्वस्यामस्त:	२८।४८
११।१०	पश्चि. उदय:	१४।०९
११।११	पश्चि. अस्त:	२५।००
२५।११	पूर्वस्यामुदय:	९।३९
३०।१२	पूर्वस्यामस्त:	१०।१४
६। २	पश्चि. उदय:	८।५२
९। ३	पश्चि. अस्त:	२०।२२
१५। ३	पूर्वस्यामुदय:	८।४५

गुरु राशि प्रवेश

१५। ५	मिथुने	७।०४
१९।१०	कर्के	२९।३६
३।१२	मिथुने	(व)२३।३३

गुरु नक्षत्र प्रवेश

११। ४	मृगे	-१	६।१४
२८। ४	मृगे	-२	२७।३२
१५। ५	मृगे	-३	७।०४
३०। ५	मृगे	-४	१२।४४
१४। ६	आर्द्रा.	-१	७।१४
२८। ६	आर्द्रा.	-२	२१।५४
१३। ७	आर्द्रा.	-३	१५।०४
२८। ७	आर्द्रा.	-४	१७।३१
१३। ८	पुन.	-१	१४।३०
३०। ८	पुन.	-२	२१।५४
१९। ९	पुन.	-३	२७।५७
१९।१०	पुन.	-४	२९।३६
३।१२	पुन.	-३	(व)२३।३३
३। १	पुन.	-२	(व)१६।२५
२८। १	पुन.	-१	(व)२९।४०

गुरु वक्री-मार्गी

१२।११	वक्री	७।०८
११। ३	मार्गी	१६।३६

गुरु अस्तोदय

११। ६	पश्चि. अस्त:	२३।३३
६। ७	पूर्वस्यामुदय:	२८।१८

शुक्र राशि प्रवेश

३१। ५	मेषे	१६।०४
२९। ६	वृषे	१८।००
२६। ७	मिथुने	११।१६
२०। ८	कर्के	२६।२६
१४। ९	सिंहे	२५।०६
९।१०	कन्या.	११।३४
२।११	तुलायां	१३।३८
२६।११	वृश्चिके	११।१४
१९।१२	धनुषि	३१।१९
१२। १	मकरे	२७।१८
५। २	कुंभे	२४।१५
१। ३	मीने	२३।४६

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

३१। ३	पूभा.	(व)२०।०९
२६। ४	उभा.	११।५४
१६। ५	रेव.	१७।४९
३१। ५	अश्वि.	१६।०४
१३। ६	भर.	२५।२६
२६। ६	कृत्ति.	१६।१५
८। ७	रोहि.	१९।४५
२०। ७	मृगे	१५।३४
३१। ७	आर्द्रा.	२९।४४
१२। ८	पुन.	१५।३०
२३। ८	पुष्ये	२१।४०
३। ९	श्लेषा.	२४।४५
१४। ९	मघा.	२५।०६
२५। ९	पूफा.	२३।०२
६।१०	उफा.	१८।५३
१७।१०	हस्ते	१२।५९
२७।१०	चित्रा.	२९।४१
७।११	स्वा.	२१।२१
१८।११	विशा.	१२।१९
२८।११	अनु.	२६।५०
९।१२	ज्येष्ठा.	१७।०८
१९।१२	मूले	३१।१९
३०।१२	पूषा.	२१।२९
१०। १	उषा.	११।४४
१८। १	अभि.प्र.	१०।३०
२०। १	श्रव.	२६।०७
२९। १	अभि.नि.	१९।०५
३१। १	धनि.	१६।४६
११। २	शत.	७।५१
२१। २	पूभा.	२३।३०
४। ३	उभा.	१५।५७
१५। ३	रेव.	९।२२

शुक्र वक्री-मार्गी

१३। ४	मार्गी	१८।०५

शुक्र अस्तोदय

८।१२	पूर्वस्यामस्त:	३१।११
४। २	पश्चि. उदय:	१०।२८

शनि राशि मीने (परिवर्त्तन नहीं है।)

शनि नक्षत्र प्रवेश

२८। ४	उभा.	-१	६।२५
७। ६	उभा.	-२	१७।२६
१८। ८	उभा.	-१	(व) ६।५१
३।१०	पूभा.	-४	(व)२०।५७
२०। १	उभा.	-१	७।३९
२९। २	उभा.	-२	२४।५२

शनि वक्री-मार्गी

१३। ७	वक्री	१९।०४
२८।११	मार्गी	२०।१८

शनि अस्तोदय

७। ४	पूर्वस्यामुदय:	२८।१८
१०। ३	पश्चि. अस्त:	१०।२०

राहु राशि प्रवेश

१८। ५	कुंभे	११।१७

राहु नक्षत्र प्रवेश

१८। ५	पूभा.	-३	११।१७
२०। ७	पूभा.	-२	८।५६
२९। ९	पूभा.	-१	६।३३
२२।११	शत.	-४	२८।१२
२४। १	शत.	-३	२५।५१

केतु राशि प्रवेश

१८। ५	सिंहे	११।१७

केतु नक्षत्र प्रवेश

१८। ५	उफा.	-१	११।१७
२०। ७	पूफा.	-४	८।५६
२९। ९	पूफा.	-३	६।३३
२२।११	पूफा.	-२	२८।१२
२४। १	पूफा.	-१	२५।५१

नामानि	दिवा सहमानि नीलकंठमते	रात्रौ सहमानि
पुण्यम्.	चन्द्र में सूर्य हीन करके लग्न युक्त करो।	सूर्य में चन्द्र हीन करके लग्न युक्त करना।
गुरुः विघ्या	सूर्य में चन्द्र हीन करके लग्न युक्त करो।	चन्द्र में सूर्य हीन करके लग्न युक्त करना।
यशः बलम्	गुरु में पुण्य सहम करके लग्न युक्त करो।	पुण्य सहम में गुरु हीन करके लग्न युक्त करना।
मित्रम्	गुरु सहम में पुण्य हीन करके भृगु युक्त करो।	पुण्य सहम में गुरु सहम हीन करके शुक्र युक्त करना।
माहात्म्यं सौर्य	पुण्य सहम में मंगल हीन करके लग्न युक्त करो।	मंगल में पुण्य सहम हीन करके लग्न युक्त करना।
आशा.	शनि में शुक्र हीन करके लग्न युक्त करो।	शुक्र में शनि हीन करके लग्न युक्त करना।
सामर्थ्यम्.	मंगल में लग्नेश हीन करके लग्न युक्त करो। यदि लग्नेश भी भौम होय तो गुरु लेना।	लग्नेश में भौम हीन करके लग्न जोडना। लग्नेश भौम होय तो यहां गुरु ग्रहण करना।
भ्राता	गुरु में शनि हीन करके लग्न युक्त करो।	शनि में गुरु हीन करके लग्न युक्त करना।
गौरवम्	गुरु में चन्द्र हीन करके सूर्य युक्त करो।सूर्य राशि।	गुरु में सूर्य हीन करके चन्द्र युक्त करना। चन्द्र राशि।
राज्यम्.पिता.	शनि में सूर्य हीन करके लग्न युक्त करो।	सूर्य में शनि हीन करके लग्न युक्त करना।
माता	चन्द्रमा में भृगु हीन करके लग्न युक्त करो।	भृगु में चन्द्र हीन करके लग्न युक्त करना।
स्त्री	सप्तमेश में भृगु हीन करके सप्तम भाव युक्त करो।	सप्तमेश में भृगु हीन करके शनि युक्त करना।
पुत्रः	गुरु में चन्द्र हीन करके लग्न युक्त करो।	गुरु में चद्रमा हीन करके लग्न युक्त करना।
रोगः	लग्न में चन्द्र हीन करके लग्न युक्त करो।	लग्न में चद्रमा हीन करके लग्न युक्त करना।
मृत्युः	अष्टमभाव में चन्द्र हीन करके शनि युक्त करो।	अष्टमभाव में चन्द्र हीन करके शनि युक्त करना।
देशान्तरम्	नवमभाव में नवमेश हीन करके लग्न युक्त करो।	नवमभाव में नवमेश हीन करके लग्न युक्त करना।
धनम्	धनभाव में धनभावेश हीन करके लग्न युक्त करो।	धनभाव में धनभावेश हीन करके लग्न युक्त करना।
वाणिज्यम्	चन्द्र में बुध हीन करके लग्न युक्त करो।	चन्द्र में बुध हीन करके लग्न युक्त करना।
प्रसूतिः	गुरु में बुध हीन करके लग्न युक्त करो।	बुध में गुरु हीन करके लग्न युक्त करना।
श्रध्दा	भृगु में भौम हीन करके लग्न युक्त करो।	भृगु में भौम हीन करके लग्न युक्त करना।
बलम्	गुरु में पुण्य सहम हीन करके लग्न युक्त करो।	पुण्य सहम में गुरु हीन करके लग्न युक्त करना।
देहः	गुरु में पुण्य सहम हीन करके लग्न युक्त करो।	पुण्य सहम में गुरु हीन करके लग्न युक्त करना।
व्यापारः	भौम में बुध हीन करके लग्न युक्त करो।	भौम में बुध हीन करके लग्न युक्त करना।
रिपुः	भौम में शनि हीन करके लग्न युक्त करो।	शनि में भौम हीन करके लग्न युक्त करना।

गोरख पतड़ो

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौस्यं	क्लेशः	भीतिः	अर्था.
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यं	नैःस्वम्	नैःस्वम्	मिश्रम्
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	धननाश	दुःस्वम्	इष्टाप्तिः	अर्था.
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभः	सौस्यम्	मंगलम्	वित्तलाभः
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभः	द्रव्याप्तिः	धनम्	सौस्यम्
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भयम्	लाभः	मृत्युः	अर्था.
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभः	कष्टम्	द्रव्यालाभः	सुस्वम्
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टम्	सौस्यम्	क्लेशः	सुस्वम्
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौस्यम्	लाभः	कार्यम्	कष्टम्
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेशः	कष्टात्सि	अर्थः	धनम्
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्युः	लाभः	द्रव्यालाभः	शून्यम्
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्यम्	सौस्यम्	मृत्युः	अत्यंत-कष्टम्

अथ सहम करने की रीति - सहमसांरिणी में जो सहम करना हो सो देखके करना परंतु इतना ध्यान रखना चाहिये कि घटने वाले से लेके जिसमें घटाया जायेगा इसके अन्तर्गत लग्न नहीं होय तो सहम में राशि १ युक्त करना नहीं तो नहीं करना और वर्ष लग्न में ग्रहों सहित सहम लगा देना चाहिये पीछे उस श्लोकप्रमाण से फल देखना।

श्लोक - स्वस्वामिना शुभस्वगैः सहितं च दृष्टं स्वामी बली च यदि तत्सहमस्य वृद्धिः।
यस्वामिना शुभस्वगैश्च न युक्तदृष्टं तत्संभवो नहि भवेदिति चिंत्यमादौ ॥१॥

जो सहम अपना स्वामी और शुभग्रहों से युक्त हो और दृष्ट होय या उसका स्वामी बलवान हो तब उस सहम की वृद्धि होवेगी और यदि अपने स्वामी और शुभ ग्रहों के संग और दृष्टि नहीं होय तो समझ लेना उस सहम की वृद्धि नही होवे ऐसा आदि में विचार करके कहना चाहिये। इत्यलम्।

प्रात:काल हस्तावलोकनम् - प्रभात में स्वकरतलादि का अवलोकन करे - कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्।

संवत् २०८२ शाकः १९४७ की मास दशा देखने की सारणी

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
बै.कृ. ०१ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	ज्ये.कृ.०२ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	चै.शु. ०८ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	चै.कृ. १० से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	बै.कृ. ११ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	चै.कृ. १३ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	चै.कृ. ०८ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	बै.कृ. ०८ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	चै.कृ. १० से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	चै.कृ. १२ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	बै.कृ. ११ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	चै.शु. ०६ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.
बै.शु. ०६ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	ज्ये.शु.०८ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	आ.कृ.०४ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	बै.शु. ०९ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	ज्ये.शु.११ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	ज्ये.कृ.१३ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	बै.कृ. ३० से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	ज्ये.कृ.३० से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	ज्ये.कृ.०७ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	बै.कृ. १० से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	ज्ये.कृ.१० से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	ज्ये.कृ.१२ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.
आ.कृ.१३ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	श्रा.कृ.३० से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	आ.शु.१० से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	श्रा.कृ.०६ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	भा.कृ. ०८ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	आ.शु.१२ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	आ.कृ.३० से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	श्रा.शु.०१ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	आ.कृ.३० से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	आ.कृ.०८ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	श्रा.कृ.०८ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	आ.कृ.१० से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.
श्रा.कृ.११ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	भा.कृ. १३ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	भा.शु. ०२ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	श्रा.शु.११ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	भा.शु. १३ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	आ.कृ.१० से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	श्रा.शु.१३ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	भा.शु. १४ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	भा.कृ. ३० से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	श्रा.शु.०१ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	भा.कृ. ३० से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	भा.कृ. ०९ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.
आ.कृ.१० से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	का.कृ.११ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	आ.शु.०१ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	आ.शु.०३ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	का.शु.०५ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	आ.शु.१४ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	का.कृ.११ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	मा.कृ. १२ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	आ.शु.१३ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	आ.शु.०१ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	का.कृ.३० से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	आ.शु.०१ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.
का.शु.०१ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	मा.शु. ०२ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	मा.कृ. १३ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	का.शु.०२ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	मा.शु. ०३ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	मा.शु. ०६ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	मा.कृ. ०१ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	पौ.कृ. ०२ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	पौ.कृ. ११ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	का.शु.१४ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	मा.शु. १३ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	मा.कृ. ३० से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.
पौ.शु. ०१ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	मा.शु. ०२ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	पौ.शु. ०४ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	पौ.कृ. ३० से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	मा.शु. ०१ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	पौ.शु. ०४ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	पौ.शु. ०७ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	मा.शु. ०८ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	मा.कृ. ०१ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	मा.कृ. ११ से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	फा.कृ.१० से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.	पौ.शु. १४ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.
मा.शु. १५ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	चै.कृ. ०१ से रा द. उ. शु द. दि.७० प्र.	फा.शु.०४ से गु द. उ. रा द. दि.४२ प्र.	मा.शु. ०६ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	फा.शु.०७ से श द. उ. गु द. दि.५८ प्र.	फा.शु.०२ से बु द. उ. श द. दि.३६ प्र.	मा.शु. ०६ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	फा.शु.०६ से मं द. उ. बु द. दि.५६ प्र.	फा.शु.०७ से चं द. उ. मं द. दि.२८ प्र.	फा.कृ.०२ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	चै.कृ. ०१ से सू द. उ. चं द. दि.५० प्र.	चै.कृ. १० से शु द. उ. सू द. दि.२० प्र.

चान्द-पूर्णिमा - पूर्णिमा व्रत को ही चान्द-पूर्णिमा व्रत कहते हैं अर्थात् पूर्णिमा व्रत और चान्द-पूर्णिमा व्रत एक ही है। -देशाचारे

शाकः १९४७, जनसाधारण की सुगमता के लिए (सप्तचत्वारिंशदधिकएकोन-विंशतिशततमे शालिवाहन-शकाब्दे इति) यहाँ शततमे यानि शत शब्द का उपयोग किया गया है, अन्यथा शत शब्द के बिना भी यह पंक्ति शुद्ध है यथा- सप्तचत्वारिंशद-धिक-एकोनविंशतितमे शालिवाहन शकाब्दे इति।

अनुवाद चन्द्रिका (प्रकाशन सन १९६७) पृष्ठ ३२३ में सन १९४७ का संस्कृत में अनुवाद 'सप्तचत्वारिंशदधिकैकोनविंशतिख्रिस्ताब्दे' इति।

अपरञ्च - व्यवहारकेऽपि उत्तम - अंकानां वामतो गतिः।

- पं. ग्यारसीलाल शर्मा, मुम्बई

संवत् २०८२, आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्धतिथि निर्णय, सन २०२५

पूर्णिमा (पूनम) का श्राद्ध	रविवार ७ सितंबर (भाद्रपद शुक्लपक्ष)
प्रतिपदा (एकम) "	सोमवार ८ सितंबर
द्वितीया (दूज) "	मंगलवार ९ सितंबर
तृतीया (तीज) "	बुधवार १० सितंबर
चतुर्थी (चोथ) "	गुरुवार ११ सितंबर मध्यान्ह १२।४६ बजे के पहले
पंचमी (पांच) "	गुरुवार ११ सितंबर मध्यान्ह १२।४६ बजे के बाद
षष्ठी (छठ) "	शुक्रवार १२ सितंबर दिन ९।५९ बजे के बाद
सप्तमी (सातं) का श्राद्ध	शनिवार १३ सितंबर प्रातः ७।२३ बजे के बाद
अष्टमी (आठं) "	रविवार १४ सितंबर
नवमी (नौमी) "	सोमवार १५ सितंबर
दशमी (दस) "	मंगलवार १६ सितंबर
एकादशी "	बुधवार १७ सितंबर
द्वादशी (बारस) "	गुरुवार १८ सितंबर
त्रयोदशी (तेरस) "	शुक्रवार १९ सितंबर
चतुर्दशी (चौदस) "	शनिवार २० सितंबर
अमावस्या (मावस) "	रविवार २१ सितंबर

अपरान्ह काल - उपर लिखी श्राद्धपक्ष की तिथियों का निर्णय. प्रामाणिक धर्म शास्त्रों के आधार पर किया गया है - यह सर्व विदित है कि **पितृश्राद्ध का मुख्यकाल अपरान्ह काल** होता है। **अपरान्ह काल किसे कहते हैं ?** दिन में पांच प्रकार का काल होता है, इनके समय का मान इस प्रकार हैं - दिनमान में (या सूर्यास्त में सूर्योदय घटाकर) ५ पांच का भाग देकर सूर्योदय में पहला भाग जोड़ने से प्रातःकाल का समय होता है, इसमें दूसरा भाग जोड़ने से संगवकाल का समय होता है, इसमें तीसरा भाग जोड़ने से मध्यान्ह काल का समय होता है, इसमें **चोथा भाग जोड़ने से अपरान्ह काल का समय होता है**, इसमें पांचवाँ भाग जोड़ने से सायंकाल का समय कहलाता है। **जब मुख्यकाल प्राप्त हो तो गौणकाल क्यों ? भ्रांतियों से बचना चाहिए।** - पं ग्यारसीलाल शर्मा, मुम्बई.

सर्व-उपयोगी (सर्व-जन-हिताय) ॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

३० मार्च से १२ अप्रेल तक, श्री चैत्र शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
सिंधारा	१	र	१६	००	१२	५१	रेव	२५	१६	१६	३३	ऐ	२८	२६	१७	४९	ब	१६	००	१२	५१	३०/४१	६/२७	६/४३	९	२९	३०	मेषे १६।३३	११।१५।१६।४४	५९।१६
गणगोर	२	सो	७	००	९	१३	अश्वि	१८	१६	१३	४४	वै	१८	११	१३	४२	कौ	७	००	९	१३	४५	२५	४३	१०	१	३१	मेषे	११।१६।१६।००	५९।१३
क्षयः	३	सो	५८	१९	२९	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मुसल	४	मं	५०	२६	२६	३५	भर	११	४४	११	०६	वि	५९	२०/०६	९/३०	४४/०३	व	२४	१७	१६	०७	४९	२४	४४	११	२	१	वृषे १६।२९	११।१७।१५।१३	५९।११
सिद्धि	५	बु	४३	३९	२३	५१	कृति	६	०२	८	४८	आ	५०	५३	२६	४५	ब	१६	५४	१३	०९	५३	२३	४५	१२	३	२	वृषे	११।१८।१४।२४	५९।०९
उत्पात	६	गु	३८	१९	२१	४२	रोहि	१/५८	३४/३३	७/२९	००/४७	सौ	४३	५२	२३	५५	कौ	१०	४९	१०	४२	५७	२२	४५	१३	४	३	मिथु. १८।१९	११।१९।१३।३३	५९।०७
पद्म	७	शु	३४	३८	२०	१२	आर्द्रा	५७	१८	२९	१६	शो	३८	१३	२१	३८	ग	६	१६	८	५१	३१/०१	२१	४६	१४	५	४	मिथु.	११।२०।१२।४०	५९।०४
छत्र	८	श	३२	४४	१९	२६	पुन	५७	५०	२९	२८	अ	३४	००	१९	५६	वि	३	२९	७	४३	०५	२०	४६	१५	६	५	कर्के २३।२१	११।२१।११।४४	५९।०२
रामनव	९	र	३२	४२	१९	२४	पुष्य	...	...	...	...	सु	३१	१४	१८	४८	बा	२	३१	७	१९	०९	१९	४७	१६	७	६	कर्के	११।२२।१०।४६	५९।००
धाता	१०	सो	३४	२२	२०	०३	पुष्य	०	११	६	२२	धृ	२९	५०	१८	१४	तै	३	२१	७	३८	१४	१८	४७	१७	८	७	कर्के	११।२३।०९।४५	५८।५७
ए.व्र.	११	मं	३७	३३	२१	१८	श्ले	४	०४	७	५४	शू	२९	३६	१८	०७	व	५	४८	८	३६	१८	१७	४८	१८	९	८	सिंहे ७।५४	११।२४।०८।४३	५८।५५
चर	१२	बु	४१	५५	२३	०१	मघा	९	१७	९	५८	गं	३०	१८	१८	२३	ब	९	३७	१०	०६	२२	१६	४८	१९	१०	९	सिंहे	११।२५।०७।३८	५८।५३
प्र.व्र.	१३	गु	४७	१०	२५	०६	पूफा	१५	२९	१२	२६	वृ	३१	४५	१८	५७	कौ	१४	२९	१२	०२	२६	१४	४९	२०	११	१०	कन्या १९।०६	११।२६।०६।३०	५८।५०
शुभ	१४	शु	५३	००	२७	२५	उफा	२२	२३	१५	११	ध्रु	३३	४०	१९	४२	ग	२०	०३	१४	१४	३०	१३	४९	२१	१२	११	कन्या	११।२७।०५।२१	५८।४८
पूर्णिमा	१५	श	५९	१०	२९	५२	हस्त	२९	४२	१८	०५	व्या	३५	५४	२०	३४	वि	२६	०५	१६	३८	३४	१२	५०	२२	१३	१२	कन्या	११।२८।०४।०९	५८।४६

केतकी अहर्गणः ५१०७ वसंतर्त्तू रविरुत्तरे, मार्च-अप्रेल २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
चंद्रदर्शनम् (मु.३०), पंचक समाप्तिः १६।३३, नवरात्रारम्भः, B
मन्वादि, मत्स्योत्पत्तिः, गणगौरी पूजा, मनोरथ तृतीया व्र., A
[A सौभाग्य शयन व्र.,शिवशक्ति पू., अरुन्धती व्रतं पूजनञ्च, D
भ.१६।०७उ.२६।३५या.,अप्रेल ४ ता.३० [E बुधः १४।२३, मृगे-१ I
कल्पादि,डोलोत्सवः,कर्के भौमः २१।४२ [G(व) पूभा.शुक्रः२०।०९
स्कन्द षष्ठी व्र.,(व) पूभा.बुधः १६।११, बुधोदयः पूर्वस्याम् १२।५०
भ. २०।१२ उ. [B घटस्था., ध्वजारो., आरोग्य १, विद्या १ , F
भ.७।४३ या., भवान्युत्पत्तिः, अशोककलिका प्राशनं [I गुरुः ६।१४
श्रीरामनवमी [D सव्वाल १०,रेव.रविः१३।१४ (सौरः १६।०९), G
मार्गी बुधः२५।२५,शनेरुदयः पूर्वस्याम् २८।१८ [H अश्वमेधयज्ञफलं
भ.८।३६ उ. २१।१८ या., कामदा ११ व्र., लक्ष्मीकान्त दोलोत्सवः
हरि दमनोत्सवः [C बैशाख स्नानारंभः, चित्रान्नदानं भक्षणञ्च, H
प्रदोषः,जैन महावीर जयंती [F कल्पादि,श्रृंगार(सिंधारा) देशाचारे
भ. २७।२५ उ., शिव पूजन विशेषः, पुष्ये भौमः २७।२४, उभा. E
भ. १६।३८ या., मन्वादि, श्री हनुमज्जयंती, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, C

अयनांशाः २४।११।३४

पं.५१ चै.शु. १ र. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	२	११	१	११	११	११	५
१५	२८	०५	२१	०४	००	०२	०२
२३	४९	४८	२३	०९	०२	३६	३६
५९	०४	३०	०३	००	५४	२६	२६
५९	१९	४२	९	३१	७	३	३
१४	००	१५	०८	५१	१३	११	११
उभा	पुन	उभा	रो	उभा	पूभा	पूभा	उफा
४	३	१व	४	१व	४	४	२



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

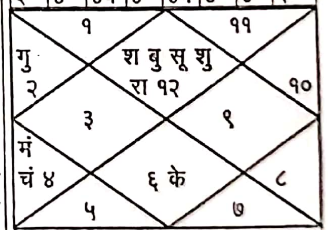
ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	मार्च	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः
११।१५।२४।०१	१ र	३०	७।०९	८।४५	१०।४१	१२।५६	३।१६	५।३३	७।४९	१०।०८	१२।२७	२।३१	४।१४	५।४३
११।१६।२३।१७	२ चं	३१	७।०५	८।४१	१०।३८	१२।५२	३।१२	५।२९	७।४५	१०।०४	१२।२३	२।२७	४।१०	५।३९
११।१७।२२।३०	४ मं	१	७।०१	८।३७	१०।३४	१२।४८	३।०८	५।२५	७।४१	१०।००	१२।१९	२।२३	४।०७	५।३५
११।१८।२१।४१	५ बु	२	६।५७	८।३३	१०।३०	१२।४४	३।०५	५।२१	७।३७	९।५६	१२।१५	२।१९	४।०३	५।३१
११।१९।२०।४९	६ गु	३	६।५३	८।२९	१०।२६	१२।४०	३।०१	५।१७	७।३३	९।५२	१२।११	२।१५	३।५९	५।२७
११।२०।१९।५६	७ शु	४	६।४९	८।२५	१०।२२	१२।३७	२।५७	५।१३	७।२९	९।४८	१२।०७	२।११	३।५५	५।२३
११।२१।१९।००	८ श	५	६।४५	८।२२	१०।१८	१२।३३	२।५३	५।१०	७।२५	९।४४	१२।०३	२।०८	३।५१	५।१९
११।२२।१८।०१	९ र	६	६।४१	८।१८	१०।१४	१२।२९	२।४९	५।०६	७।२१	९।४१	११।५९	२।०४	३।४७	५।१५
११।२३।१७।००	१० चं	७	६।३७	८।१४	१०।१०	१२।२५	२।४५	५।०२	७।१७	९।३७	११।५५	२।००	३।४३	५।११
११।२४।१५।५७	११ मं	८	६।३३	८।१०	१०।०६	१२।२१	२।४१	४।५८	७।१४	९।३३	११।५१	१।५६	३।३९	५।०७
११।२५।१४।५२	१२ बु	९	६।३०	८।०६	१०।०२	१२।१७	२।३७	४।५४	७।१०	९।२९	११।४७	१।५२	३।३५	५।०४
११।२६।१३।४५	१३ गु	१०	६।२६	८।०२	९।५८	१२।१३	२।३३	४।५०	७।०६	९।२५	११।४३	१।४८	३।३१	५।००
११।२७।१२।३५	१४ शु	११	६।२२	७।५८	९।५४	१२।०९	२।२९	४।४६	७।०२	९।२१	११।३९	१।४४	३।२७	४।५६
११।२८।११।२३	१५ श	१२	६।१८	७।५४	९।५०	१२।०५	२।२५	४।४२	६।५८	९।१७	११।३५	१।४०	३।२३	४।५२

मास फलम्

प्रतिपदा को रविवार होने से पवन अधिक चले और धान्य, वर्षा तथा फल कम हों। मास की शुक्ला तृतीया का क्षय होने से मूंग घी महंगें हों। पूर्णिमा हस्त युक्त होने से समर्घता हो। पूर्णिमा शनिवार युक्त होने से दुर्भिक्ष हो। पूर्वाभाद्रपद में शुक्र होने से प्रजा में सुखों की वृद्धि और सुभिक्ष हो। पूर्वभाद्रपदा में स्थित शुक्र जुआड़ी लोग, कुरु तथा पञ्जाब देश में स्थित जनों को पीड़ित और वृष्टि करता है। पूर्वाभाद्रपद में बुध होने से कहीं दुर्भिक्ष हो और कहीं क्षेम तथा आरोग्यता हो। पूर्वाभाद्रपद में बुध होने से क्षुधा, शस्त्र, चोर और रोगों की वृद्धि हो। मीन राशि में बुध का उदय होने से अति वृष्टि से दुर्भिक्ष हो। मीन का शनि उदय होने से मनुष्यों में गरीबी बढे और धान्य का अभाव हो।

अयनांशाः २४।११।३५

पं.५२ चै.शु. ९ र. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	३	११	१	११	११	११	५
२२	०१	०२	२२	०१	००	०२	०२
१७	०९	४१	२९	१०	५२	१४	१४
५२	३४	२०	२२	०८	५५	११	११
५९	२१	४	९	१६	७	३	३
००	२५	२५	५४	१३	०३	१०	१०
रे	पुन	पूभा	रो	पूभा	पूभा	पूभा	उफा
२	४	४व	४	४व	४	४	२



नक्षत्र युतिः- सूर्य उभा. ३१ मार्च तः रेवत्यां। मंगल पुनर्वसौ ११ अप्रे. तः पुष्ये। बुध उभा. ३ अप्रे. तः (व) पूभा. ११ अप्रे. तः उभा.। गुरु रोहि. ११ अप्रे. तः मृगे। शुक्र उभा.३१ मार्च तः (व) पूभा.। शनि पूभा.। राहु पूभा.। केतु उफा.।
विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य हस्ते ३१ मार्च तः उफा.। मंगल मूले ११ अप्रे. तः ज्येष्ठा.। बुध हस्ते ३ अप्रे. तः चित्रा.११ अप्रे. तः हस्ते। गुरु अभि.११ अप्रे. तः उषा.। शुक्र हस्ते ३१ मार्च तः चित्रा.। शनि चित्रा.। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां।
अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य हस्ते ३१ मार्च तः उफा.। मंगल मूले ११ अप्रे. तः ज्येष्ठा.। बुध हस्ते ३ अप्रे. तः चित्रा.११ अप्रे. तः हस्ते। गुरु अभि. ११ अप्रे. तः उषा.। शुक्र हस्ते ३१ मार्च तः चित्रा.। शनि चित्रा.। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां।

१३ अप्रेल से २७ अप्रेल तक, श्री वैशाख कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक | वसंतर्तू रविरुत्तरे चैत्रकृष्णेति गुर्जराः, अप्रेल २०२५

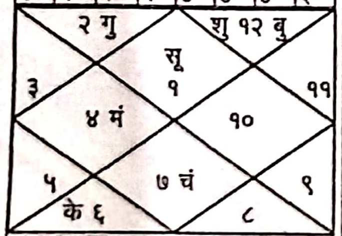
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
पद्म	१	र	...	...	...	...	चित्रा	३७	१५	२१	०५	ह	३८	१७	२१	३०	बा	३२	२०	१९	०७	३१ ३७	६ ११	६ ५०	२३	१४	१३	तुला. ७।३५	११।२९।१०।५५	५८।४४	मेषे अश्वि. रविः २६।३३ (सौरः २९।३०), मार्गी शुक्रः १८।०५
छत्र	१	सो	५	३२	८	२३	स्वा	४४	५०	२४	०६	व	४०	४३	२२	२८	कौ	५	३२	८	२३	४१	१०	५१	२४	१५	१४	तुला.	०।००।०१।३९	५८।४१	स्वातौ रे. ७ ॥IIऽIऽऽ॥ रात्रौ लग्न ८
श्रीवत्स	२	मं	११	४८	१०	५२	विशा	५२	१६	२७	०४	सि	४३	०३	२३	२२	ग	११	४८	१०	५२	४५	०९	५१	२५	१६	१५	वृश्चि. २०।२०	०।०१।००।२०	५८।३९	भ. २४।०५ उ.
च.व्र.	३	बु	१७	४७	१३	१५	अनु	५९	१५	२९	५०	व्य	४५	०३	२४	०९	वि	१७	४७	१३	१५	४९	०८	५२	२६	१७	१६	वृश्चि.	०।०१।५८।५९	५८।३७	भ. १३।१५ या., चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २२।०७
काल	४	गु	२३	१२	१५	२४	ज्ये	...	...	...	...	व	४६	३१	२४	४३	बा	२३	१२	१५	२४	५३	०७	५२	२७	१८	१७	वृश्चि.	०।०२।५७।३६	५८।३५	अनुसूया जयंती
चर	५	शु	२७	४१	१७	११	ज्ये	५	३१	८	१९	प	४७	११	२४	५९	तै	२७	४१	१७	११	५७	०६	५३	२८	१९	१८	धनु. ८।१९	०।०३।५६।१०	५८।३२	[A रेव. बुधः १८।१४, अगस्त्यास्तः २०।१४
गद	६	श	३०	५४	१८	२७	मूल	१०	३९	१०	२१	शि	४६	५०	२४	४९	व	३०	५४	१८	२७	३२ ०१	०५	५४	२९	२०	१९	धनु.	०।०४।५४।४३	५८।३०	भ. १८।२७ उ., सायन वृषे भानुः २५।०१
शुभ	७	र	३२	३४	१९	०६	पूषा	१४	२१	११	४९	सि	४५	१३	२४	०९	वि	१	५७	६	५१	०५	०४	५४	३०	२१	२०	मक. १८।०५	०।०५।५३।१३	५८।२८	भ. ६।५१ या.
मृत्यु	८	सो	३२	२८	१९	०३	उषा	१६	२५	१२	३७	सा	४२	१३	२२	५६	बा	२	४५	७	०९	०८	०३	५५	१	२२	२१	मक.	०।०६।५१।४१	५८।२६	बूढो बास्योड़ो, भा. बैशाखारंभः
लुम्बक	९	मं	३०	३४	१८	१६	श्रव	१६	४२	१२	४३	शु	३७	४५	२१	०८	तै	१	४६	६	४५	१२	०२	५५	२	२३	२२	कुंभे २४।३०	०।०७।५०।०७	५८।२४	भ. २९।३६ उ., पंचक प्रारम्भः २४।३०
मित्र	१०	बु	२६	४९	१६	४५	धनि	१५	१०	१२	०६	शु	३१	५१	१८	४६	वि	२६	४९	१६	४५	१६	०१	५६	३	२४	२३	कुंभे	०।०८।४८।३०	५८।२१	भ. १६।४५ या.
ए.व्र.	११	गु	२१	२३	१४	३४	शत	११	५६	१०	४७	ब्र	२४	३४	१५	५०	बा	२१	२३	१४	३४	२०	०१	५६	४	२५	२४	मीने २७।२३	०।०९।४६।५२	५८।१९	वरुथिनि ११ व्र.
प्र.व्र.	१२	शु	१४	२७	११	४६	पूभा	७	०९	८	५१	ऐ	१६	०५	१२	२६	तै	१४	२७	११	४६	२३	००	५७	५	२६	२५	मीने	०।१०।४५।११	५८।१७	प्रदोषः
धूम्र	१३	श	६	१९	८	३०	उभा	१	०८	६	२६	वै	६	३६	८	३७	व	६	१९	८	३०	२७	५६	५७	६	२७	२६	मेषे २७।३८	०।११।४३।२८	५८।१५	भ. ८।३० उ: १८।४३ या., पंचक समाप्तिः २७।३८, B
क्षयः	१४	श	५७	१५	२८	५३	रेव	५४	०९	२७	३८	वि	५६	२३	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[B मासिकशिवरात्री व्र., उभा. शुक्रः ११।५४
अमाव.	३०	रं	४७	४७	२५	०५	अश्वि	४६	४३	२४	३९	प्री	४५	४६	२४	१६	च	२२	३४	१५	००	३०	५८	५८	७	२८	२७	मेषे	०।१२।४१।४३	५८।१३	देवपितृकार्येऽमा., भर. रविः १८।२३ (सौरः २१।४४), A

अयनांशाः २४।११।३६

॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

पं. १ बै.कृ. १ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	१	११	११	११	५
००	०४	०४	२३	००	०१	०१	०१
०८	०९	२९	५१	१०	४८	४८	४८
५२	२३	४१	३४	३१	२७	४७	४७
५८	२३	३३	१०	३	६	३	३
४३	४५	५५	४३	३६	४८	११	११
अ	पु	उभा	मृ	पूभा	पूभा	पूभा	उफा
१	१	१	१	४	४	४	२



ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	अप्रे.	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
११।२९।१०।०८	१ र	१३	६।१४	७।५०	९।४६	१२।०१	२।२१	४।३८	६।५४	९।१३	११।३२	१।३६	३।१९	४।४८
००।००।०८।५२	१ चं	१४	६।१०	७।४६	९।४२	११।५७	२।१७	४।३४	६।५०	९।०९	११।२८	१।३२	३।१५	४।४४
००।०१।०७।३३	२ मं	१५	६।०६	७।४२	९।३८	११।५३	२।१३	४।३०	६।४६	९।०५	११।२४	१।२८	३।११	४।४०
००।०२।०६।१२	३ बु	१६	६।०२	७।३८	९।३४	११।४९	२।०९	४।२६	६।४२	९।०१	११।२०	१।२४	३।०७	४।३६
००।०३।०४।४८	४ गु	१७	५।५८	७।३४	९।३१	११।४५	२।०५	४।२२	६।३८	८।५७	११।१६	१।२०	३।०३	४।३२
००।०४।०३।२२	५ शु	१८	५।५४	७।३०	९।२७	११।४१	२।०१	४।१८	६।३४	८।५३	११।१२	१।१६	३।००	४।२८
००।०५।०१।५५	६ श	१९	५।५०	७।२६	९।२३	११।३७	१।५८	४।१४	६।३०	८।४९	११।०८	१।१२	२।५६	४।२४
००।०६।००।२४	७ र	२०	५।४६	७।२२	९।१९	११।३४	१।५४	४।१०	६।२६	८।४५	११।०४	१।०८	२।५२	४।२०
००।०६।५८।५२	८ चं	२१	५।४२	७।१९	९।१५	११।३०	१।५०	४।०६	६।२२	८।४१	११।००	१।०५	२।४८	४।१६
००।०७।५७।१८	९ मं	२२	५।३८	७।१५	९।११	११।२६	१।४६	४।०३	६।१८	८।३८	१०।५६	१।०१	२।४४	४।१२
००।०८।५५।४१	१० बु	२३	५।३४	७।११	९।०७	११।२२	१।४२	३।५९	६।१४	८।३४	१०।५२	१२।५७	२।४०	४।०८
००।०९।५४।०२	११ गु	२४	५।३०	७।०७	९।०३	११।१८	१।३८	३।५५	६।११	८।३०	१०।४८	१२।५३	२।३६	४।०४
००।१०।५२।२१	१२ शु	२५	५।२७	७।०३	८।५९	११।१४	१।३४	३।५१	६।०७	८।२६	१०।४४	१२।४९	२।३२	४।००
००।११।५०।३८	१३ श	२६	५।२३	६।५९	८।५५	११।१०	१।३०	३।४७	६।०३	८।२२	१०।४०	१२।४५	२।२८	३।५७
००।१२।४८।५३	३० र	२७	५।१९	६।५५	८।५१	११।०६	१।२६	३।४३	५।५९	८।१८	१०।३६	१२।४१	२।२४	३।५३

संक्रांति फलम्

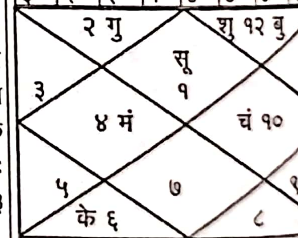
ता. १३ अप्रेल २०२५

बैशा. कृ. १ रवौ मेषेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. २६।३३ वारात् ३ नक्षत्रात् ४ वारनाम घोरा शूद्रान् सुखदा नक्षत्रनाम महोदरी चोरान् सुखदा अपर रात्रि ३ प्रहर व्यापिनी नटान् हन्ति, पूर्वे गमनमाग्नेयां दृष्टिः कौलवकरणे प्रविष्टा महर्घफलं सिंहवाहनं वृषभोपवाहनं कष्टकारक नीलवस्त्रं खड्गायुधं ताम्रपात्रं मिष्ठान्नभक्षणं रक्तचंदनलेपनं सर्पजातिः वकुलपुष्पं मोतीभूषणं हरित्कंचुकी गतालकावस्था (उभी) मु. १५ धान्यभावे महर्घता वत्स पश्चिमा. राहु दक्षिणे मूलं पाताले विवाहस्तंभो नैऋत्यां शुक्रोदयः पूर्वस्याम् । पुण्यकालः (स्टै.) २०।३३ से चंद्रे ८।३३ तक । (दान- मेष) ।

अयनांशाः २४।११।३७

पं. २ बै.कृ. ८ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	१	११	११	११	५
०६	०७	०९	२५	०१	०२	०१	०१
५९	०१	४०	०८	२२	३५	२६	२६
१६	०१	२५	२७	२१	१३	३२	३२
५८	२५	५६	११	१८	६	३	३
३०	२९	५८	२०	३४	३१	११	११
अ	पु	उभा	मृ	पूभा	पूभा	पूभा	उफा
३	२	२	१	४	४	४	२



नक्षत्र युतिः- सूर्य रेवत्यां १३ अप्रे. तः अश्वि. २७ अप्रे. तः भर. । मंगल पुष्ये । बुध उभा. २७ अप्रे. तः रेवत्यां । गुरु मृगे । शुक्र पूभा. २६ अप्रे. तः उभा. । शनि पूभा. । राहु पूभा. । केतु उफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य उफा. १३ अप्रे. तः पूफा. २७ अप्रे. तः अनुरा.। मंगल ज्येष्ठा.। बुध हस्ते २७ अप्रे. तः उफा. । गुरु उषा. । शुक्र चित्रा. २६ अप्रे. तः हस्ते । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य उफा. १३ अप्रे. तः पूफा. २७ अप्रे. तः मघा. । मंगल ज्येष्ठा.। बुध हस्ते २७ अप्रे. तः उफा. । गुरु उषा. । शुक्र चित्रा. २६ अप्रे. तः हस्ते । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

२८ अप्रेल से १२ मई तक, श्री वैशाख शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

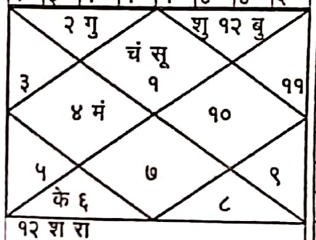
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
चर	१	सो	३८	१५	२१	१५	भर	३९	१३	२१	३८	आ	३५	०७	२०	००	किं	१३	००	११	०९	३२/३४	५/५७	६/५९	८	२९	२८	वृषे २६।५४	०।१३।३९।५६	५८।११
गद	२	मं	२९	०७	१७	३५	कृति	३२	०८	१८	४७	सौ	२४	४७	१५	५१	बा	३	३७	७	२३	३८	५६	५९	९	३०	२९	वृषे	०।१४।३८।०७	५८।०९
अक्षया	३	बु	२०	५०	१४	१५	रोहि	२५	५५	१६	१७	शो	१५	०८	११	५८	ग	२०	५०	१४	१५	४१	५५	७/००	१०	१	३०	मिथु. २७।१४	०।१५।३६।१६	५८।०७
मृत्यु	४	गु	१३	४९	११	२६	मृग	२१	०२	१४	१९	अ	६/५९	२९/०८	८/२६	३०/३४	वि	१३	४९	११	२६	४५	५४	००	११	२	१	मिथु.	०।१६।३४।२३	५८।०५
पद्म	५	शु	८	२७	९	१६	आर्द्रा	१७	५०	१३	०२	धृ	५३	२२	२७	१४	बा	८	२७	९	१६	४८	५४	०१	१२	३	२	मिथु.	०।१७।३२।२८	५८।०३
छत्र	६	श	५	०१	७	५३	पुन	१६	३७	१२	३१	शू	४९	१६	२५	३५	तै	५	०१	७	५३	५१	५३	०१	१३	४	३	कर्क ६।३४	०।१८।३०।३०	५८।०१
श्रीवत्स	७	र	३	४०	७	२०	पुष्य	१७	२८	१२	५१	गं	४६	५२	२४	३७	व	३	४०	७	२०	५५	५२	०२	१४	५	४	कर्क	०।१९।२८।३१	५७।५९
सौम्य	८	सो	४	२७	७	३८	श्ले	२०	२१	१४	००	वृ	४६	०१	२४	१६	ब	४	२७	७	३८	५८	५१	०३	१५	६	५	सिंहे १४।००	०।२०।२६।३०	५७।५७
काल	९	मं	७	०८	८	४२	मघा	२५	०३	१५	५२	ध्रु	४६	३१	२४	२७	कौ	७	०८	८	४२	३३/०१	५१	०३	१६	७	६	सिंहे	०।२१।२४।२६	५७।५५
सुस्थिर	१०	बु	११	२८	१०	२५	पूफा	३१	११	१८	१८	व्या	४८	०१	२५	०२	ग	११	२८	१०	२५	०५	५०	०४	१७	८	७	कन्या २४।५९	०।२२।२२।२१	५७।५३
ए.व्र.	११	गु	१६	५५	१२	३५	उफा	३८	१६	२१	०८	ह	५०	१३	२५	५४	वि	१६	५५	१२	३५	०८	४९	०४	१८	९	८	कन्या	०।२३।२०।१४	५७।५१
प्र.व्र.	१२	शु	२३	०३	१५	०२	हस्त	४५	५२	२४	०९	व	५२	४५	२६	५५	बा	२३	०३	१५	०२	११	४९	०५	१९	१०	९	कन्या	०।२४।१८।०५	५७।४९
काण	१३	श	२९	२४	१७	३३	चित्रा	५३	३५	२७	१४	सि	५५	२१	२७	५६	तै	२९	२४	१७	३३	१४	४८	०६	२०	११	१०	तुला. १३।४२	०।२५।१५।५४	५७।४७
लुम्बक	१४	र	३५	४०	२०	०३	स्वा	...	...	...	...	व्य	५७	४७	२८	५४	ग	२	३५	६	४९	१७	४७	०६	२१	१२	११	तुला.	०।२६।१३।४२	५७।४६
पूर्णिमा	१५	सो	४१	३६	२२	२५	स्वा	१	०८	६	१४	व	५९	५६	२९	४५	वि	८	४२	९	१५	२०	४७	०७	२२	१३	१२	वृश्चि. २६।२३	०।२७।११।२७	५७।४४

केतकी अहर्गणः ५१३६ ग्रीष्मर्तू रविरुत्तरे, अप्रेल-मई २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
मृगे-२ गुरुः २७।३२, उमा.-१ शनिः ६।२५
रोहि. रे.९ IIIIISIIII रात्रौ लग्न ८, ११, चंद्रदर्शनम् (मु.४५), B
भ. २४।४६ उ., युगादि, कल्पादि, अक्षय तृतीया, जिल्काद ११
भ. ११।२६ या., मई ५ ता. ३१
श्री आद्यशंकराचार्य जयंती, श्री रामानुज जयंती
गंगोत्पत्ति
भ. ७।२० उ. १९।२३ या.
मघा. रे. ८ SIIIIIIISI रात्रौ लग्न गोधूलि(७), ८, ११, सीता ९
[A बैशाखस्नानपूर्तिः, धर्म प्रीत्यर्थं जलकुंभदानं, श्लेषा. C
भ. २३।२७ उ., टैगोर जयन्ती, मेषे अश्वि. बुधः ६।२९
भ. १२।३५ या., मोहिनी ११ व्र.
प्रदोषः [C भौमः ७।०५
[B शिवाजी जयंती, परशुराम जयंती
भ. २०।०३ उ., नृसिंह १४, कृत्ति. रविः १२।३४ (सौरः १६।४३)
भ. ९।१५ या., कूर्मोत्पत्तिः, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, A

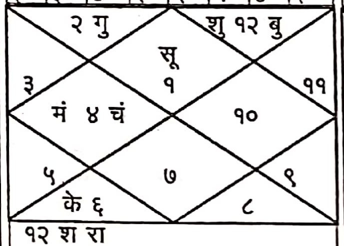
अयनांशाः २४।११।३८ ॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥ अयनांशाः २४।११।३९ अयनांशाः २४।११।४१

पं. ३ बै.शु. १ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	१	११	११	११	५
१३	१०	१७	२६	०४	०३	०१	०१
४८	०४	१५	२९	०९	१९	०४	०४
०७	०३	३२	२१	२४	५३	१७	१७
५८	२६	७५	११	३०	६	३	३
१७	५९	१५	५०	२०	११	१०	१०
भ	पु	रे	मृ	उमा	पूमा	पूमा	उफा
१	३	१	१	१	४	४	२

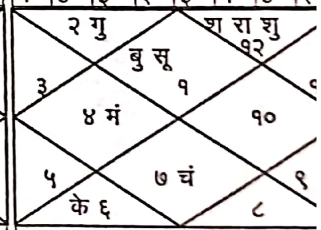


ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अप्रे.	मेष प्रातः	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला सायं	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
००।१३।४७।०५	१ चं	२८	५।१५	६।५१	८।४७	११।०२	१।२२	३।३९	५।५५	८।१४	१०।३२	१२।३७	२।२०	३।४९
००।१४।४५।१६	२ मं	२९	५।११	६।४७	८।४३	१०।५८	१।१८	३।३५	५।५१	८।१०	१०।२८	१२।३३	२।१६	३।४५
००।१५।४३।२५	३ बु	३०	५।०७	६।४३	८।३९	१०।५४	१।१४	३।३१	५।४७	८।०६	१०।२५	१२।२९	२।१२	३।४१
००।१६।४१।३१	४ गु	१	५।०३	६।३९	८।३५	१०।५०	१।१०	३।२७	५।४३	८।०२	१०।२१	१२।२५	२।०८	३।३७
००।१७।३९।३५	५ शु	२	४।५९	६।३५	८।३१	१०।४६	१।०६	३।२३	५।३९	७।५८	१०।१७	१२।२१	२।०४	३।३३
००।१८।३७।३८	६ श	३	४।५५	६।३१	८।२७	१०।४२	१।०२	३।१९	५।३५	७।५४	१०।१३	१२।१७	२।००	३।२९
००।१९।३५।३८	७ र	४	४।५१	६।२७	८।२४	१०।३८	१२।५८	३।१५	५।३१	७।५०	१०।०९	१२।१३	१।५७	३।२५
००।२०।३३।३७	८ चं	५	४।४७	६।२३	८।२०	१०।३४	१२।५४	३।११	५।२७	७।४६	१०।०५	१२।०९	१।५३	३।२१
००।२१।३१।३३	९ मं	६	४।४३	६।१९	८।१६	१०।३०	१२।५१	३।०७	५।२३	७।४२	१०।०१	१२।०५	१।४९	३।१७
००।२२।२९।२८	१० बु	७	४।३९	६।१५	८।१२	१०।२७	१२।४७	३।०३	५।१९	७।३८	९।५७	१२।०१	१।४५	३।१३
००।२३।२७।२०	११ गु	८	४।३५	६।१२	८।०८	१०।२३	१२।४३	३।००	५।१५	७।३४	९।५३	११।५८	१।४१	३।०९
००।२४।२५।११	१२ शु	९	४।३१	६।०८	८।०४	१०।१९	१२।३९	२।५६	५।११	७।३१	९।४९	११।५४	१।३७	३।०५
००।२५।२३।००	१३ श	१०	४।२७	६।०४	८।००	१०।१५	१२।३५	२।५२	५।०७	७।२७	९।४५	११।५०	१।३३	३।०१
००।२६।२०।४७	१४ र	११	४।२३	६।००	७।५६	१०।११	१२।३१	२।४८	५।०४	७।२३	९।४१	११।४६	१।२९	२।५७
००।२७।१८।३२	१५ चं	१२	४।२०	५।५६	७।५२	१०।०७	१२।२७	२।४४	५।००	७।१९	९।३७	११।४२	१।२५	२।५३

पं. ४ बै.शु. ८ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	१	११	११	११	५
२०	१३	२६	२७	०८	०४	००	००
३५	१६	५२	५३	१०	०२	४२	४२
३१	५६	०८	४४	०४	०७	०३	०३
५८	२८	९१	१२	३९	५	३	३
०५	१७	३३	१९	१७	४९	११	११
भ	पु	रे	मृ	उमा	उमा	पूमा	उफा
३	३	४	२	२	१	४	२



पं. ५ बै.शु.१५ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	०	१	११	११	११	५
२७	१६	०८	२९	१३	०४	००	००
२१	३८	१७	२१	०६	४१	१९	१९
३४	२४	३०	०५	२२	३३	४८	४८
५७	२९	१०६	१२	४६	५	३	३
५४	२५	०२	४२	०२	२३	११	११
कृ	पु	अ	मृ	उमा	उमा	पूमा	उफा
१	४	३	२	३	१	४	२



नक्षत्र युतिः- सूर्य भर. ११ मई तः कृति. । मंगल पुष्ये १२ मई तः श्लेषा. । बुध रेवत्यां ७ मई तः अश्वि. । गुरु मृगे । शुक्र उभा. । शनि पूभा. २८ अप्रे. तः उभा. । राहु पूभा. । केतु उफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य अनुरा. ११ मई तः विशा. । मंगल ज्येष्ठा. १२ मई तः धनि. । बुध उफा. ७ मई तः पूफा. । गुरु उषा. । शुक्र हस्ते । शनि चित्रा. २८ अप्रे. तः हस्ते । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य मघा. ११ मई तः श्रवणे । मंगल ज्येष्ठा. १२ मई तः अनुरा. । बुध उफा. ७ मई तः पूफा. । गुरु उषा. । शुक्र हस्ते । शनि चित्रा. २८ अप्रे. तः हस्ते । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

५

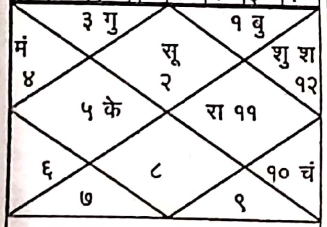
१३ मई से २७ मई तक, श्री ज्येष्ठ कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक — ग्रीष्मर्त्तू रविरुत्तरे वैशाखकृष्णेति गुर्जराः, मई २०२५

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
श्रीवत्स	१	मं	४७	०२	२४	३५	विशा	८	१६	९	०४	प	...	...	...	...	बा	१४	२४	११	३२	३३/२३	५/४६	७/०७	२३	१४	१३	वृश्चि.	०।२८।०९।११	५७।४२	अनुरा. रे.६ ॥।ऽऽऽऽ॥ रात्रौ लग्न ११,बुधास्तः पूर्वस्याम् २६।५२
सौम्य	२	बु	५१	५१	२६	३०	अनु	१४	५३	११	४३	प	१	४२	६	२६	तै	१९	३३	१३	३४	२६	४५	०८	२४	१५	१४	वृश्चि.	०।२९।०६।५३	५७।४०	नारद जयंती, वीणादानं, वृषे रविः २३।२७ (सौरः २७।५१), C
काल	३	गु	५५	५१	२८	०५	ज्ये	२०	४९	१४	०५	शि	२	५६	६	५५	व	२३	५७	१५	२०	२९	४५	०८	२५	१६	१५	धनु. १४।०५	१।००।०४।३३	५७।३८	भ. १५।२० उ. २८।०५ या., मिथुने मृगे-३ गुरुः ७।०४
च.व्र.	४	शु	५८	५३	२९	१८	मूल	२५	५५	१६	०६	सि	३	३३	७	०९	ब	२७	३०	१६	४४	३२	४४	०९	२६	१७	१६	धनु.	१।०१।०२।१२	५७।३७	चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २२।४६, रेव. शुक्रः १७।४९
मातङ्ग	५	श	...	...	...	...	पूषा	३०	०१	१७	४४	सा	३	२३	७	०५	कौ	३०	००	१७	४४	३४	४४	१०	२७	१८	१७	मक. २४।०४	१।०१।५९।४८	५७।३५	उषा. रे. ७ ।।।ऽ।ऽ।ऽ॥ रात्रौ लग्न गोधूलि(८), ११
अमृत	५	र	०	४८	६	०३	उषा	३२	५५	१८	५३	शु	२	२१	६	४०	तै	०	४८	६	०३	३७	४३	१०	२८	१९	१८	मक.	१।०२।५७।२४	५७।३४	कुंभे पूभा.-३ राहुः ११।१७, सिंहे उफा.-१ केतुः ११।१७
सिद्धि	६	सो	१	२४	६	१६	श्रव	३४	२८	१९	३०	शु	०/५७	१८/०४	५/२८	५०/३३	व	१	२४	६	१६	४०	४३	११	२९	२०	१९	मक.	१।०३।५४।५७	५७।३२	भ. ६।१६ उ. १८।१० या.
उत्पात	७	मं	०	३३	५	५६	धनि	३४	३५	१९	३२	ऐ	५२	४१	२६	४७	ब	०	३३	५	५६	४२	४२	११	३०	२१	२०	कुंभे ७।३६	१।०४।५२।२९	५७।३०	पंचक प्रारम्भः ७।३६, सायन मिथुने भानुः २४।०४
क्षयः	८	मं	५८	१२	२८	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A करिदिनं, श्री गंगादशाश्वमेधस्नान प्रा., रोहि. बुधः २८।४३
मानस	९	बु	५४	१९	२७	२५	शत	३३	१०	१८	५८	वै	४७	०४	२४	३२	तै	२६	२८	१६	१७	४५	४२	१२	३१	२२	२१	कुंभे	१।०५।४९।५९	५७।२९	कृत्ति. बुधः २१।४५ [D रोहि. रविः ८।४८ (सौरः १४।०८)
मुद्गर	१०	गु	४८	५७	२५	१६	पूभा	३०	१५	१७	४७	वि	४०	१३	२१	४७	व	२१	४९	१४	२५	४७	४१	१२	१	२३	२२	मीने १२।०८	१।०६।४७।२८	५७।२७	भ. १४।२५ उ. २५।१६ या., भा. ज्येष्ठारंभः
ए.व्र.	११	शु	४२	१३	२२	३४	उभा	२५	५५	१६	०३	प्री	३२	१३	१८	३४	ब	१५	४५	११	५९	५०	४१	१३	२	२४	२३	मीने	१।०७।४४।५५	५७।२६	अपरा ११ व्र., वृषे बुधः १२।३१ [C भर. बुधः २५।०६
प्र.व्र.	१२	श	३४	२२	१९	२६	रेव	२०	२३	१३	५०	आ	२३	१६	१४	५९	कौ	८	२५	९	०३	५२	४१	१३	३	२५	२४	मेषे १३।५०	१।०८।४२।२१	५७।२४	पंचक समाप्तिः १३।५०, प्रदोषः [B (मरु.)
आनन्द	१३	र	२५	४१	१५	५७	अश्वि	१३	५५	११	१४	सौ	१३	३३	११	०६	ग	०	०७	५	४३	५४	४०	१४	४	२६	२५	मेषे	१।०९।३९।४५	५७।२३	भ. १५।५७ उ. २६।०८ या., मासिकशिवरात्री व्र., D
चर	१४	सो	१६	३३	१२	१७	भर	६/५९	५४/४६	८/२९	२६/३४	शो	३/५३	२३/०७	७/२६	०१/५४	श	१६	३३	१२	१७	५६	४०	१५	५	२७	२६	वृषे १३।४३	१।१०।३७।०८	५७।२१	शनैश्चर जयन्ती, पितृकार्येऽमा., भाऊका ३०, वट सावित्री व्र. B
अमाव.	३०	मं	७	२३	८	३७	रोहि	५३	००	२६	५२	सु	४३	०२	२२	५३	ना	७	२३	८	३७	५८	४०	१५	६	२८	२७	वृषे	१।११।३४।३०	५७।२०	देवकार्येऽमा., बटपूजनम् मरुस्थले, भाऊका-करिदिन, A

अयनांशाः २४।११।४२ ॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

पं. ६ ज्ये.कृ. ६ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	०	२	११	११	१०	४
०४	२०	२१	००	१८	०५	२९	२९
०६	०७	१८	५०	४४	१७	५७	५७
२३	२४	५०	५५	४२	५३	३३	३३
५७	३०	११८	१३	५१	४	३	३
४४	२५	४९	०१	०८	५५	११	११
कृ	श्ले	भ	मृ	रे	उभा	पूभा	उफा
३	२	३	३	१	१	३	१



ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. मई	मेष रात्रौ	वृष प्रातः	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक सायँ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
००।२८।१६।१६	१ मं	१३	४।१६	५।५२	७।४८	१०।०३	१२।२३	२।४०	४।५६	७।१५	९।३३	११।३८	१।२१	२।५०
००।२९।१३।५७	२ बु	१४	४।१२	५।४८	७।४४	९।५९	१२।१९	२।३६	४।५२	७।११	९।२९	११।३४	१।१७	२।४६
०१।००।११।३७	३ गु	१५	४।०८	५।४४	७।४०	९।५५	१२।१५	२।३२	४।४८	७।०७	९।२५	११।३०	१।१३	२।४२
०१।०१।०९।१६	४ शु	१६	४।०४	५।४०	७।३६	९।५१	१२।११	२।२८	४।४४	७।०३	९।२१	११।२६	१।०९	२।३८
०१।०२।०६।५२	५ श	१७	४।००	५।३६	७।३२	९।४७	१२।०७	२।२४	४।४०	६।५९	९।१८	११।२२	१।०५	२।३४
०१।०३।०४।२७	५ र	१८	३।५६	५।३२	७।२८	९।४३	१२।०३	२।२०	४।३६	६।५५	९।१४	११।१८	१।०१	२।३०
०१।०४।०२।००	६ चं	१९	३।५२	५।२८	७।२४	९।३९	११।५९	२।१६	४।३२	६।५१	९।१०	११।१४	१२।५७	२।२६
०१।०४।५९।३२	७ मं	२०	३।४८	५।२४	७।२१	९।३५	११।५५	२।१२	४।२८	६।४७	९।०६	११।१०	१२।५३	२।२२
०१।०५।५७।०२	९ बु	२१	३।४४	५।२०	७।१७	९।३१	११।५१	२।०८	४।२४	६।४३	९।०२	११।०६	१२।५०	२।१८
०१।०६।५४।३०	१० गु	२२	३।४०	५।१६	७।१३	९।२७	११।४७	२।०४	४।२०	६।३९	८।५८	११।०२	१२।४६	२।१४
०१।०७।५१।५७	११ शु	२३	३।३६	५।१२	७।०९	९।२३	११।४४	२।००	४।१६	६।३५	८।५४	१०।५८	१२।४२	२।१०
०१।०८।४९।२३	१२ श	२४	३।३२	५।०८	७।०५	९।२०	११।४०	१।५६	४।१२	६।३१	८।५०	१०।५४	१२।३८	२।०६
०१।०९।४६।४७	१३ र	२५	३।२८	५।०५	७।०१	९।१६	११।३६	१।५३	४।०८	६।२७	८।४६	१०।५१	१२।३४	२।०२
०१।१०।४४।१०	१४ चं	२६	३।२४	५।०१	६।५७	९।१२	११।३२	१।४९	४।०४	६।२४	८।४२	१०।४७	१२।३०	१।५८
०१।११।४१।३१	३० मं	२७	३।२०	४।५७	६।५३	९।०८	११।२८	१।४५	४।००	६।२०	८।३८	१०।४३	१२।२६	१।५४

संक्रांति फलम्

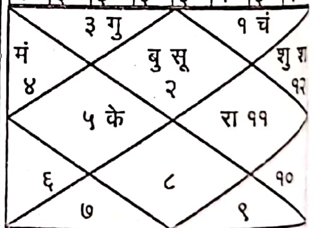
ता. १४ मई २०२५

ज्ये. कृ. २ बुधे वृषेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. २३।२७ वारात् ४ नक्षत्रात् ४ वारनाम मंदाकिनी नृपतीन् सुखदा नक्षत्रनाम राक्षसी चाण्डालान् सुखदा मध्यरात्रि २ प्रहर व्यापिनी राक्षसान् हन्ति, उत्तरे गमनं, ऐशान्यां दृष्टिः गरकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं हस्तीवाहनं खरोपवाहनं लक्ष्मीकारक रक्तवस्त्रं धनुष्यायुधं लोहपात्रं दुग्धभक्षणं गोरोचनलेपनं पशुजातिः विल्वपुष्पं मुकुटभूषणं श्वेतकंचुकी प्रौढावस्था (बैठी) मु. १५ धान्यभावे महर्घता वत्स उत्तरे राहु पश्चिमा. मूलं पाताले विवाहस्तंभो ऽग्निकोणे शुक्रोदयः पूर्वस्याम् । पुण्यकालः (स्टै.) १७।०३ से २३।२७ तक । (दान- गौ) ।

अयनांशाः २४।११।४३

पं. ७ ज्ये.कृ.१४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१	२	११	११	१०	४
१०	२३	०५	०२	२४	०५	२९	२९
५०	४३	४४	२२	५५	५०	३५	३५
०६	०४	५८	४९	०३	४७	१८	१८
५७	३१	१२९	१३	५५	४	३	३
३६	१९	३२	१६	०४	२४	११	११
रो	श्ले	कृ	मृ	रे	उभा	पूभा	उफा
१	३	३	३	३	१	३	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य कृति. २५ मई तः रोहि. । मंगल श्लेषा. । बुध अश्वि. १४ मई तः भर. २१ मई तः कृति. २७ मई तः रोहि. । गुरु मृगे । शुक्र उभा. १६ मई तः रेवत्यां । शनि उभा. । राहु पूभा. । केतु उफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य विशा.२५ मई तः अभि.। मंगल धनि.। बुध पूफा.१४ मई तः अनुरा.२१ मई तः विशा.२७ मई तः अभि.। गुरु उषा.। शुक्र हस्ते १६ मई तः उफा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य श्रवणे २५ मई तः अभि.। मंगल अनुरा.। बुध पूफा.१४ मई तः मघा. २१ मई तः श्रवणे २७ मई तः अभि.। गुरु उषा.। शुक्र हस्ते १६ मई तः उफा.। शनि हस्ते । राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां।

२८ मई से ११ जून तक, श्री ज्येष्ठ शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
क्षयः	१	मं	५८	३८	२९	०७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अमृत	२	बु	५०	४७	२५	५८	मृग	४७	०५	२४	३०	धृ	३३	३८	१९	०७	बा	२४	३४	१५	२९	३४/०१	५/३९	७/१६	७	२९	२८	मिथु. १३।३७	१।१२।३१।५०	५७।१९
काण	३	गु	४४	१५	२३	२१	आर्द्रा	४२	२९	२२	३९	शू	२५	१३	१५	४४	तै	१७	१९	१२	३५	०२	३९	१६	८	१	२९	मिथु.	१।१३।२९।०८	५७।१७
लुम्बक	४	शु	३९	२६	२१	२५	पुन	३९	३४	२१	२९	गं	१८	०६	१२	५३	व	११	३७	१०	१८	०४	३९	१७	९	२	३०	कर्के १५।४२	१।१४।२६।२६	५७।१६
मित्र	५	श	३६	३७	२०	१८	पुष्य	३८	३९	२१	०६	वृ	१२	३३	१०	४०	ब	७	४६	८	४५	०६	३९	१७	१०	३	३१	कर्के	१।१५।२३।४२	५७।१५
वज्र	६	र	३५	५८	२०	०२	श्ले	३९	५१	२१	३५	ध्रु	८	४२	९	०७	कौ	६	००	८	०३	०८	३८	१८	११	४	१	सिंहे २१।३५	१।१६।२०।५७	५७।१४
ध्वाङ्क्ष	७	सो	३७	२६	२०	३७	मघा	४३	०९	२२	५४	व्या	६	३५	८	१६	ग	६	२६	८	१३	१०	३८	१८	१२	५	२	सिंहे	१।१७।१८।११	५७।१३
धूम्र	८	मं	४०	५०	२१	५८	पूफा	४८	१८	२४	५७	ह	६	०५	८	०४	वि	८	५६	९	१२	११	३८	१९	१३	६	३	सिंहे	१।१८।१५।२३	५७।११
प्रवर्धमा	९	बु	४५	४७	२३	५७	उफा	५४	५२	२७	३५	व	६	५७	८	२५	बा	१३	१०	१०	५४	१३	३८	१९	१४	७	४	कन्या ७।३४	१।१९।१२।३५	५७।१०
गंगा	१०	गु	५१	४३	२६	१९	हस्त	…	…	…	…	सि	८	५१	९	१०	तै	१८	४०	१३	०६	१४	३८	१९	१५	८	५	कन्या	१।२०।०९।४५	५७।०९
ए.व्र.	११	शु	५८	०४	२८	५२	हस्त	२	१९	६	३४	व्य	११	२०	१०	१०	व	२४	५२	१५	३५	१५	३८	२०	१६	९	६	तुला. २०।०७	१।२१।०६।५४	५७।०८
काण	१२	श	…	…	…	…	चित्रा	१०	०५	९	४०	व	१४	०१	११	१४	ब	३१	१३	१८	०७	१७	३८	२०	१७	१०	७	तुला.	१।२२।०४।०३	५७।०७
प्र.व्र.	१२	र	४	१८	७	२१	स्वा	१७	३९	१२	४१	प	१६	३२	१२	१४	बा	४	१८	७	२१	१८	३८	२१	१८	११	८	तुला.	१।२३।०१।१०	५७।०६
मित्र	१३	सो	१०	०१	९	३८	विशा	२४	४०	१५	२९	शि	१८	३७	१३	०४	तै	१०	०१	९	३८	१९	३८	२१	१९	१२	९	वृश्चि. ८।४९	१।२३।५८।१६	५७।०५
वज्र	१४	मं	१४	५८	११	३७	अनु	३०	५४	१७	५९	सि	२०	०४	१३	३९	व	१४	५८	११	३७	२०	३८	२२	२०	१३	१०	वृश्चि.	१।२४।५५।२१	५७।०४
पूर्णिमा	१५	बु	१९	००	१३	१४	ज्ये	३६	१६	२०	०८	सा	२०	५२	१३	५८	ब	१९	००	१३	१४	२१	३८	२२	२१	१४	११	धनु. २०।०८	१।२५।५२।२६	५७।०४

केतकी अहर्गणः ५१६६ ग्रीष्मर्त्तू रविरुत्तरे, मई-जून २०२५

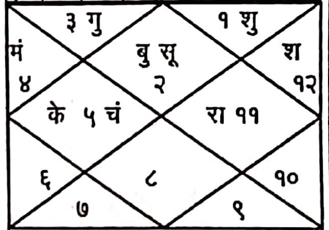
यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
[A २३।३३, कबीर जयंती, ज्येष्ठी योगः
चंद्रदर्शनम् (मु.३०) [F गुर्जराणां वटसावित्री, व्रतं,अब्द साध्य व्र.
रंभा व्रतं, प्रताप जयंती, जिल्हेज १२
भ. १०।१८ उ. २१।२५ या., मृगे-४ गुरुः १२।४४
मेषे अश्वि. शुक्रः १६।०४ [E सन्त टेऊँराम पुण्य तिथि
मघा. रे. ६ SIIIISSSII रात्रौ लग्न ९, २, जून ६ ता. ३०, E
भ.२०।३७ उ.,मघा. रे. ६ SIIIISSSII रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(८)
भ. ९।१२ या., दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, मृगे बुधः ६।१४
[B (सौरः १३।३३), बुधोदयः पश्चिमायाम् १९।३९
गंगा दशहरा व्र. [C भौमः २४।५८, मिथुने बुधः ८।३१
भ. १५।३५ उ. २८।५२ या., निर्जला ११ व्र., सिंहे मघा. C
स्वातौ रे. ७ SIIISSIIII रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(८), ९, १०, D
प्रदोषः, वट सावित्री व्रतारंभः, मृगे रविः ६।४२ B
आर्द्रा. बुधः १३।५६ [D १२, उभा.-२ शनिः १७।२६
भ.११।३७ उ. २४।२८ या., पूर्णिमा व्रतं, F
मन्वादि, पूर्णिमा पुण्यं, गुरोरस्तः पश्चिमायाम् A

गुरोरस्तः पश्चिमायाम्

अयनांशाः २४।११।४४

पं. ८ ज्ये.शु. ७ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	१	२	०	११	१०	४
१७	२७	२१	०३	०१	०६	२९	२९
३२	२४	०५	५६	३०	१९	१३	१३
५१	४२	१६	१७	१२	५७	०३	०३
५७	३२	१३१	१३	५८	३	३	३
२८	०७	३०	२८	०९	५०	११	११
रो	श्ले	रो	मृ	अ	उभा	पूभा	उफा
३	४	४	४	१	१	३	१



|| दैनिक लग्न प्रवेश सारणी || स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ||

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	मई	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
०१।१२।३८।५१	२ बु	२८	३।१६	४।५३	६।४९	९।०४	११।२४	१।४१	३।५७	६।१६	८।३४	१०।३९	१२।२२	१।५०
०१।१३।३६।०९	३ गु	२९	३।१३	४।४९	६।४५	९।००	११।२०	१।३७	३।५३	६।१२	८।३०	१०।३५	१२।१८	१।४६
०१।१४।३३।२६	४ शु	३०	३।०९	४।४५	६।४१	८।५६	११।१६	१।३३	३।४९	६।०८	८।२६	१०।३१	१२।१४	१।४३
०१।१५।३०।४२	५ श	३१	३।०५	४।४१	६।३७	८।५२	११।१२	१।२९	३।४५	६।०४	८।२२	१०।२७	१२।१०	१।३९
०१।१६।२७।५७	६ र	१	३।०१	४।३७	६।३३	८।४८	११।०८	१।२५	३।४१	६।००	८।१८	१०।२३	१२।०६	१।३५
०१।१७।२५।११	७ चं	२	२।५७	४।३३	६।२९	८।४४	११।०४	१।२१	३।३७	५।५६	८।१४	१०।१९	१२।०२	१।३१
०१।१८।२२।२३	८ मं	३	२।५३	४।२९	६।२५	८।४०	११।००	१।१७	३।३३	५।५२	८।११	१०।१५	११।५८	१।२७
०१।१९।१९।३४	९ बु	४	२।४९	४।२५	६।२१	८।३६	१०।५६	१।१३	३।२९	५।४८	८।०७	१०।११	११।५४	१।२३
०१।२०।१६।४४	१० गु	५	२।४५	४।२१	६।१७	८।३२	१०।५२	१।०९	३।२५	५।४४	८।०३	१०।०७	११।५०	१।१९
०१।२१।१३।५३	११ शु	६	२।४१	४।१७	६।१३	८।२८	१०।४८	१।०५	३।२१	५।४०	७।५९	१०।०३	११।४६	१।१५
०१।२२।११।०१	१२ श	७	२।३७	४।१३	६।१०	८।२४	१०।४४	१।०१	३।१७	५।३६	७।५५	९।५९	११।४३	१।११
०१।२३।०८।०८	१२ र	८	२।३३	४।०९	६।०६	८।२०	१०।४०	१२।५७	३।१३	५।३२	७।५१	९।५५	११।३९	१।०७
०१।२४।०५।१४	१३ चं	९	२।२९	४।०५	६।०२	८।१६	१०।३७	१२।५३	३।०९	५।२८	७।४७	९।५१	११।३५	१।०३
०१।२५।०२।१९	१४ मं	१०	२।२५	४।०१	५।५८	८।१३	१०।३३	१२।४९	३।०५	५।२४	७।४३	९।४७	११।३१	१२।५९
०१।२५।५९।२४	१५ बु	११	२।२१	३।५८	५।५४	८।०९	१०।२९	१२।४५	३।०१	५।२०	७।३९	९।४४	११।२७	१२।५५

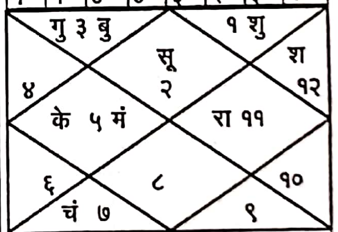
मास फलम्

इस माह मे पांच मंगलवार होने से किसी बड़े व्यक्ति का अभाव हो और बुधवार होने से रसवाली वस्तुओं का अभाव हो ॥ बुधेरसक्षयोभूम्यां ॥ ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को मंगलवार होने से उदंगल करे। ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी में रेवती होने से कष्ट हो। मगलवारी अमावस होने से राज्यभ्रंश, राजयुद्ध-क्लेशो की वृद्धि-उपघात-अल्पवृष्टि और द्रव्यों की हानि हो। अमावस्या रोहिणी योग सुभिक्ष और सुस्वद है। ज्येष्ठ सुदी दोयज व तीज को आर्द्रा में वर्षा हो तो दुर्भिक्ष करे। पूर्णिमा ज्येष्ठा युक्त होने से दुर्भिक्ष हो। मेष राशि में बुध का अस्त होने से सुभिक्ष हो। बुधवार की सक्रांति होने से रस कस घृत महँगे हों, वस्त्रादि और रुई भाव मंदे हों, प्रजा में भय हो, चतुर्मास में वर्षा कम हो।

अयनांशाः २४।११।४५

पं. ९ ज्ये.शु.१३ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	२	२	०	११	१०	४
२४	०१	०५	०५	०८	०६	२८	२८
१४	११	५८	३०	२४	४५	५०	५०
४९	४२	१९	५८	५२	०४	४८	४८
५७	३२	१२०	१३	६०	३	३	३
२२	५०	२८	३६	३५	१५	११	११
मृ	म	मृ	मृ	अ	उभा	पूभा	उफा
१	१	४	४	३	२	३	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य रोहि. ८ जून तः मृगे। मंगल श्लेषा. ६ जून तः मघा. । बुध रोहि. ३ जून तः मृगे ९ जून तः आर्द्रा. । गुरु मृगे। शुक्र रेवत्यां ३१ मई तः अश्वि. । शनि उभा. । राहु पूभा. । केतु उफा. ।
विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य अभि. ८ जून तः उषा.। मंगल धनि. ६ जून तः श्रवणे। बुध अभि. ३ जून तः उषा. ९ जून तः पूषा.। गुरु उषा.। शुक्र उफा. ३१ मई तः पूफा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां।
अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य अभि. ८ जून तः उषा.। मंगल अनुरा. ६ जून तः भर.। बुध अभि. ३ जून तः उषा. ९ जून तः पूषा.। गुरु उषा.। शुक्र उफा. ३१ मई तः पूफा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां।

१२ जून से २५ जून तक, श्री आषाढ़ कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

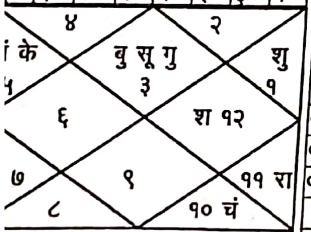
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
धूम्र	१	गु	२२	०७	१४	२९	मूल	४०	४३	२१	५५	शु	२०	५५	१४	००	कौ	२२	०७	१४	२९	३४ ३३	५ ३८	७ २२	२२	१५	१२	धनु.	१।२६।४९।२९	५७।०३
प्रवर्धमा	२	शु	२४	१७	१५	२०	पूषा	४४	१४	२३	२०	शु	२०	१५	१३	४४	ग	२४	१७	१५	२०	२२	३८	२३	२३	१६	१३	मक. २९।३७	१।२७।४६।३२	५७।०२
च.व्र.	३	श	२५	२९	१५	४९	उषा	४६	४९	२४	२१	ब्र	१८	४९	१३	०९	वि	२५	२९	१५	४९	२३	३८	२३	२४	१७	१४	मक.	१।२८।४३।३४	५७।०१
गद	४	र	२५	४१	१५	५५	श्रव	४८	२५	२५	००	ऐ	१६	३६	१२	१६	बा	२५	४१	१५	५५	२४	३८	२३	२५	१८	१५	मक.	१।२९।४०।३५	५७।००
शुभ	५	सो	२४	५३	१५	३५	धनि	४९	००	२५	१४	वै	१३	३६	११	०४	तै	२४	५३	१५	३५	२४	३८	२४	२६	१९	१६	कुंभे १३।१०	२।००।३७।३६	५७।००
मृत्यु	६	मं	२३	०१	१४	५०	शत	४८	३०	२५	०२	वि	९	४४	९	३२	व	२३	०१	१४	५०	२४	३८	२४	२७	२०	१७	कुंभे	२।०१।३४।३५	५६।५९
पद्म	७	बु	२०	०१	१३	३९	पूभा	४६	५३	२४	२४	प्री	५ ५९	०० २०	७ २१	३८ २२	ब	२०	०१	१३	३९	२५	३८	२४	२८	२१	१८	मीने १८।३६	२।०२।३१।३५	५६।५९
छत्र	८	गु	१५	५३	१२	००	उभा	४४	०९	२३	१८	सौ	५२	४६	२६	४५	कौ	१५	५३	१२	००	२५	३९	२४	२९	२२	१९	मीने	२।०३।२८।३३	५६।५८
श्रीवत्स	९	शु	१०	३८	९	५४	रेव	४०	१९	२१	४६	शो	४५	१८	२३	४६	ग	१०	३८	९	५४	२५	३९	२५	३०	२३	२०	मेषे २१।४६	२।०४।२५।३१	५६।५७
ए.व्र.	१०	श	४	२१	७	२३	अश्वि	३५	३३	१९	५२	अ	३७	०४	२०	२८	वि	४	२१	७	२३	२५	३९	२५	३१	२४	२१	मेषे	२।०५।२२।२९	५६।५७
क्षयः	११	श	५७	१३	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ए.व्र.	१२	र	४९	२७	२५	२६	भर	३०	०२	१७	४०	सु	२८	१३	१६	५६	कौ	२३	२४	१५	०१	२५	३९	२५	१	२५	२२	वृषे २३।०५	२।०६।१९।२६	५६।५७
प्र.व्र.	१३	सो	४१	२५	२२	१३	कृति	२४	०६	१५	१८	धृ	१९	०१	१३	१६	ग	१५	२६	११	५०	२५	३९	२५	२	२६	२३	वृषे	२।०७।१६।२२	५६।५६
मातङ्ग	१४	मं	३३	२८	१९	०३	रोहि	१८	०८	१२	५५	शू	९	४६	९	३४	वि	७	२३	८	३७	२५	४०	२५	३	२७	२४	मिथु. २३।४६	२।०८।१३।१९	५६।५६
अमाव.	३०	बु	२६	००	१६	०४	मृग	१२	३२	१०	४१	गं	० ५२	४६ २३	५ २६	५८ ३७	ना	२६	००	१६	०४	२४	४०	२६	४	२८	२५	मिथु.	२।०९।१०।१४	५६।५५

ग्रीष्मर्तू रविरुत्तरे ज्येष्ठकृष्णेति गुर्जराः, जून २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
[C आर्द्रा.-१ गुरुः ७।१४
भ. २७।३८ उ., भर. शुक्रः २५।२६
भ. १५।४९ या., चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २२।१५, C
मिथुने रविः ६।०७ (सौरः १३।४८)
पंचक प्रारम्भः १३।१०, पुन. बुधः १६।०३
भ. १४।५० उ. २६।१८ या.
[D सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन मूषक वर्षाश्रेष्ठः
[B सायन दक्षिणायन प्रारम्भ ८।०२
भ. २०।४१ उ., पंचक समाप्तिः २१।४६
भ. ७।२३ या., योगिनी ११ व्र.स्मार्त, सायन कर्के भानुः, B
[A (सौरः १४।१९), कर्के बुधः १९।५९, अयन करिदिन, D
योगिनी ११ व्र.वैष्ण., भा. आषाढारंभः, आर्द्रा. रविः ५।४४ A
भ. २२।१३ उ., प्रदोषः, मासिकशिवरात्री व्र.
भ. ८।३७ या., पुष्ये बुधः २७।१६
देवपितृकार्येऽमा.

अयनांशाः २४।११।४६

पं.१० आ.कृ. ५ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	२	०	११	१०	४
००	०५	१९	०७	१५	०७	२८	२८
५६	०३	१४	०६	३५	०५	२८	२८
१०	३६	३६	२५	१०	५४	३२	३२
५७	३३	१०४	१३	६२	२	३	३
१८	३०	३४	४१	३४	३७	११	११
मृ	म	आ	आ	भ	उभा	पूभा	उफा
३	२	४	१	१	२	३	१



|| दैनिक लग्न प्रवेश सारणी || स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ||

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	जून	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
०१।२६।५६।२७	१ गु	१२	२।१७	३।५४	५।५०	८।०५	१०।२५	१२।४२	२।५७	५।१७	७।३५	९।४०	११।२३	१२।५१
०१।२७।५३।३०	२ शु	१३	२।१३	३।५०	५।४६	८।०१	१०।२१	१२।३८	२।५३	५।१३	७।३१	९।३६	११।१९	१२।४७
०१।२८।५०।३१	३ श	१४	२।०९	३।४६	५।४२	७।५७	१०।१७	१२।३४	२।५०	५।०९	७।२७	९।३२	११।१५	१२।४३
०१।२९।४७।३२	४ र	१५	२।०६	३।४२	५।३८	७।५३	१०।१३	१२।३०	२।४६	५।०५	७।२३	९।२८	११।११	१२।३९
०२।००।४४।३३	५ चं	१६	२।०२	३।३८	५।३४	७।४९	१०।०९	१२।२६	२।४२	५।०१	७।१९	९।२४	११।०७	१२।३६
०२।०१।४१।३२	६ मं	१७	१।५८	३।३४	५।३०	७।४५	१०।०५	१२।२२	२।३८	४।५७	७।१५	९।२०	११।०३	१२।३२
०२।०२।३८।३१	७ बु	१८	१।५४	३।३०	५।२६	७।४१	१०।०१	१२।१८	२।३४	४।५३	७।११	९।१६	१०।५९	१२।२८
०२।०३।३५।३०	८ गु	१९	१।५०	३।२६	५।२२	७।३७	९।५७	१२।१४	२।३०	४।४९	७।०७	९।१२	१०।५५	१२।२४
०२।०४।३२।२८	९ शु	२०	१।४६	३।२२	५।१८	७।३३	९।५३	१२।१०	२।२६	४।४५	७।०४	९।०८	१०।५१	१२।२०
०२।०५।२९।२५	१० श	२१	१।४२	३।१८	५।१४	७।२९	९।४९	१२।०६	२।२२	४।४१	७।००	९।०४	१०।४७	१२।१६
०२।०६।२६।२२	१२ र	२२	१।३८	३।१४	५।१०	७।२५	९।४५	१२।०२	२।१८	४।३७	६।५६	९।००	१०।४३	१२।१२
०२।०७।२३।१८	१३ चं	२३	१।३४	३।१०	५।०६	७।२१	९।४१	११।५८	२।१४	४।३३	६।५२	८।५६	१०।३९	१२।०८
०२।०८।२०।१४	१४ मं	२४	१।३०	३।०६	५।०३	७।१७	९।३७	११।५४	२।१०	४।२९	६।४८	८।५२	१०।३५	१२।०४
०२।०९।१७।१०	३० बु	२५	१।२६	३।०२	४।५९	७।१३	९।३३	११।५०	२।०६	४।२५	६।४४	८।४८	१०।३२	१२।००

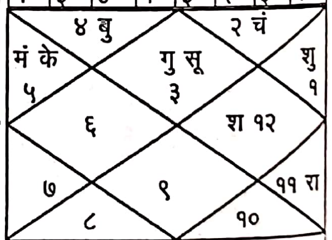
संक्रांति फलम्

ता. १५ जून २०२५

आषा. कृ. ४ रवौ मिथुनेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. ६।०७ वारात् ५ नक्षत्रात् ५ वारनाम घोरा शूद्रान् सुखदा नक्षत्रनाम महोदरी चोरान् सुखदा पूर्वान्हे १ प्रहर व्यापिनी नृपतीन् हन्ति, पूर्वे गमनमाग्नेयां दृष्टिः बालवकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं व्याघ्रवाहनं अश्वोपवाहनं भीतिकारक पीतवस्त्रं गदायुधं रौप्यपात्रं पायसभक्षणं कुंकुमलेपनं भूतजातिः जातिपुष्पं कंकणभूषणं पर्णकंचुकी कुमारिकावस्था (बैठी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स उत्तरे राहु पश्चिमा. मूलं स्वर्गे विवाहस्तंभो ऽग्निकोणे शुक्रोदयः पूर्वस्याम् । पुण्यकालः (स्टै.) ६।०७ से १२।३१ तक । (दान- वस्त्रान्न) ।

अयनांशाः २४।११।४७

पं.११ आ.कृ.१३ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	०	११	१०	४
०७	०८	००	०८	२२	०७	२८	२८
३७	५९	३६	४२	५८	२२	०६	०६
०२	५९	१५	१६	१३	१३	१६	१६
५७	३४	८७	१३	६४	१	३	३
१४	०७	२६	४२	१२	५७	११	११
आ	म	पुन	आ	भ	उभा	पूभा	उफा
१	३	४	१	३	२	३	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य मृगे २२ जून तः आर्द्रा. । मंगल मघा. । बुध आर्द्रा. १६ जून तः पुनर्वसो २४ जून तः पुष्ये । गुरु मृगे १४ जून तः आर्द्रा. । शुक्र अश्वि. १३ जून तः भर. । शनि उभा. । राहु पूभा. । केतु उफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य उषा. २२ जून तः पूषा. । मंगल श्रवणे । बुध पूषा. १६ जून तः मूले २४ जून तः ज्येष्ठा. । गुरु उषा. १४ जून तः पूषा. । शुक्र पूफा. १३ जून तः अनुरा. । शनि हस्ते । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य उषा. २२ जून तः पूषा. । मंगल भर. । बुध पूषा. १६ जून तः मूले २४ जून तः ज्येष्ठा. । गुरु उषा. १४ जून तः पूषा. । शुक्र पूफा. १३ जून तः मघा. । शनि हस्ते । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

२६ जून से १० जुलाई तक, श्री आषाढ़ शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

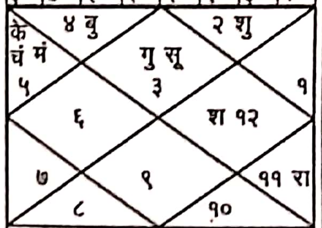
केतकी अहर्गणः ५१९५ वर्षर्त्तू रविर्दक्षिणे, जून-जुलाई २०२५

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
काण	१	गु	१९	२७	१३	२७	आर्द्रा	७	४६	८	४६	ध्रु	४४	५४	२३	३८	ब	१९	२७	१३	२७	३४/३४	५/४०	७/२६	५	२९	२६	कर्के २५।४०	२।१०।०७।१०	५६।५५	चंद्रदर्शनम् (मु.४५), कृत्ति. शुक्रः १६।१५
लुम्बक	२	शु	१४	१३	११	२२	पुन	४	१३	७	२२	व्या	३८	३९	२१	०८	कौ	१४	१३	११	२२	२३	४०	२६	६	१	२७	कर्के	२।११।०४।०५	५६।५५	श्री जगदीश रथ यात्रा, मोहोर्रम १ सन १४४७ हि.
मित्र	३	श	१०	३९	९	५६	पुष्य	२	१६	६	३५	ह	३३	५०	१९	१३	ग	१०	३९	९	५६	२३	४१	२६	७	२	२८	कर्के	२।१२।०१।००	५६।५५	भ. २१।३० उ., आर्द्रा.-२ गुरुः २१।५४
वज्र	४	र	८	५८	९	१६	श्ले	२	१०	६	३३	व	३०	३५	१७	५५	वि	८	५८	९	१६	२२	४१	२६	८	३	२९	सिंहे ६।३३	२।१२।५७।५५	५६।५५	भ. ९।१६ या., वृषे शुक्रः १८।००
ध्वाङ्क्ष	५	सो	९	१६	९	२४	मघा	४	०३	७	१९	सि	२८	५६	१७	१६	बा	९	१६	९	२४	२१	४१	२६	९	४	३०	सिंहे	२।१३।५४।४९	५६।५४	स्कंध षष्ठी, पूफा. भौमः १९।०९ , सन्त टेऊँराम जयन्ती
धूम्र	६	मं	११	३४	१०	१९	पूफा	७	५१	८	५०	व्य	२८	४८	१७	१३	तै	११	३४	१०	१९	२०	४२	२६	१०	५	१	कन्या १५।२०	२।१४।५१।४३	५६।५४	जुलाई ७ ता. ३१ [D सं.स्त्री.नपु.चं.सू.वाहन अश्व अनावृष्टिः
प्रवर्धमा	७	बु	१५	३५	११	५६	उफा	१३	२२	११	०३	व	२९	५५	१७	४०	व	१५	३५	११	५६	१९	४२	२६	११	६	२	कन्या	२।१५।४८।३८	५६।५४	भ.११।५६ उ.२४।५८या. [C हरिवासरः२२।४२ से २९।२१ तक, E
राक्षस	८	गु	२०	५७	१४	०५	हस्त	२०	१०	१३	४६	प	३१	५८	१८	३०	ब	२०	५७	१४	०५	१८	४३	२६	१२	७	३	तुला.२७।१६	२।१६।४५।३२	५६।५४	[A देव शयनी ११ व्र., चातुर्मास व्रतारंभः, गोपद्मव्रतोद्यापनं, C
मुसल	९	शु	२७	०१	१६	३१	चित्रा	२७	४१	१६	४७	शि	३४	३०	१९	३१	कौ	२७	०१	१६	३१	१७	४३	२६	१३	८	४	तुला.	२।१७।४२।२६	५६।५४	भड़ली ९ [F आषाढी योगः गुरोरुदयः पूर्वस्याम्
सिद्धि	१०	श	३३	१३	१९	००	स्वा	३५	१७	१९	५०	सि	३७	०३	२०	३३	तै	०	०८	५	४७	१६	४३	२६	१४	९	५	तुला.	२।१८।३९।२०	५६।५४	मन्वादि, आशा दशमी, पुन. रविः २९।२१, D
ए.व्र.	११	र	३८	५४	२१	१७	विशा	४२	२४	२२	४२	सा	३९	१३	२१	२५	व	६	०८	८	११	१५	४४	२६	१५	१०	६	वृश्चि. १६।००	२।१९।३६।१४	५६।५४	भ. ८।११उ. २१।१७ या., गुरोरुदयः पूर्वस्याम् २८।१८ A
मानस	१२	सो	४३	४०	२३	१२	अनु	४८	३७	२५	११	शु	४०	४०	२२	००	ब	११	२५	१०	१८	१४	४४	२६	१६	११	७	वृश्चि.	२।२०।३३।०९	५६।५४	श्रावणे वर्जयेच्छाकम् [E पुन. सौरः १५।४५,श्लेषा.बुधः २९।२४,
प्र.व्र.	१३	मं	४७	१७	२४	४०	ज्ये	५३	४२	२७	१४	शु	४१	१३	२२	१४	कौ	१५	३८	१२	००	१२	४५	२६	१७	१२	८	धनु. २७।१४	२।२१।३०।०३	५६।५५	प्रदोषः, जया पार्वती व्रतं, रोहि. शुक्रः १९।४५
ध्वजा	१४	बु	४९	३९	२५	३७	मूल	५७	३५	२८	४७	ब्र	४०	४९	२२	०५	ग	१८	३६	१३	१२	११	४५	२५	१८	१३	९	धनु.	२।२२।२६।५८	५६।५५	भ. २५।३७ उ. [B गोपद्मव्रतारंभ, व्यासपूजा, गुरु पूर्णिमा, F
पूर्णिमा	१५	गु	५०	४९	२६	०५	पूषा	...	...	...	...	ऐ	३९	२७	२१	३२	वि	२०	२२	१३	५५	०९	४६	२५	१९	१४	१०	धनु.	२।२३।२३।५३	५६।५५	भ. १३।५५ या., मन्वादि, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, वायु परीक्षा, B

अयनांशाः २४।११।४८

पं.१२ आ.शु. ५ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	१	११	१०	४
१४	१३	०९	१०	००	०७	२७	२७
१७	००	५१	१८	३१	३३	४४	४४
३८	३३	२०	०७	४९	४९	०१	०१
५७	३४	६७	१३	६५	१	३	३
१३	४१	५४	४०	३३	१६	११	११
आ	म	पु	आ	कृ	उभा	पूभा	उफा
३	४	२	२	२	२	३	१



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	जून	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
०२।१०।१४।०५	१ गु	२६	१।२२	२।५८	४।५५	७।०९	९।३०	११।४६	२।०२	४।२१	६।४०	८।४४	१०।२८	११।५६
०२।११।११।००	२ शु	२७	१।१८	२।५४	४।५१	७।०६	९।२६	११।४२	१।५८	४।१७	६।३६	८।४०	१०।२४	११।५२
०२।१२।०७।५५	३ श	२८	१।१४	२।५०	४।४७	७।०२	९।२२	११।३८	१।५४	४।१३	६।३२	८।३६	१०।२०	११।४८
०२।१३।०४।५०	४ र	२९	१।१०	२।४७	४।४३	६।५८	९।१८	११।३५	१।५०	४।०९	६।२८	८।३३	१०।१६	११।४४
०२।१४।०१।४४	५ चं	३०	१।०६	२।४३	४।३९	६।५४	९।१४	११।३१	१।४६	४।०६	६।२४	८।२९	१०।१२	११।४०
०२।१४।५८।३८	६ मं	१	१।०२	२।३९	४।३५	६।५०	९।१०	११।२७	१।४२	४।०२	६।२०	८।२५	१०।०८	११।३६
०२।१५।५५।३३	७ बु	२	१२।५८	२।३५	४।३१	६।४६	९।०६	११।२३	१।३९	३।५८	६।१६	८।२१	१०।०४	११।३२
०२।१६।५२।२७	८ गु	३	१२।५५	२।३१	४।२७	६।४२	९।०२	११।१९	१।३५	३।५४	६।१२	८।१७	१०।००	११।२८
०२।१७।४९।२१	९ शु	४	१२।५१	२।२७	४।२३	६।३८	८।५८	११।१५	१।३१	३।५०	६।०८	८।१३	९।५६	११।२५
०२।१८।४६।१५	१० श	५	१२।४७	२।२३	४।१९	६।३४	८।५४	११।११	१।२७	३।४६	६।०४	८।०९	९।५२	११।२१
०२।१९।४३।०९	११ र	६	१२।४३	२।१९	४।१५	६।३०	८।५०	११।०७	१।२३	३।४२	६।००	८।०५	९।४८	११।१७
०२।२०।४०।०३	१२ चं	७	१२।३९	२।१५	४।११	६।२६	८।४६	११।०३	१।१९	३।३८	५।५६	८।०१	९।४४	११।१३
०२।२१।३६।५८	१३ मं	८	१२।३५	२।११	४।०७	६।२२	८।४२	१०।५९	१।१५	३।३४	५।५३	७।५७	९।४०	११।०९
०२।२२।३३।५२	१४ बु	९	१२।३१	२।०७	४।०३	६।१८	८।३८	१०।५५	१।११	३।३०	५।४९	७।५३	९।३६	११।०५
०२।२३।३०।४७	१५ गु	१०	१२।२७	२।०३	३।५९	६।१४	८।३४	१०।५१	१।०७	३।२६	५।४५	७।४९	९।३२	११।०१

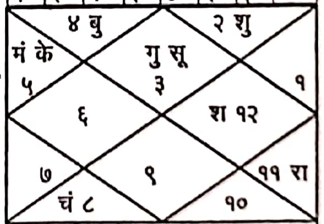
मास फलम्

इस माह में पांच गुरुवार होने से धान्य सस्ता हो ॥ चन्द्रजीवौयदापंच धान्यादीनांसमर्घता ॥ आषाढ कृष्णा द्वितीया को शुक्रवार होने से सुभिक्ष हो । आषाढ कृष्णा नौमी को शुक्रवार होने से सुभिक्ष हो । आषाढ कृष्णा चतुर्दशी में रोहिणी होने से राजयुद्ध तथा प्रजा में शोक हो । बुधवारी अमावस होने से दुर्भिक्ष-राज्यनाश-प्रजा को दुःख-स्थानत्याग और कम धान्य हो । अमावस्या मृगशिरा योग सुभिक्ष और सुखद है । आषाढ शुक्ला पंचमी को सोमवार होने से सुवृष्टि हो । आषाढ शुक्ला एकादशी को रविवार होने से सुभिक्ष हों । पूर्णिमा पूर्वाषाढा युक्त होने से दुर्भिक्ष हो । आषाढ की पूर्णिमा को पूर्वाषाढा की वृद्धि होने से भाव सस्ते हों । रविवार की सक्रांति होने से कहीं कहीं युद्ध हो, राजविग्रह हो, सूर्य बहुत तपे, रोगोत्पत्ति हो, धान्यादि महँगे हों ।

अयनांशाः २४।११।४९

पं.१३ आ.शु.१२ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	१	११	१०	४
२०	१७	१६	११	०८	०७	२७	२७
५८	०५	४०	५३	१४	४०	२१	२१
०७	०२	४१	३४	१६	३३	४६	४६
५७	३५	४५	१३	६६	०	३	३
१३	१४	१६	३५	४२	३४	११	११
पुन	पूफा	श्ले	आ	कृ	उभा	पूभा	उफा
१	२	१	२	४	२	३	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य आर्द्रा. ५ जुला. तः पुनर्वसौ । मंगल मघा. ३० जून तः पूफा. । बुध पुष्ये ६ जुला. तः श्लेषा. । गुरु आर्द्रा. । शुक्र भर. २६ जून तः कृति. ८ जुला. तः रोहि. । शनि उभा. । राहु पूभा. । केतु उफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य पूषा. ५ जुला. तः मूले । मंगल श्रवणे ३० जून तः अश्वि. । बुध ज्येष्ठा. ६ जुला. तः धनि. । गुरु पूषा. । शुक्र अनुरा. २६ जून तः विशा. ८ जुला. तः अभि. । शनि हस्ते । राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य पूषा. ५ जुला. तः मूले । मंगल भर. ३० जून तः अश्वि. । बुध ज्येष्ठा. ६ जुला. तः अनुरा. । गुरु पूषा. । शुक्र मघा. २६ जून तः श्रवणे ८ जुला. तः अभि. । शनि हस्ते । राहु चित्रा. । केतु रेवत्यां ।

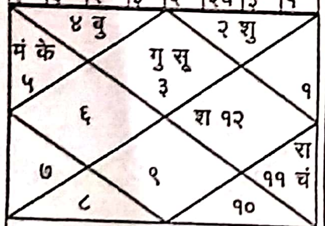
११ जुलाई से २४ जुलाई तक, श्री श्रावण कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	स्टै. चंद्रः	प्रातः सौर र. स्प.	दैनिक गति	वर्षर्तू रविर्दक्षिणे आषाढ़कृष्णेति गुर्जराः, जुलाई २०२५ / यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
प्रवर्धना	१	शु	५०	५४	२६	०८	पूषा	०	१७	५	५३	वै	३७	१३	२०	३९	बा	२०	५९	१४	१०	३४/०७	५/४६	७/२५	२०	१५	११	मक. १२।०५	२।२४।२०।४८	५६।५५	नक्त व्रतारंभः [D आर्द्रा.-३ गुरुः १५।०४, वक्री शनिः १९।०४
बृहत्तल्पा	२	श	४९	५९	२५	४६	उषा	१	५६	६	३३	वि	३४	११	१९	२७	तै	२०	३२	१४	००	०६	४७	२५	२१	१६	१२	मक.	२।२५।१७।४३	५६।५६	बृहत्तल्पा [B भौमः ७।३०
गद	३	र	४८	१०	२५	०३	श्रव	२	३९	६	५०	प्री	३०	२४	१७	५७	व	१९	१०	१३	२७	०४	४७	२५	२२	१७	१३	कुंभे १८।५१	२।२६।१४।३९	५६।५६	भ. १३।२७ उ. २५।०३ या., पंचक प्रारम्भः १८।५१, D
च.व्र.	४	सो	४५	३५	२४	०१	धनि	२	३०	६	४७	आ	२५	५९	१६	११	ब	१६	५८	१२	३५	०२	४८	२४	२३	१८	१४	कुंभे	२।२७।११।३५	५६।५६	चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २२।०३
मृत्यु	५	मं	४२	१५	२२	४२	शत	५/५२	३५/५८	६/२३	२६/३३	सौ	२०	५६	१४	१०	कौ	१३	५९	११	२४	००	४८	२४	२४	१९	१५	मीने २३।५८	२।२८।०८।३१	५६।५७	नागपञ्चमी (मरु.) [E निरयन दक्षिणायनारंभः
लुम्बक	६	बु	३८	१२	२१	०५	उभा	५७	३८	२८	५२	शो	१५	१९	११	५६	ग	१०	१८	९	५६	३३/५८	४८	२४	२५	२०	१६	मीने	२।२९।०५।२८	५६।५७	भ. २१।०५ उ., कर्के रविः १७।०४ (सौरः २८।४८), E
मित्र	७	गु	३३	३०	१९	१३	रेव	५४	३८	२७	४०	अ	९	०८	९	२८	वि	५	५५	८	११	५६	४९	२३	२६	२१	१७	मेषे २७।४०	३।००।०२।२६	५६।५८	भ. ८।११ या., पंचक समाप्तिः २७।४०
वज्र	८	शु	२८	०९	१७	०५	अश्वि	५१	०२	२६	१४	सु	२/५५	२४/१४	६/२३	४७/५५	बा	०	५३	६	११	५४	५०	२३	२७	२२	१८	मेषे	३।००।५९।२४	५६।५८	वक्री बुधः २७।३९ [C पूभा.-२ राहुः ८।५७, पूफा.-४ केतुः ८।५
ध्वाङ्क्ष	९	श	२२	१६	१४	४४	मर	४६	५७	२४	३७	शू	४७	३७	२४	५३	ग	२२	१६	१४	४४	५१	५०	२३	२८	२३	१९	मेषे	३।०१।५६।२२	५६।५९	भ. २५।३० उ., पुष्ये रविः २८।५५, बुधास्तः पश्चिमायाम् A
धूम्र	१०	र	१५	५९	१२	१४	कृति	४२	३३	२२	५२	गं	३९	४६	२१	४५	वि	१५	५९	१२	१४	४९	५१	२२	२९	२४	२०	वृषे ६।११	३।०२।५३।२१	५७।००	भ. १२।१४ या., पुष्ये सौरः १७।०४, मृगे शुक्रः १५।३४, C
ए.व्र.	११	सो	९	३०	९	३९	रोहि	३८	०४	२१	०५	वृ	३१	५०	१८	३५	बा	९	३०	९	३९	४७	५१	२२	३०	२५	२१	वृषे	३।०३।५०।२१	५७।००	कामिका ११ व्र.
प्र.व्र.	१२	मं	३	०३	७	०५	मृग	३३	४६	१९	२२	ध्रु	२४	०१	१५	२८	तै	३	०३	७	०५	४४	५२	२१	३१	२६	२२	मिथु. ८।१२	३।०४।४७।२१	५७।०१	भ. २८।३९ उ., प्रदोषः, सायन सिंहे भानुः १९।०१
क्षयः	१३	मं	५६	५८	२८	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A २७।०७, सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन चातक वर्षाश्रेष्ठः
मुसल	१४	बु	५१	३१	२६	२८	आर्द्रा	२९	५९	१७	५२	व्या	१६	३४	१२	३०	वि	२४	०७	१५	३१	४२	५२	२१	१	२७	२३	मिथु.	३।०५।४४।२२	५७।०२	भ. १५।३१ या., मासिकशिवरात्री व्र., भा. श्रावणारंभः, उफा. B
अमाव.	३०	गु	४७	०१	२४	४१	पुन	२७	०३	१६	४२	ह	९	४६	९	४७	च	१९	०७	१३	३१	३९	५३	२०	२	२८	२४	कर्के १०।५७	३।०६।४१।२४	५७।०३	देवपितृकार्येऽमा., हरियाली ३०

अयनांशाः २४।११।५०

पं.१४ श्रा.कृ. ४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	१	११	१०	४
२७	२१	२०	१३	१६	०७	२६	२६
३८	१३	३९	२८	०४	४२	५९	५९
४०	१४	११	१६	१५	२२	२९	२९
५७	३५	१८	१३	६७	०	३	३
१४	४५	०१	२६	४२	०९	११	११
पुन	पूफा	श्ले	आ	रो	उभा	पूभा	उफा
३	३	२	३	२	२व	३	१



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. जुला	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क प्रातः	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर सायँ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
०२।२४।२७।४२	१ शु	११	१२।२३	१।५९	३।५५	६।१०	८।३०	१०।४७	१।०३	३।२२	५।४१	७।४५	९।२८	१०।५७
०२।२५।२४।३७	२ श	१२	१२।१९	१।५५	३।५२	६।०६	८।२६	१०।४३	१२।५९	३।१८	५।३७	७।४१	९।२४	१०।५३
०२।२६।२१।३३	३ र	१३	१२।१५	१।५१	३।४८	६।०२	८।२२	१०।३९	१२।५५	३।१४	५।३३	७।३७	९।२१	१०।४९
०२।२७।१८।२९	४ चं	१४	१२।११	१।४७	३।४४	५।५८	८।१९	१०।३५	१२।५१	३।१०	५।२९	७।३३	९।१७	१०।४५
०२।२८।१५।२६	५ मं	१५	१२।०७	१।४३	३।४०	५।५५	८।१५	१०।३१	१२।४७	३।०६	५।२५	७।२९	९।१३	१०।४१
०२।२९।१२।२२	६ बु	१६	१२।०३	१।३९	३।३६	५।५१	८।११	१०।२७	१२।४३	३।०२	५।२१	७।२६	९।०९	१०।३७
०३।००।०९।२०	७ गु	१७	११।५९	१।३६	३।३२	५।४७	८।०७	१०।२४	१२।३९	२।५९	५।१७	७।२२	९।०५	१०।३३
०३।०१।०६।१८	८ शु	१८	११।५५	१।३२	३।२८	५।४३	८।०३	१०।२०	१२।३५	२।५५	५।१३	७।१८	९।०१	१०।२९
०३।०२।०३।१६	९ श	१९	११।५१	१।२८	३।२४	५।३९	७।५९	१०।१६	१२।३१	२।५१	५।०९	७।१४	८।५७	१०।२५
०३।०३।००।१५	१० र	२०	११।४७	१।२४	३।२०	५।३५	७।५५	१०।१२	१२।२८	२।४७	५।०५	७।१०	८।५३	१०।२१
०३।०३।५७।१५	११ चं	२१	११।४४	१।२०	३।१६	५।३१	७।५१	१०।०८	१२।२४	२।४३	५।०१	७।०६	८।४९	१०।१८
०३।०४।५४।१५	१२ मं	२२	११।४०	१।१६	३।१२	५।२७	७।४७	१०।०४	१२।२०	२।३९	४।५७	७।०२	८।४५	१०।१४
०३।०५।५१।१६	१४ बु	२३	११।३६	१।१२	३।०८	५।२३	७।४३	१०।००	१२।१६	२।३५	४।५३	६।५८	८।४१	१०।१०
०३।०६।४८।१८	३० गु	२४	११।३२	१।०८	३।०४	५।१९	७।३९	९।५६	१२।१२	२।३१	४।४९	६।५४	८।३७	१०।०६

संक्रांति फलम्

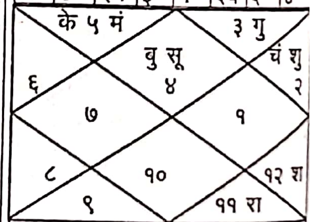
ता. १६ जुलाई २०२५

श्रा. कृ. ६ बुधे कर्केऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. १७।०४ वारात् ४ नक्षत्रात् ५ वारनाम मंदाकिनी नृपतीन् सुखदा नक्षत्रनाम नंदा गणकान् सुखदा अपरान्ह ३ प्रहर व्यापिनी वैश्यान् हन्ति, दक्षिणे गमनं नैऋत्यां दृष्टिः वणिजकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं महिषवाहनं उष्ट्रोपवाहनं क्लेशकारक श्यामवस्त्रं तोमरायुधं खप्परपात्रं दधिभक्षणं अलक्तकलेपनं मृगजातिः अर्कपत्रपुष्पं मणीभूषणं पाण्डुकंचुकी प्रगल्भावस्था (बैठी) मु. ४५ धान्यभावे समर्घ वत्स उत्तरे राहु पश्चिमा. मूलं भूमौ विवाहस्तंभो ऽग्निकोणे शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। पुण्यकालः भौमे (स्टै.) २९।०४ से बुधे १७।०४ तक। (दान- घृत, धेनु)।

अयनांशाः २४।११।५१

पं.१५ श्रा.कृ.११ सो. इष्टघटी ०।०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	२	१	११	१०	४
०४	२५	२१	१५	२४	०७	२६	२६
१९	२४	०८	०१	००	३९	३७	३७
२८	५८	१०	४७	४३	१४	१३	१३
५७	३६	१५	१३	६८	०	३	३
१७	१५	१३	१४	३३	५१	११	११
पु	पूफा	श्ले	आ	मृ	उभा	पूभा	पूफा
१	४	२व	३	१	२व	२	४



नक्षत्र युतिः- सूर्य पुनर्वसौ १९ जुला. तः पुष्ये। मंगल पूफा. २३ जुला. तः उफा.। बुध श्लेषा.। गुरु आर्द्रा.। शुक्र रोहि. २० जुला. तः मृगे। शनि उभा.। राहु पूभा.। केतु उफा. २० जुला. तः (व) पूफा.।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य मूले १९ जुला. तः ज्येष्ठा.। मंगल अश्वि. २३ जुला. तः रेवत्यां। बुध धनि.। गुरु पूषा.। शुक्र अभि. २० जुला. तः उषा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां २० जुला. तः अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य मूले १९ जुला. तः ज्येष्ठा.। मंगल अश्वि. २३ जुला. तः रेवत्यां। बुध अनुरा.। गुरु पूषा.। शुक्र अभि. २० जुला. तः उषा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु रेवत्यां २० जुला. तः अश्वि.।

२५ जुलाई से ९ अगस्त तक, श्री श्रावण शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	स्टे. चंद्रः	प्रातः सौर र. स्प.	दैनिक गति
उत्पात	१	शु	४३	४७	२३	२४	पुष्य	२५	१६	१६	००	व	३ ५९	५० ०१	७ २९	२५ २९	किं	१५	१४	११	५९	३३ ३७	५ ५३	७ २०	३	२९	२५	कर्के	३।०७।३८।२६	५७।०३
सिंधारा	२	श	४२	०३	२२	४३	श्ले	२४	५४	१५	५१	व्य	५५	२४	२८	०३	बा	१२	४३	१०	५९	३४	५४	१९	४	३०	२६	सिंहे १५।५१	३।०८।३५।३०	५७।०४
तीज	३	र	४१	५९	२२	४२	मघा	२६	०८	१६	२२	व	५३	०९	२७	१०	तै	११	४८	१०	३७	३१	५४	१९	५	१	२७	सिंहे	३।०९।३२।३४	५७।०५
ध्वजा	४	सो	४३	३८	२३	२२	पूफा	२९	०३	१७	३२	प	५२	१४	२६	४८	व	१२	३४	१०	५६	२८	५५	१८	६	२	२८	कन्या२३।५६	३।१०।२९।३९	५७।०६
धाता	५	मं	४६	५६	२४	४२	उफा	३३	३६	१९	२२	शि	५२	३५	२६	५७	ब	१५	०४	११	५७	२५	५५	१७	७	३	२९	कन्या	३।११।२६।४५	५७।०७
आनन्द	६	बु	५१	३९	२६	३५	हस्त	३९	३४	२१	४६	सि	५४	००	२७	३२	कौ	१९	०७	१३	३५	२३	५६	१७	८	४	३०	कन्या	३।१२।२३।५२	५७।०८
चर	७	गु	५७	२१	२८	५३	चित्रा	४६	३६	२४	३५	सा	५६	१०	२८	२४	ग	२४	२४	१५	४२	२०	५६	१६	९	५	३१	तुला. ११।०८	३।१३।२१।००	५७।०९
गद	८	शु	...	...	...	...	स्वा	५४	०७	२७	३६	शु	५८	३९	२९	२४	वि	३०	२३	१८	०६	१७	५७	१६	१०	६	१	तुला.	३।१४।१८।०९	५७।१०
शुभ	८	श	३	२७	७	२०	विशा	...	...	...	...	शु	...	...	...	...	ब	३	२७	७	२०	१४	५७	१५	११	७	२	वृश्चि. २३।५०	३।१५।१५।१९	५७।११
उत्पात	९	र	९	२०	९	४२	विशा	१	२७	६	३३	शु	०	५७	६	२१	कौ	९	२०	९	४२	११	५८	१४	१२	८	३	वृश्चि.	३।१६।१२।३०	५७।१२
मानस	१०	सो	१४	२२	११	४४	अनु	८	०५	९	१२	ब्र	२	४२	७	०३	ग	१४	२२	११	४४	०७	५९	१३	१३	९	४	वृश्चि.	३।१७।०९।४३	५७।१३
ए.व्र.	११	मं	१८	०८	१३	१४	ज्ये	१३	३०	११	२३	ऐ	३	३०	७	२३	वि	१८	०८	१३	१४	०४	५९	१३	१४	१०	५	धनु. ११।२३	३।१८।०६।५६	५७।१५
प्र.व्र.	१२	बु	२०	२३	१४	०९	मूल	१७	२८	१२	५९	वै	३	१०	७	१६	बा	२०	२३	१४	०९	०१	६ ००	१२	१५	११	६	धनु.	३।१९।०४।११	५७।१६
धाता	१३	गु	२१	०५	१४	२६	पूषा	१९	५५	१३	५८	वि	१ ५८	३६ ३४	६ २९	३९ ३४	तै	२१	०५	१४	२६	३२ ५८	००	११	१६	१२	७	मक. २०।०८	३।२०।०१।२७	५७।१७
सूमाण्ड	१४	शु	२०	२०	१४	०९	उषा	२०	५७	१४	२३	आ	५५	०५	२८	०३	व	२०	२०	१४	०९	५४	०१	१०	१७	१३	८	मक.	३।२०।५८।४४	५७।१८
पूर्णिमा	१५	श	१८	१९	१३	२१	श्रव	२०	४३	१४	१८	सौ	५०	२०	२६	०९	ब	१८	१९	१३	२१	५१	०१	१०	१८	१४	९	कुंभे २६।०६	३।२१।५६।०२	५७।२०

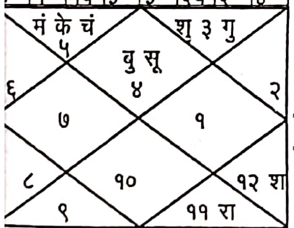
केतकी अहर्गणः ५२२४ वर्षर्त्तू रविर्दक्षिणे, जुलाई-अगस्त २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टे.टा.में है।
[B तैतरीय, हिरण्यकेशीय, आपस्तंभ, बौधायन, D
चंद्रदर्शनम् (मु.३०), श्रृंगार (सिंधारा) देशाचारे, F
तीज, स्वर्णगौरी व्र., मधुश्रवा व्र.(गुर्जरे), सुकृत तृतीया व्र., H
भ.१०।५६उ. २३।२२या.,वरद चतुर्थी,दूर्वा गणपति व्र.,रोटक C
नागपञ्चमी,नागदष्ट व्र.,(व) पुष्ये बुधः१८।२५ [J ऋग्वेदि उपाकर्म
कल्की जयंती, वर्णषष्ठी [F मिथुने शुक्रः ११।१६ [H सफर २
भ. २८।५३ उ., शीतला, तुलसी जयंती, आर्द्रा. शुक्रः २९।४४
भ. १८।०६ या., दुर्गाष्टमी, अगस्त ८ ता. ३१, तिलकपुण्यतिथि
श्लेषा. रविः २७।५१, सं.स्त्री.नपु.चं.सू.वाहन स्वर अनावृष्टिः
श्लेषा. सौरः१७।३० [E (भद्रा के पूर्व), बुधोदयः पूर्वस्याम् २६।४०
भ. २४।३३ उ. [C व्रतारंभः, सोमेश्वरपूजनं, कन्यायां भौमः I
भ. १३।१४ या., पवित्रा ११ व्र. [D काण्वमध्यन्दिन (कात्या.), G
प्रदोषः, दधि भक्षणत्यागः, पवित्रारोपणं [G अथर्ववेदि, J
[A रक्षाबंधनं (पूरा दिन शुद्ध है), श्रावणी (मरु), यजुर्वेदि, B
भ. १४।०९ उ. २५।४८ या., हयग्रीव जयंती, सूणमाण्डणा E
पंचक प्रारम्भः २६।०६, नारियल १५, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, A
[I १८।५५, आर्द्रा.-४ गुरुः १७।३१

अयनांशाः २४।११।५२

ं.१६ श्रा.शु. ४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	३	२	२	११	१०	४
११	२९	१७	१६	०२	०७	२६	२६
०	४०	४६	३३	०२	३१	१४	१४
१	०६	४८	४३	५१	१३	५८	५८
७	३६	४३	१२	६९	१	३	३
२	४३	१७	५९	१८	३२	११	११
पु	उफा	श्ले	आ	मृ	उभा	पूभा	पूफा
[illegible]	१	१व	३	३	२व	२	४



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. जुला.	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क प्रातः	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर सायँ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
०३।०७।४५।२०	१ शु	२५	११।२८	१।०४	३।००	५।१५	७।३५	९।५२	१२।०८	२।२७	४।४६	६।५०	८।३३	१०।०२
०३।०८।४२।२४	२ श	२६	११।२४	१।००	२।५६	५।११	७।३१	९।४८	१२।०४	२।२३	४।४२	६।४६	८।२९	९।५८
०३।०९।३९।२८	३ र	२७	११।२०	१२।५६	२।५२	५।०७	७।२७	९।४४	१२।००	२।१९	४।३८	६।४२	८।२५	९।५४
०३।१०।३६।३३	४ चं	२८	११।१६	१२।५२	२।४८	५।०३	७।२३	९।४०	११।५६	२।१५	४।३४	६।३८	८।२१	९।५०
०३।११।३३।३९	५ मं	२९	११।१२	१२।४८	२।४५	४।५९	७।१९	९।३६	११।५२	२।११	४।३०	६।३४	८।१७	९।४६
०३।१२।३०।४६	६ बु	३०	११।०८	१२।४४	२।४१	४।५५	७।१५	९।३२	११।४८	२।०७	४।२६	६।३०	८।१४	९।४२
०३।१३।२७।५४	७ गु	३१	११।०४	१२।४०	२।३७	४।५१	७।११	९।२८	११।४४	२।०३	४।२२	६।२६	८।१०	९।३८
०३।१४।२५।०३	८ शु	१	११।००	१२।३६	२।३३	४।४७	७।०८	९।२४	११।४०	१।५९	४।१८	६।२२	८।०६	९।३४
०३।१५।२२।१३	८ श	२	१०।५६	१२।३२	२।२९	४।४४	७।०४	९।२०	११।३६	१।५५	४।१४	६।१८	८।०२	९।३०
०३।१६।१९।२५	९ र	३	१०।५२	१२।२९	२।२५	४।४०	७।००	९।१६	११।३२	१।५१	४।१०	६।१५	७।५८	९।२६
०३।१७।१६।३७	१० चं	४	१०।४८	१२।२५	२।२१	४।३६	६।५६	९।१३	११।२८	१।४८	४।०६	६।११	७।५४	९।२२
०३।१८।१३।५१	११ मं	५	१०।४४	१२।२१	२।१७	४।३२	६।५२	९।०९	११।२४	१।४४	४।०२	६।०७	७।५०	९।१८
०३।१९।११।०५	१२ बु	६	१०।४०	१२।१७	२।१३	४।२८	६।४८	९।०५	११।२०	१।४०	३।५८	६।०३	७।४६	९।१४
०३।२०।०८।२१	१३ गु	७	१०।३६	१२।१३	२।०९	४।२४	६।४४	९।०१	११।१७	१।३६	३।५४	५।५९	७।४२	९।१०
०३।२१।०५।३९	१४ शु	८	१०।३३	१२।०९	२।०५	४।२०	६।४०	८।५७	११।१३	१।३२	३।५०	५।५५	७।३८	९।०७
०३।२२।०२।५७	१५ श	९	१०।२९	१२।०५	२।०१	४।१६	६।३६	८।५३	११।०९	१।२८	३।४६	५।५१	७।३४	९।०३

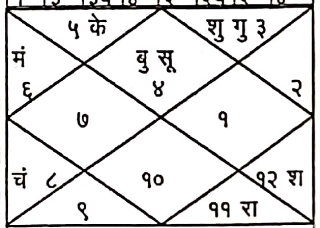
मास फलम्

इस माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा की वृद्धि हो और शुभ हो, पर पांच शनिवार होने से महँगाई हो ॥ प्रजावृद्धिस्तुभार्गवे ॥ ॥ दुर्भिक्षंपंचमंदेषु ॥ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को धृति योग न होने से धान्यादि भाव मंदे हों। कृ. नवमी शनिवार होने से संतापकारक है और राजनीति भी प्रभावित हो। कृष्णा एकादशी को रोहिणी होने से सुभिक्ष हो। कृष्णा चतुर्दशी को आर्द्रा होने से अन्नादि भाव में तेजी हो। अमावस्या पुनर्वसु योग समर्घता कारक है। पूर्णिमा श्रवण युक्त होने से शुभ फल दायिनी है। पूर्णिमा शनिवार युक्त होने से दुर्भिक्ष हो। श्रावणी पूर्णिमा को श्रवण होने से धान्योत्पत्ति वहुत हो। बुधवार की सक्रांति होने से रस कस घृत महँगे हों, वस्त्रादि और रुई भाव मंदे हों, प्रजा में भय हो, चतुर्मास में वर्षा कम हो।

अयनांशाः २४।११।५३

पं.१७ श्रा.शु.१० सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	२	२	११	१०	४
१७	०३	१२	१८	१०	०७	२५	२५
४२	५८	३५	०३	०९	१८	५२	५२
३०	३३	०७	४१	५९	३०	४२	४२
५७	३७	३७	१२	६९	२	३	३
२८	११	५२	४०	५८	११	११	११
श्ले	उफा	पु	आ	आ	उभा	पूभा	पूफा
१	३	३व	४	२	२व	२	४



नक्षत्र युतिः- सूर्य पुष्ये २ अग. स्टे.२७।५१ उप. श्लेषा.। मंगल उफा.। बुध श्लेषा. २९ जुला. स्टे.१८।२५ उप. (व) पुष्ये। गुरु आर्द्रा.। शुक्र मृगे ३१ जुला. स्टे.२९।४४ उप. आर्द्रा.। शनि उभा.। राहु पूभा.। केतु पूफा.।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य ज्येष्ठा. २ अग. स्टे.२७।५१ उप. धनि.। मंगल रेवत्यां। बुध धनि. २९ जुला. स्टे.१८।२५ उप. ज्येष्ठा.। गुरु पूषा.। शुक्र उषा. ३१ जुला. स्टे.२९।४४ उप. पूषा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य ज्येष्ठा. २ अग.स्टे.२७।५१ उप. अनुरा.। मंगल रेवत्यां। बुध अनुरा.२९ जुला.स्टे.१८।२५ उप.ज्येष्ठा.। गुरु पूषा.। शुक्र उषा. ३१ जुला. स्टे.२९।४४ उप. पूषा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्त्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

१० अगस्त से २३ अगस्त तक, श्री भाद्रपद कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमासू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
मातङ्ग	१	र	१५	१२	१२	०६	घनि	१९	२५	१३	४८	शो	४४	४८	२३	५७	कौ	१५	१२	१२	०६	३२/४८	६/०२	७/०९	१९	१५	१०	कुंभे	३।२२।५३।२२	५७।२१
अमृत	२	सो	११	१३	१०	३१	शत	१७	१६	१२	५७	अ	३८	३९	२१	३०	ग	११	१३	१०	३१	४४	०२	०८	२०	१६	११	कुंभे	३।२३।५०।४३	५७।२३
च.व्र.	३	मं	६	३४	८	४०	पूभा	१४	२८	११	५०	सु	३२	००	१८	५१	वि	६	३४	८	४०	४१	०३	०७	२१	१७	१२	मीने ६।०८	३।२४।४८।०६	५७।२४
लुम्बक	४	बु	१	२५	६	३७	उभा	११	१२	१०	३२	धृ	२५	०२	१६	०४	बा	१	२५	६	३७	३७	०३	०६	२२	१८	१३	मीने	३।२५।४५।३०	५७।२५
क्षयः	५	बु	५५	५६	२८	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मित्र	६	गु	५०	१४	२६	०९	रेव	७	३६	९	०६	शू	१७	४९	१३	११	ग	२३	०५	१५	१८	३४	०४	०५	२३	१९	१४	मेषे ९।०६	३।२६।४२।५५	५७।२७
जन्माष्ट.	७	शु	४४	२८	२३	५१	अश्वि	३	५०	७	३६	गं	१०	२८	१०	१५	वि	१७	२०	१३	००	३०	०४	०४	२४	२०	१५	मेषे	३।२७।४०।२२	५७।२८
जन्माष्ट.	८	श	३८	४४	२१	३४	भर	०/५६	०१/११	६/२८	०५/३६	वृ	३/५५	०६/५०	७/२८	१९/२५	बा	११	३४	१०	४२	२७	०५	०४	२५	२१	१६	वृषे ११।४३	३।२८।३७।५१	५७।३०
गोगा	९	र	३३	१३	१९	२२	रोहि	५२	५१	२७	१४	व्या	४८	४५	२५	३५	तै	५	५५	८	२७	२३	०५	०३	२६	२२	१७	वृषे	३।२९।३५।२१	५७।३२
आनन्द	१०	सो	२८	०३	१७	१९	मृग	४९	४७	२६	०१	ह	४२	००	२२	५४	व	०	३४	६	२०	२०	०६	०२	२७	२३	१८	मिथु. १४।३६	४।००।३२।५२	५७।३३
ए.व्र.	११	मं	२३	२६	१५	२९	आर्द्रा	४७	२०	२५	०२	व	३५	४३	२०	२४	बा	२३	२६	१५	२९	१६	०६	०१	२८	२४	१९	मिथु.	४।०१।३०।२६	५७।३५
प्र.व्र.	१२	बु	१९	३०	१३	५५	पुन	४५	३९	२४	२३	सि	३०	०२	१८	०८	तै	१९	३०	१३	५५	१२	०७	००	२९	२५	२०	कर्के १८।३१	४।०२।२८।००	५७।३६
शुभ	१३	गु	१६	२८	१२	४२	पुष्य	४४	५६	२४	०६	व्य	२५	०६	१६	१०	व	१६	२८	१२	४२	०९	०७	६/५६	३०	२६	२१	कर्के	४।०३।२५।३७	५७।३८
मृत्यु	१४	शु	१४	२९	११	५५	श्ले	४५	१९	२४	१५	व	२१	०१	१४	३२	श	१४	२९	११	५५	०५	०८	५८	३१	२७	२२	सिंहे २४।१५	४।०४।२३।१५	५७।४०
अमाव.	३०	श	१३	४२	११	३७	मघा	४६	५५	२४	५४	प	१७	५४	१३	१८	ना	१३	४२	११	३७	०१	०८	५७	१	२८	२३	सिंहे	४।०५।२०।५५	५७।४२

वर्षर्तू रविर्दक्षिणे श्रावणकृष्णोति गुर्जराः, अगस्त २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
[A सं.स्त्री.पु.चं.चं.वाहन मण्डूक वर्षाश्रेष्ठः
भ. २१।३८ उ.,बृहद्गौरी व्र. (कर्नाटके डोली), मार्गी बुधः २१।०४
भ. ८।४० या., अंगारकी चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २१।०९, C
हस्ते भौमः २१।३५, पुन.-१ गुरुः १४।३०
[C कज्जली(बूढी ३), पुन. शुक्रः१५।३०
भ. २६।०९ उ., पंचक समाप्तिः ९।०६, हलषष्ठी, चंद्रषष्टी (मरु.)
भ. १३।०० या., जन्माष्टमी व्र. स्मा., शीतला व्र., D
मन्वादि, जन्माष्टमी व्र. वैष्ण., सिंहे मघा. रविः २५।३४, A
गोगानवमी, सिंहे मघा. सौरः १६।२३ [D भारतीयस्वतंत्रतादिवस
भ. ६।२० उ. १७।१९ या., (व) उभा.-१ शनिः ७।००
अजा ११ व्र., जैनपर्युषण, वत्सपूजा
प्रदोषः, कर्के शुक्रः २६।२६ [E कन्यायां भानुः २६।१५
भ.१२।४२उ. २४।१५या.,मासिकशिवरात्री व्र., श्लेषा. बुधः २८।३७
कुशांग्रहणी, पिठोरी ३० (मध्यदेशे पोला), पितृकार्येऽमा.,सायन E
देवकार्येऽमा., श्री शक्ति पूजा, लोहार्गल स्ना., मातृ ३०, भा. B
[B भाद्रपदारंभः, पुष्ये शुक्रः २१।४०

अयनांशाः २४।११।५४

पं.१८ भा.कृ. २ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	३	२	२	११	१०	४
२४	०८	०९	१९	१८	०७	२५	२५
२५	२०	५९	३१	२१	०१	३०	३०
०४	१४	०५	१४	३६	२१	२५	२५
५७	३७	२	१२	७०	२	३	३
३५	३९	३३	१७	३५	४८	११	११
श्ले	उफा	पु	आ	आ	उभा	पूभा	पूफा
३	४	२	४	४	२व	२	४



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अग.	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह प्रातः	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ सायँ	मीन रात्रौ
०३।२३।००।१७	१ र	१०	१०।२५	१२।०१	१।५७	४।१२	६।३२	८।४९	११।०५	१।२४	३।४२	५।४७	७।३०	८।५९
०३।२३।५७।३८	२ चं	११	१०।२१	११।५७	१।५३	४।०८	६।२८	८।४५	११।०१	१।२०	३।३८	५।४३	७।२६	८।५५
०३।२४।५५।०१	३ मं	१२	१०।१७	११।५३	१।४९	४।०४	६।२४	८।४१	१०।५७	१।१६	३।३५	५।३९	७।२२	८।५१
०३।२५।५२।२५	४ बु	१३	१०।१३	११।४९	१।४५	४।००	६।२०	८।३७	१०।५३	१।१२	३।३१	५।३५	७।१८	८।४७
०३।२६।४९।५१	६ गु	१४	१०।०९	११।४५	१।४१	३।५६	६।१६	८।३३	१०।४९	१।०८	३।२७	५।३१	७।१४	८।४३
०३।२७।४७।१८	७ शु	१५	१०।०५	११।४१	१।३७	३।५२	६।१२	८।२९	१०।४५	१।०४	३।२३	५।२७	७।१०	८।३९
०३।२८।४४।४६	८ श	१६	१०।०१	११।३७	१।३४	३।४८	६।०८	८।२५	१०।४१	१।००	३।१९	५।२३	७।०६	८।३५
०३।२९।४२।१६	९ र	१७	९।५७	११।३३	१।३०	३।४४	६।०४	८।२१	१०।३७	१२।५६	३।१५	५।१९	७।०३	८।३१
०४।००।३९।४८	१० चं	१८	९।५३	११।२९	१।२६	३।४०	६।००	८।१७	१०।३३	१२।५२	३।११	५।१५	६।५९	८।२७
०४।०१।३७।२२	११ मं	१९	९।४९	११।२५	१।२२	३।३६	५।५७	८।१३	१०।२९	१२।४८	३।०७	५।११	६।५५	८।२३
०४।०२।३४।५७	१२ बु	२०	९।४५	११।२१	१।१८	३।३३	५।५३	८।०९	१०।२५	१२।४४	३।०३	५।०७	६।५१	८।१९
०४।०३।३२।३३	१३ गु	२१	९।४१	११।१८	१।१४	३।२९	५।४९	८।०६	१०।२१	१२।४०	२।५९	५।०४	६।४७	८।१५
०४।०४।३०।१२	१४ शु	२२	९।३७	११।१४	१।१०	३।२५	५।४५	८।०२	१०।१७	१२।३७	२।५५	५।००	६।४३	८।११
०४।०५।२७।५२	३० श	२३	९।३३	११।१०	१।०६	३।२१	५।४१	७।५८	१०।१३	१२।३३	२।५१	४।५६	६।३९	८।०७

संक्रांति फलम्

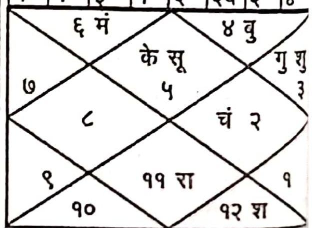
ता. १६ अगस्त २०२५

भा. कृ. ८ शनौ सिंहेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. २५।३४ वारात् ४ नक्षत्रात् ५ वारनाम राक्षसी चाण्डालान् सुखदा नक्षत्रनाम मिश्रा पशून् सुखदा अपर रात्रि ३ प्रहर व्यापिनी नटान् हन्ति, पूर्वे गमनमाग्नेयां दृष्टिः तैतिलकरणे प्रविष्टा नेष्टफलं रासभवाहनं मेषोपवाहनं सुभिक्षकारक अरुणवस्त्रं दण्डायुधं कांस्यपात्रं पक्वान्नभक्षणं मृद्लेपनं पक्षीजातिः केतकीपुष्पं प्रवलभूषणं भूर्जपत्रकंचुकी युवावस्था (सूती) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स पूर्वे राहु उत्तरे मूलं स्वर्गे विवाहस्तंभो ऐशान्यां शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। पुण्यकालः (स्टै.) १९।१० से २५।३४ तक। (दान- छत्र)।

अयनांशाः २४।११।५६

पं.१९ भा.कृ.१० सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	३	२	२	११	१०	४
०१	१२	१२	२०	२६	०६	२५	२५
०८	४५	४३	५५	३७	४०	०८	०८
३४	०५	०२	५२	२०	०७	१०	१०
५७	३८	५०	११	७१	३	३	३
४४	०६	४५	५०	०८	२०	११	११
म	ह	पु	पुन	पुन	उभा	पूभा	पूफा
१	१	३	१	२	२व	२	४



नक्षत्र युतिः- सूर्य श्लेषा. १६ अग. तः मघा.। मंगल उफा. १३ अग. तः हस्ते। बुध पुष्ये २१ अग. तः श्लेषा.। गुरु आर्द्रा.१३ अग.तः पुनर्वसी। शुक्र आर्द्रा. १२ अग. तः पुनर्वसी २३ अग.तः पुष्ये। शनि उभा.। राहु पूभा.। केतु पूफा.।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य धनि. १६ अग. तः श्रवणे। मंगल रेवत्यां १३ अग. तः उभा.। बुध ज्येष्ठा. २१ अग. तः धनि.। गुरु पूषा. १३ अग. तः मूले। शुक्र पूषा. १२ अग. तः मूले २३ अग. तः ज्येष्ठा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य अनुरा. १६ अग. तः भर.। मंगल रेवत्यां १३ अग. तः उभा.। बुध ज्येष्ठा. २१ अग. तः अनुरा.। गुरु पूषा. १३ अग. तः मूले। शुक्र पूषा. १२ अग. तः मूले २३ अग. तः ज्येष्ठा.। शनि हस्ते। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

२४ अगस्त से ७ सितंबर तक, श्री भाद्रपद शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
छत्र	१	र	१४	११	११	४९	पूफा	४९	४९	२६	०४	शि	१५	४७	१२	२८	ब	१४	११	११	४९	३१/५७	६/०९	६/५६	२	२९	२४	सिंहे	४।०६।१८।३७	५७।४३
श्रीवत्स	२	सो	१६	०२	१२	३४	उफा	५४	०२	२७	४६	सि	१४	४५	१२	०३	कौ	१६	०२	१२	३४	५४	०९	५५	३	३०	२५	कन्या ८।२७	४।०७।१६।२०	५७।४५
सौम्य	३	मं	१९	१२	१३	५०	हस्त	५९	३०	२९	५८	सा	१४	४४	१२	०३	ग	१९	१२	१३	५०	५०	१०	५४	४	१	२६	कन्या	४।०८।१४।०५	५७।४७
गणेश	४	बु	२३	३८	१५	३७	चित्रा	...	...	...	...	शु	१५	४२	१२	२७	वि	२३	३८	१५	३७	४६	१०	५३	५	२	२७	तुला. १९।१४	४।०९।११।५२	५७।४९
ऋषि	५	गु	२९	०५	१७	४९	चित्रा	६	०१	८	३५	शु	१७	२७	१३	०९	बा	२९	०५	१७	४९	४२	११	५१	६	३	२८	तुला.	४।१०।०९।४१	५७।५१
गद	६	शु	३५	१०	२०	१५	स्वा	१३	१९	११	३१	ब्र	१९	४५	१४	०५	कौ	२	०५	७	०१	३८	११	५०	७	४	२९	तुला.	४।११।०७।३२	५७।५३
शुभ	७	श	४१	१८	२२	४३	विशा	२०	५१	१४	३२	ऐ	२२	११	१५	०४	ग	८	१५	९	३०	३४	१२	४९	८	५	३०	वृश्चि. ७।४७	४।१२।०५।२५	५७।५५
मृत्यु	८	र	४६	५३	२४	५७	अनु	२८	०२	१७	२५	वै	२४	१९	१५	५६	वि	१४	१३	११	५३	३०	१२	४८	९	६	३१	वृश्चि.	४।१३।०३।१९	५७।५७
पद्म	९	सो	५१	२०	२६	४४	ज्ये	३४	१६	१९	५५	वि	२५	४४	१६	३०	बा	१९	१६	१३	५५	२६	१३	४७	१०	७	१	धनु. १९।५५	४।१४।०१।१६	५७।५८
छत्र	१०	मं	५४	१३	२७	५४	मूल	३९	०६	२१	५१	प्री	२६	०५	१६	३९	तै	२२	५९	१५	२४	२२	१३	४६	११	८	२	धनु.	४।१४।५९।१४	५८।००
ए.ब्र.	११	बु	५५	१९	२८	२१	पूषा	४२	१४	२३	०७	आ	२५	०५	१६	१६	व	२४	५९	१६	१३	१९	१३	४५	१२	९	३	मक. २९।२०	४।१५।५७।१५	५८।०३
सौम्य	१२	गु	५४	४०	२८	०६	उषा	४३	३७	२३	४१	सौ	२२	४१	१५	१८	ब	२५	१२	१६	१९	१५	१४	४४	१३	१०	४	मक.	४।१६।५५।१७	५८।०५
प्र.ब्र.	१३	शु	५२	१६	२७	०९	श्रव	४३	१८	२३	३४	शो	१८	५३	१३	४८	कौ	२३	३९	१५	४२	११	१४	४३	१४	११	५	मक.	४।१७।५३।२२	५८।०७
प्रवर्धमा	१४	श	४८	२४	२५	३७	धनि	४१	२९	२२	५०	अ	१३	४८	११	४६	ग	२०	३१	१४	२७	०७	१५	४१	१५	१२	६	कुंभे ११।१६	४।१८।५१।२९	५८।०९
पूर्णिमा	१५	र	४३	१८	२३	३४	शत	३८	२३	२१	३६	सु	७	३३	९	१७	वि	१५	५९	१२	३९	०३	१५	४०	१६	१३	७	कुंभे	४।१९।४९।३७	५८।११

केतकी अहर्गणः ५२५४ शरदृत्तू रविर्दक्षिणे, अगस्त-सितंबर २०२५

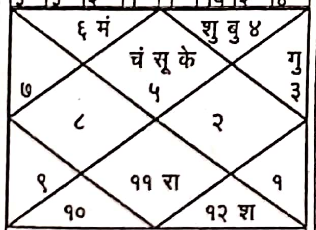
यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
[I पूजनं, रंभारोपणं, पूफा. बुधः १६।४७ [H यावत्, पूफा. E
चंद्रदर्शनम् (मु.४५), वराह जयंती [F उपाकर्म, रविलावल ३
भ.२६।४१उ.,मन्वादि,हरितालिका व्र., हस्तिगौरी व्र., सामवेदि F
भ. १५।३७ या., गणेश चतुर्थी (चंद्र दर्शनं निषेधः), जैन G
ऋषि पंचमी [G संवत्सरी, अगस्त्योदयः २५।२८ [E सौरः १३।०७
सौर (सूर्य) षष्ठी, स्कन्द दर्शनं, ललिता षष्ठी व्र. (गुर्जरे)
भ.२२।४३उ.,मुक्ताभरण व्र.,उमामहेश्वर पू.,दूबड़ी सातम,पूफा. A
भ.११।५३या.,दधीची जयंती,श्री राधा ८,गौरी आवाहन १७।२५ H
अदुःस्वनवमी व्र.,श्री चंद्र (उदासीनसंप्रदाय),गौरीपूजन १९।५५ C
दशावतार व्र.,श्रीरामदेवजी का मेला,गौरी विसर्जन २१।५१ यावत्
भ.१६।१३उ. २८।२१या.,जलझूलनी ११ व्र.,चित्रा.भौमः१७।०८,M
वामन जयंती, दुग्धव्रतं [C यावत्, सितंबर ९ ता. ३०,बुधास्तः J
प्रदोषः,गोत्रिरात्र व्र. [J पूर्वस्याम् २८।४८ [M श्लेषा.शुक्रः२४।४५
भ.२५।३७उ.,पंचक प्रारम्भः ११।१६, अनन्त १४, कदली व्रतं I
भ. १२।३९ या., खग्रासं चन्द्रग्रहणम्, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, B

[A रविः २१।३४,सिंहे मघा.बुधः १७।३६,पुन.-२ गुरुः २१।५४, सं.स्त्री.नपु.सू.सू.वाहन महिष अनावृष्टिः [B प्रौष्ठपदी, महालय श्राद्धारंभः, महेश्वर पूजनं, कु. संध्यापूजा, इंदुला १५

अयनांशाः २४।११।५७

पं.२० भा.शु. २ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	३	२	३	११	१०	४
०७	१७	२०	२२	०४	०६	२४	२४
५३	१३	४८	१७	५६	१५	४५	४५
०८	०५	०४	१०	५०	१९	५४	५४
५७	३८	९१	११	७१	३	३	३
५३	३२	३९	१८	३९	४८	११	११
म	ह	श्ले	पुन	पु	उभा	पूभा	पूफा
३	३	२	१	१	१व	२	४



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अग.	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह प्रातः	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ सायँ	मीन रात्रौ
०४।०६।२५।३३	१ र	२४	९।२९	११।०६	१।०२	३।१७	५।३७	७।५४	१०।१०	१२।२९	२।४७	४।५२	६।३५	८।०३
०४।०७।२३।१७	२ चं	२५	९।२६	११।०२	१२।५८	३।१३	५।३३	७।५०	१०।०६	१२।२५	२।४३	४।४८	६।३१	७।५९
०४।०८।२१।०२	३ मं	२६	९।२२	१०।५८	१२।५४	३।०९	५।२९	७।४६	१०।०२	१२।२१	२।३९	४।४४	६।२७	७।५६
०४।०९।१८।५०	४ बु	२७	९।१८	१०।५४	१२।५०	३।०५	५।२५	७।४२	९।५८	१२।१७	२।३५	४।४०	६।२३	७।५२
०४।१०।१६।३९	५ गु	२८	९।१४	१०।५०	१२।४६	३।०१	५।२१	७।३८	९।५४	१२।१३	२।३१	४।३६	६।१९	७।४८
०४।११।१४।३०	६ शु	२९	९।१०	१०।४६	१२।४२	२।५७	५।१७	७।३४	९।५०	१२।०९	२।२७	४।३२	६।१५	७।४४
०४।१२।१२।२३	७ श	३०	९।०६	१०।४२	१२।३८	२।५३	५।१३	७।३०	९।४६	१२।०५	२।२४	४।२८	६।११	७।४०
०४।१३।१०।१७	८ र	३१	९।०२	१०।३८	१२।३४	२।४९	५।०९	७।२६	९।४२	१२।०१	२।२०	४।२४	६।०७	७।३६
०४।१४।०८।१४	९ चं	१	८।५८	१०।३४	१२।३०	२।४५	५।०५	७।२२	९।३८	११।५७	२।१६	४।२०	६।०३	७।३२
०४।१५।०६।१३	१० मं	२	८।५४	१०।३०	१२।२६	२।४१	५।०१	७।१८	९।३४	११।५३	२।१२	४।१६	५।५९	७।२८
०४।१६।०४।१४	११ बु	३	८।५०	१०।२६	१२।२३	२।३७	४।५७	७।१४	९।३०	११।४९	२।०८	४।१२	५।५५	७।२४
०४।१७।०२।१६	१२ गु	४	८।४६	१०।२२	१२।१९	२।३३	४।५३	७।१०	९।२६	११।४५	२।०४	४।०८	५।५२	७।२०
०४।१८।००।२१	१३ शु	५	८।४२	१०।१८	१२।१५	२।२९	४।५०	७।०६	९।२२	११।४१	२।००	४।०४	५।४८	७।१६
०४।१८।५८।२८	१४ श	६	८।३८	१०।१४	१२।११	२।२६	४।४६	७।०२	९।१८	११।३७	१।५६	४।००	५।४४	७।१२
०४।१९।५६।३७	१५ र	७	८।३४	१०।१०	१२।०७	२।२२	४।४२	६।५८	९।१४	११।३३	१।५२	३।५६	५।४०	७।०८

मास फलम्

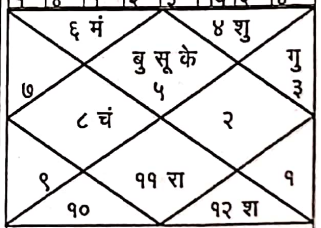
चन्द्रग्रहण ता. ७ सित. २०२५, रविवार,

इस माह में पांच रविवार नेष्ट फलप्रद हैं। शनिवारी अमावस होने से दुर्भिक्ष होकर महादुःख तथा महाभय हो पिता-पुत्रों में पराङ्मुखता हो। अमावस्या मघा योग समर्घता कारक है। अमावस को मघा होने से मध्यम वर्षा हो। अमावस्या को शनिवार और मघा होने से अरिष्टकारी योग बनता है। भादवा की अमावस शनिवारी होने से तेल महंगा हो। भादवा सुदि २ सोमवार होने से धान्योत्पत्ति उत्तम और चौपायों की वृद्धि हो। भादवा सुदी छठ को अनुराधा नहीं होने से दुर्भिक्ष हों। पूर्णिमा शतभिषा युक्त होने से शुभ फल दायिनी है। शनिवार की सक्रांति होने से अशुभ फलकारक है सभी तरह की वस्तुओं का क्षय हो प्रजा में दुर्भिक्ष हो, धान्यादि भाव तेज हो और रोगों की अधिकता हो।

अयनांशाः २४।११।५८

पं.२१ भा.शु. ९ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	२	३	११	१०	४
१४	२१	०२	२३	१३	०५	२४	२४
३८	४४	४९	३४	१९	४७	२३	२३
५४	११	५६	३४	५४	३०	३८	३८
५८	३८	११३	१०	७२	४	३	३
०४	५९	५६	४३	०९	११	११	११
पूफा	ह	म	पुन	पु	उभा	पूभा	पूफा
१	४	१	२	३	१व	२	४



नक्षत्र युतिः- सूर्य मघा. ३० अग. तः पूफा. । मंगल हस्ते ३ सितं. तः चित्रा. । बुध श्लेषा. ३० अग. तः मघा. ६ सितं. तः पूफा. । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र पुष्ये ३ सितं. तः श्लेषा. । शनि उभा. । राहु पूभा. । केतु पूफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य श्रवणे ३० अग. तः अश्वि. । मंगल उभा. ३ सितं. तः पूभा. । बुध धनि. ३० अग. तः श्रवणे ६ सितं. तः अश्वि. । गुरु मूले । शुक्र ज्येष्ठा. ३ सितं. तः धनि. । शनि हस्ते । राहु चित्रा. । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य भर. ३० अग. तः अश्वि.। मंगल उभा. ३ सितं. तः पूभा.। बुध अनुरा. ३० अग. तः भर. ६ सितं. तः अश्वि.। गुरु मूले । शुक्र ज्येष्ठा. ३ सितं. तः अनुरा.। शनि हस्ते । राहु चित्रा. । केतु अश्वि. ।

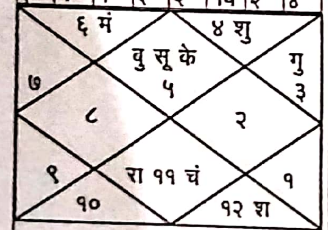
८ सितंबर से २१ सितंबर तक, श्री आश्विन कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक | शरदृत्तू रविर्दक्षिणे भाद्रपदकृष्णेति गुर्जराः, सितंबर २०२५

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
मुसल	१	सो	३७	१३	२१	०९	पूभा	३४	१८	१९	५९	धृ	०/५२	२३/३१	६/२७	२५/१६	बा	१०	२१	१०	२४	३०/५९	६/१६	६/३९	१७	१४	८	मीने १४।२५	४।२०।४७।४८	५८।१३	ग्रहण-करिदिन
सिद्धि	२	मं	३०	३०	१८	२८	उभा	२९	३२	१८	०५	गं	४४	१०	२३	५६	तै	३	५५	७	५०	५५	१६	३८	१८	१५	९	मीने	४।२१।४६।०१	५८।१५	भ. २९।०४ उ. [B पूफा.-३ केतुः ६।३३
च.व्र.	३	बु	२३	२३	१५	३८	रेव	२४	२४	१६	०२	वृ	३५	३३	२०	३०	वि	२३	२३	१५	३८	५१	१७	३७	१९	१६	१०	मेषे १६।०२	४।२२।४४।१६	५८।१७	भ.१५।३८ या.,पंचक समाप्तिः १६।०२,चतुर्थीव्रतं.चन्द्रोदयः २०।१६
मानस	४	गु	१६	१३	१२	४६	अश्वि	१९	११	१३	५७	ध्रु	२६	५६	१७	०३	बा	१६	१३	१२	४६	४६	१७	३६	२०	१७	११	मेषे	४।२३।४२।३३	५८।१९	भरणी श्राद्ध [C सिंहे मघा. शुक्रः २५।०६
मुद्गर	५	शु	९	१४	९	५९	भर	१४	११	११	५८	व्या	१८	३०	१३	४२	तै	९	१४	९	५९	४२	१८	३५	२१	१८	१२	वृषे १७।२९	४।२४।४०।५२	५८।२१	चंद्रषष्ठी [D जम्बूक वर्षाश्रेष्ठः
ध्वजा	६	श	२	४२	७	२३	कृति	९	३८	१०	०९	ह	१०	२९	१०	३०	व	२	४२	७	२३	३८	१८	३३	२२	१९	१३	वृषे	४।२५।३९।१३	५८।२४	भ. ७।२३ उ. १८।१० या., उफा. रविः १५।२८, तुलायां भौमः A
क्षयः	७	श	५६	५१	२९	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A २०।४२, उफा. बुधः १५।४७, सं.स्त्री.पु.सू.सू.वाहन D
धाता	८	र	५१	५०	२७	०३	रोहि	५	४८	८	३८	व	३/५६	०२/१९	७/२८	३१/१०	बा	२४	१२	१५	५९	३४	१९	३२	२३	२०	१४	मिथु. १९।५९	४।२६।३७।३७	५८।२६	श्रीमहालक्ष्मी व्र., अशोकाष्टमी, उफा. सौरः ७।१७, C
आनन्द	९	सो	४७	४९	२५	२७	मृग	२	५०	७	२७	व्य	५०	२३	२६	२८	तै	१९	४१	१४	११	३०	१९	३१	२४	२१	१५	मिथु.	४।२७।३६।०२	५८।२८	सौभाग्यवतीनां श्राद्धं, कन्यायां बुधः १०।५०
चर	१०	मं	४४	५५	२४	१८	आर्द्रा	०	५३	६	४१	व	४५	२१	२४	२८	व	१६	१३	१२	४९	२६	१९	३०	२५	२२	१६	कर्के २४।२३	४।२८।३४।३०	५८।३०	भ. १२।४९ उ. २४।१८ या., कन्यायां रविः २५।३५
ए.व्र.	११	बु	४३	१०	२३	३६	पुन	०	०२	६	२१	प	४१	१५	२२	५०	ब	१३	५३	११	५३	२२	२०	२९	२६	२३	१७	कर्के	४।२९।३३।०१	५८।३२	इंदिरा ११ व्र., विश्वकर्मा पू., कन्यायां सौरः १७।२४
शुभ	१२	गु	४२	३६	२३	२३	पुष्य	०	२०	६	२८	शि	३८	०३	२१	३४	कौ	१२	४५	११	२६	१८	२०	२८	२७	२४	१८	कर्के	५।००।३१।३३	५८।३५	सन्यासिनां श्राद्धं [E पुन.-३ गुरुः २७।५७
प्र.व्र.	१३	शु	४३	१२	२३	३८	श्ले	१	४७	७	०४	सि	३५	४७	२०	४०	ग	१२	४५	११	२७	१४	२१	२६	२८	२५	१९	सिंहे ७।०४	५।०१।३०।०८	५८।३७	भ. २३।३८ उ., प्रदोषः, मासिकशिवरात्री व्र., युगादि, E
पद्म	१४	श	४४	५३	२४	१९	मघा	४	२१	८	०५	सा	३४	२२	२०	०६	वि	१३	५४	११	५५	१०	२१	२५	२९	२६	२०	सिंहे	५।०२।२८।४५	५८।३९	भ. ११।५५ या., शस्त्रादि हतानां श्राद्धं, हस्ते बुधः २४।२६
अमाव.	३०	र	४७	३९	२५	२५	पूफा	७	५७	९	३३	शु	३३	४६	१९	५२	च	१६	०७	१२	४९	०६	२२	२४	३०	२७	२१	कन्या १५।५८	५।०३।२७।२४	५८।४१	देवपितृकार्येऽमा., सर्वपितृ श्राद्धम्, पूभा.-१ राहुः ६।३३, B

अयनांशाः २४।११।५९

पं.२२ आ.कृ. १ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	२	३	११	१०	४
२१	२६	१६	२४	२१	०५	२४	२४
२६	१८	२२	४७	४६	१७	०१	०१
०१	२४	०३	३६	१८	२१	२२	२२
५८	३९	११६	१०	७२	४	३	३
१६	२६	०५	०२	३६	२७	११	११
पूफा	चि	पूफा	पुन	श्ले	उभा	पूभा	पूफा
३	१	१	२	२	१व	२	४



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. सितं	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह रात्रौ	कन्या प्रातः	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ दिवा	मीन सायँ
०४।२०।५४।४७	१ चं	८	८।३०	१०।०७	१२।०३	२।१८	४।३८	६।५५	९।१०	११।२९	१।४८	३।५३	५।३६	७।०४
०४।२१।५३।००	२ मं	९	८।२६	१०।०३	११।५९	२।१४	४।३४	६।५१	९।०६	११।२६	१।४४	३।४९	५।३२	७।००
०४।२२।५१।१६	३ बु	१०	८।२२	९।५९	११।५५	२।१०	४।३०	६।४७	९।०२	११।२२	१।४०	३।४५	५।२८	६।५६
०४।२३।४९।३३	४ गु	११	८।१८	९।५५	११।५१	२।०६	४।२६	६।४३	८।५९	११।१८	१।३६	३।४१	५।२४	६।५२
०४।२४।४७।५२	५ शु	१२	८।१५	९।५१	११।४७	२।०२	४।२२	६।३९	८।५५	११।१४	१।३२	३।३७	५।२०	६।४८
०४।२५।४६।१४	६ श	१३	८।११	९।४७	११।४३	१।५८	४।१८	६।३५	८।५१	११।१०	१।२८	३।३३	५।१६	६।४५
०४।२६।४४।३८	८ र	१४	८।०७	९।४३	११।३९	१।५४	४।१४	६।३१	८।४७	११।०६	१।२४	३।२९	५।१२	६।४१
०४।२७।४३।०४	९ चं	१५	८।०३	९।३९	११।३५	१।५०	४।१०	६।२७	८।४३	११।०२	१।२०	३।२५	५।०८	६।३७
०४।२८।४१।३२	१० मं	१६	७।५९	९।३५	११।३१	१।४६	४।०६	६।२३	८।३९	१०।५८	१।१६	३।२१	५।०४	६।३३
०४।२९।४०।०२	११ बु	१७	७।५५	९।३१	११।२७	१।४२	४।०२	६।१९	८।३५	१०।५४	१।१३	३।१७	५।००	६।२९
०५।००।३८।३५	१२ गु	१८	७।५१	९।२७	११।२३	१।३८	३।५८	६।१५	८।३१	१०।५०	१।०९	३।१३	४।५६	६।२५
०५।०१।३७।१०	१३ शु	१९	७।४७	९।२३	११।१९	१।३४	३।५४	६।११	८।२७	१०।४६	१।०५	३।०९	४।५२	६।२१
०५।०२।३५।४७	१४ श	२०	७।४३	९।१९	११।१५	१।३०	३।५०	६।०७	८।२३	१०।४२	१।०१	३।०५	४।४८	६।१७
०५।०३।३४।२६	३० र	२१	७।३९	९।१५	११।१२	१।२६	३।४६	६।०३	८।१९	१०।३८	१२।५७	३।०१	४।४४	६।१३

संक्रांति फलम्

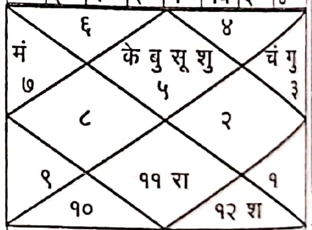
ता. १६ सितंबर २०२५

आश्वि. कृ. १० भौमे कन्यायामर्कः प्र. (स्टै.) टा. २५।३५ वारात् ४ नक्षत्रात् ५ वारनाम महोदरी चोरान् सुखदा नक्षत्रनाम महोदरी चोरान् सुखदा अपर रात्रि ३ प्रहर व्यापिनी नटान् हन्ति, पूर्वे गमनमाग्नेयां दृष्टिः बवकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं सिंहवाहनं गजोपवाहनं भीतिकारक श्वेतवस्त्रं भुशुण्ड्यायुधं स्वर्णपात्रं अन्नभक्षणं कस्तूरीलेपनं दैवतंजातिः पुन्नागपुष्पं पिरोजभूषणं विचित्रकंचुकी बालावस्था (बैठी) मु. ४५ धान्यभावे समर्घ वत्स पूर्वे राहु उत्तरे मूलं स्वर्गे विवाहस्तंभो ऐशान्यां शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। पुण्यंकालः (स्टै.) २५।३५ से बुधे ७।५९ तक। (दान- गृह वस्त्र)।

अयनांशाः २४।१२।००

पं.२३ आ.कृ. ९ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	४	२	४	११	१०	४
२८	००	२९	२५	००	०४	२३	२३
१४	५५	३९	५५	१५	४५	३९	३९
३५	४३	१३	३९	५२	३९	०६	०६
५८	३९	११०	९	७३	४	३	३
२९	५२	२०	१७	०३	३७	११	११
उफा	चि	उफा	पुन	म	उभा	पूभा	पूफा
१	३	१	२	१	१व	२	४



नक्षत्र युतिः- सूर्य पूफा. १३ सितं. तः उफा. । मंगल चित्रा. । बुध पूफा. १३ सितं. तः उफा. २० सितं. तः हस्ते । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र श्लेषा. १४ सितं. तः मघा. । शनि उभा. । राहु पूभा. । केतु पूफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य अश्वि. १३ सितं. तः रेवत्यां। मंगल पूभा. । बुध अश्वि. १३ सितं. तः रेवत्यां २० सितं. तः उभा. । गुरु मूले । शुक्र धनि.१४ सितं. तः श्रवणे । शनि हस्ते । राहु चित्रा.। केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य अश्वि. १३ सितं. तः रेवत्यां । मंगल पूभा. । बुध अश्वि. १३ सितं. तः रेवत्यां २० सितं. तः उभा.। गुरु मूले । शुक्र अनुरा.१४ सितं. तः भर.। शनि हस्ते । राहु चित्रा.। केतु अश्वि. ।

२२ सितंबर से ७ अक्टूबर तक, श्री आश्विन शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
नवरा.	१	सो	५१	२३	२६	५६	उफा	१२	३४	११	२४	शु	३३	५७	१९	५७	किं	१९	२२	१४	०७	३०/०२	६/२२	६/२३	३१	२८	२२	कन्या	५।०४।२६।०५	५८।४४
सौम्य	२	मं	५६	०३	२८	४८	हस्त	१८	०७	१३	३७	ब्र	३४	५१	२०	१९	बा	२३	३६	१५	४९	२९/५७	२३	२२	१	२९	२३	तुला.२६।५२	५।०५।२४।४९	५८।४६
काल	३	बु	...	...	...	...	चित्रा	२४	३०	१६	११	ऐ	३६	२३	२०	५६	तै	२८	४२	१७	५२	५३	२३	२१	२	१	२४	तुला.	५।०६।२३।३५	५८।४८
सुस्थिर	३	गु	१	३२	७	००	स्वा	३१	३५	१९	०२	वै	३८	२७	२१	४६	ग	१	३२	७	००	४९	२४	१९	३	२	२५	तुला.	५।०७।२२।२३	५८।५१
मातङ्ग	४	शु	७	३६	९	२७	विशा	३९	०६	२२	०३	वि	४०	४९	२२	४४	वि	७	३६	९	२७	४५	२४	१८	४	३	२६	वृश्चि. १५।१७	५।०८।२१।१४	५८।५३
अमृत	५	श	१३	५६	११	५९	अनु	४६	३८	२५	०४	प्री	४३	११	२३	४१	बा	१३	५६	११	५९	४१	२५	१७	५	४	२७	वृश्चि.	५।०९।२०।०७	५८।५५
काण	६	र	२०	००	१४	२५	ज्ये	५३	४०	२७	५३	आ	४५	११	२४	२९	तै	२०	००	१४	२५	३७	२५	१६	६	५	२८	धनु. २७।५३	५।१०।१९।०२	५८।५८
लुम्बक	७	सो	२५	१६	१६	३२	मूल	५९	४०	३०	१७	सौ	४६	२५	२४	५९	व	२५	१६	१६	३२	३३	२६	१५	७	६	२९	धनु.	५।११।१८।००	५९।००
दुर्गा	८	मं	२९	१३	१८	०७	पूषा	...	...	...	...	शो	४६	३१	२५	०२	ब	२९	१३	१८	०७	२९	२६	१४	८	७	३०	धनु.	५।१२।१६।५९	५९।०२
श्रीवत्स	९	बु	३१	२७	१९	०१	पूषा	४	०९	८	०६	अ	४५	१५	२४	३३	बा	०	३३	६	४०	२५	२७	१२	९	८	१	मक. १४।२७	५।१३।१६।०२	५९।०५
विजया	१०	गु	३१	४७	१९	१०	उषा	६	५२	९	१२	सु	४२	२७	२३	२६	तै	१	५२	७	१२	२१	२७	११	१०	९	२	मक.	५।१४।१५।०६	५९।०७
ए.व्र.	११	शु	३०	०८	१८	३१	श्रव	७	४०	९	३२	धृ	३८	०६	२१	४२	व	१	११	६	५६	१६	२८	१०	११	१०	३	कुंभे २१।२४	५।१५।१४।१३	५९।०९
प्र.व्र.	१२	श	२६	३६	१७	०६	धनि	६	३४	९	०६	शू	३२	१६	१९	२२	बा	२६	३६	१७	०६	१२	२८	०९	१२	११	४	कुंभे	५।१६।१३।२२	५९।१२
राक्षस	१३	र	२१	२२	१५	०१	शत	३/५९	४२/२२	७/३०	५८/१३	गं	२५	०४	१६	३०	तै	२१	२२	१५	०१	०८	२९	०८	१३	१२	५	मीने २४।४२	५।१७।१२।३४	५९।१४
गद	१४	सो	१४	४३	१२	२२	उभा	५३	४८	२८	००	वृ	१६	४४	१३	११	व	१४	४३	१२	२२	०४	२९	०७	१४	१३	६	मीने	५।१८।११।४८	५९।१६
पूर्णिमा	१५	मं	६	५८	९	१७	रेव	४७	२६	२५	२८	ध्रु	७/५७	३०/४२	९/२१	३०/३४	ब	६	५८	९	१७	००	३०	०६	१५	१४	७	मेषे २५।२८	५।१९।११।०४	५९।१९

केतकी अहर्गणः ५२८३ शरदृतु रविर्दक्षिणे,सितंबर-अक्टूबर २०२५

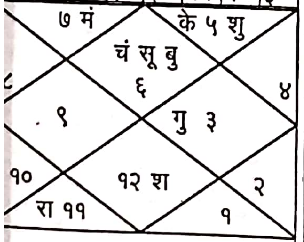
यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
नवरात्रारम्भः, घटस्था. अग्रसेन जयंती , मातामह श्रा., सायन D
चंद्रदर्शनम् (मु.३०), भा. अश्विनारंभः, स्वा. भौमः २०।२३
रविलास्सर ४ [C स्नान प्रा.,स्वा.बुधः१२।१३ [E उफा.शुक्रः१८।५३
भ. २०।१२ उ., पूफा. शुक्रः २३।०२ [D तुलायां भानुः २४।०५
भ.९।२७या., उपांग ललिता व्र. [F चातक अनावृष्टिः [H अवतार
हस्ते रविः ६।५९ (सौरः २२।४०), सं.स्त्री.नपु.सू.सू.वाहन F
चित्रा. बुधः २२।४० [B विसर्जनं श्रवणे, गांधी जयन्ती, G
भ. १६।३२उ. २९।२४या., सरस्वती आवाहनं मूलभे, भद्रकाली H
महाष्टमी, सरस्वती पूजनं पू.षाभे [G तुलायां बुधः २७।२९
मन्वादि, शस्त्रादि पूजा, बलिदानं उ.षाभे, अक्टूबर १० ता. ३१
बोद्धावतार, विजया १०, शमीपूजा, पट्टाभिषेक, सरस्वती B
भ.६।५६उ. १८।३१या.,पंचक प्रारम्भः २१।२४,पापांकुशा ११ व्र., I
प्रदोषः, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत् [I (व) पूभा.-४ शनिः २०।५७
[A नवान्न भक्षण,आश्वयुजी कर्म (आश्वलायन शाखा),कार्तिक C
भ.१२।२२उ. २२।५३या.,पूर्णिमा व्रतं,शरद पूर्णिमा,कोजागरी व्र.,E
पंचक समाप्तिः २५।२८, पूर्णिमा पुण्यं, बंगीय लक्ष्मी पूजा A

॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

अयनांशाः २४।१२।०१

पं.२४ आ.शु. १ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	२	४	११	१०	४
०५	०५	१२	२६	०८	०४	२३	२३
०४	३६	१०	५८	४८	१३	१६	१६
०	०८	१०	०८	२५	११	५१	५१
८	४०	१०३	८	७३	४	३	३
३	१९	१०	२६	२७	३९	११	११
फा	चि	ह	पुन	म	उभा	पूभा	पूफा
	४	१	३	३	१व	१	३

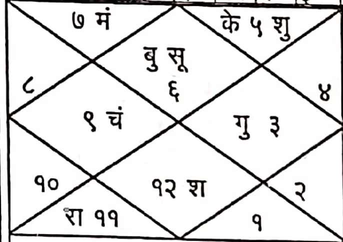


ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. सितं	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह रात्रौ	कन्या प्रातः	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ दिवा	मीन सायँ
०५।०४।३३।०८	१ चं	२२	७।३५	९।११	११।०८	९।२२	३।४२	५।५९	८।१५	१०।३४	१२।५३	२।५७	४।४१	६।०९
०५।०५।३१।५२	२ मं	२३	७।३१	९।०७	११।०४	९।१८	३।३९	५।५५	८।११	१०।३०	१२।४९	२।५३	४।३७	६।०५
०५।०६।३०।३८	३ बु	२४	७।२७	९।०३	११।००	९।१५	३।३५	५।५१	८।०७	१०।२६	१२।४५	२।४९	४।३३	६।०१
०५।०७।२९।२७	३ गु	२५	७।२३	८।५९	१०।५६	९।११	३।३१	५।४७	८।०३	१०।२२	१२।४१	२।४५	४।२९	५।५७
०५।०८।२८।१८	४ शु	२६	७।१९	८।५६	१०।५२	९।०७	३।२७	५।४४	७।५९	१०।१९	१२।३७	२।४२	४।२५	५।५३
०५।०९।२७।११	५ श	२७	७।१५	८।५२	१०।४८	९।०३	३।२३	५।४०	७।५५	१०।१५	१२।३३	२।३८	४।२१	५।४९
०५।१०।२६।०७	६ र	२८	७।११	८।४८	१०।४४	१२।५९	३।१९	५।३६	७।५१	१०।११	१२।२९	२।३४	४।१७	५।४५
०५।११।२५।०४	७ चं	२९	७।०७	८।४४	१०।४०	१२।५५	३।१५	५।३२	७।४८	१०।०७	१२।२५	२।३०	४।१३	५।४१
०५।१२।२४।०५	८ मं	३०	७।०४	८।४०	१०।३६	१२।५१	३।११	५।२८	७।४४	१०।०३	१२।२१	२।२६	४।०९	५।३८
०५।१३।२३।०७	९ बु	१	७।००	८।३६	१०।३२	१२।४७	३।०७	५।२४	७।४०	९।५९	१२।१७	२।२२	४।०५	५।३४
०५।१४।२२।१२	१० गु	२	६।५६	८।३२	१०।२८	१२।४३	३।०३	५।२०	७।३६	९।५५	१२।१३	२।१८	४।०१	५।३०
०५।१५।२१।१९	११ शु	३	६।५२	८।२८	१०।२४	१२।३९	२।५९	५।१६	७।३२	९।५१	१२।०९	२।१४	३।५७	५।२६
०५।१६।२०।२९	१२ श	४	६।४८	८।२४	१०।२०	१२।३५	२।५५	५।१२	७।२८	९।४७	१२।०५	२।१०	३।५३	५।२२
०५।१७।१९।४०	१३ र	५	६।४४	८।२०	१०।१६	१२।३१	२।५१	५।०८	७।२४	९।४३	१२।०२	२।०६	३।४९	५।१८
०५।१८।१८।५५	१४ चं	६	६।४०	८।१६	१०।१२	१२।२७	२।४७	५।०४	७।२०	९।३९	११।५८	२।०२	३।४५	५।१४
०५।१९।१८।११	१५ मं	७	६।३६	८।१२	१०।०८	१२।२३	२।४३	५।००	७।१६	९।३५	११।५४	१।५८	३।४१	५।१०

अयनांशाः २४।१२।०२

पं.२५ आ.शु. ७ सो. इष्टघटी ०।००

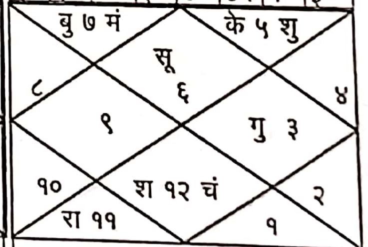
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	२	४	११	१०	४
११	१०	२३	२७	१७	०३	२२	२२
५६	१९	५१	५४	२३	४०	५४	५४
२२	३९	२७	२८	४६	४९	३५	३५
५८	४०	९६	७	७३	४	३	३
५७	४५	२२	३०	५०	३४	११	११
ह	स्वा	चि	पुन	पूफा	उभा	पूभा	पूफा
१	२	१	३	२	१व	१	३



अयनांशाः २४।१२।०३

पं.२६ आ.शु.१४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	६	२	४	११	१०	४
१८	१५	०४	२८	२६	०३	२२	२२
४९	०६	४७	४३	०१	०९	३२	३२
४४	१५	५८	५९	४०	२४	१९	१९
५९	४१	९०	६	७४	४	३	३
११	१२	३५	२९	११	२२	११	११
ह	स्वा	चि	पुन	पूफा	पूभा	पूभा	पूफा
३	३	४	३	४	४व	१	३



नक्षत्र युतिः- सूर्य उफा.२७ सितं. तः हस्ते। मंगल चित्रा.२३ सितं. तः स्वातौ। बुध हस्ते २८ सितं. तः चित्रा.७ अक्टू. तः स्वातौ। गुरु पुनर्वसौ। शुक्र मघा. २५ सितं. तः पूफा. ६ अक्टू.तः उफा.। शनि उभा. ३ अक्टू. तः (व) पूभा.। राहु पूभा.। केतु पूफा.।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य रेवत्यां २७ सितं.तः उभा.। मंगल पूभा. २३ सितं. तः शते। बुध उभा. २८ सितं. तः पूभा. ७ अक्टू. तः शते। गुरु मूले। शुक्र श्रवणे २५ सितं.तः अश्वि. ६ अक्टू.तः रेवत्यां। शनि हस्ते ३ अक्टू. तः चित्रा.। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य रेवत्यां २७ सितं. तः उभा.। मंगल पूभा.२३ सितं. तः शते। बुध उभा. २८ सितं. तः पूभा. ७ अक्टू. तः शते। गुरु मूले। शुक्र भर. २५ सितं. तः अश्वि. ६ अक्टू. तः रेवत्यां। शनि हस्ते ३ अक्टू. तः चित्रा.। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

८ अक्टूबर से २१ अक्टूबर तक,श्री कार्तिक कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमासू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
क्षयः	१	मं	५८	३२	२९	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मृत्यु	२	बु	४९	४५	२६	२४	अश्वि	४०	३८	२२	४५	ह	४७	३६	२५	३२	तै	२४	०९	१६	१०	२८/५६	६/३०	६/०५	१६	१५	८	मेषे	५।२०।१०।२२	५९।२१
पद्म	३	गु	४१	०३	२२	५६	भर	३३	५१	२०	०३	व	३७	३३	२१	३२	व	१५	२१	१२	३९	५२	३१	०३	१७	१६	९	वृषे २५।२४	५।२१।०९।४३	५९।२३
च.व्र.	४	शु	३२	४९	१९	३९	कृति	२७	२९	१७	३१	सि	२७	५२	१७	४०	ब	६	५०	९	१५	४८	३१	०२	१८	१७	१०	वृषे	५।२२।०९।०६	५९।२६
श्रीवत्स	५	श	२५	२७	१६	४३	रोहि	२१	५६	१५	१८	व्य	१८	५२	१४	०५	तै	२५	२७	१६	४३	४४	३२	०१	१९	१८	११	मिथु. २६।२२	५।२३।०८।३२	५९।२८
सौम्य	६	र	१९	१६	१४	१५	मृग	१७	३३	१३	३४	व	१०	४८	१०	५२	व	१९	१६	१४	१५	४०	३२	००	२०	१९	१२	मिथु.	५।२४।०८।००	५९।३०
काल	७	सो	१४	३२	१२	२२	आर्द्रा	१४	३५	१२	२३	प	३/५८	५३/४३	८/२९	०६/५०	ब	१४	३२	१२	२२	३६	३३	५/५९	२१	२०	१३	कर्के २९।५५	५।२५।०७।३०	५९।३२
सुस्थिर	८	मं	११	२२	११	०६	पुन	१३	१२	११	५०	सि	५३	५३	२८	०७	कौ	११	२२	११	०६	३२	३३	५८	२२	२१	१४	कर्के	५।२६।०७।०२	५९।३५
मातङ्ग	९	बु	९	५३	१०	३१	पुष्य	१३	२५	११	५६	सा	५०	४८	२६	५३	ग	९	५३	१०	३१	२८	३४	५७	२३	२२	१५	कर्के	५।२७।०६।३७	५९।३७
अमृत	१०	गु	९	५९	१०	३४	श्ले	१५	१३	१२	४०	शु	४८	५४	२६	०८	वि	९	५९	१०	३४	२४	३५	५६	२४	२३	१६	सिंहे १२।४०	५।२८।०६।१४	५९।३९
ए.व्र.	११	शु	११	३३	११	१३	मघा	१८	२४	१३	५७	शु	४८	०१	२५	४८	बा	११	३३	११	१३	२०	३५	५५	२५	२४	१७	सिंहे	५।२९।०५।५४	५९।४२
प्र.व्र.	१२	श	१४	२३	१२	२१	पूफा	२२	४६	१५	४२	ब्र	४७	५९	२५	४८	तै	१४	२३	१२	२१	१६	३६	५४	२६	२५	१८	कन्या २२।१२	६।००।०५।३५	५९।४४
मित्र	१३	र	१८	१५	१३	५४	उफा	२८	०६	१७	५१	ऐ	४८	४०	२६	०४	व	१८	१५	१३	५४	१२	३६	५३	२७	२६	१९	कन्या	६।०१।०५।१९	५९।४६
दीपाव.	१४	सो	२२	५५	१५	४७	हस्त	३४	१०	२०	१७	वै	४९	५२	२६	३४	श	२२	५५	१५	४७	०८	३७	५२	२८	२७	२०	कन्या	६।०२।०५।०५	५९।४८
अमाव.	३०	मं	२८	१२	१७	५५	चित्रा	४०	४९	२२	५७	वि	५१	२९	२७	१३	ना	२८	१२	१७	५५	०४	३८	५१	२९	२८	२१	तुला. ९।३६	६।०३।०४।५४	५९।५१

शरदृतू रविर्दक्षिणे आश्विनकृष्णेति गुर्जराः, अक्टूबर २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।

[A रविः १३।३३ (सौरः २८।२१), भौमास्तः पश्चिमायाम् D

[B सं.स्त्री.पु.सू.सू. वाहन नाग वर्षाश्रेष्ठः

भ. १२।३९ उ. २२।५६ या., दशरथ ललिता व्र., कन्यायां I

करवा ४ चन्द्रोदयः २०।२४, चित्रा. रविः २०।००, B

चित्रा. सौरः ११।१०; बुधोदयः पश्चिमायाम् १४।०९

भ. १४।१५ उ. २५।१४ या., स्कन्द षष्ठी [E शुक्रः ११।३४

होई (अहोरी) ८ चंद्रोदय २३।३१, विशा. भौमः ८।५३

[C गोत्रिरात्र व्र. [F कर्के पुन.-४ गुरुः २९।३६

भ. २२।२८ उ. [D १६।२८, हस्ते शुक्रः १२।५९

भ. १०।३४ या., विशा. बुधः १७।५४

रमा ११ व्र., गोवत्स द्वादशी, आकाश दीपारंभः, तुलायां A

प्रदोषः, धनतेरस, धन्वन्तरी जयंती, यमायदीपदानं, C

भ. १३।५४ उ. २६।४८ या., मासिकशिवरात्री व्र., दीपदानं,

रुप (नरक) १४, प्रभात स्नानं, महालक्ष्मी पूजा, कुबेर पू.

देवपितृकार्येऽमा., बलीपूजा

अयनांशाः २४।१२।०४

पं.२७ का.कृ. ७ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	६	२	५	११	१०	४
२५	११	१५	२९	०४	०२	२२	२२
४४	५५	०६	२६	४१	३९	१०	१०
४७	५६	५०	०६	५४	४७	०३	०३
५९	४१	८५	५	७४	४	३	३
२६	३८	२८	२२	३०	०२	११	११
चि	स्वा	स्वा	पुन	उफा	पूभा	पूभा	पूफा
१	४	३	३	३	४व	१	३



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अक्टू	मेष सायँ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह रात्रौ	कन्या रात्रौ	तुला प्रातः	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ दिवा	मीन दिवा
०५।२०।१७।३०	२ बु	८	६।३२	८।०८	१०।०४	१२।१९	२।३९	४।५६	७।१२	९।३१	११।५०	१।५४	३।३७	५।०६
०५।२१।१६।५१	३ गु	९	६।२८	८।०४	१०।०१	१२।१५	२।३५	४।५२	७।०८	९।२७	११।४६	१।५०	३।३३	५।०२
०५।२२।१६।१५	४ शु	१०	६।२४	८।००	९।५७	१२।११	२।३१	४।४८	७।०४	९।२३	११।४२	१।४६	३।३०	४।५८
०५।२३।१५।४०	५ श	११	६।२०	७।५६	९।५३	१२।०७	२।२८	४।४४	७।००	९।१९	११।३८	१।४२	३।२६	४।५४
०५।२४।१५।०९	६ र	१२	६।१६	७।५२	९।४९	१२।०४	२।२४	४।४०	६।५६	९।१५	११।३४	१।३८	३।२२	४।५०
०५।२५।१४।३९	७ चं	१३	६।१२	७।४८	९।४५	१२।००	२।२०	४।३६	६।५२	९।११	११।३०	१।३५	३।१८	४।४६
०५।२६।१४।१२	८ मं	१४	६।०८	७।४५	९।४१	११।५६	२।१६	४।३३	६।४८	९।०८	११।२६	१।३१	३।१४	४।४२
०५।२७।१३।४७	९ बु	१५	६।०४	७।४१	९।३७	११।५२	२।१२	४।२९	६।४४	९।०४	११।२२	१।२७	३।१०	४।३८
०५।२८।१३।२४	१० गु	१६	६।००	७।३७	९।३३	११।४८	२।०८	४।२५	६।४०	९।००	११।१८	१।२३	३।०६	४।३४
०५।२९।१३।०४	११ शु	१७	५।५६	७।३३	९।२९	११।४४	२।०४	४।२१	६।३७	८।५६	११।१४	१।१९	३।०२	४।३०
०६।००।१२।४६	१२ श	१८	५।५३	७।२९	९।२५	११।४०	२।००	४।१७	६।३३	८।५२	११।१०	१।१५	२।५८	४।२७
०६।०१।१२।३०	१३ र	१९	५।४९	७।२५	९।२१	११।३६	१।५६	४।१३	६।२९	८।४८	११।०६	१।११	२।५४	४।२३
०६।०२।१२।१६	१४ चं	२०	५।४५	७।२१	९।१७	११।३२	१।५२	४।०९	६।२५	८।४४	११।०२	१।०७	२।५०	४।१९
०६।०३।१२।०५	३० मं	२१	५।४१	७।१७	९।१३	११।२८	१।४८	४।०५	६।२१	८।४०	१०।५८	१।०३	२।४६	४।१५

संक्रांति फलम्

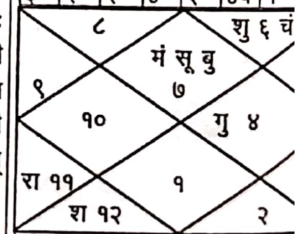
ता. १७ अक्टूबर २०२५

का. कृ. ११ भृगौ तुलायामर्कः प्र. (स्टै.) टा. १३।३३ वारात् ४ नक्षत्रात् ४ वारनाम मिश्रा पशून् सुखदा नक्षत्रनाम घोरा शूद्रान् सुखदा मध्यान्ह २ प्रहर व्यापिनी द्विजान् हन्ति, पश्चिमे गमनं वायव्यां दृष्टिः कौलवकरणे प्रविष्टा महर्घफलं सिंहवाहनं वृषभोपवाहनं कष्टकारक नीलवस्त्रं खड्गायुधं ताम्रपात्रं मिष्ठान्नभक्षणं रक्तचंदनलेपनं सर्पजातिः वकुलपुष्पं मोतीभूषणं हरित्कंचुकी गतालकावस्था (उभी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स पूर्वे राहु उत्तरे मूलं भूमौ विवाहस्तंभो ऐशान्यां शुक्रोदयः पूर्वस्याम् । पुण्यकालः (स्टै.) ७।३३ से ११।३३ तक । (दान- तिल गोरस) ।

अयनांशाः २४।१२।०५

पं.२८ का.कृ.१४ सो. इष्टघटी

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
६	६	६	३	५	११	१०
०२	२४	२४	००	१३	०२	२१
४१	४८	४६	००	२४	१२	४७
३१	४३	५३	११	११	४३	४७
५९	४२	७८	४	७४	३	३
४०	०४	४५	१०	४६	३७	११
चि	वि	वि	पुन	ह	पूभा	पूभा
३	२	२	४	२	४व	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य हस्ते १० अक्टू. तः चित्रा. । मंगल स्वातौ १३ अक्टू. तः विशा. । बुध स्वातौ १६ अक्टू. तः विशा. । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र उफा. १७ अक्टू. तः हस्ते । शनि पूभा. । राहु पूभा. । केतु पूफा.

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य उभा. १० अक्टू. तः पूभा. । मंगल शते १३ अक्टू. तः कृति. । बुध शते १६ अक्टू. तः कृति. । गुरु मूले । शुक्र रेवत्यां १७ अक्टू. तः उभा. । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य उभा. १० अक्टू. तः पूभा. । मंगल शते १३ अक्टू. तः धनि. । बुध शते १६ अक्टू. तः धनि. । गुरु मूले । शुक्र रेवत्यां १७ अक्टू. तः उभा. । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. । केतु अश्वि. ।

२२ अक्टूबर से ५ नवंबर तक, श्री कार्तिक शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

केतकी अहर्गणः ५३१३ शरदृतू रविर्दक्षिणे, अक्टूबर-नवंबर २०२५

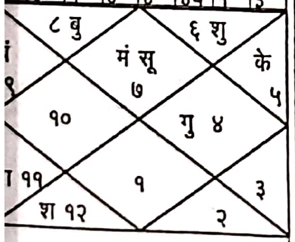
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
धूम्र	१	बु	३४	०१	२०	१५	स्वा	४७	५५	२५	४८	प्री	५३	२८	२८	०१	किं	१	०२	७	०३	२८ ००	६ ३८	५ ५०	३०	२९	२२	तुला.	६।०४।०४।४५	५९।५३	गोवर्धन पू., अन्नकूटं देशाचारे, गोक्रीडा, मार्गपाली बं., F
प्रवर्धमा	२	गु	४०	११	२२	४३	विशा	५५	१९	२८	४६	आ	५५	३८	२८	५४	बा	७	०३	९	२८	२७ ५६	३९	४९	१	३०	२३	वृश्चि. २२।०१	६।०५।०४।३७	५९।५५	चंद्रदर्शनम् (मु.४५), भ्रातृ २, यम २, यमुना स्नानं, कलम A
राक्षस	३	शु	४६	३१	२५	१६	अनु	...	...	...	...	सौ	५७	५५	२९	५०	तै	१३	१९	११	५९	५३	४०	४९	२	१	२४	वृश्चि.	६।०६।०४।३३	५९।५७	जमादिलावल ५, स्वा. सौरः २०।५२, वृश्चिके बुधः ८।४९
अमृत	४	श	५२	४४	२७	४६	अनु	२	४८	७	४७	शो	...	...	...	...	व	१९	३८	१४	३२	४९	४०	४८	३	२	२५	वृश्चि.	६।०७।०४।३०	६०।००	भ.१४।३२उ. २७।४६या., दूर्वागणपति व्र.[G तुलायां शुक्रः १३।३८
काण	५	र	५८	२८	३०	०४	ज्ये	१०	०७	१०	४३	शो	०	०१	६	४१	ब	२५	४१	१६	५७	४५	४१	४७	४	३	२६	धनु. १०।४३	६।०८।०४।२९	६०।०२	सौभाग्य ५, पाण्डव ५, अनु. बुधः २८।५०
लुम्बक	६	सो	...	...	...	...	मूल	१६	५१	१३	२६	अ	१	४६	७	२४	कौ	३०	५९	१९	०५	४१	४२	४६	५	४	२७	धनु.	६।०९।०४।३१	६०।०४	वृश्चिके भौमः१५।२६,चित्रा.शुक्रः २९।४१ [I वाहन मण्डूक अनावृष्टिः
मित्र	६	मं	३	१४	८	००	पूषा	२२	३५	१५	४४	सु	२	४७	७	४९	तै	३	१४	८	००	३७	४२	४५	६	५	२८	मक. २२।१४	६।१०।०४।३५	६०।०६	कल्पादि, वन्हि (रवि) षष्ठी [H समाप्तिः, कार्तिक व्रतोद्यापनं
वज्र	७	बु	६	४१	९	२३	उषा	२६	५५	१७	२९	धृ	२	४७	७	४९	व	६	४१	९	२३	३४	४३	४४	७	६	२९	मक.	६।११।०४।४१	६०।०८	भ. ९।२३उ. २१।५०या. [B समाप्ति, त्रिपुरोत्सव,पुष्कर यात्रा, D
ध्वजा	८	गु	८	२६	१०	०६	श्रव	२९	३१	१८	३२	शू	९ ५८	२८ ४३	७ ३०	११ १३	ब	८	२६	१०	०६	३०	४४	४४	८	७	३०	मक.	६।१२।०४।४९	६०।१०	गोपाष्टमी [D नानक जयंती,भीष्मपंचक समाप्ति,कार्तिकस्नानपूर्तिः
धाता	९	शु	८	१५	१०	०२	धनि	३०	११	१८	४९	वृ	५४	२०	२८	२८	कौ	८	१५	१०	०२	२६	४४	४३	९	८	३१	कुंभे ६।४६	६।१३।०४।५९	६०।१२	पंचक प्रारम्भः ६।४६, युगादि, कुष्माण्ड (अक्षय) ९
आनन्द	१०	श	६	०३	९	१०	शत	२८	५२	१८	१८	ध्रु	४८	२३	२६	०६	ग	६	०३	९	१०	२३	४५	४२	१०	९	१	कुंभे	६।१४।०५।११	६०।१४	भ. २०।२६ उ., नवंबर ११ ता. ३०, अनु. भौमः ८।०२
ए.व्र.	११	र	१	५१	७	३०	पूभा	२५	४०	१७	०२	व्या	४०	५६	२३	०८	वि	१	५१	७	३०	१९	४६	४१	११	१०	२	मीने ११।२५	६।१५।०५।२६	६०।१६	भ. ७।३० या., प्रबोधिनी ११ व्र., देवोत्थापनं, तुलसी विवाह, C
क्षयः	१२	र	५५	५३	२९	०७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A दवात पू., भा. कार्तिकारंभः, स्वा. रविः ३०।३०, सायन E
प्र.व्र.	१३	सो	४८	२१	२६	०७	उभा	२०	४६	१५	०५	ह	३२	०९	१९	३८	कौ	२२	१७	१५	४१	१६	४६	४१	१२	११	३	मीने	६।१६।०५।४२	६०।१८	प्रदोषः [C चतुर्मास व्रत समाप्तिः, भीष्म पंचक प्रा., मन्वादि, G
शुभ	१४	मं	३९	३९	२२	३९	रेव	१४	३०	१२	३५	व	२२	१९	१५	४३	ग	१४	०६	१२	२६	१२	४७	४०	१३	१२	४	मेषे १२।३५	६।१७।०६।००	६०।२०	भ.२२।३९उ., पंचक समाप्तिः १२।३५, वैकुण्ठ १४, रोटक व्रत H
पूर्णिमा	१५	बु	३०	११	१८	५२	अश्वि	७ ५९	१५ ३१	९ ३०	४२ ३६	सि	११	४३	११	२९	वि	४	५८	८	४७	०८	४८	३९	१४	१३	५	मेषे	६।१८।०६।२१	६०।२२	भ. ८।४७ या., मन्वादि, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, गोपद्मव्रत B

[F गुर्जराणां नूतन वर्षारंभः [E वृश्चिके भानुः ९।३४, सं.स्त्री.नपु.सू.सू. I

अयनांशाः २४।१२।०६

पं.२९ का.शु. ६ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	७	३	५	११	१०	४
०९	२९	०३	००	२२	०१	२१	२१
१९	४४	२५	२५	०८	४८	२५	२५
१४	३२	१८	३९	१२	५७	३१	३१
१९	४२	६६	२	७४	३	३	३
१४	३१	०९	५४	५९	०६	११	११
स्वा	वि	अनु	पुन	ह	पूभा	पूभा	पूफा
[illegible]	३	१	४	४	४व	१	३



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी.॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अक्टू	मेष सायँ	वृष रात्रौ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह रात्रौ	कन्या रात्रौ	तुला प्रातः	वृश्चिक दिवा	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ दिवा	मीन दिवा
०६।०४।११।५६	१ बु	२२	५।३७	७।१३	९।०९	११।२४	१।४४	४।०१	६।१७	८।३६	१०।५५	१२।५९	२।४२	४।११
०६।०५।११।४९	२ गु	२३	५।३३	७।०९	९।०५	११।२०	१।४०	३।५७	६।१३	८।३२	१०।५१	१२।५५	२।३८	४।०७
०६।०६।११।४५	३ शु	२४	५।२९	७।०५	९।०१	११।१६	१।३६	३।५३	६।०९	८।२८	१०।४७	१२।५१	२।३४	४।०३
०६।०७।११।४२	४ श	२५	५।२५	७।०१	८।५७	११।१२	१।३२	३।४९	६।०५	८।२४	१०।४३	१२।४७	२।३०	३।५९
०६।०८।११।४२	५ र	२६	५।२१	६।५७	८।५४	११।०८	१।२८	३।४५	६।०१	८।२०	१०।३९	१२।४३	२।२६	३।५५
०६।०९।११।४४	६ चं	२७	५।१७	६।५३	८।५०	११।०४	१।२४	३।४१	५।५७	८।१६	१०।३५	१२।३९	२।२३	३।५१
०६।१०।११।४८	६ मं	२८	५।१३	६।४९	८।४६	११।००	१।२०	३।३७	५।५३	८।१२	१०।३१	१२।३५	२।१९	३।४७
०६।११।११।५४	७ बु	२९	५।०९	६।४५	८।४२	१०।५६	१।१७	३।३३	५।४९	८।०८	१०।२७	१२।३१	२।१५	३।४३
०६।१२।१२।०३	८ गु	३०	५।०५	६।४१	८।३८	१०।५३	१।१३	३।२९	५।४५	८।०४	१०।२३	१२।२७	२।११	३।३९
०६।१३।१२।१३	९ शु	३१	५।०१	६।३८	८।३४	१०।४९	१।०९	३।२५	५।४१	८।००	१०।१९	१२।२४	२।०७	३।३५
०६।१४।१२।२६	१० श	१	४।५७	६।३४	८।३०	१०।४५	१।०५	३।२२	५।३७	७।५७	१०।१५	१२।२०	२।०३	३।३१
०६।१५।१२।४०	११ र	२	४।५३	६।३०	८।२६	१०।४१	१।०१	३।१८	५।३३	७।५३	१०।११	१२।१६	१।५९	३।२७
०६।१६।१२।५७	१३ चं	३	४।४९	६।२६	८।२२	१०।३७	१२।५७	३।१४	५।२९	७।४९	१०।०७	१२।१२	१।५५	३।२३
०६।१७।१३।१६	१४ मं	४	४।४५	६।२२	८।१८	१०।३३	१२।५३	३।१०	५।२६	७।४५	१०।०३	१२।०८	१।५१	३।१९
०६।१८।१३।३६	१५ बु	५	४।४२	६।१८	८।१४	१०।२९	१२।४९	३।०६	५।२२	७।४१	९।५९	१२।०४	१।४७	३।१६

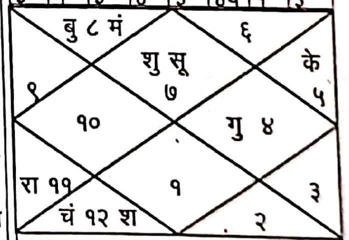
मास फलम्

इस माह में पांच बुधवार होने से रसवाली वस्तुओ का अभाव हो ॥ बुधेरसक्षयोभूम्यां ॥ मास के प्रथम दिन मे बुधवार होने से अन्न की महँगाई हो । कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को रविवार होने से जौ गेहूँ महँगे हों । मगलवारी अमावस होने से राज्यभ्रंश, राजयुद्ध-क्लेशो की वृद्धि-उपघात-अल्पवृष्टि और द्रव्यों की हानि हो । अमावस्या को चित्रा होने से दुर्भिक्ष (महर्घ) हो । कार्त्तिकी अमावस्या मंगलवारी होने से महाअग्नि काण्ड हो । पूर्णिमा अश्विनी युक्त होने से शुभ फल दायिनी है । पूर्णिमा बुधवार और अश्विनी युक्त होने से शुभ फल दायिनी है । शुक्रवार की सक्रांति होने से प्रजासुखी हो, स्वर्ण चांदी के भाव तेज हों, गाय भैस हाथी घोडा मोटर गाड़ी आदि (चतुष्पद) पशु एवं वाहन के भाव तेज हो, रस कस लवण घृत के भाव सम रहे ।

अयनांशाः २४।१२।०७

पं.३० का.शु.१३ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	७	३	६	११	१०	४
१६	०४	१०	००	००	०१	२१	२१
३९	४३	०२	४१	५३	२९	०३	०३
५४	२३	२७	५९	४०	०३	१५	१५
६०	४२	४०	१	७५	२	३	३
०८	५६	५२	३५	१०	२९	११	११
स्वा	अनु	अनु	पुन	चि	पूभा	पूभा	पूफा
३	१	३	४	३	४व	१	३



नक्षत्र युतिः- सूर्य चित्रा. २३ अक्टू. तः स्वातौ । मंगल विशा. १ नवं. तः अनुरा. । बुध विशा. २६ अक्टू. तः अनुरा. । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र हस्ते २७ अक्टू. तः चित्रा. । शनि पूभा. । राहु पूभा. । केतु पूफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य पूभा. २३ अक्टू. तः शते । मंगल कृति. १ नवं. तः भर. । बुध कृति. २६ अक्टू. तः भर. । गुरु मूले । शुक्र उभा. २७ अक्टू. तः पूभा. । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य पूभा. २३ अक्टू. तः शते । मंगल धनि. १ नवं. तः श्लेषा. । बुध धनि. २६ अक्टू. तः श्लेषा. । गुरु मूले । शुक्र उभा. २७ अक्टू. तः पूभा. । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. । केतु अश्वि. ।

नवंबर से २० नवंबर तक, श्री मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमासू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

ाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
बक	१	गु	२०	२४	१४	५८	कृति	५१	४३	२७	३०	व्य	० / ४२	४३ / ४४	७ / २६	०६ / ४२	कौ	२०	२४	१४	५८	२७ / ०५	६ / ४१	५ / ३१	१५	१४	६	वृषे ११।४९	६।१९।०६।४३	६०।२४
त्र	२	शु	१०	४८	११	०८	रोहि	४४	२३	२४	३५	प	३९	०६	२२	२८	ग	१०	४८	११	०८	०२	४१	३८	१६	१५	७	वृषे	६।२०।०७।०८	६०।२६
व्र.	३	श	१	५१	७	३४	मृग	३८	०१	२२	०३	शि	२९	१२	१८	३१	वि	१	५१	७	३४	२६ / ५८	५०	३७	१७	१६	८	मिथु. ११।१५	६।२१।०७।३४	६०।२८
यः	४	श	५४	०३	२८	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ाड्क्ष	५	र	४७	४२	२५	५५	आर्द्रा	३३	०३	२०	०४	सि	२०	२४	१५	००	कौ	२०	३८	१५	०६	५५	५१	३७	१८	१७	९	मिथु.	६।२२।०८।०२	६०।३०
म्र	६	सो	४३	१२	२४	०८	पुन	२९	४८	१८	४७	सा	१२	५८	१२	०३	ग	१५	११	१२	५६	५२	५१	३६	१९	१८	१०	कर्के १३।०२	६।२३।०८।३२	६०।३२
वर्धमा	७	मं	४०	४१	२३	०९	पुष्य	२८	३०	१८	१६	शु	७	०३	९	४२	वि	११	४०	११	३२	४८	५२	३६	२०	१९	११	कर्के	६।२४।०९।०४	६०।३४
ाक्षस	८	बु	४०	१४	२२	५८	श्ले	२९	१२	१८	३४	शु	२	४५	७	५९	बा	१०	११	१०	५८	४५	५३	३५	२१	२०	१२	सिंहे १८।३४	६।२५।०९।३८	६०।३६
ुसल	९	गु	४१	४२	२३	३४	मघा	३१	४८	१९	३७	ब्र	० / ५८	०३ / ४८	६ / ३०	५५ / २५	तै	१०	४३	११	११	४२	५४	३५	२२	२१	१३	सिंहे	६।२६।१०।१४	६०।३७
सेद्धि	१०	शु	४४	५२	२४	५१	पूफा	३६	०३	२१	२०	वै	५८	४३	३०	२४	व	१३	०४	१२	०८	३९	५५	३४	२३	२२	१४	कन्या २७।५१	६।२७।१०।५१	६०।३९
ए.व्र.	११	श	४९	२०	२६	३९	उफा	४१	३७	२३	३४	वि	५९	३४	३०	४५	ब	१६	५६	१३	४२	३६	५५	३४	२४	२३	१५	कन्या	६।२८।११।३०	६०।४१
मानस	१२	र	५४	४४	२८	५०	हस्त	४८	०७	२६	११	प्री	...	...	...	...	कौ	२१	५५	१५	४२	३३	५६	३३	२५	२४	१६	कन्या	६।२९।१२।११	६०।४३
प्र.व्र.	१३	सो	...	...	...	...	चित्रा	५५	११	२९	०१	प्री	१	०१	७	२१	ग	२७	३८	१८	००	३०	५७	३३	२६	२५	१७	तुला. १५।३५	७।००।१२।५४	६०।४४
ध्वजा	१३	मं	०	४०	७	१४	स्वा	...	...	...	...	आ	२	५४	८	०७	व	०	४०	७	१४	२७	५८	३३	२७	२६	१८	तुला.	७।०१।१३।३८	६०।४६
धूम्र	१४	बु	६	५४	९	४४	स्वा	२	२९	७	५८	सौ	४	५८	८	५८	श	६	५४	९	४४	२४	५८	३२	२८	२७	१९	वृश्चि. २८।१२	७।०२।१४।२५	६०।४८
अमाव.	३०	गु	१३	१२	१२	१६	विशा	९	५३	१०	५७	शो	७	०५	९	४९	ना	१३	१२	१२	१६	२२	५९	३२	२९	२८	२०	वृश्चि.	७।०३।१५।१२	६०।४९

हेमन्तर्त्तू रविर्दक्षिणे कार्तिककृष्णेति गुर्जराः, नवंबर २०२५

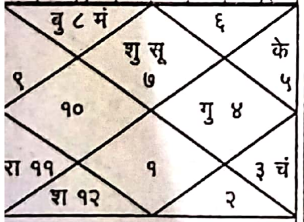
यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
विशा. रविः १४।३८ (सौरः २७।५९)
भ. २१।१९ उ., स्वा. शुक्रः २१।२१
भ. ७।३४ या., चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २०।१०, सौभाग्य सुंदरी व्र.

[A ज्येष्ठा. भौमः १९।१४
भ. २४।०८ उ., वक्री बुधः ९।३१
भ. ११।३२ या., बुधास्तः पश्चिमायाम् २५।००
कालभैरवाष्टमी, वक्री गुरुः ७।०८
[B विशा. शुक्रः १२।१९
भ. १२।०८ उ. २४।५१ या., नेहरुजयन्ती (बालदिवस)
उत्पत्ति ११ व्र., वैतरणी व्र.
आकाशदीप समाप्तिः, वृश्चिके रविः १३।१९ (सौरः २५।५१)
प्रदोषः
भ. ७।१४ उ. २०।२९ या., मासिकशिवरात्री व्र., B
गौरीतपोव्र., महाव्रतारंभः, अनु. रविः २०।३९, A
देवपितृकार्येऽमा., अनु. सौरः ८।५३, (व) विशा. बुधः २७।५९

अयनांशाः २४।१२।०८

पं.३१ मा.कृ. ६ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	७	३	६	११	१०	४
२३	०९	१२	००	०९	०१	२०	२०
४१	४५	३९	४८	४०	१३	४०	४०
२७	१४	००	४९	१७	३३	५९	५९
६०	४३	७	०	७५	१	३	३
२०	२२	४६	११	१९	५०	११	११
वि	अनु	अनु	पुन	स्वा	पूभा	पूभा	पूफा
२	२	३व	४	१	४व	१	३



|| दैनिक लग्न प्रवेश सारणी || स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ||

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. नवं.	मेष दिवा	वृष सायँ	मिथुन रात्रौ	कर्क रात्रौ	सिंह रात्रौ	कन्या रात्रौ	तुला रात्रौ	वृश्चिक प्रातः	धनु दिवा	मकर दिवा	कुंभ दिवा	मीन दिवा
०६।१९।१३।५९	१ गु	६	४।३८	६।१४	८।१०	१०।२५	१२।४५	३।०२	५।१८	७।३७	९।५५	१२।००	१।४३	३।१२
०६।२०।१४।२४	२ शु	७	४।३४	६।१०	८।०६	१०।२१	१२।४१	२।५८	५।१४	७।३३	९।५१	११।५६	१।३९	३।०८
०६।२१।१४।५०	३ श	८	४।३०	६।०६	८।०२	१०।१७	१२।३७	२।५४	५।१०	७।२९	९।४७	११।५२	१।३५	३।०४
०६।२२।१५।१९	५ र	९	४।२६	६।०२	७।५८	१०।१३	१२।३३	२।५०	५।०६	७।२५	९।४४	११।४८	१।३१	३।००
०६।२३।१५।४९	६ चं	१०	४।२२	५।५८	७।५४	१०।०९	१२।२९	२।४६	५।०२	७।२१	९।४०	११।४४	१।२७	२।५६
०६।२४।१६।२२	७ मं	११	४।१८	५।५४	७।५०	१०।०५	१२।२५	२।४२	४।५८	७।१७	९।३६	११।४०	१।२३	२।५२
०६।२५।१६।५६	८ बु	१२	४।१४	५।५०	७।४६	१०।०१	१२।२१	२।३८	४।५४	७।१३	९।३२	११।३६	१।१९	२।४८
०६।२६।१७।३२	९ गु	१३	४।१०	५।४६	७।४३	९।५७	१२।१७	२।३४	४।५०	७।०९	९।२८	११।३२	१।१५	२।४४
०६।२७।१८।०९	१० शु	१४	४।०६	५।४२	७।३९	९।५३	१२।१३	२।३०	४।४६	७।०५	९।२४	११।२८	१।१२	२।४०
०६।२८।१८।४९	११ श	१५	४।०२	५।३८	७।३५	९।४९	१२।०९	२।२६	४।४२	७।०१	९।२०	११।२४	१।०८	२।३६
०६।२९।१९।३०	१२ र	१६	३।५८	५।३४	७।३१	९।४५	१२।०६	२।२२	४।३८	६।५७	९।१६	११।२०	१।०४	२।३२
०७।००।२०।१३	१३ चं	१७	३।५४	५।३०	७।२७	९।४२	१२।०२	२।१८	४।३४	६।५३	९।१२	११।१६	१।००	२।२८
०७।०१।२०।५८	१३ मं	१८	३।५०	५।२७	७।२३	९।३८	११।५८	२।१४	४।३०	६।४९	९।०८	११।१३	१२।५६	२।२४
०७।०२।२१।४४	१४ बु	१९	३।४६	५।२३	७।१९	९।३४	११।५४	२।११	४।२६	६।४६	९।०४	११।०९	१२।५२	२।२०
०७।०३।२२।३२	३० गु	२०	३।४२	५।१९	७।१५	९।३०	११।५०	२।०७	४।२२	६।४२	९।००	११।०५	१२।४८	२।१६

संक्रांति फलम्

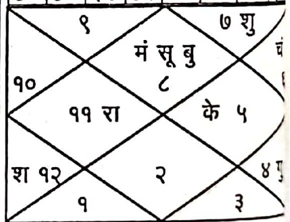
ता. १६ नवंबर २०२५

मार्ग. कृ. १२ रवौ वृश्चिकेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. १३।१९ वारात् ३ नक्षत्रात् ४ वारनाम घोरा शूद्रान् सुखदा नक्षत्रनाम ध्वांक्षी वैश्यान् सुखदा मध्यान्ह २ प्रहर व्यापिनी द्विजान् हन्ति, पश्चिमे गमनं वायव्यां दृष्टिः कौलवकरणे प्रविष्टा महर्घफलं सिंहवाहनं वृषभोपवाहनं कष्टकारक नीलवस्त्रं खड्गायुधं ताम्रपात्रं मिष्ठान्नभक्षणं रक्तचंदनलेपनं सर्पजातिः वकुलपुष्पं मोतीभूषणं हरित्कंचुकी गतालकावस्था (उभी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स दक्षिणे राहु पूर्वे मूलं पाताले विवाहस्तंभो वायव्याम् शुक्रोदयः पूर्वस्याम्। पुण्यकालः शनौ (स्टै.) ३०।५५ से रवौ १३।१९ तक। (दान- दीप)।

अयनांशाः २४।१२।०९

पं.३२ मा.कृ.१३ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	३	६	११	१०	४
००	१४	०८	००	१८	०१	२०	२०
४४	४९	२३	४५	२७	०२	१८	१८
२४	५९	३३	५४	४६	५१	४३	४३
६०	४३	७२	१	७५	१	३	३
३२	४६	१७	१३	२५	०७	११	११
वि	अनु	अनु	पुन	स्वा	पूभा	पूभा	पूफा
४	४	२व	४व	४	४व	१	३



नक्षत्र युतिः- सूर्य स्वातौ ६ नवं. तः विशा. १९ नवं. तः अनुरा.। मंगल अनुरा. १९ नवं. तः ज्येष्ठा.। बुध अनुरा. २० नवं. तः (व) विशा.। गुरु पुनर्वसौ। शुक्र चित्रा. ७ नवं. तः स्वातौ १८ नवं. तः विशा.। शनि पूभा.। राहु पूभा.। केतु पूफा.

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य शते ६ नवं. तः कृति. १९ नवं. तः भर.। मंगल भर. १९ नवं. तः पुष्ये। बुध भर. २० नवं. तः कृति.। गुरु मूले। शुक्र पूभा. ७ नवं. तः शते १८ नवं. तः कृति.। शनि चित्रा.। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य शते ६ नवं. तः धनि. १९ नवं. तः श्लेषा.। मंगल श्लेषा. १९ नवं. तः पुष्ये। बुध श्लेषा. २० नवं. तः धनि.। गुरु मूले। शुक्र पूभा. ७ नवं. तः शते १८ नवं. तः धनि.। शनि चित्रा.। राहु चित्रा.। केतु अश्वि.

२१ नवंबर से ४ दिसंबर तक, श्री मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
राक्षस	१	शु	१९	२५	१४	४६	अनु	१७	१२	१३	५३	अ	९	०८	१०	३९	ब	१९	२५	१४	४६	२६ ११	७ ००	५ ३२	३०	२९	२१	वृश्चि.	७।०४।१६।०१	६०।५१
मुसल	२	श	२५	२२	१७	१०	ज्ये	२४	१७	१६	४४	सु	११	०१	११	२५	कौ	२५	२२	१७	१०	१६	०१	३१	१	३०	२२	धनु. १६।४४	७।०५।१६।५२	६०।५२
सिद्धि	३	र	३०	५५	१९	२४	मूल	३०	५९	१९	२५	धृ	१२	३७	१२	०४	ग	३०	५५	१९	२४	१४	०२	३१	२	१	२३	धनु.	७।०६।१७।४५	६०।५४
उत्पात	४	सो	३५	४९	२१	२२	पूषा	३७	०३	२१	५१	शू	१३	४७	१२	३३	व	३	२७	८	२५	११	०२	३१	३	२	२४	मक. २८।२५	७।०७।१८।३८	६०।५५
मानस	५	मं	३९	४४	२२	५७	उषा	४२	१२	२३	५६	गं	१४	१९	१२	४७	ब	७	५४	१०	१३	०९	०३	३१	४	३	२५	मक.	७।०८।१९।३४	६०।५७
छत्र	६	बु	४२	२५	२४	०२	श्रव	४६	०८	२५	३१	वृ	१३	५८	१२	३९	कौ	११	१४	११	३४	०६	०४	३१	५	४	२६	मक.	७।०९।२०।३०	६०।५८
श्रीवत्स	७	गु	४३	३३	२४	३०	धनि	४८	३४	२६	३०	ध्रु	१२	३३	१२	०६	ग	१३	१०	१२	२१	०४	०५	३०	६	५	२७	कुंभे १४।०५	७।१०।२१।२९	६०।५९
सौम्य	८	शु	४२	५४	२४	१५	शत	४९	१६	२६	४८	व्या	९	५२	११	०२	वि	१३	२५	१२	२८	०२	०६	३०	७	६	२८	कुंभे	७।११।२२।२८	६१।०१
काल	९	श	४०	२२	२३	१५	पूभा	४८	०७	२६	२१	ह	५	४४	९	२४	बा	११	५१	११	५१	००	०६	३०	८	७	२९	मीने २०।३२	७।१२।२३।२९	६१।०२
सुस्थिर	१०	र	३५	५६	२१	३०	उभा	४५	०७	२५	१०	व	० ५३	०६ ०२	७ २८	१० २०	तै	८	२२	१०	२८	२५ ५८	०७	३०	९	८	३०	मीने	७।१३।२४।३१	६१।०३
ए.व्र.	११	सो	२९	४६	१९	०२	रेव	४०	२६	२३	१८	व्य	४४	३४	२४	५७	व	३	०३	८	२१	५६	०८	३०	१०	९	१	मेषे २३।१८	७।१४।२५।३५	६१।०५
प्र.व्र.	१२	मं	२२	०६	१५	५९	अश्वि	३४	१८	२०	५२	व	३४	५७	२१	०७	बा	२२	०६	१५	५९	५४	०९	३०	११	१०	२	मेषे	७।१५।२६।३९	६१।०६
काण	१३	बु	१३	१८	१२	२८	भर	२७	०८	१८	०१	प	२४	२८	१६	५७	तै	१३	१८	१२	२८	५२	०९	३०	१२	११	३	वृषे २३।१५	७।१६।२७।४५	६१।०७
पूर्णिमा	१४	गु	३	४६	८	४०	कृति	१९	२३	१४	५५	शि	१३	२९	१२	३४	व	३	४६	८	४०	५१	१०	३०	१३	१२	४	वृषे	७।१७।२८।५२	६१।०८
क्षयः	१५	गु	५४	०१	२८	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

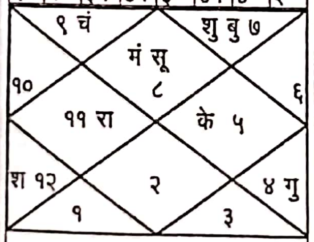
केतकी अहर्गणः ५३४३ हेमन्तर्त्तू रविर्दक्षिणे, नवंबर-दिसंबर २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
[F २८।१२, पूफा.-२ केतुः २८।१२ [B द्वात्रिंशी (बत्तीसी) पूर्णिमा
मूले रे. ८ IIISISIIII रात्रौ लग्न ७, चंद्रदर्शनम् (मु.३०), भा. A
रंभाख्येयं, जमादिलाखर ६, (व) तुलायां बुधः १८।५१
भ. ८।२५ उ. २१।२२ या. [E पुन.-३ गुरुः २३।३३
उषा. रे. ६ ISIISISSII रात्रौ लग्न ३, ४, नागपंचमी, D
स्कंदषष्ठी, वृश्चिके शुक्रः ११।१४ [D बुधोदयः पूर्वस्याम् ९।३९
भ. २४।३० उ., पंचक प्रारम्भः १४।०५
भ. १२।२८ या., अनु. शुक्रः २६।५०, मार्गी शनिः २०।१८
कल्पादि [C व्र., गीता जयंती, दिसंबर १२ ता. ३१
उभा. रे. ६ IIIIISSSIS रात्रौ लग्न ४, मार्गी बुधः १०।१८
भ. ८।२१ उ. १९।०२ या., पंचक समाप्तिः २३।१८, मोक्षदा ११ C
प्रदोषः, अनंग त्रयोदशी व्र., ज्येष्ठा. रविः २४।५६
पिशाच मोचन श्राद्धं, ज्येष्ठा. सौरः ११।५८, (व) मिथुने E
भ.८।४० उ. १८।४३ या., श्री दत्त जयंती, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, B
[A मार्गशीर्षारंभः, सायन धनुषि भानुः ७।१३, शत.-४ राहुः F

अयनांशाः २४।१२।११

पं.३३ मा.शु. ४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	३	६	११	१०	४
०७	१९	२९	००	२७	००	१९	१९
४८	५७	२५	३३	१५	५७	५६	५६
४०	३६	१६	१२	५४	१२	२७	२७
६०	४४	५९	२	७५	०	३	३
४२	१०	१५	३६	२९	२३	११	११
अनु	ज्ये	वि	पुन	वि	पूभा	श	पूफा
२	१	३व	४व	३	४व	४	२



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	नवं.	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा
०७।०४।२३।२१	१ शु	२१	३।३८	५।१५	७।११	९।२६	११।४६	२।०३	४।१८	६।३८	८।५६	११।०१	१२।४४	२।१२
०७।०५।२४।१३	२ श	२२	३।३४	५।११	७।०७	९।२२	११।४२	१।५९	४।१५	६।३४	८।५२	१०।५७	१२।४०	२।०८
०७।०६।२५।०५	३ र	२३	३।३१	५।०७	७।०३	९।१८	११।३८	१।५५	४।११	६।३०	८।४८	१०।५३	१२।३६	२।०५
०७।०७।२५।५९	४ चं	२४	३।२७	५।०३	६।५९	९।१४	११।३४	१।५१	४।०७	६।२६	८।४४	१०।४९	१२।३२	२।०१
०७।०८।२६।५५	५ मं	२५	३।२३	४।५९	६।५५	९।१०	११।३०	१।४७	४।०३	६।२२	८।४०	१०।४५	१२।२८	१।५७
०७।०९।२७।५२	६ बु	२६	३।१९	४।५५	६।५१	९।०६	११।२६	१।४३	३।५९	६।१८	८।३६	१०।४१	१२।२४	१।५३
०७।१०।२८।५०	७ गु	२७	३।१५	४।५१	६।४७	९।०२	११।२२	१।३९	३।५५	६।१४	८।३३	१०।३७	१२।२०	१।४९
०७।११।२९।५०	८ शु	२८	३।११	४।४७	६।४३	८।५८	११।१८	१।३५	३।५१	६।१०	८।२९	१०।३३	१२।१६	१।४५
०७।१२।३०।५१	९ श	२९	३।०७	४।४३	६।३९	८।५४	११।१४	१।३१	३।४७	६।०६	८।२५	१०।२९	१२।१२	१।४१
०७।१३।३१।५३	१० र	३०	३।०३	४।३९	६।३५	८।५०	११।१०	१।२७	३।४३	६।०२	८।२१	१०।२५	१२।०८	१।३७
०७।१४।३२।५७	११ चं	१	२।५९	४।३५	६।३२	८।४६	११।०६	१।२३	३।३९	५।५८	८।१७	१०।२१	१२।०४	१।३३
०७।१५।३४।०२	१२ मं	२	२।५५	४।३१	६।२८	८।४२	११।०२	१।१९	३।३५	५।५४	८।१३	१०।१७	१२।००	१।२९
०७।१६।३५।०८	१३ बु	३	२।५१	४।२७	६।२४	८।३८	१०।५८	१।१५	३।३१	५।५०	८।०९	१०।१३	११।५७	१।२५
०७।१७।३६।१५	१४ गु	४	२।४७	४।२३	६।२०	८।३४	१०।५५	१।११	३।२७	५।४६	८।०५	१०।०९	११।५३	१।२१

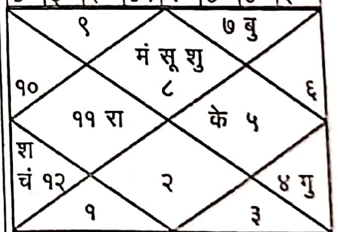
मास फलम्

इस माह में पांच गुरुवार होने से धान्य सस्ता हो ॥ चन्द्रजीवौयदापंच धान्यादीनांसमर्घता ॥ मार्गशीर्ष कृ. एकादशी को शनिवार होने से अनावृष्टि और प्रजा उपद्रव हों। मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्दशी में स्वाति होने से वर्षा का अभाव हो। गुरुवारी अमावस होने से सदा वृष्टि तथा सुभिक्ष हो कल्याण हों दुःख का नाश हो। आरोग्य रहे और प्रजा स्वस्थ हो। अमावस्या विशाखा योग दुर्भिक्ष और कष्टकारी है। मार्गशीर्ष की पूर्णिमा को मृगशिरा का अभाव होने से महर्धता हो। रविवार की सक्रांति होने से कहीं कहीं युद्ध हो, राजविग्रह हो, सूर्य बहुत तपे, रोगोत्पत्ति हो, धान्यादि महँगे हों। स्वाति में शुक्र होने से क्षेम और सुभिक्ष हो। स्वाती नक्षत्र में शुक्र होने से अतिवृष्टि तथा दूत, वाणिज्य कर्म करने वाले, नाव चलाने वाले इनमें उपद्रव हो।

अयनांशाः २४।१२।१२

पं.३४ मा.शु.११ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	६	३	७	११	१०	४
१४	२५	२६	००	०६	००	१९	१९
५४	०७	३०	१०	०४	५६	३४	३४
०४	५७	४५	५८	२८	४७	११	११
६०	४४	१९	३	७५	०	३	३
५१	३३	१२	५६	३२	२२	११	११
अनु	ज्ये	वि	पुन	अनु	पूभा	श	पूफा
४	३	२	४व	१	४	४	२



नक्षत्र युतिः- सूर्य अनुरा. २ दिस. तः ज्येष्ठा. । मंगल ज्येष्ठा. । बुध विशा. । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र विशा. २८ नव. तः अनुरा. । शनि पूभा. । राहु पूभा. २२ नव. तः (व) शते । केतु पूफा. ।
विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य भर. २ दिसं. तः पुष्ये । मंगल पुष्ये । बुध कृति. । गुरु मूले । शुक्र कृति. २८ नवं. तः भर. । शनि चित्रा. । राहु चित्रा. २२ नवं. तः स्वातौ । केतु अश्वि. ।
अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य श्लेषा. २ दिसं. तः पुष्ये । मंगल पुष्ये । बुध धनि. । गुरु मूले । शुक्र धनि. २८ नवं. तः श्लेषा. । शनि चित्रा.। राहु चित्रा. २२ नवं. तः स्वातौ । केतु अश्वि. ।

५ दिसंबर से १९ दिसंबर तक, श्री पोष कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
मित्र	१	शु	४४	३०	२४	५९	रोहि	११	३१	११	४७	सि	२/५१	३३/३४	८/२७	०८/४८	बा	१९	११	१४	५१	३५/४२	७/११	५/३०	१४	१३	५	मिथु. २२।१६	७।१८।३०।००	६१।०९
वज्र	२	श	३५	४३	२१	२९	मृग	४/५७	०५/३७	८/३०	५०/१४	शु	४१	२४	२३	४५	तै	९	५८	११	११	४७	१२	३१	१५	१४	६	मिथु.	७।१९।३१।०९	६१।१०
च.व्र.	३	र	२८	०९	१८	२८	पुन	५२	३१	२८	१३	शु	३२	१५	२०	०६	व	१	४५	७	५४	४६	१२	३१	१६	१५	७	कर्के २२।३९	७।२०।३२।२०	६१।११
धाता	४	सो	२२	१३	१६	०६	पुष्य	४९	११	२६	५३	ब्र	२४	२८	१७	००	बा	२२	१३	१६	०६	४५	१३	३१	१७	१६	८	कर्के	७।२१।३३।३१	६१।१२
आनन्द	५	मं	१८	१५	१४	३२	श्ले	४७	५३	२६	२३	ऐ	१८	१६	१४	३२	तै	१८	१५	१४	३२	४३	१४	३१	१८	१७	९	सिंहे २६।२३	७।२२।३४।४३	६१।१३
चर	६	बु	१६	२६	१३	४९	मघा	४८	४४	२६	४४	वै	१३	४४	१२	४४	व	१६	२६	१३	४९	४२	१४	३१	१९	१८	१०	सिंहे	७।२३।३५।५६	६१।१४
गद	७	गु	१६	४९	१३	५९	पूफा	५१	३८	२७	५४	वि	१०	५६	११	३७	ब	१६	४९	१३	५९	४१	१५	३१	२०	१९	११	सिंहे	७।२४।३७।१०	६१।१५
शुभ	८	शु	१९	१४	१४	५७	उफा	५६	२१	२९	४८	प्री	९	४३	११	०९	कौ	१९	१४	१४	५७	४०	१६	३२	२१	२०	१२	कन्या १०।१९	७।२५।३८।२५	६१।१६
मृत्यु	९	श	२३	२५	१६	३८	हस्त	...	...	...	...	आ	९	५०	११	१२	ग	२३	२५	१६	३८	३९	१६	३२	२२	२१	१३	कन्या	७।२६।३९।४१	६१।१७
मानस	१०	र	२८	५३	१८	५०	हस्त	२	२८	८	१६	सौ	११	०१	११	४१	वि	२८	५३	१८	५०	३९	१७	३२	२३	२२	१४	तुला. २१।४०	७।२७।४०।५८	६१।१७
ए.व्र.	११	सो	३५	०९	२१	२१	चित्रा	९	३४	११	०७	शो	१२	५२	१२	२७	ब	१	५६	८	०४	३८	१८	३३	२४	२३	१५	तुला.	७।२८।४२।१५	६१।१८
ध्वजा	१२	मं	४१	४२	२३	५९	स्वा	१७	०६	१४	०९	अ	१५	०५	१३	२०	कौ	८	२४	१०	४०	३७	१८	३३	२५	२४	१६	तुला.	७।२९।४३।३३	६१।१९
प्र.व्र.	१३	बु	४८	०८	२६	३४	विशा	२४	३९	१७	११	सु	१७	१७	१४	१४	ग	१४	५७	१३	१८	३७	१९	३४	२६	२५	१७	वृश्चि. १०।२५	८।००।४४।५२	६१।१९
आनन्द	१४	गु	५४	१२	२९	००	अनु	३१	५६	२०	०६	धृ	१९	१८	१५	०२	वि	२१	१४	१५	४९	३६	१९	३४	२७	२६	१८	वृश्चि.	८।०१।४६।११	६१।२०
अमाव.	३०	शु	५९	४३	३१	१३	ज्ये	३८	४३	२२	४९	शू	२०	५७	१५	४३	च	२७	०१	१८	०८	३६	२०	३४	२८	२७	१९	धनु. २२।४९	८।०२।४७।३१	६१।२०

हेमन्तर्त्तू रविर्दक्षिणे मार्गशीर्षकृष्णेति गुर्जराः, दिसंबर २०२५

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।

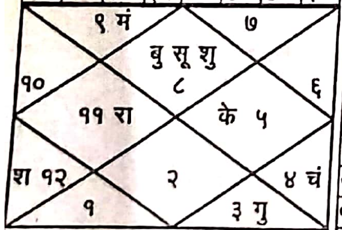
[A २०।०६, धनुषि मूले भौमः २०।००
वृश्चिके बुधः २१।५३
भ. ७।५४ उ. १८।२८ या., चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः A
शुक्रास्तः पूर्वस्याम् ३१।११
अनु. बुधः २७।१३, ज्येष्ठा. शुक्रः १७।०८
भ. १३।४९ उ. २५।४७ या.

शुक्रास्तः पूर्वस्याम्

[B धनुषि मूले शुक्रः ३१।१९
भ. २९।४१ उ.
भ. १८।५० या.
सफला ११ व्र., सुरुप द्वादशी १२, धनुषि मूले रविः २७।५४
धनुषि मूले सौरः १३।४५
भ. २६।३४ उ., प्रदोषः
भ. १५।४९ या., मासिकशिवरात्री व्र.
देवपितृकार्येऽमा., कुहूः, ज्येष्ठा. बुधः ३०।३७, B

अयनांशाः २४।१२।१३

पं.३५ पौ.कृ. ४ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	२	७	११	१०	४
२२	००	०१	२९	१४	०१	१९	१९
००	२०	२०	३९	५३	०१	११	११
२६	५८	३८	४२	१७	३९	५४	५४
६०	४४	६३	५	७५	१	३	३
५९	५५	३०	०९	३४	०८	११	११
ज्ये	मू	वि	पुन	अनु	पूभा	श	पूफा
२	१	४	३व	४	४	४	२



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	दिसं	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा
०७।१८।३७।२३	१ शु	५	२।४३	४।१९	६।१६	८।३९	१०।५१	१।०७	३।२३	५।४२	८।०१	१०।०५	११।४९	१।१७
०७।१९।३८।३३	२ श	६	२।३९	४।१६	६।१२	८।२७	१०।४७	१।०३	३।१९	५।३८	७।५७	१०।०२	११।४५	१।१३
०७।२०।३९।४३	३ र	७	२।३५	४।१२	६।०८	८।२३	१०।४३	१।००	३।१५	५।३५	७।५३	९।५८	११।४१	१।०९
०७।२१।४०।५५	४ चं	८	२।३१	४।०८	६।०४	८।१९	१०।३९	१२।५६	३।११	५।३१	७।४९	९।५४	११।३७	१।०५
०७।२२।४२।०७	५ मं	९	२।२७	४।०४	६।००	८।१५	१०।३५	१२।५२	३।०७	५।२७	७।४५	९।५०	११।३३	१।०१
०७।२३।४३।२१	६ बु	१०	२।२३	४।००	५।५६	८।११	१०।३१	१२।४८	३।०४	५।२३	७।४१	९।४६	११।२९	१२।५७
०७।२४।४४।३५	७ गु	११	२।२०	३।५६	५।५२	८।०७	१०।२७	१२।४४	३।००	५।१९	७।३७	९।४२	११।२५	१२।५४
०७।२५।४५।५०	८ शु	१२	२।१६	३।५२	५।४८	८।०३	१०।२३	१२।४०	२।५६	५।१५	७।३३	९।३८	११।२१	१२।५०
०७।२६।४७।०६	९ श	१३	२।१२	३।४८	५।४४	७।५९	१०।१९	१२।३६	२।५२	५।११	७।२९	९।३४	११।१७	१२।४६
०७।२७।४८।२३	१० र	१४	२।०८	३।४४	५।४०	७।५५	१०।१५	१२।३२	२।४८	५।०७	७।२५	९।३०	११।१३	१२।४२
०७।२८।४९।४०	११ चं	१५	२।०४	३।४०	५।३६	७।५१	१०।११	१२।२८	२।४४	५।०३	७।२२	९।२६	११।०९	१२।३८
०७।२९।५०।५८	१२ मं	१६	२।००	३।३६	५।३२	७।४७	१०।०७	१२।२४	२।४०	४।५९	७।१८	९।२२	११।०५	१२।३४
०८।००।५२।१७	१३ बु	१७	१।५६	३।३२	५।२८	७।४३	१०।०३	१२।२०	२।३६	४।५५	७।१४	९।१८	११।०१	१२।३०
०८।०१।५३।३६	१४ गु	१८	१।५२	३।२८	५।२४	७।३९	९।५९	१२।१६	२।३२	४।५१	७।१०	९।१४	१०।५७	१२।२६
०८।०२।५४।५७	३० शु	१९	१।४८	३।२४	५।२१	७।३५	९।५५	१२।१२	२।२८	४।४७	७।०६	९।१०	१०।५३	१२।२२

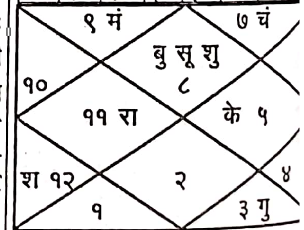
संक्रांति फलम्

ता. १५ दिसंबर २०२५

पौष कृ. ११ चंद्रे धनुष्यर्कः प्र. (स्टै.) टा. २७।५४ वारात् २ नक्षत्रात् ३ वारनाम ध्वांक्षी वैश्यान् सुखदा नक्षत्रनाम महोदरी चोरान् सुखदा प्रभात रात्रि ४ प्रहर व्यापिनी गोरक्षकान् हन्ति, पश्चिमे गमनं वायव्यां दृष्टिः कौलवकरणे प्रविष्टा महर्घफलं सिंहवाहनं वृषभोपवाहनं कष्टकारक नीलवस्त्रं खड्गायुधं ताम्रपात्रं मिष्ठान्नभक्षणं रक्तचंदनलेपनं सर्पजातिः वकुलपुष्पं मोतीभूषणं हरित्कंचुकी गतालकावस्था (उभी) मु. १५ धान्यभावे महर्घता वत्स दक्षिणे राहु पूर्वे मूलं भूमौ विवाहस्तंभो वायव्याम् शुक्रास्तः पूर्वस्याम् । पुण्यकालः (स्टै.) २७।५४ से भौमे १०।१८ तक । (दान- वस्त्र) ।

अयनांशाः २४।१२।१४

पं.३६ पौ.कृ.११ सो. इष्टघटी ०।							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	२	७	११	१०	[illegible]
२९	०५	०९	२९	२३	०१	१८	[illegible]
०७	३६	४६	००	४२	११	४९	[illegible]
३४	३०	११	१८	१४	४७	३८	[illegible]
६१	४५	८०	६	७५	१	३	[illegible]
०४	१६	४७	१४	३४	५२	११	[illegible]
ज्ये	मू	अनु	पुन	ज्ये	पूभा	श	[illegible]
४	२	२	३व	३	४	४	[illegible]



नक्षत्र युतिः- सूर्य ज्येष्ठा. १५ दिसं. तः मूले । मंगल ज्येष्ठा. ७ दिसं. तः मूले । बुध विशा. ९ दिसं. तः अनुरा. १९ दिसं. तः ज्येष्ठा. । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र अनुरा. ९ दिसं. तः ज्येष्ठा. १९ दिसं. तः मूले । शनि पूभा. । राहु शते । केतु पूफा.

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य पुष्ये १५ दिसं. तः पुनर्वसौ । मंगल पुष्ये ७ दिसं. तः पुनर्वसौ । बुध कृति. ९ दिसं. तः भर. १९ दिसं. तः पुष्ये । गुरु मूले । शुक्र भर. ९ दिसं. तः पुष्ये १९ दिसं. तः पुनर्वसौ । शनि चित्रा. । राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य पुष्ये १५ दिसं. तः पुनर्वसौ । मंगल पुष्ये ७ दिसं. तः पुनर्वसौ । बुध धनि. ९ दिसं. तः श्लेषा. १९ दिसं. तः पुष्ये । गुरु मूले । शुक्र श्लेषा. ९ दिसं. तः पुष्ये १९ दिसं. तः पुनर्वसौ । शनि चित्रा.। राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

२० दिसंबर से ३ जनवरी तक, श्री पोष शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख | स्टै. | प्रातः | दैनिक | केतकी अहर्गणः ५३७२ हेमन्तर्तू रविर्दक्षिणे,दिसं.२०२५-जन.२०२६

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
गद	१	श	...	...	...	...	मूल	४४	५६	२५	१९	गं	२२	११	१६	१३	किं	३२	१४	२०	१४	३५/३६	७/२०	५/३५	२९	२८	२०	धनु.	८।०३।४८।५१	६१।२१	[C सायन उत्तरायण प्रारम्भ २०।३३
शुभ	१	र	४	३४	९	११	पूषा	५०	३०	२७	३३	वृ	२२	५५	१६	३१	ब	४	३४	९	११	३६	२१	३५	३०	२९	२१	धनु.	८।०४।५०।१२	६१।२१	चंद्रदर्शनम् (मु.३०), सायन मकरे भानुः, C
मृत्यु	२	सो	८	४४	१०	५१	उषा	५५	२०	२९	२९	ध्रु	२३	०६	१६	३६	कौ	८	४४	१०	५१	३६	२१	३६	१	१	२२	मक. १०।०४	८।०५।५१।३३	६१।२२	भा. पोषारंभः, रज्जव ७, अयन करिदिन
लुम्बक	३	मं	१२	०६	१२	१२	श्रव	५९	१९	३१	०५	व्या	२२	४०	१६	२६	ग	१२	०६	१२	१२	३६	२२	३६	२	२	२३	मक.	८।०६।५२।५५	६१।२२	भ. २४।४५ उ.
मित्र	४	बु	१४	३१	१३	११	धनि	...	...	...	...	ह	२१	३०	१५	५८	वि	१४	३१	१३	११	३६	२२	३७	३	३	२४	कुंभे १९।४४	८।०७।५४।१७	६१।२३	भ. १३।११ या., पंचक प्रारम्भः १९।४४
श्रीवत्स	५	गु	१५	५२	१३	४४	धनि	२	१५	८	१७	व	१९	२८	१५	१०	बा	१५	५२	१३	४४	३६	२३	३७	४	४	२५	कुंभे	८।०८।५५।४०	६१।२३	बडादिन, पूषा. भौमः ११।५५
सौम्य	६	शु	१५	५४	१३	४५	शत	४	०१	९	००	सि	१६	२८	१३	५८	तै	१५	५४	१३	४५	३७	२३	३८	५	५	२६	मीने २७।१०	८।०९।५७।०२	६१।२३	[A स्नानारंभः, (व) पुन.-२ गुरुः १६।२५
काल	७	श	१४	३१	१३	१२	पूभा	४	२४	९	०९	व्य	१२	२०	१२	२०	व	१४	३१	१३	१२	३७	२४	३९	६	६	२७	मीने	८।१०।५८।२६	६१।२३	भ. १३।१२ उ. २४।४२ या.
सुस्थिर	८	र	११	३५	१२	०२	उभा	३	१९	८	४४	व	७	००	१०	१२	ब	११	३५	१२	०२	३८	२४	३९	७	७	२८	मीने	८।११।५९।४९	६१।२३	शांकभरी यात्रा, पूषा. रविः ३०।०६, धनुषि मूले बुधः ३१।०५
मातङ्ग	९	सो	७	०७	१०	१५	रेव	०/५६	४२/४०	७/३०	४१/०५	प	०/५२	२६/४३	७/२८	३५/३०	कौ	७	०७	१०	१५	३९	२४	४०	८	८	२९	मेषे ७।४१	८।१३।०१।१२	६१।२४	पंचक समाप्तिः ७।४१, पूषा. सौरः १४।४५
ए.व्र.	१०	मं	१	१२	७	५३	भर	५१	२३	२७	५८	सि	४३	५८	२५	००	ग	१	१२	७	५३	४०	२५	४१	९	९	३०	मेषे	८।१४।०२।३६	६१।२४	भ. १८।३१ उ. २९।०२ या., पुत्रदा ११ व्र.स्मार्त, मन्वादि, B
क्षयः	११	मं	५४	०४	२९	०२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[B बुधास्तः पूर्वस्याम् १०।१४, पूषा. शुक्रः २१।२९
ए.व्र.	१२	बु	४६	००	२५	४९	कृति	४५	१०	२५	२९	सा	३४	२५	२१	११	ब	२०	०८	१५	२८	४१	२५	४१	१०	१०	३१	वृषे ९।२२	८।१५।०३।५९	६१।२४	पुत्रदा ११ व्र.वैष्ण.
प्र.व्र.	१३	गु	३७	२४	२२	२३	रोहि	३८	२४	२२	४७	शु	२४	२१	१७	१०	कौ	११	४४	१२	०७	४२	२५	४२	११	११	१	वृषे	८।१६।०५।२३	६१।२४	प्रदोषः, जनवरी १ ता. ३१ सन २०२६ ई.
मानस	१४	शु	२८	४२	१८	५४	मृग	३१	३२	२०	०२	शु	१४	०५	१३	०४	ग	३	०१	८	३८	४३	२६	४३	१२	१२	२	मिथु. ९।२४	८।१७।०६।४७	६१।२४	भ. १८।५४ उ. २९।१२ या.
पूर्णिमा	१५	श	२०	२०	१५	३४	आर्द्रा	२५	०३	१७	२७	ब्र	५४/४४	००/१९	०/२९	०२/१३	ब	२०	२०	१५	३४	४४	२६	४३	१३	१३	३	मिथु.	८।१८।०८।११	६१।२४	पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, शाकंभरी जयंती, माघ A

अयनांशाः २४।१२।१५

पं.३७ पौ.शु. २ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	२	८	११	१०	४
०६	१०	१९	२८	०२	०१	१८	१८
१५	५४	३६	१४	३१	२७	२७	२७
१७	२५	०२	००	१३	०१	२२	२२
६१	४५	८७	७	७५	२	३	३
०८	३६	४७	०६	३४	३५	११	११
मू	मू	ज्ये	पुन	मू	पूभा	श	पूफा
२	४	१	३व	१	४	४	२



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. दिसं	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन सायं	कर्क रात्रौ	सिंह रात्रौ	कन्या रात्रौ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु प्रातः	मकर दिवा	कुंभ दिवा	मीन दिवा
०८।०३।५६।१७	१ श	२०	१।४४	३।२०	५।१७	७।३१	९।५१	१२।०८	२।२४	४।४३	७।०२	९।०६	१०।५०	१२।१८
०८।०४।५७।३८	१ र	२१	१।४०	३।१६	५।१३	७।२७	९।४७	१२।०४	२।२०	४।३९	६।५८	९।०२	१०।४६	१२।१४
०८।०५।५९।००	२ चं	२२	१।३६	३।१२	५।०९	७।२३	९।४४	१२।००	२।१६	४।३५	६।५४	८।५८	१०।४२	१२।१०
०८।०७।००।२१	३ मं	२३	१।३२	३।०८	५।०५	७।२०	९।४०	११।५६	२।१२	४।३१	६।५०	८।५४	१०।३८	१२।०६
०८।०८।०१।४४	४ बु	२४	१।२८	३।०५	५।०१	७।१६	९।३६	११।५३	२।०८	४।२७	६।४६	८।५१	१०।३४	१२।०२
०८।०९।०३।०६	५ गु	२५	१।२४	३।०१	४।५७	७।१२	९।३२	११।४९	२।०४	४।२४	६।४२	८।४७	१०।३०	११।५८
०८।१०।०४।२९	६ शु	२६	१।२०	२।५७	४।५३	७।०८	९।२८	११।४५	२।००	४।२०	६।३८	८।४३	१०।२६	११।५४
०८।११।०५।५२	७ श	२७	१।१६	२।५३	४।४९	७।०४	९।२४	११।४१	१।५७	४।१६	६।३४	८।३९	१०।२२	११।५०
०८।१२।०७।१६	८ र	२८	१।१२	२।४९	४।४५	७।००	९।२०	११।३७	१।५३	४।१२	६।३०	८।३५	१०।१८	११।४६
०८।१३।०८।३९	९ चं	२९	१।०९	२।४५	४।४१	६।५६	९।१६	११।३३	१।४९	४।०८	६।२६	८।३१	१०।१४	११।४३
०८।१४।१०।०३	१० मं	३०	१।०५	२।४१	४।३७	६।५२	९।१२	११।२९	१।४५	४।०४	६।२२	८।२७	१०।१०	११।३९
०८।१५।११।२७	१२ बु	३१	१।०१	२।३७	४।३३	६।४८	९।०८	११।२५	१।४१	४।००	६।१८	८।२३	१०।०६	११।३५
०८।१६।१२।५१	१३ गु	१	१२।५७	२।३३	४।२९	६।४४	९।०४	११।२१	१।३७	३।५६	६।१४	८।१९	१०।०२	११।३१
०८।१७।१४।१५	१४ शु	२	१२।५३	२।२९	४।२५	६।४०	९।००	११।१७	१।३३	३।५२	६।११	८।१५	९।५८	११।२७
०८।१८।१५।३८	१५ श	३	१२।४९	२।२५	४।२१	६।३६	८।५६	११।१३	१।२९	३।४८	६।०७	८।११	९।५४	११।२३

मास फलम्

इस माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा की वृद्धि हो और पांच शनिवार होने से महँगाई हो। पौष कृष्णा प्रतिपदा में रोहिणी होने से धान्य के भावों में तेजी हो और राजनीति प्रभावित हो। पौष की कृ.नौमी को शनिवार होने से अन्नादि भावों में समर्घता हो। शुक्रवारी अमावस होने से उद्धत मेघों से जलभ्रंश हो और खेती में बहुत उपद्रव हों तथा चौरो के उपद्रव भी नित्य रहें। अमावस्या ज्येष्ठा योग दुर्भिक्ष और कष्टकारी है। शुक्ला प्रतिपदा की वृद्धि होने से सुभिक्ष हो। पूर्णिमा आर्द्रा युक्त होने से महर्घता हो। पूर्णिमा शनिवार युक्त होने से दुर्भिक्ष हो। सोमवार की सक्रांति होने से दक्षिण की पवन चले, धान्यादि सभी वस्तुओं के भाव मंदे हो, रस घृत किराणें की वस्तुएं तेज हों, लोक, महाजन प्रसन्न हों, प्रजा में सद्भाव अधिक हो।

अयनांशाः २४।१२।१६

पं.३८ पौ.शु. ९ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	२	८	११	१०	४
१३	१६	००	२७	११	०१	१८	१८
२३	१४	०१	२२	२०	४७	०५	०५
२०	३३	११	२०	०८	१२	०७	०७
६१	४५	९०	७	७५	३	३	३
१०	५४	५५	४३	३३	१६	११	११
पूषा	पूषा	मू	पुन	मू	पूभा	श	पूफा
१	१	१	३व	४	४	४	२



नक्षत्र युतिः- सूर्य मूले २८ दिसं. तः पूषा. । मंगल मूले २५ दिसं. तः पूषा. । बुध ज्येष्ठा. २८ दिसं. तः मूले । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र मूले ३० दिसं. तः पूषा. । शनि पूभा. । राहु शते । केतु पूफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य पुनर्वसौ २८ दिसं. तः आर्द्रा. । मंगल पुनर्वसौ २५ दिसं. तः आर्द्रा. । बुध पुष्ये २८ दिसं. तः पुनर्वसौ । गुरु मूले । शुक्र पुनर्वसौ ३० दिसं. तः आर्द्रा. । शनि चित्रा. । राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य पुनर्वसौ २८ दिसं. तः आर्द्रा.। मंगल पुनर्वसौ २५ दिसं. तः आर्द्रा. । बुध पुष्ये २८ दिसं. तः पुनर्वसौ । गुरु मूले । शुक्र पुनर्वसौ ३० दिसं. तः आर्द्रा. । शनि चित्रा. । राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

|| द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ||

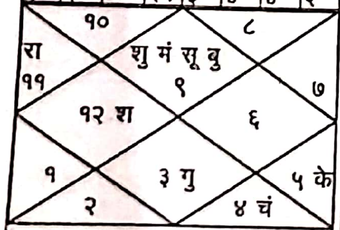
४ जनवरी से १८ जनवरी तक, श्री माघ कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमासू. सू. तारीख

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	स्टै. चंद्रः	प्रातः सौर र. स्प.	दैनिक गति	शिशिरर्त्तू रविरुत्तरे पोषकृष्णेति गुर्जराः, जनवरी २०२६ यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
ध्वजा	१	र	१२	४५	१२	३२	पुन	१९	२३	१५	११	वै	४५	४८	२५	४५	कौ	१२	४५	१२	३२	२५/४५	७/२६	५/४४	१४	१४	४	कर्क ९।४३	८।१९।०९।३४	६१।२३	[C पूषा. बुधः २३।३३
धाता	२	सो	६	२४	१०	००	पुष्य	१४	५८	१३	२५	वि	३८	१९	२२	४६	ग	६	२४	१०	००	४६	२६	४५	१५	१५	५	कर्क	८।२०।१०।५८	६१।२३	भ. २०।५७ उ.
च.व्र.	३	मं	१	३८	८	०५	श्ले	१२	११	१२	१९	प्री	३२	१४	२०	२०	वि	१	३८	८	०५	४८	२६	४५	१६	१६	६	सिंहे १२।१९	८।२१।१२।२१	६१।२३	भ. ८।०५ या., तिलकुटी ४ चन्द्रोदयः २१।०४, A
क्षयः	४	मं	५८	४४	३०	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A सौभाग्य सुन्दरी व्र., संकट हरगणपति व्र., गौरी चतुर्थी,
चर	५	बु	५७	५४	३०	३६	मघा	११	१६	११	५७	आ	२७	४२	१८	३१	कौ	२८	०३	१८	३९	५०	२६	४६	१७	१७	७	सिंहे	८।२२।१३।४४	६१।२३	[B उत्तरायनारंभः, मकर सक्रान्ति पर्व
गद	६	गु	५९	०९	३१	०६	पूफा	१२	२२	१२	२३	सौ	२४	४९	१७	२२	ग	२८	१५	१८	४५	५१	२७	४७	१८	१८	८	कन्या १८।३८	८।२३।१५।०७	६१।२३	भ. ३१।०६ उ.
शुभ	७	शु	…	…	…	…	उफा	१५	२८	१३	३८	शो	२३	२९	१६	५०	वि	३०	३१	१९	३९	५३	२७	४८	१९	१९	९	कन्या	८।२४।१६।३०	६१।२२	भ. १९।३९ या.
मृत्यु	७	श	२	२१	८	२३	हस्त	२०	२२	१५	३६	अ	२३	३३	१६	५२	ब	२	२१	८	२३	५५	२७	४९	२०	२०	१०	तुला.२८।४८	८।२५।१७।५२	६१।२२	स्वामी विवेकानन्द जयंती, उषा. शुक्रः ११।४४
पद्म	८	र	७	१०	१०	१९	चित्रा	२६	४३	१८	०८	सु	२४	४५	१७	२१	कौ	७	१०	१०	१९	५७	२७	४९	२१	२१	११	तुला.	८।२६।१९।१४	६१।२२	उषा. रविः ८।०३ (सौरः १५।३४), उषा. भौमः २०।४३
छत्र	९	सो	१३	१०	१२	४२	स्वा	३३	५९	२१	०२	धृ	२६	४०	१८	०७	ग	१३	१०	१२	४२	५९	२७	५०	२२	२२	१२	तुला.	८।२७।२०।३६	६१।२१	भ. २६।०० उ., मकरे शुक्रः २७।१८
श्रीवत्स	१०	मं	१९	४३	१५	२०	विशा	४१	३७	२४	०५	शू	२८	५५	१९	०१	वि	१९	४३	१५	२०	२६/०१	२७	५१	२३	२३	१३	वृश्चि. १७।२०	८।२८।२१।५७	६१।२१	भ. १५।२० या. [D सक्रान्ति करिदिन
ए.व्र.	११	बु	२६	१३	१७	५६	अनु	४९	०३	२७	०४	गं	३१	०६	१९	५३	बा	२६	१३	१७	५६	०३	२७	५२	२४	२४	१४	वृश्चि.	८।२९।२३।१८	६१।२०	षट्तिला ११ व्र., मकरे रविः १४।३४ (सौरः २१।४८), निरयन
काल	१२	गु	३२	१४	२०	२०	ज्ये	५५	५३	२९	४८	वृ	३२	५३	२०	३६	तै	३२	१४	२०	२०	०५	२६	५३	२५	२५	१५	धनु. २९।४८	९।००।२४।३८	६१।२०	तिल द्वादशी, मकरे भौमः २८।०१, उषा. बुधः ९।०६, D
प्र.व्र.	१३	शु	३७	२५	२२	२४	मूल	…	…	…	…	ध्रु	३४	०३	२१	०३	ग	४	५७	९	२५	०७	२६	५३	२६	२६	१६	धनु.	९।०१।२५।५८	६१।१९	भ. २२।२४ उ., प्रदोषः, मासिकशिवरात्री व्र.
गद	१४	श	४१	३७	२४	०५	मूल	१	५२	८	११	व्या	३४	२९	२१	१४	वि	९	३८	११	१७	१०	२६	५४	२७	२७	१७	धनु.	९।०२।२७।१७	६१।१९	भ. ११।१७ या., मकरे बुधः १०।०९
अमाव.	३०	र	४४	४८	२५	२१	पूषा	६	५४	१०	१२	ह	३४	०९	२१	०६	च	१३	२०	१२	४६	१२	२६	५५	२८	२८	१८	मक. १६।३८	९।०३।२८।३५	६१।१८	देवपितृकार्येऽमा., मौनी ३०, युगादि

अयनांशाः २४।१२।१७

पं.३९ मा.कृ. २ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	२	८	११	१०	४
२०	२१	१०	२६	२०	०२	१७	१७
३१	३६	४४	२६	०८	१२	४२	४२
३१	४३	१०	५९	५६	२३	५१	५१
६१	४६	९३	८	७५	३	३	३
१०	११	०७	०२	३२	५५	११	११
पूषा	पूषा	मू	पुन	पूषा	पूभा	श	पूफा
३	३	४	२व	३	४	४	२



|| दैनिक लग्न प्रवेश सारणी || स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ||

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. जन.	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क सायँ	सिंह रात्रौ	कन्या रात्रौ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर प्रातः	कुंभ दिवा	मीन दिवा
०८।१९।१७।०२	१ र	४	१२।४५	२।२१	४।१७	६।३२	८।५२	११।०९	९।२५	३।४४	६।०३	८।०७	९।५०	११।१९
०८।२०।१८।२६	२ चं	५	१२।४१	२।१७	४।१३	६।२८	८।४८	११।०५	९।२१	३।४०	५।५९	८।०३	९।४६	११।१५
०८।२१।१९।४९	३ मं	६	१२।३७	२।१३	४।१०	६।२४	८।४४	११।०१	९।१७	३।३६	५।५५	७।५९	९।४२	११।११
०८।२२।२१।१२	५ बु	७	१२।३३	२।०९	४।०६	६।२०	८।४०	१०।५७	९।१३	३।३२	५।५१	७।५५	९।३९	११।०७
०८।२३।२२।३५	६ गु	८	१२।२९	२।०५	४।०२	६।१६	८।३७	१०।५३	९।०९	३।२८	५।४७	७।५१	९।३५	११।०३
०८।२४।२३।५८	७ शु	९	१२।२५	२।०१	३।५८	६।१३	८।३३	१०।४९	९।०५	३।२४	५।४३	७।४७	९।३१	१०।५९
०८।२५।२५।२०	७ श	१०	१२।२१	१।५७	३।५४	६।०९	८।२९	१०।४५	९।०१	३।२०	५।३९	७।४३	९।२७	१०।५५
०८।२६।२६।४२	८ र	११	१२।१७	१।५४	३।५०	६।०५	८।२५	१०।४२	१२।५७	३।१६	५।३५	७।४०	९।२३	१०।५१
०८।२७।२८।०४	९ चं	१२	१२।१३	१।५०	३।४६	६।०१	८।२१	१०।३८	१२।५३	३।१३	५।३१	७।३६	९।१९	१०।४७
०८।२८।२९।२५	१० मं	१३	१२।०९	१।४६	३।४२	५।५७	८।१७	१०।३४	१२।४९	३।०९	५।२७	७।३२	९।१५	१०।४३
०८।२९।३०।४६	११ बु	१४	१२।०५	१।४२	३।३८	५।५३	८।१३	१०।३०	१२।४६	३।०५	५।२३	७।२८	९।११	१०।३९
०९।००।३२।०६	१२ गु	१५	१२।०२	१।३८	३।३४	५।४९	८।०९	१०।२६	१२।४२	३।०१	५।१९	७।२४	९।०७	१०।३५
०९।०१।३३।२६	१३ शु	१६	११।५८	१।३४	३।३०	५।४५	८।०५	१०।२२	१२।३८	२।५७	५।१५	७।२०	९।०३	१०।३२
०९।०२।३४।४५	१४ श	१७	११।५४	१।३०	३।२६	५।४१	८।०१	१०।१८	१२।३४	२।५३	५।११	७।१६	८।५९	१०।२८
०९।०३।३६।०४	३० र	१८	११।५०	१।२६	३।२२	५।३७	७।५७	१०।१४	१२।३०	२।४९	५।०७	७।१२	८।५५	१०।२४

संक्रांति फलम्

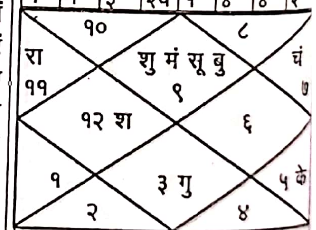
ता. १४ जनवरी २०२६

माघ कृ. ११ बुधे मकरेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. १४।३४ वारात् ३ नक्षत्रात् ३ वारनाम मंदाकिनी नृपतीन् सुखदा नक्षत्रनाम मंदाकिनी नृपतीन् सुखदा अपरान्ह ३ प्रहर व्यापिनी वैश्यान् हन्ति, दक्षिणे गमनं नैऋत्यां दृष्टिः बालवकरणे प्राविष्टा मध्यमफलं व्याघ्रवाहनं अश्वोपवाहनं भीतिकारक पीतवस्त्रं गदायुधं रौप्यपात्रं पायसभक्षणं कुंकुमलेपनं भूतजातिः जातिपुष्पं कंकणभूषणं पर्णकंचुकी कुमारिकावस्था (बैठी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स दक्षिणे राहु पूर्वे मूलं स्वर्गे विवाहस्तंभो वायव्याम् शुक्रास्तः पूर्वस्याम् । पुण्यकालः (स्टै.) १४।३४ से ३०।३४ तक । (दान- काष्ट - अन्न) ।

अयनांशाः २४।१२।१८

पं.४० मा.कृ. ९ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	२	८	११	१०	४
२७	२७	२१	२५	२८	०२	१७	१७
३९	००	४३	३०	५७	४१	२०	२०
३७	४४	५३	२२	३१	३७	३५	३५
६१	४६	९५	८	७५	४	३	३
०८	२६	५७	०५	२९	३१	११	११
उषा	उषा	पूषा	पुन	उषा	पूभा	श	पूफा
१	१	३	२व	१	४	४	२



नक्षत्र युतिः- सूर्य पूषा. ११ जन. तः उषा. । मंगल पूषा. ११ जन. तः उषा. । बुध मूले ६ जन. तः पूषा. १५ जन. तः उषा. । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र पूषा. १० जन. तः उषा. १८ जन. तः अभि. । शनि पूभा. । राहु शते । केतु पूफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य आर्द्रा.११ जन. तः मृगे । मंगल आर्द्रा.११ जन. तः मृगे । बुध पुनर्वसौ ६ जन. तः आर्द्रा.१५ जन. तः मृगे । गुरु मूले । शुक्र आर्द्रा.१० जन. तः मृगे १८ जन. तः रोहि.। शनि चित्रा.। राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य आर्द्रा.११ जन. तः मृगे । मंगल आर्द्रा.११ जन. तः मृगे । बुध पुनर्वसौ ६ जन. तः आर्द्रा.१५ जन. तः मृगे । गुरु मूले । शुक्र आर्द्रा.१० जन.तः मृगे १८ जन. तः रोहि.। शनि चित्रा.। राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

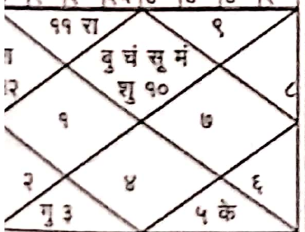
१९ जनवरी से १ फरवरी तक, श्री माघ शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

केतकी अहर्गणः ५४०२ शिशिरर्त्तू रविरुत्तरे,जनवरी-फरवरी २०२६

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
काण	१	सो	४७	००	२६	१४	उषा	१०	५८	११	४९	व	३३	०४	२०	४०	किं	१६	०१	१३	५०	२६ १५	७ २६	५ ५६	२९	२९	१९	मक.	९।०४।२९।५३	६१।१७	श्री वल्लभ जयंती, सायन कुंभे भानुः ३१।०७
लुम्बक	२	मं	४८	१२	२६	४३	श्रव	१४	०५	१३	०४	सि	३१	१५	१९	५६	बा	१७	४३	१४	३१	१७	२६	५७	३०	३०	२०	कुंभे २५।३२	९।०५।३१।१०	६१।१६	चंद्रदर्शनम् (मु.३०), पंचक प्रारम्भः २५।३२, अभि.प्र.रविः B
मित्र	३	बु	४८	२८	२६	४९	धनि	१६	१६	१३	५६	व्य	२८	४२	१८	५४	तै	१८	२८	१४	४८	२०	२५	५७	१	१	२१	कुंभे	९।०६।३२।२६	६१।१६	भा. माघारंभः, सावान ८, अभि.प्र. सौरः १०।२३
वज्र	४	गु	४७	४६	२६	३१	शत	१७	३३	१४	२६	व	२५	२५	१७	३५	व	१८	१५	१४	४३	२३	२५	५८	२	२	२२	कुंभे	९।०७।३३।४२	६१।१५	भ. १४।४३ उ. २६।३१ या., वरद (कुंद) ४, तिल चतुर्थी
वसंत	५	शु	४६	०३	२५	५०	पूभा	१७	५२	१४	३४	प	२१	२१	१५	५७	ब	१७	०२	१४	१४	२६	२५	५९	३	३	२३	मीने ८।३४	९।०८।३४।५७	६१।१४	वसन्त पञ्चमी, नेताजी जयन्ती, श्रव. बुधः ९।५२
धूम्र	६	श	४३	२१	२४	४५	उभा	१७	१३	१४	१८	शि	१६	३१	१४	०१	कौ	१४	५०	१३	२१	२९	२५	६ ००	४	४	२४	मीने	९।०९।३६।११	६१।१३	श्रव. रविः १०।१८ (सौरः १६।४५), अभि.नि. रविः ३१।१७, D
प्रवर्धमा	७	र	३९	३८	२३	१५	रेव	१५	३४	१३	३८	सि	१०	५३	११	४६	ग	११	३७	१२	०३	३१	२४	०१	५	५	२५	मेषे १३।३८	९।१०।३७।२४	६१।१२	भ.२३।१५उ., पंचक समाप्तिः १३।३८,मन्वादि, पुत्र ७, रथ ७, A
राक्षस	८	सो	३४	५६	२१	२२	अश्वि	१२	५७	१२	३४	सा	४ ५७	२८ १७	९ ३०	११ ४८	वि	७	२४	१०	२१	३४	२४	०२	६	६	२६	मेषे	९।११।३८।३६	६१।११	भ. १०।२१ या., भीष्माष्टमी, गणराज्यदिवस
मुसल	९	मं	२९	२२	१९	०८	भर	९	२५	११	०९	शु	४९	२७	२७	१०	बा	२	१६	८	१८	३७	२३	०२	७	७	२७	वृषे १६।४५	९।१२।३९।४७	६१।१०	[B २७।४१, श्रव. शुक्रः २६।०७, उभा.-१ शनिः ७।३९
सिद्धि	१०	बु	२३	०६	१६	३७	कृति	५	०८	९	२६	ब्र	४१	०८	२३	५०	ग	२३	०६	१६	३७	४१	२३	०३	८	८	२८	वृषे	९।१३।४०।५७	६१।०९	भ. २७।१७ उ., श्रव. भौमः २४।११, (व) पुन.-१ गुरुः २९।४०
ृ.ब्र.	११	गु	१६	२३	१३	५६	रोहि	० ५५	१८ १०	७ २१	३० २७	ऐ	३२	३१	२०	२३	वि	१६	२३	१३	५६	४४	२३	०४	९	९	२९	मिथु. १८।२८	९।१४।४२।०६	६१।०८	भ. १३।५६ या., जया ११ व्र., भीष्मद्वादशी
.ब्र.	१२	शु	९	२७	११	०९	आर्द्रा	५०	०६	२७	२५	वै	२३	४९	१६	५४	बा	९	२७	११	०९	४७	२२	०५	१०	१०	३०	मिथु.	९।१५।४३।१४	६१।०७	प्रदोषः, कल्पादि, धनि. बुधः २६।३६
त्र	१३	श	२	४०	८	२५	पुन	४५	२६	२५	३२	वि	१५	१८	१३	२९	तै	२	४०	८	२५	५०	२२	०६	११	११	३१	कर्के ११।५९	९।१६।४४।२१	६१।०६	भ. २९।५३ उ., धनि. शुक्रः १६।४६ [C फरवरी २ ता. २८
यः	१४	श	५६	२०	२९	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A अचला ७, भानु सप्तमी, विजया ७, अभि.नि. सौरः १३।३९
ूर्णिमा	१५	र	५०	५०	२७	४१	पुष्य	४१	३०	२३	५७	प्री	७ ५९	१३ ५९	१० ३१	१४ १७	वि	२३	२८	१६	४४	५३	२१	०६	१२	१२	१	कर्के	९।१७।४५।२७	६१।०५	भ. १६।४४ या., पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, माघ स्नान पूर्त्तिः, C
																															[D शत.-३ राहुः २५।५१, पूफा.-१ केतुः २५।५१

अयनांशाः २४।१२।१९ ॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

.४१ मा.शु. १ सो. इष्टघटी ०।००							
ू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	२	९	११	१०	४
४	०२	०३	२४	०७	०३	१६	१६
७	२६	०६	३४	४५	१४	५८	५८
३	२३	४५	२०	४९	५३	२०	२०
.१	४६	९९	७	७५	५	३	३
८	३९	४९	५०	२६	०४	११	११
षा	उषा	उषा	पुन	उषा	पूभा	श	पूफा
	२	२	२व	४	४	४	२



ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. जन.	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क सायँ	सिंह रात्रौ	कन्या रात्रौ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर प्रातः	कुंभ दिवा	मीन दिवा
०९।०४।३७।२१	१ चं	१९	११।४६	१।२२	३।१८	५।३३	७।५३	१०।१०	१२।२६	२।४५	५।०४	७।०८	८।५१	१०।२०
०९।०५।३८।३८	२ मं	२०	११।४२	१।१८	३।१४	५।२९	७।४९	१०।०६	१२।२२	२।४१	५।००	७।०४	८।४७	१०।१६
०९।०६।३९।५५	३ बु	२१	११।३८	१।१४	३।१०	५।२५	७।४५	१०।०२	१२।१८	२।३७	४।५६	७।००	८।४३	१०।१२
०९।०७।४१।१०	४ गु	२२	११।३४	१।१०	३।०६	५।२१	७।४१	९।५८	१२।१४	२।३३	४।५२	६।५६	८।३९	१०।०८
०९।०८।४२।२५	५ शु	२३	११।३०	१।०६	३।०३	५।१७	७।३७	९।५४	१२।१०	२।२९	४।४८	६।५२	८।३५	१०।०४
०९।०९।४३।३९	६ श	२४	११।२६	१।०२	२।५९	५।१३	७।३३	९।५०	१२।०६	२।२५	४।४४	६।४८	८।३२	१०।००
०९।१०।४४।५२	७ र	२५	११।२२	१२।५८	२।५५	५।०९	७।३०	९।४६	१२।०२	२।२१	४।४०	६।४४	८।२८	९।५६
०९।११।४६।०४	८ चं	२६	११।१८	१२।५४	२।५१	५।०५	७।२६	९।४२	११।५८	२।१७	४।३६	६।४०	८।२४	९।५२
०९।१२।४७।१५	९ मं	२७	११।१४	१२।५०	२।४७	५।०२	७।२२	९।३८	११।५४	२।१३	४।३२	६।३६	८।२०	९।४८
०९।१३।४८।२५	१० बु	२८	११।१०	१२।४७	२।४३	४।५८	७।१८	९।३५	११।५०	२।०९	४।२८	६।३३	८।१६	९।४४
०९।१४।४९।३४	११ गु	२९	११।०६	१२।४३	२।३९	४।५४	७।१४	९।३१	११।४६	२।०६	४।२४	६।२९	८।१२	९।४०
०९।१५।५०।४२	१२ शु	३०	११।०२	१२।३९	२।३५	४।५०	७।१०	९।२७	११।४२	२।०२	४।२०	६।२५	८।०८	९।३६
०९।१६।५१।४९	१३ श	३१	१०।५८	१२।३५	२।३१	४।४६	७।०६	९।२३	११।३९	१।५८	४।१६	६।२१	८।०४	९।३२
०९।१७।५२।५५	१५ र	१	१०।५५	१२।३१	२।२७	४।४२	७।०२	९।१९	११।३५	१।५४	४।१२	६।१७	८।००	९।२८

मास फलम्

इस माह मे पांच रविवार नेष्ट फलप्रद हैं ॥ एकमासेरवेवाराः पंचनस्युः शुभावहाः ॥ अमावस को रविवार होने से सन्ताप, अर्थनाश, क्लेश और राजदुःख की पीड़ा हो। अमावस्या पूर्वाषाढा योग दुर्भिक्ष और कष्टकारी है। माघ शुक्ला प्रतिपदा को गुरुवार होने से सुभिक्ष हो। माघ शुक्ला सप्तमी रविवार होने से दुर्भिक्ष हो। माघ शुक्लाष्टमी को कृत्तिका न होने से फागुण में रोली लगे और श्रावण में सूखा रहे। पूर्णिमा पुष्य युक्त होने से महर्घता हो। पूर्णिमा रविवार और पुष्य युक्त होने से धन की हानि हो। माघ की पूर्णिमा को मघा का अभाव होने से महर्घता हो। बुधवार की सक्रांति होने से रस कस घृत महँगे हों, वस्त्रादि और रुई भाव मंदे हों, प्रजा में भय हो, चतुर्मास में वर्षा कम हो।

अयनांशाः २४।१२।२०

पं.४२ मा.शु. ८ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	२	९	११	१०	४
११	०७	१४	२३	१६	०३	१६	१६
५४	५३	५७	४१	३३	५१	३६	३६
३८	२९	३८	०२	४२	५१	०५	०५
६०	४६	१०३	७	७५	५	३	३
५९	५०	४६	१७	२२	३४	११	११
श्र	उषा	श्र	पुन	श्र	उभा	श	पूफा
१	४	२	२व	२	१	३	१



नक्षत्र युति:- सूर्य उषा. २० जन. तः अभि.२४ जन. तः श्रवणे। मंगल उषा.२४ जन. तः अभि.२९ जन. तः श्रवणे। बुध उषा.२१ जन.तः अभि.२३ जन. तः श्रवणे ३० जन. तः धनि.। गुरु पुनर्वसौ। शुक्र अभि.२१ जन.तः श्रवणे ३१ जन.तः धनि.। शनि पूभा. २० जन. तः उभा.। राहु शते। केतु पूफा.।

[illegible] पञ्चशलाका वेधः:- सूर्य मृगे २० जन. तः रोहि.२४ जन. तः मघा.। मंगल मृगे २४ जन. तः रोहि.२९ जन. तः मघा.। बुध मृगे २१ जन. तः रोहि.२३ जन. तः मघा.३० जन. तः श्लेषा.। गुरु मूले। शुक्र रोहि.२१ जन. तः मघा.३१ जन. तः श्लेषा.। शनि चित्रा.२० जन. तः हस्ते। राहु स्वाती। केतु अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः:- सूर्य मृगे २० जन.तः रोहि.२४ जन.तः कृति.। मंगल मृगे २४ जन.तः रोहि.२९ जन.तः कृति.। बुध मृगे २१ जन.तः रोहि.२३ जन. तः कृति.३० जन. तः विशा.। गुरु मूले। शुक्र रोहि.२१ जन.तः कृति.३१ जन.तः विशा.। शनि चित्रा.२० जन.तः हस्ते। राहु स्वाती। केतु अश्वि.।

॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

२ फरवरी से १७ फरवरी तक, श्री फाल्गुन कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक | शिशिरर्त्तू रविरुत्तरे माघकृष्णेति गुर्जराः, फरवरी २०२६

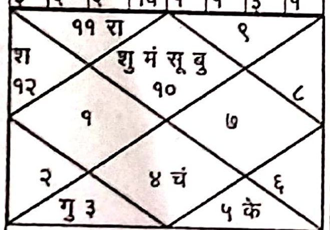
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
सौम्य	१	सो	४६	२७	२५	५५	श्ले	३८	३८	२२	४८	सौ	५३	२६	२८	४३	बा	१८	३०	१४	४४	२६ ५७	७ २१	६ ०७	१३	१३	२	सिंहे २२।४८	९।१८।४६।३१	६१।०३	[B बुधोदयः पश्चिमायाम् ८।५२
काल	२	मं	४३	३१	२४	४४	मघा	३७	०७	२२	११	शो	४८	११	२६	३७	तै	१४	४८	१३	१५	२७ ००	२०	०८	१४	१४	३	सिंहे	९।१९।४७।३५	६१।०२	कुंभे बुधः २१।१२
सुस्थिर	३	बु	४२	११	२४	१२	पूफा	३७	११	२२	१२	अ	४४	१३	२५	०१	व	१२	३९	१२	२३	०४	१९	०९	१५	१५	४	कन्या२८।१९	९।२०।४८।३७	६१।०१	भ. १२।२३ उ. २४।१२ या., शुक्रोदयः पश्चिमायाम् १०।२८
च.व्र.	४	गु	४२	४०	२४	२३	उफा	३८	५९	२२	५४	सु	४१	३९	२३	५८	ब	१२	१३	१२	१२	०७	१९	१०	१६	१६	५	कन्या	९।२१।४९।३८	६१।००	चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २१।४३, कुंभे A
अमृत	५	शु	४४	५६	२५	१६	हस्त	४२	३१	२४	११	धृ	४०	२९	२३	३०	कौ	१३	३६	१२	४४	११	१८	१०	१७	१७	६	कन्या	९।२२।५०।३७	६०।५८	धनि. रविः १३।२५ (सौरः १८।५२), B
काण	६	श	४८	५४	२६	५१	चित्रा	४७	४१	२६	२२	शू	४०	३४	२३	३१	ग	१६	४४	१३	५९	१४	१८	११	१८	१८	७	तुला.१३।१६	९।२३।५१।३५	६०।५७	भ. २६।५१ उ., शत. बुधः १६।०५
लुम्बक	७	र	५४	१५	२८	५९	स्वा	५४	१०	२८	५७	गं	४१	४६	२३	५९	वि	२१	२७	१५	५२	१८	१७	१२	१९	१९	८	तुला.	९।२४।५२।३२	६०।५५	भ. १५।५२ या.
मित्र	८	सो	...	...	...	...	विशा	...	...	...	...	वृ	४३	४२	२४	४५	बा	२७	१८	१८	११	२१	१६	१३	२०	२०	९	वृश्चि. २५।०७	९।२५।५३।२८	६०।५४	[A शुक्रः २४।१५
श्रीवत्स	८	मं	०	३०	७	२८	विशा	१	३१	७	५२	ध्रु	४५	५५	२५	३७	कौ	०	३०	७	२८	२५	१५	१३	२१	२१	१०	वृश्चि.	९।२६।५४।२२	६०।५३	अनुरा. रे. ८ ऽ।।।।।ऽ।। रात्रौ लग्न ७
सौम्य	९	बु	६	५८	१०	०२	अनु	९	०४	१०	५२	व्या	४८	०१	२६	२७	ग	६	५८	१०	०२	२९	१५	१४	२२	२२	११	वृश्चि.	९।२७।५५।१४	६०।५१	भ. २३।१७ उ., रामदास ९, शत. शुक्रः ७।५१
काल	१०	गु	१३	०४	१२	२८	ज्ये	१६	१४	१३	४३	ह	४९	३४	२७	०४	वि	१३	०४	१२	२८	३३	१४	१५	२३	२३	१२	धनु. १३।४३	९।२८।५६।०५	६०।५०	भ. १२।२८ या., कुंभे रविः २७।२७
ए.व्र.	११	शु	१८	१५	१४	३१	मूल	२२	३१	१६	१४	व	५०	१८	२७	२०	बा	१८	१५	१४	३१	३६	१३	१६	२४	२४	१३	धनु.	९।२९।५६।५५	६०।४८	विजया ११ व्र., कुंभे सौरः ८।२६
प्र.व्र.	१२	श	२२	११	१६	०५	पूषा	२७	३८	१८	१६	सि	५०	०३	२७	१३	तै	२२	११	१६	०५	४०	१२	१६	२५	२५	१४	मक. २४।४१	१०।००।५७।४३	६०।४६	प्रदोषः, धनि. भौमः २४।०९
शिवरा.	१३	र	२४	४६	१७	०६	उषा	३१	२५	१९	४६	व्य	४८	४४	२६	४१	व	२४	४६	१७	०६	४४	१२	१७	२६	२६	१५	मक.	१०।०१।५८।२९	६०।४५	भ.१७।०६ उ. २९।२४ या., महाशिवरात्री व्रतम्, C
सिद्धि	१४	सो	२५	५७	१७	३४	श्रव	३३	५३	२०	४४	व	४६	२२	२५	४३	श	२५	५७	१७	३४	४८	११	१८	२७	२७	१६	मक.	१०।०२।५९।१४	६०।४३	[C पूभा. बुधः २०।१९
अमाव.	३०	मं	२५	५०	१७	३०	घनि	३५	०६	२१	१२	प	४३	०१	२४	२२	ना	२५	५०	१७	३०	५२	१०	१९	२८	२८	१७	कुंभे ९।०२	१०।०३।५९।५७	६०।४२	पंचक प्रारम्भः ९।०२, देवपितृकार्येऽमा.

शुक्रोदयः पश्चिमायाम्

अयनांशाः २४।१२।२१

पं.४३ फा.कृ. १ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	२	९	११	१०	४
१९	१३	२७	२२	२५	०४	१६	१६
०१	२१	१२	५२	२१	३२	१३	१३
१०	४६	३६	१९	०४	०६	५०	५०
६०	४६	१०६	६	७५	६	३	३
५२	५९	०४	२९	१७	००	११	११
श्र	श्र	ध	पुन	ध	उभा	श	पूफा
३	२	२	१व	१	१	३	१



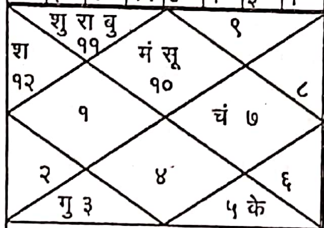
॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. फर.	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह सायं	कन्या रात्रौ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ प्रातः	मीन दिवा
०९।१८।५३।५९	१ चं	२	१०।५१	१२।२७	२।२३	४।३८	६।५८	९।१५	११।३१	१।५०	४।०८	६।१३	७।५६	९।२५
०९।१९।५५।०२	२ मं	३	१०।४७	१२।२३	२।१९	४।३४	६।५४	९।११	११।२७	१।४६	४।०४	६।०९	७।५२	९।२१
०९।२०।५६।०४	३ बु	४	१०।४३	१२।१९	२।१५	४।३०	६।५०	९।०७	११।२३	१।४२	४।००	६।०५	७।४८	९।१७
०९।२१।५७।०५	४ गु	५	१०।३९	१२।१५	२।११	४।२६	६।४६	९।०३	११।१९	१।३८	३।५७	६।०१	७।४४	९।१३
०९।२२।५८।०५	५ शु	६	१०।३५	१२।११	२।०७	४।२२	६।४२	८।५९	११।१५	१।३४	३।५३	५।५७	७।४०	९।०९
०९।२३।५९।०३	६ श	७	१०।३१	१२।०७	२।०३	४।१८	६।३८	८।५५	११।११	१।३०	३।४९	५।५३	७।३६	९।०५
०९।२५।००।००	७ र	८	१०।२७	१२।०३	१।५९	४।१४	६।३४	८।५१	११।०७	१।२६	३।४५	५।४९	७।३२	९।०१
०९।२६।००।५५	८ चं	९	१०।२३	११।५९	१।५६	४।१०	६।३०	८।४७	११।०३	१।२२	३।४१	५।४५	७।२८	८।५७
०९।२७।०१।४९	८ मं	१०	१०।१९	११।५५	१।५२	४।०६	६।२६	८।४३	१०।५९	१।१८	३।३७	५।४१	७।२५	८।५३
०९।२८।०२।४१	९ बु	११	१०।१५	११।५१	१।४८	४।०२	६।२३	८।३९	१०।५५	१।१४	३।३३	५।३७	७।२१	८।४९
०९।२९।०३।३२	१० गु	१२	१०।११	११।४७	१।४४	३।५९	६।१९	८।३५	१०।५१	१।१०	३।२९	५।३३	७।१७	८।४५
१०।००।०४।२२	११ शु	१३	१०।०७	११।४३	१।४०	३।५५	६।१५	८।३१	१०।४७	१।०६	३।२५	५।२९	७।१३	८।४१
१०।०१।०५।१०	१२ श	१४	१०।०३	११।४०	१।३६	३।५१	६।११	८।२८	१०।४३	१।०२	३।२१	५।२६	७।०९	८।३७
१०।०२।०५।५६	१३ र	१५	९।५९	११।३६	१।३२	३।४७	६।०७	८।२४	१०।३९	१२।५९	३।१७	५।२२	७।०५	८।३३
१०।०३।०६।४१	१४ चं	१६	९।५५	११।३२	१।२८	३।४३	६।०३	८।२०	१०।३५	१२।५५	३।१३	५।१८	७।०१	८।२९
१०।०४।०७।२४	३० मं	१७	९।५१	११।२८	१।२४	३।३९	५।५९	८।१६	१०।३२	१२।५१	३।०९	५।१४	६।५७	८।२५

अयनांशाः २४।१२।२२

पं.४४ फा.कृ. ८ सो. इष्टघटी ०।००

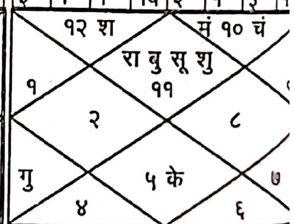
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	१०	२	१०	११	१०	४
२६	१८	०९	२२	०४	०५	१५	१५
०६	५१	२९	०९	०७	१५	५१	५१
४७	०२	५७	५३	४७	१७	३५	३५
६०	४७	१०२	५	७५	६	३	३
४३	०६	३१	२८	११	२३	११	११
ध	श्र	श	पुन	ध	उभा	श	पूफा
१	३	१	१व	४	१	३	१



अयनांशाः २४।१२।२३

पं.४५ फा.कृ.१४ सो. इष्टघटी ०।

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.
१०	९	१०	२	१०	११	१०
०३	२४	२०	२१	१२	०६	१५
११	२१	३८	३५	५३	००	२९
१९	०२	५६	०३	४१	५७	२०
६०	४७	८१	४	७५	६	३
३३	११	०१	१८	०३	४२	११
ध	ध	पूभा	पुन	श	उभा	श
३	१	१	१व	२	१	३



नक्षत्र युतिः- सूर्य श्रवणे ६ फर. तः धनि.। मंगल श्रवणे १४ फर. तः धनि.। बुध धनि. ७ फर. तः शते १५ फर. तः पूभा. । गुरु पुनर्वसो । शुक्र धनि. ११ फर. तः शते । शनि उभा. । राहु शते । केतु पूफा.

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य मघा. ६ फर. तः श्लेषा.। मंगल मघा. १४ फर. तः श्लेषा.। बुध श्लेषा. ७ फर. तः स्वातौ १५ फर. तः चित्रा.। गुरु मूले । शुक्र श्लेषा. ११ फर. तः स्वातौ । शनि हस्ते । राहु स्वातौ । केतु अश्वि.

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य कृति. ६ फर. तः विशा.। मंगल कृति. १४ फर. तः विशा. । बुध विशा. ७ फर. तः स्वातौ १५ फर. तः चित्रा.। गुरु मूले । शुक्र विशा. ११ फर. तः स्वातौ । शनि हस्ते । राहु स्वातौ । केतु अश्वि.

१८ फरवरी से ३ मार्च तक, श्री फाल्गुन शुक्लपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
मानस	१	बु	२४	३३	१६	५८	शत	३५	११	२१	१४	शि	३८	४७	२२	४०	ब	२४	३३	१६	५८	२७ ५५	७ ०९	६ १९	२९	२९	१८	कुंभे	१०।०५।००।३९	६०।४०
फुलरि.	२	गु	२२	१२	१६	०१	पूभा	३४	१७	२०	५१	सि	३३	४७	२०	३९	कौ	२२	१२	१६	०१	५९	०८	२०	३०	१	१९	मीने १४।५९	१०।०६।०१।१९	६०।३८
ध्वजा	३	शु	१८	५८	१४	४३	उभा	३२	३३	२०	०८	सा	२८	०५	१८	२१	ग	१८	५८	१४	४३	२८ ०३	०७	२१	१	२	२०	मीने	१०।०७।०१।५७	६०।३६
धाता	४	श	१५	००	१३	०६	रेव	३०	०७	१९	०९	शु	२१	४९	१५	५०	वि	१५	००	१३	०६	०७	०६	२१	२	३	२१	मेषे १९।०९	१०।०८।०२।३३	६०।३५
आनन्द	५	र	१०	२५	११	१६	अश्वि	२७	०८	१७	५७	शु	१५	०६	१३	०८	बा	१०	२५	११	१६	११	०६	२२	३	४	२२	मेषे	१०।०९।०३।०७	६०।३३
चर	६	सो	५	२५	९	१५	भर	२३	४६	१६	३५	ब्र	८	०२	१०	१८	तै	५	२५	९	१५	१५	०५	२३	४	५	२३	वृषे २२।१३	१०।१०।०३।४०	६०।३१
होलाष्ट.	७	मं	०	०६	७	०६	कृति	२०	०९	१५	०७	ऐ	०	४४	७	२१	व	०	०६	७	०६	१९	०४	२३	५	६	२४	वृषे	१०।११।०४।११	६०।२९
क्षयः	८	मं	५४	३५	२८	५४	०	०	०	०	०	वै	५३	१७	२८	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
शुभ	९	बु	४९	०८	२६	४२	रोहि	१६	२६	१३	३७	वि	४५	५३	२५	२४	बा	२१	५३	१५	४८	२३	०३	२४	६	७	२५	मिथु. २४।५२	१०।१२।०४।४०	६०।२७
मृत्यु	१०	गु	४३	४९	२४	३३	मृग	१२	४७	१२	०९	प्री	३८	३५	२२	२८	तै	१६	२८	१३	३७	२७	०२	२५	७	८	२६	मिथु.	१०।१३।०५।०८	६०।२५
ए.व्र.	११	शु	३८	५१	२२	३३	आर्द्रा	९	२२	१०	४६	आ	३१	३३	१९	३८	व	११	१८	११	३२	३१	०१	२५	८	९	२७	कर्के २७।५०	१०।१४।०५।३३	६०।२३
छत्र	१२	श	३४	२२	२०	४४	पुन	६	२१	९	३२	सौ	२४	५४	१६	५७	ब	६	३३	९	३७	३५	००	२६	९	१०	२८	कर्के	१०।१५।०५।५६	६०।२१
प्र.व्र.	१३	र	३०	३२	१९	१२	पुष्य	३	५५	८	३३	शो	१८	४५	१४	२९	कौ	२	२३	७	५६	४०	६ ५६	२७	१०	११	१	कर्के	१०।१६।०६।१८	६०।२०
होली	१४	सो	२७	३५	१८	००	श्ले	२	१४	७	५१	अ	१३	१७	१२	१६	व	२७	३५	१८	००	४४	५८	२७	११	१२	२	सिंहे ७।५१	१०।१७।०६।३७	६०।१८
छारेंड़ी	१५	मं	२५	३८	१७	१२	मघा	१	२९	७	३२	सु	८	३४	१०	२२	ब	२५	३८	१७	१२	४८	५७	२८	१२	१३	३	सिंहे	१०।१८।०६।५५	६०।१६

केतकी अहर्गणः ५४३२ शिशिरर्त्तू रविरुत्तरे, फरवरी-मार्च २०२६

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
चंद्रदर्शनम् (मु.१५), सायन मीने भानुः २१।०७
फुलरिया २, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, रमजान ९, B
भ. २५।५७ उ., भा. फाल्गुनारंभः [D उभा.-२ शनिः २४।५२
भ. १३।०६ या., पंचक समाप्तिः १९।०९, पूभा. शुक्रः २३।३०, D
याज्ञवल्क्य जयंती [B शत. रविः १७।५४ (सौरः २२।२७)
कुंभे भौमः ११।२३
भ. ७।०६ उ. १८।०० या., होलाष्टक
[C माला बनाना) भद्रा के पहिले, होलिका दहनं भद्रापुच्छे H
[H (२५।२३), करिदिन
वक्री बुधः २२।०९ [E थापणा भद्रा के पहिले
भ. ११।३२ उ. २२।३३ या., आमलकी ११ व्र., बिड़कुला-ढाल E
मेला श्रीश्यामजी (स्वाटु) [F मीने शुक्रः २३।४६
प्रदोषः, मार्च ३ ता. ३१, बुधास्तः पश्चिमायाम् २०।२२, F
भ.१८।०० उ. २९।३२ या., जेलपोणी (गोबर के बिड़कुलों की C
ग्रस्तोदयं खग्रासं चन्द्रग्रहणम्, मन्वादि, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, A
[A छारेंडी देशाचारे, करिदिन, शत. भौमः २२।२७

अयनांशाः २४।१२।२४

॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

संक्रांति फलम्

अयनांशाः २४।१२।२५

पं.४६ फा.शु. ६ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१०	२	१०	११	१०	४
१०	२९	२७	२१	२१	०६	१५	१५
१४	५१	४०	०८	३८	४८	०७	०७
६	३०	४२	४७	३७	४४	०६	०६
०	४७	२६	३	७४	६	३	३
२	१४	१९	०२	५४	५८	१०	१०
[illegible]	ध	पूभा	पुन	पूभा	उभा	श	पूफा
	२	३	१व	१	२	३	१



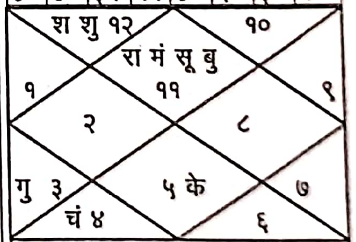
ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. फर.	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह सायँ	कन्या रात्रौ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ प्रातः	मीन दिवा
१०।०५।०८।०५	१ बु	१८	९।४८	११।२४	९।२०	३।३५	५।५५	८।१२	१०।२८	१२।४७	३।०५	५।१०	६।५३	८।२१
१०।०६।०८।४५	२ गु	१९	९।४४	११।२०	९।१६	३।३१	५।५१	८।०८	१०।२४	१२।४३	३।०१	५।०६	६।४९	८।१८
१०।०७।०९।२३	३ शु	२०	९।४०	११।१६	९।१२	३।२७	५।४७	८।०४	१०।२०	१२।३९	२।५७	५।०२	६।४५	८।१४
१०।०८।०९।५९	४ श	२१	९।३६	११।१२	९।०८	३।२३	५।४३	८।००	१०।१६	१२।३५	२।५३	४।५८	६।४१	८।१०
१०।०९।१०।३३	५ र	२२	९।३२	११।०८	९।०४	३।१९	५।३९	७।५६	१०।१२	१२।३१	२।५०	४।५४	६।३७	८।०६
१०।१०।११।०६	६ चं	२३	९।२८	११।०४	९।००	३।१५	५।३५	७।५२	१०।०८	१२।२७	२।४६	४।५०	६।३३	८।०२
१०।११।११।३७	७ मं	२४	९।२४	११।००	१२।५६	३।११	५।३१	७।४८	१०।०४	१२।२३	२।४२	४।४६	६।२९	७।५८
१०।१२।१२।०६	९ बु	२५	९।२०	१०।५६	१२।५२	३।०७	५।२७	७।४४	१०।००	१२।१९	२।३८	४।४२	६।२५	७।५४
१०।१३।१२।३३	१० गु	२६	९।१६	१०।५२	१२।४९	३।०३	५।२३	७।४०	९।५६	१२।१५	२।३४	४।३८	६।२१	७।५०
१०।१४।१२।५८	११ शु	२७	९।१२	१०।४८	१२।४५	२।५९	५।१९	७।३६	९।५२	१२।११	२।३०	४।३४	६।१८	७।४६
१०।१५।१३।२१	१२ श	२८	९।०८	१०।४४	१२।४१	२।५५	५।१६	७।३२	९।४८	१२।०७	२।२६	४।३०	६।१४	७।४२
१०।१६।१३।४२	१३ र	१	९।०४	१०।४०	१२।३७	२।५२	५।१२	७।२८	९।४४	१२।०३	२।२२	४।२६	६।१०	७।३८
१०।१७।१४।०२	१४ चं	२	९।००	१०।३६	१२।३३	२।४८	५।०८	७।२४	९।४०	११।५९	२।१८	४।२२	६।०६	७।३४
१०।१८।१४।१९	१५ मं	३	८।५६	१०।३३	१२।२९	२।४४	५।०४	७।२१	९।३६	११।५६	२।१४	४।१९	६।०२	७।३०

ता. १२ फरवरी २०२६

फा. कृ. १० गुरौ कुंभेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. २७।२७ वारात् २ नक्षत्रात् ३ वारनाम नंदा गणकान् सुखदा नक्षत्रनाम राक्षसी चाण्डालान् सुखदा अपर रात्रि ३ प्रहर व्यापिनी नटान् हन्ति, पूर्वे गमनमाग्नेयां दृष्टिः बालवकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं व्याघ्रवाहनं अश्वोपवाहनं भीतिकारक पीतवस्त्रं गदायुधं रौप्यपात्रं पायसभक्षणं कुंकुमलेपनं भूतजातिः जातिपुष्पं कंकणभूषणं पर्णकंचुकी कुमारिकावस्था (बैठी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स पश्चिमा. राहु दक्षिणे मूलं पाताले विवाहस्तंभो नैऋत्यां शुक्रोदयः पश्चिमायाम्। पुण्यकालः (स्टै.) २१।०३ से २७।२७ तक। (दान- गोड़ - अन्न)।

पं.४७ फा.शु.१४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	२	११	११	१०	४
१७	०५	२७	२०	००	०७	१४	१४
१६	२२	१८	५१	२२	३८	४४	४४
३२	१२	१९	४४	२७	१२	५२	५२
६०	४७	३९	१	७४	७	३	३
१०	१५	१६	३९	४४	११	११	११
श	ध	पूभा	पुन	पूभा	उभा	श	पूफा
४	४	३व	१व	४	२	३	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य धनि. १९ फर. स्टे.१७।५४ उप. शते। मंगल धनि. ३ मार्च स्टे.२२।२७ उप. शते। बुध पूभा.। गुरु पुनर्वसौ। शुक्र शते २१ फर. स्टे.२३।३० उप. पूभा.। शनि उभा.। राहु शते। केतु पूफा.।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य श्लेषा. १९ फर. स्टे.१७।५४ उप. स्वातौ। मंगल श्लेषा. ३ मार्च स्टे.२२।२७ उप. स्वातौ। बुध चित्रा.। गुरु मूले। शुक्र स्वातौ २१ फर. स्टे.२३।३० उप.चित्रा.। शनि हस्ते। राहु स्वातौ। केतु अश्वि.।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य विशा.१९ फर. स्टे.१७।५४ उप. स्वातौ। मंगल विशा. ३ मार्च स्टे.२२।२७ उप. स्वातौ। बुध चित्रा.। गुरु मूले। शुक्र स्वातौ २१ फर. स्टे.२३।३० उप. चित्रा.। शनि हस्ते। राहु स्वातौ। केतु अश्वि.।

॥ द्व्यशीति-उत्तर-द्विसहस्त्रतमे विक्रमाब्दे (२०८२), कालनाम संवत्सरे, सप्तचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४७) ॥

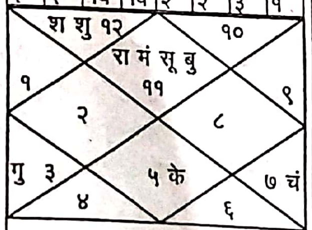
४ मार्च से १९ मार्च तक, श्री चैत्र कृष्णपक्ष संवत् २०८२, शाकः १९४७, दिमा सू. सू. तारीख

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	स्टै. चंद्रः	प्रातः सौर र. स्प.	दैनिक गति	वसंतर्तू रविरुत्तरे फाल्गुनकृष्णेति गुर्जराः, मार्च २०२६
																															यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
सुस्थिर	१	बु	२४	५३	१६	५३	पूफा	१	४९	७	३९	धृ	४	४४	८	४९	कौ	२४	५३	१६	५३	२८/५२	६/५६	६/२८	१३	१४	४	कन्या १३।४६	१०।१९।०७।१०	६०।१४	ग्रहण-करिदिन, वसन्त १, पूभा. रविः २४।०९ (सौरः २७।५८),
मातङ्ग	२	गु	२५	२७	१७	०५	उफा	३	२५	८	१६	शू	१	५७	७	४१	ग	२५	२७	१७	०५	५६	५५	२९	१४	१५	५	कन्या	१०।२०।०७।२४	६०।१२	भ. २९।२५ उ.
च.व्र.	३	शु	२७	२८	१७	५३	हस्त	६	२१	९	२६	गं	०/५९	१३/३४	६/३०	५९/४३	वि	२७	२८	१७	५३	२९/००	५४	३०	१५	१६	६	तुला. २२।१४	१०।२१।०७।३५	६०।०९	भ. १७।५३ या., चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २१।२२, कल्पादि
काण	४	श	३०	५४	१९	१४	चित्रा	१०	४२	११	०९	ध्रु	...	...	...	...	बा	३०	५४	१९	१४	०४	५३	३०	१६	१७	७	तुला.	१०।२२।०७।४५	६०।०७	[B उभा. शुक्रः १५।५७
लुम्बक	५	र	३५	४१	२१	०८	स्वा	१६	२२	१३	२४	ध्रु	०	०५	६	५३	कौ	३	१०	८	०७	०८	५१	३१	१७	१८	८	तुला.	१०।२३।०७।५२	६०।०५	[C शनेरस्तः पश्चिमायाम् १०।२०
मित्र	६	सो	४१	२८	२३	२६	विशा	२३	०७	१६	०५	व्या	१	२९	७	२६	ग	८	३०	१०	१५	१३	५०	३१	१८	१९	९	वृश्चि. ९।२३	१०।२४।०७।५८	६०।०३	भ. २३।२६ उ.
वज्र	७	मं	४७	४८	२५	५६	अनु	३०	३१	१९	०२	ह	३	३०	८	१३	वि	१४	३७	१२	४०	१७	४९	३२	१९	२०	१०	वृश्चि.	१०।२५।०८।०१	६०।०१	भ. १२।४० या., (व) शत. बुधः ८।१२, C
शीतला	८	बु	५४	०१	२८	२४	ज्ये	३८	००	२२	००	व	५	४७	९	०७	बा	२०	५९	१५	१२	२१	४८	३३	२०	२१	११	धनु. २२।००	१०।२६।०८।०२	५९।५९	शीतला पूजनं, मार्गी गुरुः १६।३६
धूम्र	९	गु	५९	३०	३०	३५	मूल	४४	५५	२४	४५	सि	७	५१	९	५६	तै	२६	५५	१७	३३	२५	४७	३३	२१	२२	१२	धनु.	१०।२७।०८।०१	५९।५७	[A देवकार्येऽमा., केतकी अहर्गणः ५४६१, चक्र ७, कल्पादि
प्रवर्धमा	१०	शु	...	...	...	...	पूषा	५०	४६	२७	०४	व्य	९	१८	१०	२९	व	३१	५१	१९	३१	२९	४६	३४	२२	२३	१३	धनु.	१०।२८।०७।५८	५९।५५	भ. १९।३१ उ. [D वारुणी योग ९।२३ तक
राक्षस	१०	श	३	४९	८	१६	उषा	५५	०९	२८	४९	व	९	४६	१०	३९	वि	३	४९	८	१६	३३	४५	३४	२३	२४	१४	मक. ९।३४	१०।२९।०७।५२	५९।५२	भ. ८।१६ या., मीने रविः २४।१५ (सौरः २७।३८)
ए.व्र.	११	र	६	३०	९	२०	श्रव	५७	५४	२९	५३	प	९	०३	१०	२१	बा	६	३०	९	२०	३७	४४	३५	२४	२५	१५	मक.	११।००।०७।४५	५९।५०	पापमोचनी ११ व्र., बुधोदयः पूर्वस्याम् ८।४५, रेव. शुक्रः ९।२
प्र.व्र.	१२	सो	७	२८	९	४२	धनि	५८	५९	३०	१८	शि	७	००	९	३०	तै	७	२८	९	४२	४२	४३	३५	२५	२६	१६	कुंभे १८।११	११।०१।०७।३५	५९।४८	पंचक प्रारम्भः १८।११, प्रदोषः, वारुणी योग से ३०।१८
मृत्यु	१३	मं	६	४३	९	२३	शत	५८	२९	३०	०५	सि	३/५८	३६/१४	८/३०	०८/१५	व	६	४३	९	२३	४६	४२	३६	२६	२७	१७	कुंभे	११।०२।०७।२३	५९।४६	भ. ९।२३ उ. २०।५८ या., मासिकशिवरात्री व्र., D
पद्म	१४	बु	४	२२	८	२५	पूभा	५६	३४	२९	१८	शु	५३	०७	२७	५५	श	४	२२	८	२५	५०	४०	३६	२७	२८	१८	मीने २३।३३	११।०३।०७।०९	५९।४४	पितृकार्येऽमा., मन्वादि, उभा. रविः ८।३४ (सौरः ११।५०)
अमाव.	३०	गु	०	३६	६	५४	उभा	५३	३०	२८	०३	शु	४६	२२	२५	१२	ना	०	३६	६	५४	५४	३९	३७	२८	२९	१९	मीने	११।०४।०६।५३	५९।४१	नवरात्रारम्भः, घटस्था., ध्वजारो., आरोग्य १, विद्या १, A

अयनांशाः २४।१२।२७

पं.४८ चै.कृ. ६ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	२	११	११	१०	४
२४	१०	२१	२०	०९	०८	१४	१४
१७	५२	०३	४४	०५	२८	२२	२२
००	५३	३१	१७	०१	५९	३७	३७
५९	४७	६०	०	७४	७	३	३
५६	१३	११	१७	३३	२०	११	११
पूभा	श	पूभा	पुन	उभा	उभा	श	पूफा
२	२	१व	१व	२	२	३	१



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. मार्च	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या सायँ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन प्रातः
१०।१९।१४।३४	१ बु	४	८।५२	१०।२९	१२।२५	२।४०	५।००	७।१७	९।३२	११।५२	२।१०	४।१५	५।५८	७।२६
१०।२०।१४।४८	२ गु	५	८।४८	१०।२५	१२।२१	२।३६	४।५६	७।१३	९।२८	११।४८	२।०६	४।११	५।५४	७।२२
१०।२१।१४।५९	३ शु	६	८।४४	१०।२१	१२।१७	२।३२	४।५२	७।०९	९।२५	११।४४	२।०२	४।०७	५।५०	७।१८
१०।२२।१५।०८	४ श	७	८।४१	१०।१७	१२।१३	२।२८	४।४८	७।०५	९।२१	११।४०	१।५८	४।०३	५।४६	७।१५
१०।२३।१५।१५	५ र	८	८।३७	१०।१३	१२।०९	२।२४	४।४४	७।०१	९।१७	११।३६	१।५४	३।५९	५।४२	७।११
१०।२४।१५।२१	६ चं	९	८।३३	१०।०९	१२।०५	२।२०	४।४०	६।५७	९।१३	११।३२	१।५०	३।५५	५।३८	७।०७
१०।२५।१५।२४	७ मं	१०	८।२९	१०।०५	१२।०१	२।१६	४।३६	६।५३	९।०९	११।२८	१।४६	३।५१	५।३४	७।०३
१०।२६।१५।२४	८ बु	११	८।२५	१०।०१	११।५७	२।१२	४।३२	६।४९	९।०५	११।२४	१।४३	३।४७	५।३०	६।५९
१०।२७।१५।२३	९ गु	१२	८।२१	९।५७	११।५३	२।०८	४।२८	६।४५	९।०१	११।२०	१।३९	३।४३	५।२६	६।५५
१०।२८।१५।२०	१० शु	१३	८।१७	९।५३	११।४९	२।०४	४।२४	६।४१	८।५७	११।१६	१।३५	३।३९	५।२२	६।५१
१०।२९।१५।१४	१० श	१४	८।१३	९।४९	११।४५	२।००	४।२०	६।३७	८।५३	११।१२	१।३१	३।३५	५।१८	६।४७
११।००।१५।०६	११ र	१५	८।०९	९।४५	११।४२	१।५६	४।१६	६।३३	८।४९	११।०८	१।२७	३।३१	५।१४	६।४३
११।०१।१४।५६	१२ चं	१६	८।०५	९।४१	११।३८	१।५२	४।१२	६।२९	८।४५	११।०४	१।२३	३।२७	५।११	६।३९
११।०२।१४।४४	१३ मं	१७	८।०१	९।३७	११।३४	१।४८	४।०९	६।२५	८।४१	११।००	१।१९	३।२३	५।०७	६।३५
११।०३।१४।३०	१४ बु	१८	७।५७	९।३३	११।३०	१।४५	४।०५	६।२१	८।३७	१०।५६	१।१५	३।१९	५।०३	६।३१
११।०४।१४।१३	३० गु	१९	७।५३	९।३०	११।२६	१।४१	४।०१	६।१८	८।३३	१०।५२	१।११	३।१६	४।५९	६।२७

संक्रांति फलम्

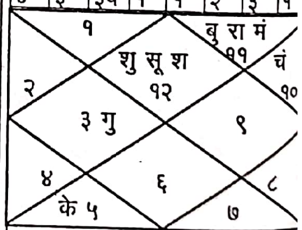
ता. १४ मार्च २०२६

चैत्र कृ. १० शनौ मीनेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. २४।१५ वारात् ३ नक्षत्रात् ३ वारनाम राक्षसी चाण्डालान् सुखदा नक्षत्रनाम नंदा गणकान् सुखदा मध्यरात्रि २ प्रहर व्यापिनी राक्षसान् हन्ति, उत्तरे गमनं, ऐशान्यां दृष्टिः बालवकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं व्याघ्रवाहनं अश्वोपवाहनं भीतिकारक पीतवस्त्रं गदायुधं रौप्यपात्रं पायसभक्षणं कुंकुमलेपनं भूतजातिः जातिपुष्पं कंकणभूषणं पर्णकंचुकी कुमारिकावस्था (बैठी) मु. ४५ धान्यभावे समर्घ वत्स पश्चिमा. राहु दक्षिणे मूलं भूमौ विवाहस्तंभो नैऋत्यां शुक्रोदयः पश्चिमायाम्। पुण्यकालः (स्टै.) २४।१५ से ३०।३९ तक। (दान- भूमि माला)।

अयनांशाः २४।१२।२८

पं.४९ चै.कृ.१२ सो. इष्टघटी ०।०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	२	११	११	१०	[illegible]
०१	१६	१५	२०	१७	०९	१४	[illegible]
१५	२३	२२	४६	४६	२०	००	[illegible]
५४	१८	५४	२६	१२	४०	२२	[illegible]
५९	४७	२६	१	७४	७	३	[illegible]
४३	१०	५७	०५	२०	२६	११	[illegible]
पूभा	श	श	पुन	रे	उभा	श	[illegible]
४	३	३व	१	१	२	३	१



नक्षत्र युतिः- सूर्य शते ४ मार्च तः पूभा. १८ मार्च तः उभा. । मंगल शते । बुध पूभा. १० मार्च तः (व) शते । गुरु पुनर्वसौ । शुक्र पूभा. ४ मार्च तः उभा. १५ मार्च तः रेवत्यां । शनि उभा. । राहु शते । केतु पूफा. ।

विवाहे पञ्चशलाका वेधः- सूर्य स्वातौ ४ मार्च तः चित्रा. १८ मार्च तः हस्ते । मंगल स्वातौ । बुध चित्रा. १० मार्च तः स्वातौ । गुरु मूले । शुक्र चित्रा. ४ मार्च तः हस्ते १५ मार्च तः उफा. । शनि हस्ते । राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

अन्यत्र सप्तशलाका वेधः- सूर्य स्वातौ ४ मार्च तः चित्रा. १८ मार्च तः हस्ते । मंगल स्वातौ । बुध चित्रा. १० मार्च तः स्वातौ । गुरु मूले । शुक्र चित्रा. ४ मार्च तः हस्ते १५ मार्च तः उफा. । शनि हस्ते । राहु स्वातौ । केतु अश्वि. ।

चूडामुहुर्त

अश्वि. ह. चि. स्वा. विशा. अनु. ध. रेवती नक्षत्र तथा रवि, भौम, बुध, गुरुवार उक्तकर्म में उत्तम हैं।

सूर्यसंक्रान्ति सूं ५।७।९।१५।२१।२४ इतरा दिन धरती सोवै छै।

१।२।५।७।९ सूर्यपूजा।
३।६।१०।११ सूर्यशुद्ध।

१।३।६।१० गुरुपूजा।
२।५।७।९।११ गुरुशुद्ध।

४।८।१२ गुरु रवि अशुद्ध
१।२।३।५।६।७।९।१०।११ चन्द्र शुद्ध
१२ पूजा ४।८ नेष्ट चंन्द्र।

चन्द्रमा १ राशिपर आठों दिशा में भोग करता है उसकी पृथक् पृथक् व. आवश्यकीय यात्रा में सम्मुख चन्द्र देखना

पूर्वादि.	घ.	१७
अग्नि.	घ.	१५
दक्षिण.	घ.	२१
नैर्ऋत्य.	घ.	१६
पश्चिम.	घ.	१८
वायव्य.	घ.	१९
उत्तर.	घ.	१५
ईशान.	घ.	१४

अथ गर्गबृहस्पतिअंगिरामुहूर्त

श्लोकः-उषःप्रशस्यते गर्गःशकुनं च बृहस्पतिः।
अंगिरास्तु मनोत्साहो विप्रवाक्यं जनार्दनः ॥१॥

अर्थ - गर्गजी (५ घटी रात्रि शेष रहै वह उषाकाल) यात्रा को शुभ कहते हैं। शकुन उत्तम देखकर यात्रा करना ये बृहस्पति का मत है। जब मन को उत्साह होय तभी यात्रादि शुभ है यह अंगिरा का मत है। विप्रों की आज्ञा लेकर यात्रादि करना ये जनार्दन का मत है। परंच पूर्व की यात्रा उषाकाल में वर्जित है।

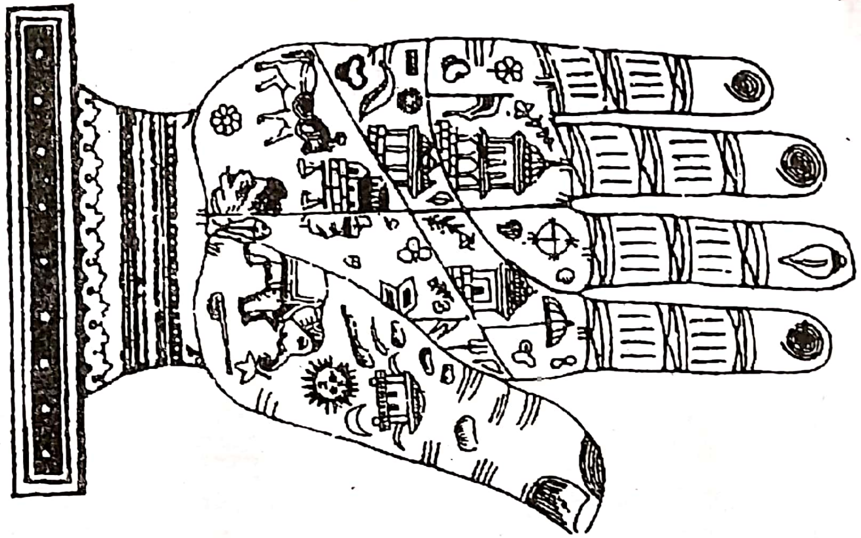
अथ कार्याकार्यविचारप्रश्न।

श्लोकः-दिशा प्रहरसंयुक्ता तारका वारमिश्रिता।
अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम् ॥१॥
पञ्चैकेत्वरिता सिद्धिःषट्तुर्येचदिनत्रयम् ॥
त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौचाष्टौ न च सिद्धिदाः ॥२॥

अर्थ - पृच्छकरोमुख जिस दिशासामो होय सो दिशा और प्रहरनक्षत्र वार सर्वत्र एकत्र करिने ८ रो भाग दीजै बाकी उबरै जिणरो फल जानिये

१ तथा ५ उबरै तौ वेगा कार्यसिद्धि
६।४ उबरै तौ तीन दिन में कार्यसिद्धि
३।७ उबरै तौ विलम्बसो कार्यसिद्धि
२।८ उबरै तौ कार्य सिद्धि होय नहीं।

॥ शिवपार्वतीसंवादे सामुद्रिके हस्तरेखाशुभाशुभफलं लिख्यते ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि हस्तरेखाविचारणम् ॥ दक्षिणे पुरुषं ज्ञेयं वामे वामाकरं शुभम् ॥१॥
शिवोक्तं तत्र सामुद्रं हस्तरेखाशुभाशुभम् ॥ येनविज्ञानमात्रेण पुरुषो न विशोचति ॥२॥
यस्य मीनतमारेखा कर्मसिद्धिश्च जायते ॥ धनाढ्यस्तु स विज्ञेयो बहुपुत्रो न संशयः ॥३॥
तुलाग्रामं तथा वज्रं करमध्ये च दृश्यते ॥ तस्य वाणिज्यसिद्धिःस्यात्पुरुषस्य न संशयः॥४॥
पद्मचापादिखड्गंच अष्टकोणादि दृश्यते ॥ स्त्रियश्चपुरुषस्यापि धनवान्ससुखी नरः ॥५॥
शङ्खचक्रध्वजाकारोमत्स्याकारश्च दृश्यते ॥ सर्वविद्याप्रदानेन बुद्धिमान् स सुखी नरः ॥६॥
त्रिशूलं करमध्ये तु तेन राजा प्रवर्तते ॥ यज्ञे धर्मे च दाने च देवद्विजप्रपूजने ॥७॥
शक्तितोमरबाणैश्च करमध्ये च दृश्यते ॥ रथचक्रध्वजाकारः स च राज्यं लभेन्नरः ॥८॥
अंकुशं कुंडलं चक्रं यस्य पाणितले भवेत् ॥ तस्य राज्यं महाश्रेष्ठं सामुद्रवचनं यथा ॥९॥
गिरिकङ्कणयोनीनांन्नरमुण्डघटादिकम् ॥ करे वै यस्य चिह्नानि राजमन्त्री भवेन्नरः ॥१०॥
रविचन्द्रकृतानेत्रअष्टकोणत्रिनेत्रकम् ॥ मंदिरं गजअश्वानां चिह्ने धनसुखीनरः ॥११॥
अंगुष्ठोदरमध्यस्थो यवो यस्य विराजते ॥ उत्पन्नभक्ष्यभोगीस्यात्स नरः सुखमेधते ॥१२॥
मध्यमातर्जनीमूलंयवोयस्य प्रदृश्यते ॥ धनवान्सुखयोगीस्यात्पुत्रदारगृहादिषु ॥१३॥
एवं बहुधा ॥

सूचना - पंचांग में इस पृष्ठ को लगभग १५० वर्ष पूर्व स्वयं पं. मनीरामजी ने लिखा था, तब से यह पृष्ठ ज्यों का त्यों है। इस पृष्ठ में किसी भी गणितकर्ता ने कुछ अलग से नहीं लिखा है।

अथ सम्मुखचन्द्रदिशाप्रति

मेषे च सिंहे धनु पूर्वभागे वृषेच कन्यामकरे च याम्ये ॥
मिथुने तुले कुंभसु पश्चिमायां कर्कालिमीने दिशि चोतरस्याम् ॥१॥
फलम् – सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदा ॥
पृष्ठतः प्राणनाशाय वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥२॥
अर्थः – मेष, सिंह, धनु, पूर्व। वृष, कन्या, मकर, दक्षिण॥
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन उत्तर ॥

अथ योगिनीचक्रम्।

ईशान्य ३।०।८	पूर्व १।९	अग्नि ३।११
उत्तर २।१०	योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी ॥ दक्षिणे धनहंत्री च सन्मुखे मरणप्रदा ॥१॥	दक्षिण ५।१३
वायव्य ७।१५	पश्चिम ६।१४	नैर्ऋत्य ४।१२

अथ कालराहुचक्रम्।

ईशान्य	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमे- भौमेप्रतीच्यांबुधनैर्ऋतेच। याम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रे- मन्देचपूर्वेप्रवदंतिकालः ॥१॥	दक्षिण गुरु
वायव्य सोम	पश्चिम मंगल	नैर्ऋत्य बुध

अथ दिशाशूलचक्रम्।

	पूर्व चन्द्र शनि	
उत्तर बुध मंगल	दिशाशूल ले जावो वामेराहू योगिनी पूठ ॥ सन्मुख लेवै चन्द्रमा ल्यावै लक्ष्मी लूट ॥१॥	गुरु दक्षिण
	पश्चिम रवि शुक्र	

चूडामु० प्रमाण।

यावद्भास्करभुक्तिभानिदिवसेधिष्ण्यानिसंख्याततः वह्नि ३ भूत ५ गुणा ३ ब्धि ४ सप्त ७ नयनं २ पृथ्वी १ करं २ दुः १ क्रमात् ॥ सूर्यारैकविसौम्यराहुरविजाजीवः शशीकेतवः क्रूरेऽसचशुभेशुभंच कथितंचक्रेचचूडाह्वये ॥१॥ चूडानक्षत्र। हस्तादिपंचपूषाश्विधनिष्ठा-सुचकांचनम् ॥ रक्तंपरिदधेद्वस्त्रंभौमार्कगुरुभार्गवे ॥१॥

चूडामुहूर्त।

हस्त,चि.स्वा. वि.अनु.रे.अश्वि.ध. इत्ते नक्षत्र और रवि. मंगल. बुध. गुरु, शुक्र. यह वार शुभ है।

अथ गुरुशुक्रास्तवर्जितकर्म।

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरं प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानंगुरोःसेवनम्। तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशे शुभं दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्तेगुरौभार्गवे ॥१॥

चूडी च० प्रमाण।

चूडीधारणे विशेषः।

अस्ते गतेभृगुसुते शयने च विष्णोर्जन्माधचापझषगे दिनपे न दध्यात्॥
रिक्तेन्दुभानुदिवसे शकवर्जिते च शंखं च रक्तपटकं युवतिः कथंचित्॥

अथजलपूजामुहूर्त

जलपूजाचनारीणांमृगेमूलेपुनर्वसौ।
पुष्यश्रवणहस्तश्चबुधेजीवेचचन्द्रमाः ॥१॥
मृग, मूल, पुन. पुष्य,श्रव. हस्त, बुध. गुरु. सोम. जल वामें एता ग्रहण कीजै।

अथ सूतिकासूर्यपूजनमुहूर्त।

पुनर्वसुद्वयंचित्राविशाखाभरणीद्वयम् ॥ मूलमार्द्रामघाहेयाश्रवणोदशमस्तथा ॥१॥
सोमशुक्रबुधःशौरिःप्रसूतिस्नानकर्मणि ॥ हेयाप्रतिपदाषष्ठीनवमीचतिथिक्षयः॥२॥
एता त्यागन करीजै।

चूडीचक्रम्।

सूर्यनक्षत्रात्	३	५	३	४	७	२	१	२	१
स्वामी	सूर्य	मंगल	शुक्र	बुध	राहु	शनि	गुरु	चन्द्र	केतु
फल	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ

प्रथमवधूप्रवेशमुकालावामुहूर्त।

हस्तद्वयेब्रह्मयुगेमघायांपुष्येधनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु।
मूलानुराधाहयरेवतीषुस्थिरेषुलग्नेषुवधूप्रवेशः ॥१॥
एते नक्षत्र शुभ, चन्द्र, गुरु, बृह० एते वार श्रेष्ठः, २।५।८।११ एतेलग्न श्रेष्ठ, चन्द्रबल देखजै। १।२।३ एतेवर्ष श्रेष्ठ। पश्चात् अशुभ।

अथ गन्धर्वविवाहतथानातरो.।

इन्द्ररुद्रादिऽश्लेषाआग्नेय्यांवरुणस्तथा॥
अश्विनीवसुदैवत्यंपट्टकालेशुभंस्मृतम् ॥१॥
ज्येष्ठा, आर्द्रा, पुनर्वसु, आश्लेषा, कृत्तिका, शत. अश्विनी, धनिष्ठा, एते नक्षत्र शुभ और गुरु. शुक्र अस्तोदय दोष नहीं।

अथ दत्तपुत्रतथाखोलेलेणो।

हस्तादिपञ्चसुभिषग्वसुपुष्यभेषुसूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासरेषु॥
रिक्ताविवर्जिततिथिष्वलिकुम्भलग्नेसिंहेवृषेभवतिदत्तपरिग्रहोयम् ॥१॥
हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनु०, अश्वि०, ध०, पु०, रवि, मंगल, गुरु, शुक्र, सिंह, वृषलग्न शुभ और रिक्ता वृ. कुंभ अशुभ।

कूपारम्भमुहूर्त।

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणंच शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि॥
प्राजापत्यंचापिनक्षत्रमाहुःकूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनीन्द्राः ॥१॥
अर्थ – ह. चि. स्वा. श. ध. आ. म. उत्तरा ३, रोहिणी कूपारंभ में शुभ होय।

तृणकाष्ठादि संग्रह करणा।

वासवोत्तरदलादिपंचकेयाम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ॥
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहंशय्यकावितरणंवर्जयेत् ॥१॥
धनिष्ठा को उत्तरदल, शत. पूर्वाभा. उ.भा. रेवती इन नक्षत्रों में दक्षिणगमन, गृहछायणो, माचोवणनो, तृणकाष्ठादि संग्रह करणो नहीं।

	संक्रान्तिवशाद्दग्धास्तिथयः || १०						
सूर्यराशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
तिथि	६	४	८	६	१०	८
सूर्यराशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
तिथि	१२	१०	२	१२	४	२

	वेध दोष || ४											कात्या.नक्षत्रचतुष्टयी			
विवाह नक्षत्र	रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वाति	अनु	मूल	उषा	उभा	रेवती	अश्वि	चित्रा	श्रव	धनि
ग्रहस्थित नक्ष	अभि	उषा	श्रव	रेवती	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा	पूर्वा	पूषा	मघा	श्ले.

|| उपग्रह दोष || ८, (सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र तक संख्या)

५	७	८	१०	१४	१५	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२५
विद्युत	भूकंप	शूल	शनि	निर्घात	दण्ड	केतु	उल्का	मोह	निर्घात	कम्प	कुलिश	परिवेष

लग्नभाद् ग्रहस्थिते यामित्रम् । दोष ५

रो.	मृ.	म.	उ.फा.	हस्त	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा	रे.
अनु.	ज्ये.	ध.	पू.फा.	उ.भा	अश्वि	कृ.	म.	पुन.	उ.फा	ह.

लग्न नक्षत्र से १४ वें नक्षत्र पर कोई पापग्रह होवे तो अशुभ, अन्यथा शुभ ।

सूर्यादिग्रहाणां संक्रान्तेस्त्याज्य घटीचक्रम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
घटी	३२	२	९	६	८८	९	१६०

चन्द्रसूर्यादियुत् युतिदोषः ३

सूर्य	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	राहु	पाप
दरिद्र	निर्धन	शुभ	सौख्य	सापत्य	वैराग्य	कलह	मरण

लग्ने विश्धादा ग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.		बृ.		शु.		श.	रा.
३	२	३	१	६	१	६	१	९	३	३
६	३	६	२	९	२	९	२	१०	६	६
११	११	११	३	१०	३	१०	३	११	११	११
			४	११	४	११	४			
			५		५		५			

लग्ने भंगदा ग्रहाः

१	४	५	६	७	८		९	१०	१२
सू.	मं.	श.	चं.	सर्व	मं.	ल	मं.	मं.	बृ.
चं.	श.	०	शु.	ग्रह	चं.	ग्ने	श.	श.	मं.
मं.	रा.	०	लग्ने		बु.	श		रा	
श.		०	श.		बृ.				
रा.					शु.				

|| विवाहे बाणज्ञानचक्रम् || दोष ६

बाणनाम	रोग	अग्नि	नृप	चौर	मृत्यु
सूर्यगतांशाः	८ । १७ २६	२ । ११ २० । २९	४ । १३ २२	६ । १५ २४	१ । १० १९ । २८
सशल्यतावा.	सूर्ये	भौमे	शनौ	भौमे	बुधे
त्याज्यकर्म	उपनयने	गृहाच्छादने	नृपसेवा.	यात्रायां	विवाहे

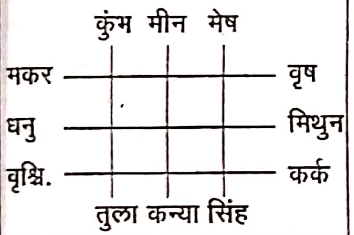
लत्तादोषः १

दक्षिण				वाम			
सू.	मं.	बृ.	श.	चं.	बु.	शु.	रा.
१२	३	६	८	२२	७	५	९

साभि.एकार्गल (खार्जूर) दोषः ७

व्याघात, गंड, व्यतिपात, शूल, वज्र, वैधृति, परिघ, अतिगंड ये योग विवाह के दिन हों तो सूर्यनक्षत्र से विवाह (चंद्र) नक्षत्र तक गणना करें यदि प्राप्त संक्या के विषम (१,३,५,७) अंक हो तो एकार्गल दोष होता है ।

क्रान्तिसाम्यम् दोष ९
सूर्याचन्द्रमसोः परस्परं वेधे



पात दोषः २

हर्षण, गंड, शूल, साध्य, व्यतिपात, वैधृति इन योगों के अंत में विवाह नक्षत्र होवे तो पात दोष होवे ।

कार्यभेदेन बाणज्ञानम - 'व्रते विवर्जयेद्रोगं गृहगोपेऽग्निबाणकम् । यात्रायां राजचौरास्यौ विवाहे मृतिपञ्चकम् ।।' इति ।७४।।
अर्थ - कार्यभेद से यज्ञोपवीत संस्कार में रोग, घर के आच्छादन में अग्नि, राजसेवा में नृपबाण, यात्रा में चोर बाण, विवाहसंस्कार में मृत्यु बाण का त्याग करना चाहिए ।। ७४ ।। - पीयूष ३९५

स्त्रीणांचन्द्रवले विशेषः - स्त्रीणांविधोर्बलमुशंति विवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसुभर्तुरेव । द्वादशचन्द्रे ग्राह्यकर्म - उत्सवे चाभिषेकेच जनने व्रतवंधने पाणिग्रहेच यात्रायां चन्द्रोद्वादशमः शुभः । - गुरुदेव पाणिग्रहे स्त्रीसुरतेऽभिषेके यात्रान्नप्राशे व्रतबंधने च । व्रतोपवासादिषु गर्गपूर्वैः प्रोक्तः शुभोद्वादशगो हिमांशुः । गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौंजिबन्धने । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।। -दैवज्ञकल्पद्रुम ।

विवाहे नक्षत्र-निर्णयः- निर्णयसिंधु. - रत्नमालायां - ''मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुमघोत्तरान्वितैः । **हिन्दी -** रत्नमाला में कहा है कि मूल, अनुराधा, मृगशिर, रोहिणी, हस्त, रेवती स्वाती, मघा, तीनों उत्तरा (उत्तरा-फाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद) इन नक्षत्रों में विवाह का विधान किया है ।। इति ।।

धर्मसिन्धु- रोहिणीमृगमघास्तिस्र उत्तराहस्तस्वातोमूनुराधरेवत्यः सर्वसंमतनक्षत्राणि । **हिन्दी -** रोहिणी, मृगशिर, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, मूल, अनुराधा और रेवती विवाह में सर्वसम्मत नक्षत्र है ।
अथ चित्रादि-नक्षत्राणि - [1] हरदत्तमते चित्राश्रवणधनिष्ठाश्विन्य इत्यधिकानि चत्वारि ।
हिन्दी - हरदत्त के मत में चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा और अश्विनी ये चार नक्षत्र विवाह में अधिक हैं ।

१. पारस्करगृह्यसूत्रेऽपि - 'त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु' अत्र गदाधर भाष्यम् - उत्तरा आदिर्येषां तान्युत्तरादीनि तेषु तेषु त्रिषु । अयमर्थः - उत्तराफाल्गुन्यां हस्ते चित्रायां च, एवमुत्तराषाढायां श्रवणे धनिष्ठायां च, एवमुत्तराप्रोष्ठपदि रेवत्यामश्विन्यां च .. विवाहो भवतीत्यर्थ' इति ।

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्षः श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग
७वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर, मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष / फैक्स - ०२२- २३८५७४५६

खेमराज श्रीकृष्णदास
२२, चिंतामणि इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
रामटेकड़ी, पुणे - ४११०१३
दूरभाष - ०२० - २६८७१०२५

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१ - २२०९०६१

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२ - २४२००७८

Printers & publishers :
Khemraj Shrikrishnadass, Prop. Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.
Web site: http://www.khe-shri.com Email : khemraj@bharatmail.co.in

रोगादि वाण (पंचक) ज्ञानाय - जब बाण विचार करना है उस मास की संक्रान्ति के गत अंशो को ५ स्थानों में स्थापित कर प्रत्येक स्थान में क्रमशः ६, ३, १, ८, ४ जोड़कर सर्वत्र ९ से भाग देना चाहिए । जहाँ शेष पाँच बचे उसे उस दिन क्रमशः रोग, अग्नि, नृप, चोर और मृत्युबाण समझना चाहिए । जैसे - प्रथम स्थान में शेष ५ बचे तो उस दिन रोगवाण, द्वितीय ५ शेष से अग्नि, तृतीय स्थान में ५ शेष से नृप (राज), चतुर्थ स्थान में ५ शेष से चौर और पाँचवें स्थान में ५ शेष रहने से उस दिन मृत्युबाण समझना चाहिये । यदि कहीं भी शेष ५ नहीं हो तो उस दिन कोई भी बाण नहीं होता ।

संवत् २०८२, दिनमान एवं स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त जानने की सुगम विधि

भारत के किसी भी गांव या शहर का दिनमान निकालना हो उस नगर के अक्षांश पंचांग से प्राप्त करें यदि पंचांग मे न हों तो भारत के नक्शे (अटलस) से प्राप्त करें। पंचांग में दैनिक रविक्रांति की सारणी अलग पृष्ठ पर दी हुई है। उस सारणी से जिस दिन का दिनमान निकालना हो उस दिन की रविक्रांति और अक्षांश की सहायता से चरपल संस्कार सारणी से चरपल लेवें और चरपलों को दुगुना (२ से गुणा) करें यदि ६० पलों से चरपल अधिक हो तो ६० का भाग देकर घटी/पल वना लें। रविक्रांति यदि + (उत्तर) हो तो मध्यम घटी ३०।०० में चरपल जोड दें और रविक्रांति – (दक्षिण) हो तो मध्यम घटी ३०।०० में घटा देने से अभीष्ट गांव या शहर का सूक्ष्मासन्न घट्यात्मक दिनमान प्राप्त आयेगा।

अभीष्ट दिन के दिनमान में पांच का भाग देने से घंटा-मिनटात्मक देशी (सूर्यघटी) सूर्यास्त बनता है। सूर्यास्त को घंटा १२।०० में घटाने से देशी सूर्योदय बनता है। इन देशी सूर्योदयास्त में जिस नगर का हो उसका रेल्वेऽन्तर मिनट संस्कार करने से मध्यम स्थानिक सूर्योदयास्त होते हैं और वेलान्तर संस्कार करने से अभीष्ट दिन के स्पष्ट स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त होते हैं। (रेल्वेऽन्तर और वेलान्तर सारणी इसी पंचांग में अलग पृष्ठ पर है ध्यान रहे कि स्थानिक देशी समय से स्टैण्डर्ड (रेल्वे) समय वनाना हो तो रेल्वेऽन्तर संस्कार के चिन्ह ऋण (–) और धन (+) को विलोम व्यस्त चिन्ह करके संस्कार करें। यथा - पंचांग में + (धन) चिन्ह दिया है तो विलोम (व्यस्त) ऋण (–) संस्कार करे और ऋण (–) चिन्ह दिया हो तो धन (+) संस्कार करें। वेलान्तर समय के चिन्ह जैसे पंचांग में दिये हैं वे चिन्ह यथावत् रहेंगे। लेकिन स्टैण्डर्ड समय से स्थानिक समय बनाना हो तो उपरोक्त क्रिया से विपरीत चिन्ह होते हैं यानि कि रेल्वेऽन्तर के निशान ज्यों के त्यों करें लेकिन वेलान्तर संस्कार के निशान जैसे पंचांग में हैं उससे विपरीत करें। इस तरह भारत के किसी भी नगर का दिनमान एवं स्टैण्डर्ड (रेल्वे) सूर्योदयास्त ज्ञात किये जा सकते हैं।

दिनमान = ३0 + (चरपल x २)
स्टैण्डर्ड सूर्यास्त = दिनमान ÷ ५ + (वेलान्तर + रेल्वेऽन्तर)
स्टैण्डर्ड सूर्योदय = १२ – (दिनमान ÷ ५) + (वेलान्तर + रेल्वेऽन्तर)

उदाहरण - संवत् २०८२, तारीख १ अगस्त २०२५, शुक्रवार को कोलकाता (वंगा.) अक्षांशाः २२° ३४′ उ., रेखांशाः ८८°२८′ पू. का स्पष्ट दिनमान एवं स्टैण्डर्ड सूर्योदय/सूर्यास्त गणित द्वारा ज्ञात करना है। १ अगस्त २०२५ को पञ्चाङ्गस्थ रवि क्रान्ति अंश-कलादि (धन) +१८।०० है यहाँ अक्षांश और रवि क्रान्ति दोनों को उपकरण मानकर इनकी सहायता से चरपल संस्कार सारणी से अनुपात सहित ७७।०६ पलादि प्राप्त हुई. इनको २ से गुणा किया (१५४।१२ = ७७।०६ x २) तो पलादि १५४।१२ हुई. पल ६० से ज्यादा है अतः ६० का भाग दिया तो घट्यादि + २।३४।१२ हुआ यहाँ रवि क्रान्ति उत्तर हैं अतः घटी ३० में जोड दिया (३०।००।०० + २।३४।१२) तो घट्यात्मक ३२।३४।१२ दिनमान हुआ। इसमें ५ का भाग दिया लब्धि घंटादि ६ घंटा ३० मिनट ५० से. देशी सूर्यास्त टाइम हुई इसको १२ में से घटा दिया तो ५ घंटा २९ मिनट १० से. देशी सूर्योदय समय हो गया इसमें रेल्वेऽन्तर संस्कार के लिए - कोलकाता (वंगा.) का रेखांश ८२।३० से ज्यादा है अतः ((८८।२८ - ८२।३०) x ४) रेल्वे मध्यान्तर मिनट (धन) +२३ सेकण्ड ५२ को व्यस्तचिन्ह (ऋण हो तो धन और धन हो तो ऋण) करके सूर्योदय/सूर्यास्त में से घटा दिया तो ५।०५।१८ सूर्योदय और ६।०६।५८ सूर्यास्त कोलकाता (वंगा.) का मध्यम मान से हुआ। इसमें तारीख १ अगस्त २०२५ को वेलान्तर मिनट + ६ सेकण्ड २२ को धनर्ण करने से स्टैण्डर्ड (रेल्वें) ५।११।४० सूर्योदय और ६।१३।२० सूर्यास्त (अर्धादिक रुप से सूर्योदय ५ वजकर ११ मिनट और सूर्यास्त ६ वजकर १३ मिनट) समय स्पष्ट हो गया। इसी प्रकार भारत के किसी भी गांव या शहर का दिनमान एवं स्टैं. सूर्योदयास्त ज्ञात कर सकते हैं।

अभिजित् मुहूर्त्त ज्ञानायः - "अष्टमे दिवसस्यार्द्धे त्वभिजित् संज्ञकः क्षणः" उपनयनादि मुहूर्त्तों में लग्न के स्थान पर '**अभिजिति**' लिखा रहता है इसका स्टैं. समय ज्ञात करने के लिए क्रिया - जिस अभीष्ट शहर का स्टैं. समय निकालना हो उस नगर के दिनमान घंटा-मिनटात्मक (यदि घटी-पल में दिनमान है तो २॥ ढाई का भाग देकर घंटा मिनट बना लें) को आधा करके स्टैं. सूर्योदय में + (जोड़) दें यह स्थानिक स्पष्ट मध्यान्ह काल हो गया इस मध्यान्ह काल के २४ मिनट पहले और २४ मिनट वाद (यानि ४८ मि.) का अभीष्ट शहर का स्पष्ट अभिजित् (स्टैं.) समय होता है।

उदाहरण - कोलकाता (वंगा.) में १ अगस्त २०२५ शुक्रवार को अभिजित् मुहूर्त्त का (स्टैं.) समय निकालना है। उक्त तारीख को गणितागत घट्यात्मक दिनमान ३२।३४।१२ है २॥ (ढाई) का भाग देकर घंटा-मि. वनाया तो १३ घं. ०१ मि. ४१ से. हुआ. इसका आधा ६ घं. ३० मि. ५० से. को स्टैं. सूर्योदय ५ वजकर ११ मिनट ४० से. में जोड़ दिया यह स्टैं. ११ घं. ४२ मि. ३० से. मध्यान्ह काल आ गया इसमें २४ मिनट पहले ११।४२।३० - ०।२४ = ११।१८।३० और २४ मिनट वाद तक ११।४२।३० + ०।२४ = १२।०६।३० (यानि कि मध्यान्ह काल के २४ मि. पहले और २४ मि. वाद तक का समय) कोलकाता (वंगा.) में अभिजित् मुहूर्त्त का स्टैं. समय दिन के ११।१८।३० बजे से दिन के १२ वजकर ०६ मिनट ३० से. तक का है। इस प्रकार भारत के किसी भी गांव अथवा शहर का अभिजित् मुहूर्त्त का समय निकाल सकते है। यह ध्यान रहे कि वुधवार के दिन अभिजित् मुहूर्त्त सर्वथा त्याज्य है। यथा - "अभिजिन्न बुधे शस्तं याम्यां तु गमने तथा" ॥

घटी, पल, विपल से घंटा मिनट सैकण्ड परिणत क्रिया - २ विपल ३० प्र. विपल (ढाई विपल) की १ सेकण्ड होती है, १ पल में २४ सेकण्ड होती है, २ पल में ४८ सेकण्ड होती है, २ पल ३० विपल (ढाई पल) में १ मिनट होती है। १ घटी में २४ मिनट होती हैं। २ घटी में ४८ मिनट, २ घटी ३० पल (ढाई घटी) में १ घंटा होता है और ६० घटी के २४ घंटे होते है। सब इसी तरह से जानना चाहिए। स्पष्टता के लिए घटी पल से घंटा मिनट का नीचे लिखा चक्र देखें।

घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घं. मि.	घ. प.	घं. मि.
१	०।२४	८	३।१२	१६	६।२४	२३	९।१२	३१	१२।२४	३८	१५।१२
२	०।४८	९	३।३६	१७	६।४८	२४	९।३६	३२	१२।४८	३९	१५।३६
२।३०	१।००	१०	४।००	१७।३०	७।००	२५	१०।००	३२।३०	१३।००	४०	१६।००
३	१।१२	११	४।२४	१८	७।१२	२६	१०।२४	३३	१३।१२	४१	१६।२४
४	१।३६	१२	४।४८	१९	७।३६	२७	१०।४८	३४	१३।३६	४२	१६।४८
५	२।००	१२।३०	५।००	२०	८।००	२७।३०	११।००	३५	१४।००	४२।३०	१७।००
६	२।२४	१३	५।१२	२१	८।२४	२८	११।१२	३६	१४।२४	४३	१७।१२
७	२।४८	१४	५।३६	२२	८।४८	२९	११।३६	३७	१४।४८	४४	१७।३६
७।३०	३।००	१५	६।००	२२।३०	९।००	३०	१२।००	३७।३०	१५।००	४५	१८।००

॥ वर कन्या गुण मेलापक सारणी ॥

उर्ध्वस्थितर्क्षाणि हि भानि पुंसां वामस्थितर्क्षाणि तथा वधूनाम्, संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ।

कन्या ↓	नक्षत्र	मेष अ. ४	मेष भ. ४	मेष कृ. १	वृष कृ. ३	वृष रो. ४	वृष मृ. २	मिथुन मृ. २	मिथुन आ. ४	मिथुन पुन. ३	कर्क पुन. १	कर्क पु. ४	कर्क श्ले. ४
मेष	अ.४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८
	भ.४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०१४	२२॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १
	कृ.१	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३
वृष	कृ.३	१८॥ ४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ०१३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३
	रो.४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ १३४	२० १३	२८ ३	३६ ०	२७ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ १३
	मृ.२	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ ३	२१
मिथु	मृ.२	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४
	आ.४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ +१४	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४
	पुन.३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ -३४	२२॥ ०४	१७ -४
कर्क	पुन.१	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥
	पु.४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०
	श्ले.४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ १३	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३
सिंह	म.४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ १३	१७॥	२१॥	२१॥ १	२०॥ -२	१६॥ +२४	१९॥ +४	१६ २३४
	पू.४	२६ +५	१८ ३५	२० -१५	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२७॥	२६॥ २	२२॥ +२४	१७॥ ३४	१६॥ १२४
	उ.१	१५॥ ३५	२६ +५	२० -१५	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ -१४
कन्या	उ.३	१२ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ +१५	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १
	ह.४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३
	चि.२	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२७ १	२५॥	२१	१२ ३	२७

कन्या ↓	नक्षत्र	सिंह म. ४	सिंह पू. ४	सिंह उ. १	कन्या उ. ३	कन्या ह. ४	कन्या चि. २	तुला चि. २	तुला स्वा ४	तुला वि. ३	वृश्चिक वि. १	वृश्चिक अनु ४	वृश्चिक ज्ये. ४
मेष	अ.४	२१ +५	२५ +५	१४॥ ३५	१० ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३६
	भ.४	२० -१५	१८ ३५	२६ ५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२१॥ -१	१७॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६
	कृ.१	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ ६	२५॥ -६
वृष	कृ.३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥
	रो.४	१०॥ १३	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० -१५	१९ -१६	१५॥ ३६	९॥ १३६	१५॥ १३	२९॥	२३॥ १
	मृ.२	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२९॥ ३	२४॥
मिथु	मृ.२	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१५ ६	१२ ३६	१५ ६
	आ.४	२२॥ १	२८॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२८ १	२१ +१५	२७ +५	२१ +१५	१५॥ १६	१८ २६	४ १२३६
	पुन.३	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१६॥ ६	२२॥ ६	८ ३६
कर्क	पुन.१	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२० +५	२६ +५	११॥ ३५
	पु.४	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५
	श्ले.४	१५ २३४	१५॥ १२४	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० +५	२६ -५
सिंह	म.४	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३
	पू.४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२॥ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१
	उ.१	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १२४	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३
कन्या	उ.३	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२	१६॥ -१२४	२५॥ +४	१६॥ १२४	१९ १२	२८	१४ १३
	ह.४	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२१	२८	१५ ३
	चि.२	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२९	१२ ३	२६

कन्या ↓	नक्षत्र	धनु मू. ४	धनु पू. ॥	धनु पू. ३॥	धनु उ. १	मकर उ. ३	मकर श्र. १॥	मकर श्र. २॥	मकर ध. २	कुम्भ ध. २	कुम्भ श. ४	कुम्भ पू. ३	मीन पू. १	मीन उ. ४	मीन रे. ४
मेष	अ.४	१३ ३५	२५ ५	२६ +५	२४॥ +५	२६	२७	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२३॥ +४	२६ +४
	भ.४	२० -१५	१८ ३५	१९ ३५	२७ +५	२८॥	२७	२६	१० १२३	१० १२३	२० -१	२४ -२	२२॥ +२४	१७॥ ३४	२६॥ +४
	कृ.१	२४॥ +५	१८ १२५	१९ १२५	१२ १३५	१३॥ १३	१२॥ २३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४
वृष	कृ.३	२० ६	१३॥ १२६	१४॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	११ २३५	१० २३५	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो.४	१४ १६	१९ ६	२० ६	१२॥ २३६	१७ २३५	१८ ३५	१७ ३५	२० -१५	२६ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ.२	१५ ६	१० ३६	११ ३६	१८ २६	२२॥ +२५	२६ +५	२५ ५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथु	मृ.२	२३	१८ ३	१७ ३	२४ +२	२०॥ -२६	२४ ६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ.४	१६ १३	२८	२७	२७	२३॥ ६	२३॥ -६	२३ -६	१८॥ -१६	२० +१५	१२ १३५	१८ ३५	२० ३	२६॥	२६।
	पुन.३	१४ ३	२७	२६	२६	२२॥ ६	२३॥ -६	२३ -६	१८ -६	१९॥ +५	१४ ३५	१७ ३५	१९ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन.१	८ ३६	२१ ६	२१॥ -६	२१॥ -६	२५	२६	२७	२२	१३॥ ६	८ ३६	११ ३६	१७ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु.४	१७ ६	११ २३६	११॥ २३६	२०॥ ६	२४	२४ -२	२५ २	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	श्ले.४	२२॥ ६	१६ १६	१६॥ १६	८॥ १३६	१२ १३	१२ ३	१३ ३	२७	१८॥ ६	१९॥ ६	१२॥ १६	१८॥ १५	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म.४	२४ +५	१९ १५	१९ १५	८॥ १३५	२॥ १३६	३॥ ३६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ -१६	१९॥ १६	१३ ३६
	पू.४	१८ +१५	१७ ३५	१७ ३५	२४ +५	१८ ६	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.१	९॥ १३५	२५ ५	२५ +५	२५ +५	१९ ६	१९ ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.३	१४ १३	२९॥	२८॥	२८॥	२५ +५	२५ +५	२४॥ +५	१६ +१५	१६॥ -१६	९॥ १३६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह.४	१५ ३	२७	२६	२७॥	२४ +५	२५ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ २३६	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि.२	२८	१४ १३	१३ १३	२१ १	१७॥ १५	१९ +५	१८॥ +५	१७॥ ३५	१८ ३६	२४ -६	१८॥ १६	२१॥ १	१०॥ १२३	१९॥

यह मेलापक (वर्ण वश्य आदि) गुण की सारणी है, ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र हैं और तिरछी पंक्ति में बांयी तरफ कन्या के नक्षत्र लिखे हैं । ऊपरी भाग में गुण हैं और नीचे के भाग में दोषों के चिन्ह दिये हैं, जिनकी पहिचान के चिन्ह इस प्रकार समझना चाहिये - नाड़ी दोष का चिन्ह (३) । गण महादोष (मनुष्य राक्षस) में (१) । भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६) । नवपंचम में (५) । द्विर्द्वादश में (४) । वैरयोनि में (२) । जहाँ थोड़ा दोष है वहाँ (-)

सूचना - वर - कन्या का जन्मलग्न और जन्मराशि एक हो अथवा दोनो का मालिक (जैसे मेष वृश्चिक का मंगल) तो भकूट दोष नहीं होता है यदि नाड़ी दोष (चरण वेध से) नहीं हो तो ।
यथा- प्रोक्ते दुष्टभकूटके परिणयस्त्वेकाधिपत्ये शुभो ..॥ नाड्यृक्षशुद्धिर्यदि.. ॥ - पीयूषधारा महूर्तचिन्तामणि, श्लो. ३२, पृ. ३४२ –ले. पं ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री, अन्तर्राष्ट्रीय पंचांग गणितकर्ता)

॥ वर कन्या गुण मेलापक सारणी ॥

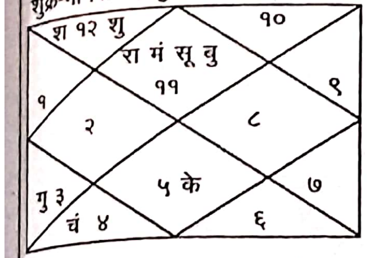
उर्ध्वस्थितर्क्षाणि हि भानि पुंसां वामस्थितर्क्षाणि तथा वधूनाम्, संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत् ।

वर→		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु				मकर				कुम्भ			मीन		
कन्या ↓	नक्षत्र	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू. ४	उ. १	उ. ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा ४	वि. ३	वि. १	अनु ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू. ॥	पू. ३॥	उ. १	उ. ३	श्र. १॥	श्र. २॥	ध. २	ध. २	श. ४	पू. ३	पू. १	उ. ४	रे. ४
↓	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥ ३	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२४॥ ४	७॥ ३४	२१॥ ४	२८	१४ १३	१३ १३	२१ १	२५॥ १	२७	२६॥	२५॥ ३	२० ३५	२६ +५	२०॥ १५	१४॥ १६	३॥ १२३६	१२॥ ६
तुला	स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८ ३	२० ०३	१० ०३४	२३॥ ४	१८॥ ४	२३	२७	२६	१८ ३	२२॥ ३	२३॥ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० २५	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२१ १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १२४	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१८ ३४	१७ ०४	२१॥ ४	२८	२२ १	२१ १	१३ १३	१७॥ १३	१७॥ ३	१७ ३	३२	२६॥ +५	२६ +५	२२ १५	१६ १६	१३ १२६	४॥ ३६
	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१३ ६	१४॥ १६	१४॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ ३५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१८ १२	१९	२८	२३॥ ४	८ ३४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२३॥ +४	१७॥ १४	१७॥ १४	९॥ १३४	१२ १३	१२ ३	१२ ३	२७	२७	२६॥	२२॥ १	२१ १५	१८ १२५	९॥ ३५
वृश्चि	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	११ ३६	१६ २६	२१॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२५॥	२१॥ ३	२९॥	२६	२७	१२ ३	७॥ ३४	२२॥ ४	१७ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१६॥ +२४	१४॥ ३४	१४॥ ३४	२२॥ +४	२५	२६	२६	१२ ३	१२ ३	२२	२५॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१३ ६	३ १२३६	६ ३६	१०॥ ३५	२० -५	२६ -५	३२	२४॥ १	१६॥ १३	१३ १३	१३ ३	२५	२०॥ ४	१६॥ ४	२०॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१५ ०२३४	१७॥ १४	१७॥ १४	१७॥ १४	२० १	२०	२०	२५	२५	१९ ३	११ १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२४ +५	१८ १५	९॥ १३५	१३ १३	१३ ३	२७	२७	२१	२७	२४॥ +४	१६॥ +२४	१६ २३४	२८ ३	२८ ०१	२७ ०१	२५॥ १	१५॥ १४	१५॥ ४	१५ ४	२१ ४	२९॥	२९॥ ३	१५॥ १३	१७ १३	२५ १	२६॥
धनु	पू.॥	२६ -५	१८ ३५	१८ १२५	१२॥ १२६	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ १५	१७ ३५	२५ ५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१८॥ १४	१६॥ ३४	१८॥ १४	२८ १	२८ ३	२७ ३	३३ ०	२३ ०४	२३॥ ४	२३ ४	७ १३४	१५॥ १३	२३॥ १	२९॥	३१	२३ ३	३१
	पू.३॥	२७ +५	१९ ३५	१९ +१२५	१३॥ १२६	१९ ६	११ ३६	१७ ३	२६	२६	२३॥ ६	१३॥ २३६	१७॥ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२७॥	२६	१२ १३	१२ १३	२६	२० १	१८॥ -१४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२७ +१	२७ ३	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२४॥ ४	२३॥ ४	७॥ १३४	१४॥ १३	२२॥ १	२८॥	३१॥	२३॥ ३	३१॥
	उ.१	२५॥ +५	२७ +५	१२ १३५	६॥ १३६	११॥ २३६	१८ २६	२४ +२	२६	२६	२३॥ ६	२२॥ ६	९॥ १३६	८॥ १३५	२४ +५	२५ +५	२७॥	२७॥	२० १	२० १	१८ ३	१२ १३	१०॥ १३४	२४॥ +४	१८॥ -१४	२५॥ -१	३३	३४	२८ ३	१८ ३४	१६ ०३४	१५ ०३४	१५॥ १४	२२॥ १	२२॥ १	२८॥	३१॥	३१॥	२३॥ ३
	उ.३	२७	२८॥	१३॥ १३	११ १३५	१६ २३५	२२॥ +२५	२० +२६	२२ -६	२२ -६	२८	२७	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ५	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ १३	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	२४ ४	१८ ३४	२७ ३	२५ ०३	२६ ०३	२६॥ +१	१७ +१४	१७ +१४	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
मक.	श्र.१॥	२८	२७	१४॥ २३	१२ २३५	१७ ३५	२६ ५	२३ ६	२१॥ ६	२२॥ ६	२७	२५ २	१४ ३	५॥ ३६	१७॥ ६	१९ ६	२४ ५	२५ ५	२० ५	२७	२२॥ ३	१७॥ ३	१४ ३	२७	२२	१७॥ ४	२३॥ ४	२४॥ ४	१६ ३४	२५ ३	२८ ३	२७ ३	२८ ०	२० ०४	१८॥ ४	२२॥ ४	२८॥	२८॥	२९॥ ३
	श्र.२॥	२७	२६	१३॥ २३	११ २३५	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	२३॥ ४	१५ ३४	२४ ३	२७ ३	२८ ३	२९ -०	१९॥ ०४	१८ +४	२२ +४	२९॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १२३	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१७॥ १६	१६ -६	२२	१३ ३	२८	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१६ १५	१७॥ +५	१७॥ ३५	२४॥ ३	२४॥	३१	२८	१२ ३	२६	२२ ४	८ १३४	८॥ १३४	१६॥ १४	२५॥ १	२७	२८	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	१९ +१४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
	ध.२	२०	११ १२३	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	२० १५	१८॥ +५	१३॥ ६	४॥ ३६	१९॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१९ ३६	२० ३५	२० -५	२६॥ -५	२८	१२ ३	२६	३०॥	१६॥ १३	१५॥ १३	२३॥ १	१८॥ १४	२० +४	१९॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ २४
कुम्भ	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	८ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	११॥ १३	१०॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ २५	२६ +५	२७॥	२२	२० ३	२२॥ ३	२४॥ १	२३॥ १	२३॥ १	१८॥ १४	१८॥ ४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०१३	८॥ ०१३४	१६ १४	१९ ४
	पू.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४॥ +५	१८ ३५	१८ ३५	१३ ३६	२० ६	१३॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ +३६	१९॥ १६	२०॥ -१५	२६ ५	२२ -१५	२३॥ १	२७॥	१२ १३	१६॥ १३	३०॥	२९॥	२९॥	२४॥ ४	२४॥ +४	२४ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० २४
	पू.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१९ ३	१९ ३	१८ ३५	२५ ५	१८॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	२०॥ +१	१३॥ १६	१९ ६	१५ १६	२१ -१५	२५ +५	९॥ १३५	१६ १३	३०	३०॥	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
मीन	उ.४	२३॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १२३	२॥ १२३६	१९॥ ६	१२ १२६	१८ १२५	१९ ३५	२१ -१५	२४ -१	२२ ३	२२॥ ३	३०॥	२८॥	२८॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१५ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ ६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२९॥	२९॥ ३	१९॥ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ २४	१६ ४	१८ २४	२९॥ -२	३४	२८ ३

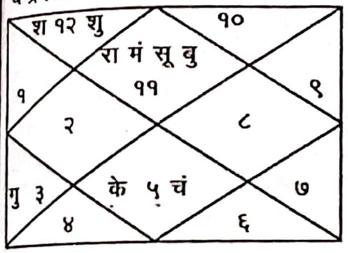
जहाँ दोष का पूरा निर्वाह है वहाँ (+) चिन्ह है । जहाँ वर के नक्षत्र से पूर्व कन्या का नक्षत्र है इसका भी महादोष माना गया है वहाँ (०) शून्य का चिन्ह है और जहाँ कोई दोष नहीं मिलता वहाँ केवल गुण ही लिखे हुए है ।

अतः नाडीवेधश्चरणवेधः आवश्यकविषयस्त्याज्यः- एतदप्युक्तं तत्रैव - 'आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम् । द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम् ॥ **अर्थ** - प्रथम चरण से चोथे का, चोथे से प्रथम का, द्वितीय चरण का तृतीय से और तृतीय का दूसरे चरण से वेध दोता है ॥ - पीयूषधारा पृ. ३५२-३५३ ॥ – ले. पं ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री, अन्तर्राष्ट्रीय पंचांग गणितकर्ता)

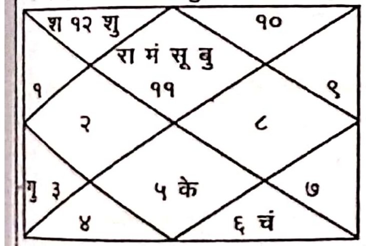
क्र.१९७,फा.शु.१३ र., १ मार्च२०२६
शुक्र-मीनराशौ, तुलालग्ने स्टै.२३।४६



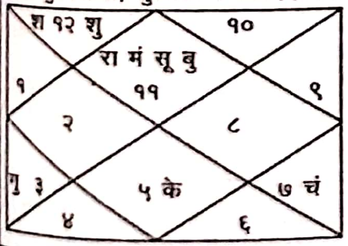
क्र.१९८,फा.शु.१४ सो., २ मार्च२०२६
चन्द्र-सिंहराशौ, मीनलग्ने स्टै. ७।५१



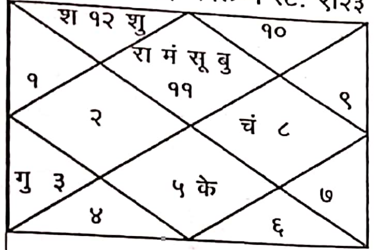
क्र.१९९,चै.कृ. १ बु., ४ मार्च२०२६
चन्द्र-कन्याराशौ, मिथुनलग्ने स्टै.१३।४६



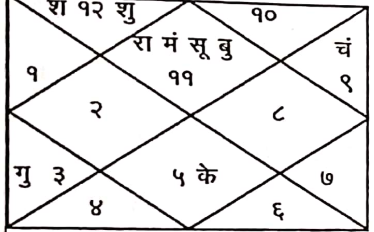
क्र.२००,चै.कृ. ३ शु., ६ मार्च२०२६
चन्द्र-तुलाराशौ, तुलालग्ने स्टै.२२।१४



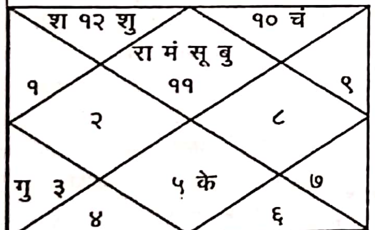
क्र.२०१,चै.कृ. ६ सो., ९ मार्च२०२६
चन्द्र-वृश्चिकराशौ, मेषलग्ने स्टै. ९।२३



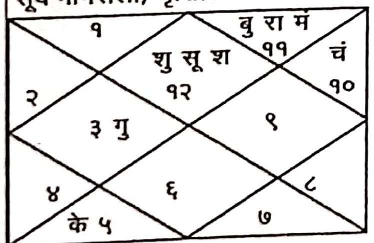
क्र.२०२,चै.कृ. ८ बु.,११ मार्च२०२६
चन्द्र-धनुराशौ, तुलालग्ने स्टै.२२।००



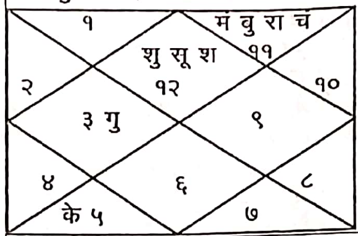
क्र.२०३,चै.कृ.१० श.,१४ मार्च२०२६
चन्द्र-मकरराशौ, मेषलग्ने स्टै. ९।३४



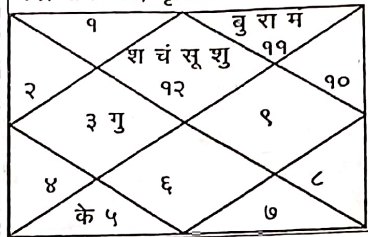
क्र.२०४,चै.कृ.१० श.,१४ मार्च२०२६
सूर्य-मीनराशौ, वृश्चि.लग्ने स्टै.२४।१५



क्र.२०५,चै.कृ.१२ सो.,१६ मार्च२०२६
चन्द्र-कुंभराशौ, सिंहलग्ने स्टै.१८।११



क्र.२०६,चै.कृ.१४ बु.,१८ मार्च२०२६
चन्द्र-मीनराशौ, वृश्चि.लग्ने स्टै.२३।३३



श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नमः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म
तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

A:
श्री.श्री. १०८ स्व. पं. ईश्वरदत्त शर्मणोऽनुग्रहीत शिष्यः -

गोधूलिकाले विशेषः-

किञ्च - 'कुलिकं क्रान्तिसाम्यं च मूर्तौ षष्ठाष्टमः शशी । पञ्चगोधूलिके त्याज्यास्त्वन्ये दोषाः शुभावहाः ॥' 'लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥' इति । -दैवज्ञमनोहरे **तत्र गोधूलिसूक्ष्मकालसमयः-**'अत्रोभयत्र घटिकादलमिष्टमाहुर्ग्राह्यं तदम्बरमणेरपि चार्द्धबिम्बात् ॥' इति । **केचित्तु** - 'यावद्दिनान्ते दिशि पश्चिमायां पश्येतृतीयं रविबिम्बभागम् । तस्मात्परं नाडिकयुग्ममेके गोधूलिकालं मुनयो वदन्ति ॥' इति ।

अथ शीतकालादिभेदेन गोधूलिभेदं जलधरमालाछन्दसाह -
पिंडीभूते दिनकृति हेमंततौ स्यादर्द्धास्ते तप समये गोधूलिः ।
सम्पूर्णास्ते जलधरमालाकाले त्रेधा योज्या सकलशुभे कार्यादौ ॥१००॥ -पीयूषधारा,४१७

पीयूषधारा - पिण्डीभूते इति । हेमन्तास्ये ऋतौ हेमन्तशब्देन शीतकाल उपलक्ष्यते । मार्गशीर्षादिमासचतुष्टये इत्यर्थः । दिनकृति सूर्ये पिण्डीभूते ओदनगोलकसदृशे सन्ध्यायां नीहाराद्यावृतत्वेन निष्प्रभे इत्यर्थः । तस्मिन्समये गोधूलिर्ज्ञेया । तथा तपसमये उष्णकाले चैत्रादिमासचतुष्टये सूर्येऽर्द्धास्ते अर्द्ध बिम्बस्य दृश्यत्वे च सति गोधूलिः । जलधरा मेघास्तेषां माला समूहस्तस्योत्पादके काले वर्षाकाले श्रावणादिमासचतुष्टये सूर्यसम्पूर्णास्तमदर्शनमस्य तादृशे सति गोधूलिः । जलधरमालाशब्देन छन्दोऽपि सूचितम् । न केवलमियं विवाहे एव किन्तु सकलशुभे समस्तशुभकार्यादिष्वपि ज्ञेया । **यदाह वराहः** - 'गोधूलि त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके हेमन्ते शिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे । ग्रीष्मेऽर्द्धास्तमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यतां सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः ॥' इति ॥१००, ४१८॥

हेमन्त ऋतु, शीतकालीन मार्गशीर्षादिक चार महीनों के सन्ध्या मसय में ओदन गोल के सदृश प्रभाहीन दृष्टिगोचर सूर्य बिम्ब के समय गोधूलि होती है । तथा चैत्रादिक चार महीनों के ग्रीष्म समयों में अर्द्ध सूर्य बिम्ब दृश्य और अर्द्ध सूर्यबिम्ब अस्त के समय गोधूलि समय होता है । वर्षाकाल - श्रावणादिक ४ महीनों में सम्पूर्ण सूर्य बिम्ब के अस्त समय पर गोधूलि कही गई है ।

तदेतयोः पक्षयोर्यथादेशाचारं व्यवस्था ॥९९॥ - पीयूषधारा पृ. ४१७

गोधूलि अन्यगोधूत्योर्भेदः- द्वित्रिलाभगतश्चन्द्रोगोधूलिः शस्यते बुधैः। सुहृद्व यस्तरवगेधर्मेव्यये धूवीमुरवास्मृता । - **पं. ईश्वरदत्त शर्मा**

सूर्यास्तकालीन लग्न से २-३-११ में चन्द्रमा हो तो गोधूलि और लग्न से ४-५-९-१०-१२ में चन्द्रमा हो तो अन्यगोधूलि । गोधूलि और अन्यगोधूलि में चन्द्रमा के कारण नाम का भेद है, समय तो एक ही रहता है । गुरुवार को सूर्यास्त के बाद और शनिवार को सूर्यास्त के पहिले गोधूलि शुभ होती है । चन्द्रमा- लग्न, छठे, आठवें में हो तो गोधूलि नहीं बनता और मगंल सप्तम या अष्टम में अशुभ है ।

विशेषः- प्राचीन दिव्यऋषियों ने धर्मशास्त्रों में गोधूलि लग्न तीन प्रकार (घटिकादलं चार्द्धबिम्बात्, तस्मात्परं नाडिकयुग्म, शीतकालादिभेदेन) से कहा है या फिर अपने अपने देशाचार से गोधूलि काल की व्यवस्था करें । यहाँ पञ्चाङ्ग में धर्मशास्त्र (मुख्यकाल), देशाचार और कालानुसार के समन्वय से चार घटी (सूर्यास्तात् पूर्वापर दो दो घटी अर्थात् कुल १ घंटा ३६ मिनट) ग्रहण किया है । आप अपने देशाचारानुसार समय ग्रहण करें । विद्वानों की सुविधा के लिए गोधूलि स्टै. समय लगा दिया है । नोट- गुरुवार को सूर्यास्त के बाद और शनिवार को सूर्यास्त के पहिले का ही गोधूलि समय ग्रहण करें ।

A: **ले. अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चाङ्ग गणितकर्ता - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री), विलेपार्ले, मुम्बई. ४०००५७.**

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७ (सन २०२५-२६) मध्ये विवादास्पद (अशुद्ध) विवाह, गेहारंभ, गृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा-दिवसादि विषये "शास्त्रीय स्पष्टता" ॥

तत्रादौ विवादास्पद (अशुद्ध) विवाह दिवसादि ...

सन२०२५	**वैशाख मास**
१४ अप्रे.	कृ, १ चंद्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (मेषे श १२; चं ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू, वृषे चं ६, कन्या. श रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, तुला. चं १)
१५ अप्रे.	कृ, २ भौमे अनुरा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः
१६ अप्रे.	कृ, ३ बुधे अनुरा. लग्नाऽभावः (धनुषि रा ४ दोषः; लग्नेशः गु ६, मकरे शु ३ दोषः; मं ७ दोषः)
१८ अप्रे.	कृ, ५ शुक्रे मूले मीने रेखाल्पत्वम्
१९ अप्रे.	कृ, ६ शनौ मूले लग्नाऽभावः(मेषे श १२; सोग्रांगः सू)
२० अप्रे.	कृ, ७ रवौ उषा. लग्नाऽभावः (कर्के चं ६; सोग्रांगः मं, कन्या. श रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, धनुषि रा ४ दोषः; लग्नेशः गु ६, मकरे चं १; शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मेषे श १२; सोग्रांगः सू)
२१ अप्रे.	कृ, ८ चंद्रे उषा. लग्नाऽभावः (मेषे श १२; सोग्रांगः सू)
२५ अप्रे.	कृ, १२ शुक्रे उभा. बुधस्य युतिः
२९ अप्रे.	शु. २ भौमे रोहि. लग्नाऽभावः (तुला. चं ८, धनुषि रा ४ दोषः; चं लग्नेशः गु ६, मकरे शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मेषे श १२; सोग्रांगः सू)
३० अप्रे.	शु. ३ बुधे रोहि. लग्नाऽभावः (मेषे श १२; सोग्रांगः सू, वृषे चं १)
३० अप्रे.	शु. ३ बुधे मृगे गुरोर्युतिः
१ मई	शु. ४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः
५ मई	शु. ८ चंद्रे मघा. लग्नाऽभावः (कन्या. श रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, धनुषि रा ४ दोषः; लग्नेशः गु ६, मकरे शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मीने चं ६; के ७ दोषः; सोग्रांगः श रा, मेषे श १२; सोग्रांगः सू)
६ मई	शु. ९ भौमे मघा. लग्नाऽभावः (मेषे श १२; सोग्रांगः सू, सिंहे चं १)
७ मई	शु. १० बुधे उफा. केतोर्युतिः
८ मई	शु. ११ गुरौ उफा. केतोर्युतिः
८ मई	शु. ११ गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
९ मई	शु. १२ शुक्रे हस्ते शनेर्वेधः
११ मई	शु. १४ रवौ स्वातौ व्यतिपातः
१२ मई	शु. १५ चंद्रे स्वातौ भद्रा दोषः
	ज्येष्ठ मास
१३ मई	कृ, १ भौमे अनुरा. लग्नाऽभावः (मिथुने चं ६, कन्या. श रा ७ दोषः; शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, वृश्चिके चं १; गु ७ पूज्यः, धनुषि रा ४ दोषः; लग्नेशः गु ६, मकरे शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मेषे श १२; सोग्रांगः सू), मृत्युपञ्चकम्
१५ मई	कृ, ३ गुरौ मूले मृत्युपञ्चकम्
१६ मई	कृ, ४ शुक्रे मूले मृत्युपञ्चकम्
१७ मई	कृ, ५ शनौ उषा. लग्नाऽभावः (तुला. मं १०; शु ६; बु ७ पूज्यः, धनुषि चं १; रा ४ दोषः; गु ७ पूज्यः, मकरे चं १ २४।०४ उपरांत; शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मेषे श १२)
१८ मई	कृ, ५ रवौ उषा. लग्नाऽभावः (सिंहे चं ६; रा ७ दोषः; सोग्रांगः के, कन्या. श ७ दोषः; शु ७ पूज्यः, तुला. मं १०; शु ६; बु ७ पूज्यः)
२२ मई	कृ, १० गुरौ उभा. शनेर्युतिः
२३ मई	कृ, ११ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
२३ मई	कृ, ११ शुक्रे रेवत्यां केतोर्वेधः
२४ मई	कृ, १२ शनौ रेवत्यां केतोर्वेधः
२८ मई	शु. २ बुधे मृगे गुरोर्युतिः
१ जून	शु. ६ रवौ मघा. लग्नाऽभावः (मकरे मं ७ दोषः, मीने चं ६; सोग्रांगः श, मेषे श १२)
२ जून	शु. ७ चंद्रे मघा. लग्नाऽभावः (सिंहे चं १; रा ७ दोषः; सोग्रांगः के, कन्या. श ७ दोषः, तुला. मं १०; शु ७ पूज्यः)
३ जून	शु. ८ भौमे उफा. केतोर्युतिः, मृत्युपञ्चकम्
४ जून	शु. ९ बुधे उफा. केतोर्युतिः, मृत्युपञ्चकम्
४ जून	शु. ९ बुधे हस्ते शनेर्वेधः
५ जून	शु. १० गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
६ जून	शु. ११ शुक्रे हस्ते व्यतिपातः
७ जून	शु. १२ शनौ स्वातौ लग्नाऽभावः (कन्या. श ७ दोषः, तुला. चं १; शु ७ पूज्यः, कुंभे शु ३ दोषः; मं के ७ दोषः; सोग्रांगः रा, मेषे श १२; चं ७ पूज्यः,वृषे चं ६;सोग्रांगः सू)
९ जून	शु. १३ चंद्रे अनुरा. गुरोः वृद्धत्व दोषः
१० जून	शु. १४ भौमे अनुरा. गुरोः वृद्धत्व दोषः
	मार्गशीर्ष मास
२२ नवं.	शु. २ शनौ मूले लग्नाऽभावः(कर्के चं ६,कन्या.श ७ दोषः)
२३ नवं.	शु. ३ रवौ मूले लग्नाऽभावः (धनुषि चं १,कुंभे मं १०; के ७ दोषः;सोग्रांगः रा,मेषे श १२; शु ७ पूज्यः, वृषे चं ८)
२४ नवं.	शु. ४ चंद्रे उषा. वृश्चिके रेखाल्पत्वम्
२५ नवं.	शु. ५ भौमे उषा. लग्नाऽभावः (मकरे चं १; गु ७ पूज्यः, कुंभे मं १०; के ७ दोषः; सोग्रांगः रा, मेषे श १२; बु शु ७ पूज्यः), मकरे रेखाल्पत्वम्
२९ नवं.	शु. ९ शनौ उभा. लग्नाऽभावः (कन्या. शु ३ दोषः; श ७ दोषः; चं ७ पूज्यः, तुला. चं ६)
३० नवं.	शु. १० रवौ उभा. लग्नाऽभावः (कुंभे मं १०; के ७ दोषः; सोग्रांगः रा, मीने चं १; सोग्रांगः श, मेषे श १२; बु ७ पूज्यः, मिथुने शु ६)
३० नवं.	शु. १० रवौ रेवत्यां लग्नाऽभावः (कन्या. शु ३ दोषः; श ७ दोषः; चं ७ पूज्यः, तुला. चं ६)
१ दिसं	शु. ११ चंद्रे रेवत्यां व्यतिपातः
४ दिसं	शु. १४ गुरौ रोहि. लग्नाऽभावः (मिथुने शु ६, कन्या. शु ३ दोषः; श ७ दोषः)
	पौष मास
५ दिसं	कृ, १ शुक्रे रोहि. मृत्युपञ्चकम्
५ दिसं	कृ, १ शुक्रे मृगे मृत्युपञ्चकम्
६ दिसं	कृ, २ शनौ मृगे शुक्रस्य वृद्धत्व दोषः, मृत्युपञ्चकम्
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
५ फर.	कृ, ४ गुरौ उफा. शुक्रस्य बालत्व दोषः
५ फर.	कृ, ४ गुरौ हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः, शनेर्वेधः
६ फर.	कृ, ५ शुक्रे हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः, शनेर्वेधः
७ फर.	कृ, ६ शनौ स्वातौ भद्रा दोषः, राहोर्वेधः
८ फर.	कृ, ७ रवौ स्वातौ राहोर्वेधः
१० फर.	कृ, ८ भौमे अनुरा. लग्नाऽभावः (मेषे मं १०; श १२, मिथुने चं ६, सिंहे लग्नेशः सू ६; रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, कन्या. लग्नेशः बु शु ६; श ७ दोषः, वृश्चिके चं १; रा ४ दोषः), मृत्युपञ्चकम्
११ फर.	कृ, ९ बुधे अनुरा. मृत्युपञ्चकम्
१३ फर.	कृ, ११ शुक्रे मूले लग्नाऽभावः (मेषे मं १०; श १२)
१४ फर.	कृ, १२ शनौ उषा. कृष्णानंग चतुर्दिनम्
१९ फर.	शु. २ गुरौ उभा. शनेर्युतिः
२० फर.	शु. ३ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
२० फर.	शु. ३ शुक्रे रेवत्यां लग्नाऽभावः (कन्या. लग्नेशः बु शु ६; श ७ दोषः; चं ७ पूज्यः, तुला. चं ६)
२१ फर.	शु. ४ शनौ रेवत्यां लग्नाऽभावः (कर्के मं ७ दोषः)
	चैत्र मास
४ मार्च	कृ, १ बुधे उफा. भुजङ्गपातः, मृत्युपञ्चकम्
५ मार्च	कृ, २ गुरौ उफा. भुजङ्गपातः
५ मार्च	कृ, २ गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
६ मार्च	कृ, ३ शुक्रे हस्ते भद्रा दोषः
७ मार्च	कृ, ४ शनौ स्वातौ भौमस्य वेधः राहोर्वेधः
८ मार्च	कृ, ५ रवौ स्वातौ भौमस्य वेधः राहोर्वेधः
९ मार्च	कृ, ६ चंद्रे अनुरा. लग्नाऽभावः (कन्या. लग्नेशः बु ६ श ७ दोषः; शु ७ पूज्यः, तुला. शु ६), भद्रा दोषः
१० मार्च	कृ, ७ भौमे अनुरा. लग्नाऽभावः (मिथुने चं ६)
१२ मार्च	कृ, ९ गुरौ मूले लग्नाऽभावः (मेषे श १२)
१३ मार्च	कृ, १० शुक्रे उषा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः

॥ किसी भी चैत्रादि मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा (यदि चन्द्रदर्शन नहीं हो तो) ये विवाह में त्याज्य है । इन्हे **"कृष्णानंग चतुर्दिनम्"** दोष कहते है ॥

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७ (सन २०२५-२६) मध्ये विवादास्पद (अशुद्ध) विवाह, गेहारंभ, गृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा-दिवसादि विषये "शास्त्रीय स्पष्टता" ॥

॥ कात्या. विवादास्पद (अशुद्ध) विवाह दिवसादि विषये "शास्त्रीय स्पष्टता" ॥

वैशाख मास

सन२०२५

२१ अप्रे. कृ, ८ चंद्रे श्रवणे लग्नाऽभावः (सिंहे चं ६, कन्या. श रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, धनुषि रा ४ दोषः; लग्नेशः गु ६, मकरे चं १; शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मेषे श १२; सोग्रांगः सू)

२२ अप्रे. कृ, ९ भौमे श्रवणे कर्के रेखाल्पत्वम्

२२ अप्रे. कृ, ९ भौमे धनि. लग्नाऽभावः (सिंहे चं ६, कन्या. श रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः; सोग्रांगः के, धनुषि रा ४ दोषः; लग्नेशः गु ६, मकरे शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, कुंभे चं १, मेषे श १२; सोग्रांगः सू)

२३ अप्रे. कृ, १० बुधे धनि. भद्रा दोषः

९ मई शु. १२ शुक्रे चित्रा. राहोर्वेधः

१० मई शु. १३ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः

ज्येष्ठ मास

१८ मई कृ, ५ रवौ श्रवणे लग्नाऽभावः (मकरे चं १; शु ३ दोषः; मं ७ दोषः, मेषे श १२)

१९ मई कृ, ६ चंद्रे श्रवणे लग्नाऽभावः (तुला. मं १०; शु ६; बु ७ पूज्यः), भद्रा दोषः

१९ मई कृ, ६ चंद्रे धनि. भौमस्य वेधः

२० मई कृ, ७ भौमे धनि. भौमस्य वेधः

२४ मई कृ, १२ शनौ अश्वि. लग्नाऽभावः (कन्या. श ७ दोषः; शु ७ पूज्यः, तुला. मं १०; शु ६; चं ७ पूज्यः, वृश्चिके चं ६)

६ जून शु. ११ शुक्रे चित्रा. भद्रा दोषः, राहोर्वेधः

७ जून शु. १२ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः

मार्गशीर्ष मास

२५ नवं. शु. ५ भौमे श्रवणे लग्नाऽभावः (सिंहे शु ३ दोषः; चं ६; रा ७ दोषः; सोग्रांगः के, कन्या. श ७ दोषः)

२६ नवं. शु. ६ बुधे श्रवणे मृत्युपञ्चकम्

२६ नवं. शु. ६ बुधे धनि. मृत्युपञ्चकम्

२७ नवं. शु. ७ गुरौ धनि. लग्नाऽभावः (मकरे चं १; गु ७ पूज्यः, कुंभे मं १०; के ७ दोषः; सोग्रांगः रा, मेषे श १२; बु ७ पूज्यः, मिथुने शु ६), मृत्युपञ्चकम्

१ दिसं शु. ११ चंद्रे अश्वि. केतोर्वेधः

२ दिसं शु. १२ भौमे अश्वि. केतोर्वेधः

फाल्गुन मास

सन२०२६

६ फर. कृ, ५ शुक्रे चित्रा. शुक्रस्य बालत्व दोषः, भुजङ्गपातः

७ फर. कृ, ६ शनौ चित्रा. भुजङ्गपातः

२१ फर. शु. ४ शनौ अश्वि. केतोर्वेधः

२२ फर. शु. ५ रवौ अश्वि. केतोर्वेधः

चैत्र मास

६ मार्च कृ, ३ शुक्रे चित्रा. सूर्यस्य वेधः

७ मार्च कृ, ४ शनौ चित्रा. सूर्यस्य वेधः

॥ विवादास्पद उपनयन-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ॥

चैत्र मास

सन२०२५

३० मार्च शु. ०१ रवौ रेवत्यां कल्पादि

३० मार्च शु. ०१ रवौ अश्वि. कल्पादि

३१ मार्च शु. ०२ चंद्रे अश्वि. मन्वादि

२ अप्रे. शु. ०५ बुधे रोहि. कल्पादि, गुरोर्युतिः

७ अप्रे. शु. १० चंद्रे श्लेषा. लग्नाऽभावः (मेषे सू; बु; शु; श; रा १२, मिथुने गु १२, कर्के लग्नस्थ चंद्रः ग्राह्यः)

९ अप्रे. शु. १२ बुधे पूफा. लग्नाऽभावः (मिथुने गु १२, सिंहे लग्नस्थ चंद्रः; सू; बु; शु; श; रा ८; मं १२)

वैशाख मास

१४ अप्रे. कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (वृषे चं ६; सू १२, मिथुने गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२)

१६ अप्रे. कृ. ०३ बुधे अनुरा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः

१८ अप्रे. कृ. ०५ शुक्रे मूले लग्नाऽभावः (वृषे ०८।१९ उपरांत चं ८; सू १२, मिथुने गु १२, कर्के चं ६, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२)

३० अप्रे. शु. ०३ बुधे रोहि. कल्पादि, युगादि

१ मई शु. ०४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः, रोगपंचकः

१ मई शु. ०४ गुरौ आर्द्रा. रोगपंचकः

२ मई शु. ०५ शुक्रे आर्द्रा. रोगपंचकः

७ मई शु. १० बुधे पूफा. लग्नाऽभावः (मेषे बु; शु; श; रा १२, वृषे ०६।२९ उपरांत बु १२; सू १२, मिथुने गु १२, सिंहे लग्नस्थ चंद्रः; शु; श; रा ८; मं १२)

७ मई शु. १० बुधे उफा. केतोर्युतिः

८ मई शु. ११ गुरौ उफा. केतोर्युतिः

९ मई शु. १२ शुक्रे हस्ते शनेर्वेधः

ज्येष्ठ मास

१५ मई कृ. ०३ गुरौ मूले लग्नाऽभावः (सिंहे शु; श; रा ८; मं १२, कन्या. बु ८)

१८ मई कृ. ०५ रवौ उषा. लग्नाऽभावः (वृषे बु १२)

२८ मई शु. ०२ बुधे मृगे गुरोर्युतिः

२९ मई शु. ०३ गुरौ आर्द्रा. लग्नाऽभावः (मिथुने लग्नस्थ चंद्रः; सू; बु १२, कर्के रा ८; चं; गु १२, सिंहे शु; श ८; मं १२, कन्या. के १२)

४ जून शु. ०९ बुधे उफा. केतोर्युतिः

५ जून शु. १० गुरौ हस्ते शनेर्वेधः

६ जून शु. ११ शुक्रे हस्ते व्यतिपातः

६ जून शु. ११ शुक्रे चित्रा. राहोर्वेधः

८ जून शु. १२ रवौ स्वातौ लग्नाऽभावः (वृषे चं ६; शु १२, मिथुने सू १२)

आषाढ मास

७ जुला शु. १२ चंद्रे अनुरा. गुरोः बालत्व दोषः

सन२०२६

फाल्गुन मास

५ फर. कृ. ०४ गुरौ हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः

६ फर. कृ. ०५ शुक्रे हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः, शनेर्वेधः

६ फर. कृ. ०५ शुक्रे चित्रा. शुक्रस्य बालत्व दोषः

१८ फर. शु. ०१ बुधे पूभा. बुधस्य युतिः

१९ फर. शु. ०२ गुरौ पूभा. बुधस्य युतिः

१९ फर. शु. ०२ गुरौ उभा. शनेर्युतिः

२० फर. शु. ०३ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः

२२ फर. शु. ०५ रवौ अश्वि. केतोर्वेधः

चैत्र मास

५ मार्च कृ. ०२ गुरौ उफा. लग्नाऽभावः (कुंभे चं ८, मीने सू; मं; बु; रा १२)

५ मार्च कृ. ०२ गुरौ हस्ते शनेर्वेधः

६ मार्च कृ. ०३ शुक्रे हस्ते कल्पादि, भद्रा दोषः

६ मार्च कृ. ०३ शुक्रे चित्रा. कल्पादि, भद्रा दोषः

८ मार्च कृ. ०५ रवौ स्वातौ भौमस्य वेधः

॥ विवादास्पद गेहारंभ (भूमि पूजन)-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ॥

वैशाख मास

सन२०२५

१४ अप्रे. कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२, कन्या. सू ८)

१६ अप्रे. कृ. ०३ बुधे अनुरा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः

२३ अप्रे. कृ. १० बुधे धनि. भद्रा दोषः

२३ अप्रे. कृ. १० बुधे शते लग्नाऽभावः (कन्या. सू ८)

२४ अप्रे. कृ. ११ गुरौ शतेलग्नाऽभावः (वृषे सू १२,मिथुने गु १२)

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७ (सन २०२५-२६) मध्ये विवादास्पद (अशुद्ध) विवाह, गेहारंभ, गृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा-दिवसादि विषये "शास्त्रीय स्पष्टता" ॥

२५ अप्रे.	कृ. १२ शुक्रे उभा. बुधस्य युतिः, अग्निपंचकः (वृ.च.रहित)
२६ अप्रे.	कृ. १३ शनौ उभा. वैधृतिः, बुधस्य युतिः
२६ अप्रे.	कृ. १३ शनौ रेवत्यां वैधृतिः
३० अप्रे.	शु. ०३ बुधे रोहि. लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने चं; गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२)
१ मई	शु. ०४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः
३ मई	शु. ०६ शनौ पुष्ये भौमस्य युतिः, भूशयनम्
७ मई	शु. १० बुधे उफा. केतोर्युतिः
८ मई	शु. ११ गुरौ उफा. केतोर्युतिः
९ मई	शु. १२ शुक्रे हस्ते शनेर्वेधः
१० मई	शु. १३ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः
१२ मई	शु. १५ चंद्रे स्वातौ भद्रा दोषः
	ज्येष्ठ मास
२२ मई	कृ. १० गुरौ उभा. शनेर्युतिः, भूशयनम्
२३ मई	कृ. ११ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
२३ मई	कृ. ११ शुक्रे रेवत्यां केतोर्वेधः (वृ.च.रहित)
२४ मई	कृ. १२ शनौ रेवत्यां केतोर्वेधः (वृ.च.रहित)
२८ मई	शु. ०२ बुधे मृगे गुरोर्युतिः, भूशयनम्
३१ मई	शु. ०५ शनौ पुष्ये लग्नाऽभावः (मिथुने सू; बु १२, सिंहे शु; श ८; चं; मं १२)
४ जून	शु. ०९ बुधे उफा. केतोर्युतिः
५ जून	शु. १० गुरौ हस्ते शनेर्वेधः, अग्निपंचकः
६ जून	शु. ११ शुक्रे हस्ते व्यतिपातः, भूशयनम्
६ जून	शु. ११ शुक्रे चित्रा. भूशयनम्
७ जून	शु. १२ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः
७ जून	शु. १२ शनौ स्वातौ लग्नाऽभावः (सिंहे श ८, कन्या. शु ८; मं; के १२)
	श्रावण मास
१७ जुला	कृ. ०७ गुरौ रेवत्यां केतोर्वेधः (वृ.च.रहित)
२१ जुला	कृ. ११ चंद्रे रोहि. लग्नाऽभावः (सिंहे श ८; सू; बु १२, कन्या. मं; के १२, धनुषि सू; बु ८)
२८ जुला	शु. ०४ चंद्रे उफा. भौमस्य युतिः
३० जुला	शु. ०६ बुधे चित्रा. भूशयनम्
३१ जुला	शु. ०७ गुरौ चित्रा. राहोर्वेधः (वृ.च.रहित)
४ अग.	शु. १० चंद्रे अनुरा. सूर्यस्य वेधः
८ अग.	शु. १४ शुक्रे उषा. भद्रा दोषः, भूशयनम्
९ अग.	शु. १५ शनौ धनि. लग्नाऽभावः (धनुषि सू; बु ८)
	भाद्रपद मास
११ अग.	कृ. ०२ चंद्रे शते लग्नाऽभावः (सिंहे श ८; सू; बु १२, कन्या. के १२)
१३ अग.	कृ. ०४ बुधे उभा. शनेर्युतिः
१३ अग.	कृ. ०४ बुधे रेवत्यां भौमस्य वेधः (वृ.च.रहित)
१८ अग.	कृ. १० चंद्रे मृगे लग्नाऽभावः (सिंहे श ८; बु १२, कुंभे मं ८)
२० अग.	कृ. १२ बुधे पुष्ये व्यतिपातः, बुधस्य युतिः, भूशयनम्
२१ अग.	कृ. १३ गुरौ पुष्ये व्यतिपातः, बुधस्य युतिः
२५ अग.	शु. ०२ चंद्रे उफा. लग्नाऽभावः (सिंहे श ८; बु; शु १२, कन्या. ०८।२७ यावत् चं १२; सू; के १२, धनुषि बु; शु ८, कुंभे चं; मं ८)
२५ अग.	शु. ०२ चंद्रे हस्ते भौमस्य युतिः
२७ अग.	शु. ०४ बुधे चित्रा. राहोर्वेधः (वृ.च.रहित)
२८ अग.	शु. ०५ गुरौ चित्रा. राहोर्वेधः (वृ.च.रहित)
२८ अग.	शु. ०५ गुरौ स्वातौ लग्नाऽभावः (कन्या. सू; के १२, धनुषि बु; शु ८), अग्निपंचकः (वृ.च.रहित)
३० अग.	शु. ०७ शनौ अनुरा. भूशयनम्
४ सितं	शु. १२ गुरौ उषा. लग्नाऽभावः (सिंहे श ८; शु १२, कन्या. सू; बु; के १२, धनुषि शु ८, कुंभे मं ८; चं १२)
५ सितं	शु. १३ शुक्रे धनि. भूशयनम्
	कार्तिक मास
१८ अक्टु	कृ. १२ शनौ उफा. लग्नाऽभावः (कुंभे शु ८, मीने सू; मं; बु ८; रा १२)
२३ अक्टु	शु. ०२ गुरौ अनुरा. भूशयनम्
२४ अक्टु	शु. ०३ शुक्रे अनुरा. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; चं; बु १२, कुंभे शु ८, मीने सू; मं ८; रा १२)
३१ अक्टु	शु. ०९ शुक्रे धनि. भूशयनम्
३१ अक्टु	शु. ०९ शुक्रे शते भूशयनम्
१ नवं.	शु. १० शनौ शते सूर्यस्य वेधः
३ नवं.	शु. १३ चंद्रे उभा. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; मं; बु १२)
३ नवं.	शु. १३ चंद्रे रेवत्यां लग्नाऽभावः (मीने सू; शु ८; रा १२)
	मार्गशीर्ष मास
६ नवं.	कृ. ०१ गुरौ रोहि. भूशयनम्
७ नवं.	कृ. ०२ शुक्रे रोहि. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; मं; बु १२, मीने सू; शु ८; रा १२), अग्निपंचकः
८ नवं.	कृ. ०३ शनौ मृगे भद्रा दोषः
१५ नवं.	कृ. ११ शनौ उफा. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; मं; बु १२, कुंभे चं ८, मीने सू; शु ८; रा १२), अग्निपंचकः (वृ.च.रहित)
१७ नवं.	कृ. १३ चंद्रे चित्रा. शनेर्वेधः (वृ.च.रहित)
२४ नवं.	शु. ०४ चंद्रे उषा. भूशयनम्
२७ नवं.	शु. ०७ गुरौ धनि. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; सू; मं; शु १२, कुंभे चं १२, मीने १४।०५ उपरांत चं १२; बु ८; रा १२), अग्निपंचकः
१ दिसं	शु. ११ चंद्रे रेवत्यां व्यतिपातः
	पोष मास
५ दिसं	कृ. ०१ शुक्रे रोहि. लग्नाऽभावः (धनुषि सू; मं; शु १२)
५ दिसं	कृ. ०१ शुक्रे मृगे लग्नाऽभावः (मीने बु ८; रा १२)
६ दिसं	कृ. ०२ शनौ मृगे शुक्रस्य वृद्धत्व दोषः, भूशयनम्
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
५ फर.	कृ. ०४ गुरौ हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः, भूशयनम्
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे चित्रा. शुक्रस्य बालत्व दोषः, भूशयनम्
११ फर.	कृ. ०९ बुधे अनुरा. लग्नाऽभावः (मीने बु; शु; रा १२)
१८ फर.	शु. ०१ बुधे शते राहु युतिः, भूशयनम्
१९ फर.	शु. ०२ गुरौ उभा. शनेर्युतिः
२० फर.	शु. ०३ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः, भूशयनम्
२१ फर.	शु. ०४ शनौ रेवत्यां लग्नाऽभावः (मिथुने मं ८, सिंहे चं; श ८)
	चैत्र मास
४ मार्च	कृ. ०१ बुधे उफा. भूशयनम्
५ मार्च	कृ. ०२ गुरौ उफा. अग्निपंचकः
५ मार्च	कृ. ०२ गुरौ हस्ते शनेर्वेधः, अग्निपंचकः
६ मार्च	कृ. ०३ शुक्रे हस्ते भद्रा दोषः
६ मार्च	कृ. ०३ शुक्रे चित्रा. भद्रा दोषः
७ मार्च	कृ. ०४ शनौ स्वातौ भूशयनम्

॥ विवादास्पद नूतनगृहप्रवेश (वास्तु)-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ॥

सन२०२५	**वैशाख मास**
१६ अप्रे.	कृ. ०३ बुधे अनुरा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः
२१ अप्रे.	कृ. ०८ चंद्रे उषा. लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने चं ८; गु १२)
२५ अप्रे.	कृ. १२ शुक्रे उभा. बुधस्य युतिः
२६ अप्रे.	कृ. १३ शनौ उभा. वैधृतिः, बुधस्य युतिः
२६ अप्रे.	कृ. १३ शनौ रेवत्यां वैधृतिः
३० अप्रे.	शु. ०३ बुधे रोहि. लग्नाऽभावः (वृषे लग्नस्थ चंद्रः नेष्ट सू १२, मिथुने चं; गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२)
१ मई	शु. ०४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः
७ मई	शु. १० बुधे उफा. केतोर्युतिः
८ मई	शु. ११ गुरौ उफा. केतोर्युतिः
१० मई	शु. १३ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः
	ज्येष्ठ मास
१७ मई	कृ. ०५ शनौ उषा. लग्नाऽभावः (वृश्चिके गु ८)
२२ मई	कृ. १० गुरौ उभा. शनेर्युतिः

२३ मई	कृ. ११ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
२३ मई	कृ. ११ शुक्रे रेवत्यां केतोर्वेधः
२४ मई	कृ. १२ शनौ रेवत्यां केतोर्वेधः
२८ मई	शु. ०२ बुधे मृगे गुरोर्युतिः
४ जून	शु. ०९ बुधे उफा. केतोर्युतिः
६ जून	शु. ११ शुक्रे चित्रा. राहोर्वेधः
७ जून	शु. १२ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे चित्रा. शुक्रस्य बालत्व दोषः
७ फर.	कृ. ०६ शनौ चित्रा. लग्नाऽभावः (कुंभे चं ८; सू; मं १२, मीने बु; शु; रा १२, मिथुने सू; मं ८)
११ फर.	कृ. ०९ बुधे अनुरा. लग्नाऽभावः (मीने बु; शु; रा १२)
१९ फर.	शु. ०२ गुरौ उभा. शनेर्युतिः
२० फर.	शु. ०३ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
२१ फर.	शु. ०४ शनौ रेवत्यां लग्नाऽभावः (मिथुने मं ८, सिंहे चं; श ८)

|| विवादास्पद जीर्णगृहप्रवेश (वास्तु)-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ||

सन२०२५	**वैशाख मास**
१४ अप्रे.	कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने गु १२, सिंहे बु; शु; श; रा ८; मं १२, कन्या. सू ८)
२३ अप्रे.	कृ. १० बुधे धनि. भद्रा दोषः
२३ अप्रे.	कृ. १० बुधे शते लग्नाऽभावः (कन्या. सू ८)
२४ अप्रे.	कृ. ११ गुरौ शते लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने गु १२)
३ मई	शु. ०६ शनौ पुष्ये भौमस्य युतिः
	ज्येष्ठ मास
३१ मई	शु. ०५ शनौ पुष्ये लग्नाऽभावः (मिथुने सू; बु १२, सिंहे शु; श ८; चं; मं १२, वृश्चिके गु ८)
७ जून	शु. १२ शनौ स्वातौ लग्नाऽभावः (सिंहे श ८, कन्या. शु ८; मं; के १२, वृश्चिके बु; गु ८; चं १२)
	श्रावण मास
१ अग.	शु. ०८ शुक्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (धनुषि सू; बु ८)
९ अग.	शु. १५ शनौ धनि. लग्नाऽभावः (वृश्चिके गु; शु ८, धनुषि सू; बु ८)
	कार्तिक मास
२१ अक्टु	कृ. ०९ बुधे पुष्ये लग्नाऽभावः (वृश्चिके गु ८;मं; बु १२, धनुषि चं ८)
३१ अक्टु	शु. ०९ शुक्रे धनि. भौमस्य वेधः
१ नवं.	शु. १० शनौ शते सूर्यस्य वेधः
	मार्गशीर्ष मास
२७ नवं.	शु. ०७ गुरौ धनि. लग्नाऽभावः (वृश्चिके बु १२, धनुषि गु ८; सू; मं; शु १२, कुंभे चं १२, मीने १४।०५ उपरांत चं १२; बु ८; रा १२)
२७ नवं.	शु. ०७ गुरौ शते राहोर्युतिः
२८ नवं.	शु. ०८ शुक्रे शते राहोर्युतिः
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
१८ फर.	शु. ०१ बुधे शते राहु युतिः

|| विवादास्पद देव प्रतिष्ठा-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ||

सन२०२५	**वैशाख मास**
१४ अप्रे.	कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने गु १२, कन्या. सू ८)
१६ अप्रे.	कृ. ०३ बुधे अनुरा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः
२० अप्रे.	कृ. ०७ रवौ उषा. लग्नाऽभावः (कन्या. सू ८)
३० अप्रे.	शु. ०३ बुधे रोहि. लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने चं; गु १२)
१ मई	शु. ०४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः
२ मई	शु. ०५ शुक्रे पुनर्वसौ लग्नाऽभावः (कन्या. सू ८)
३ मई	शु. ०६ शनौ पुनर्वसौ लग्नाऽभावः (वृषे सू १२, मिथुने गु १२)
३ मई	शु. ०६ शनौ पुष्ये भौमस्य युतिः
४ मई	शु. ०७ रवौ पुष्ये भौमस्य युतिः
७ मई	शु. १० बुधे उफा. केतोर्युतिः
८ मई	शु. ११ गुरौ उफा. केतोर्युतिः
९ मई	शु. १२ शुक्रे हस्ते शनेर्वेधः
१० मई	शु. १३ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः
१२ मई	शु. १५ चंद्रे स्वातौ भद्रा दोषः
	ज्येष्ठ मास
१८ मई	कृ. ०५ रवौ उषा. लग्नाऽभावः (वृषे बु १२, मिथुने चं ८; सू १२, कन्या. बु ८; के १२)
१९ मई	कृ. ०६ चंद्रे श्रवणे सूर्यस्य वेधः
२८ मई	शु. ०२ बुधे मृगे गुरोर्युतिः
३१ मई	शु. ०५ शनौ पुष्ये लग्नाऽभावः (मिथुने सू; बु १२)
४ जून	शु. ०९ बुधे उफा. केतोर्युतिः
५ जून	शु. १० गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
६ जून	शु. ११ शुक्रे हस्ते व्यतिपातः
६ जून	शु. ११ शुक्रे चित्रा. राहोर्वेधः
७ जून	शु. १२ शनौ चित्रा. राहोर्वेधः
७ जून	शु. १२ शनौ स्वातौ लग्नाऽभावः (कन्या.शु ८; मं; के १२)
८ जून	शु. १२ रवौ स्वातौ लग्नाऽभावः(वृषे शु १२, मिथुने सू १२)
	आषाढ़ मास
७ जुला	शु. १२ चंद्रे अनुरा. गुरोः बालत्व दोषः
	श्रावण मास
१२ जुला	कृ. ०२ शनौ उषा. लग्नाऽभावः (मिथुने चं ८; शु १२)
१२ जुला	कृ. ०२ शनौ श्रवणे लग्नाऽभावः (कन्या. मं; के १२, धनुषि बु ८)
१३ जुला	कृ. ०३ रवौ श्रवणे लग्नाऽभावः (मिथुने चं ८; शु १२)
१३ जुला	कृ. ०३ रवौ धनि. लग्नाऽभावः (कन्या. मं; के १२)
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
५ फर.	कृ. ०४ गुरौ हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः, शनेर्वेधः
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे चित्रा. शुक्रस्य बालत्व दोषः
७ फर.	कृ. ०६ शनौ चित्रा. लग्नाऽभावः (मीने बु; शु; रा १२, मिथुने सू; मं ८)
८ फर.	कृ. ०७ रवौ स्वातौ राहोर्वेधः
१८ फर.	शु. ०१ बुधे शते राहु युतिः
१९ फर.	शु. ०२ गुरौ उभा. शनेर्युतिः
२० फर.	शु. ०३ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
२१ फर.	शु. ०४ शनौ रेवत्यां लग्नाऽभावः (मिथुने मं ८)
२२ फर.	शु. ०५ रवौ अश्वि. केतोर्वेधः
	चैत्र मास
५ मार्च	कृ. ०२ गुरौ उफा. लग्नाऽभावः (मीने सू; मं; बु; रा १२)
५ मार्च	कृ. ०२ गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
६ मार्च	कृ. ०३ शुक्रे हस्ते भद्रा दोषः
६ मार्च	कृ. ०३ शुक्रे चित्रा. भद्रा दोषः
८ मार्च	कृ. ०५ रवौ स्वातौ भौमस्य वेधः

|| विवादास्पद उग्रदेवानां-देव प्रतिष्ठा-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ||

सन२०२५	**श्रावण मास**
१७ जुला	कृ. ०७ गुरौ रेवत्यां केतोर्वेधः
२८ जुला	शु. ०४ चंद्रे उफा. भौमस्य युतिः
३० जुला	शु. ०६ बुधे हस्ते शनेर्वेधः
३१ जुला	शु. ०७ गुरौ चित्रा. राहोर्वेधः
३ अग.	शु. ०९ रवौ अनुरा. सूर्यस्य वेधः

॥ संवत् २०८२, शाकः १९४७ (सन २०२५-२६) मध्ये विवादास्पद (अशुद्ध) विवाह, गेहारंभ, गृहप्रवेश, देव प्रतिष्ठा-दिवसादि विषये "शास्त्रीय स्पष्ट

४ अग.	शु. १० चंद्रे अनुरा. सूर्यस्य वेधः
८ अग.	शु. १४ शुक्रे उषा. भद्रा दोषः
९ अग.	शु. १५ शनौ श्रवणे लग्नाऽभावः (कन्या. के १२)
	भाद्रपद मास
१० अग.	कृ. ०१ रवौ शते लग्नाऽभावः (धनुषि सू; बु ८)
११ अग.	कृ. ०२ चंद्रे शते लग्नाऽभावः (कन्या. के १२)
१३ अग.	कृ. ०४ बुधे उभा. शनेर्युतिः
१३ अग.	कृ. ०४ बुधे रेवत्यां भौमस्य वेधः
१४ अग.	कृ. ०६ गुरौ रेवत्यां लग्नाऽभावः (कन्या. के १२)
१४ अग.	कृ. ०६ गुरौ अश्वि. केतोर्वेधः
१५ अग.	कृ. ०७ शुक्रे अश्वि. भद्रा दोषः
२५ अग.	शु. ०२ चंद्रे उफा. लग्नाऽभावः (कन्या. ०८।२७ यावत् चं १२; सू; के १२, धनुषि बु; शु ८)
२५ अग.	शु. ०२ चंद्रे हस्ते भौमस्य युतिः
२७ अग.	शु. ०४ बुधे चित्रा. राहोर्वेधः
२८ अग.	शु. ०५ गुरौ चित्रा. राहोर्वेधः
२८ अग.	शु. ०५ गुरौ स्वातौ लग्नाऽभावः (कन्या. सू; के १२, धनुषि बु; शु ८)
२९ अग.	शु. ०६ शुक्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (कन्या. सू; के १२)
३० अग.	शु. ०७ शनौ अनुरा. लग्नाऽभावः (धनुषि बु; शु ८; चं १२)
४ सितं	शु. १२ गुरौ उषा. लग्नाऽभावः (कन्या. सू; बु; के १२, धनुषि शु ८)
५ सितं	शु. १३ शुक्रे श्रवणे लग्नाऽभावः (कन्या. सू; बु; के १२, धनुषि शु ८)
	आश्विन मास
२४ सितं	शु. ०३ बुधे चित्रा. भौमस्य युतिः, राहोर्वेधः
२४ सितं	शु. ०३ बुधे स्वातौ भौमस्य युतिः
२५ सितं	शु. ०३ गुरौ स्वातौ वैधृतिः, भौमस्य युतिः
२७ सितं	शु. ०५ शनौ अनुरा. लग्नाऽभावः (कन्या. शु; के १२, धनुषि चं १२, मीने मं ८; रा १२)
२ अक्टु	शु. १० गुरौ उषा. लग्नाऽभावः (कन्या. शु; के १२)
२ अक्टु	शु. १० गुरौ श्रवणे लग्नाऽभावः (मीने मं ८; रा १२)
३ अक्टु	शु. ११ शुक्रे श्रवणे लग्नाऽभावः (कन्या. शु; के १२)
४ अक्टु	शु. १२ शनौ धनि. लग्नाऽभावः (कन्या. शु; के १२)
४ अक्टु	शु. १२ शनौ शते भौमस्य वेधः
५ अक्टु	शु. १३ रवौ शते भौमस्य वेधः

	कार्तिक मास
८ अक्टु	कृ. ०२ बुधे अश्वि. केतोर्वेधः
१० अक्टु	कृ. ०४ शुक्रे रोहि. व्यतिपातः
११ अक्टु	कृ. ०५ शनौ मृगे लग्नाऽभावः (मीने मं; बु ८; रा १२)
१२ अक्टु	कृ. ०६ रवौ मृगे लग्नाऽभावः (कन्या. के १२)
२४ अक्टु	शु. ०३ शुक्रे अनुरा. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८;चं; बु १२, मीने सू; मं ८; रा १२)
३१ अक्टु	शु. ०९ शुक्रे धनि. भौमस्य वेधः
१ नवं.	शु. १० शनौ शते सूर्यस्य वेधः
३ नवं.	शु. १३ चंद्रे उभा. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; मं; बु १२)
३ नवं.	शु. १३ चंद्रे रेवत्यां लग्नाऽभावः (मीने सू; शु ८; रा १२)
	मार्गशीर्ष मास
७ नवं.	कृ. ०२ शुक्रे रोहि. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; मं; बु १२, मीने सू; शु ८; रा १२)
८ नवं.	कृ. ०३ शनौ मृगे भद्रा दोषः
९ नवं.	कृ. ०५ रवौ पुनर्वसौ गुरोर्युतिः
१० नवं.	कृ. ०६ चंद्रे पुनर्वसौ गुरोर्युतिः
२६ नवं.	शु. ०६ बुधे श्रवणे लग्नाऽभावः (मीने बु ८; रा १२)
२७ नवं.	शु. ०७ गुरौ धनि. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; सू; मं; शु १२, मीने १४।०५ उपरांत चं १२; बु ८; रा १२)
३० नवं.	शु. १० रवौ उभा. लग्नाऽभावः (धनुषि गु ८; सू; मं; शु १२, मीने बु ८; रा १२)
१ दिसं	शु. ११ चंद्रे रेवत्यां व्यतिपातः
	पोष मास
६ दिसं	कृ. ०२ शनौ मृगे शुक्रस्य वृद्धत्व दोषः
७ दिसं	कृ. ०३ रवौ पुनर्वसौ शुक्रस्य वृद्धत्व दोषः, गुरोर्युतिः

॥ विवादास्पद चौल (मुण्डन)-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ॥

सन२०२५	**वैशाख मास**
१४ अप्रे.	कृ. ०१ चंद्रे स्वातौ लग्नाऽभावः (कन्या. सू ८, तुला. गु ८)
१७ अप्रे.	कृ. ०४ गुरौ ज्येष्ठा. भौमस्य वेधः
१८ अप्रे.	कृ. ०५ शुक्रे ज्येष्ठा. भौमस्य वेधः
१ मई	शु. ०४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः
९ मई	शु. १२ शुक्रे हस्ते शनेर्वेधः
	ज्येष्ठ मास
२८ मई	शु. ०२ बुधे मृगे गुरोर्युतिः
५ जून	शु. १० गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
६ जून	शु. ११ शुक्रे हस्ते व्यतिपातः
६ जून	शु. ११ शुक्रे चित्रा. राहोर्वेधः
	आषाढ़ मास
७ जुला	शु. १२ चंद्रे ज्येष्ठा. गुरोः बालत्व दोषः
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
५ फर.	कृ. ०४ गुरौ हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे हस्ते शुक्रस्य बालत्व दोषः, शने
६ फर.	कृ. ०५ शुक्रे चित्रा. शुक्रस्य बालत्व दोषः
१८ फर.	शु. ०१ बुधे शते राहु युतिः

॥ विवादास्पद द्विरागमन-दिवसास्तेन शास्त्रार्थः ॥

सन२०२५	**वैशाख मास**
१६ अप्रे.	कृ. ०३ बुधे अनुरा. भद्रा दोषः, व्यतिपातः
२३ अप्रे.	कृ. १० बुधे धनि. भद्रा दोषः
२५ अप्रे.	कृ. १२ शुक्रे उभा. बुधस्य युतिः
१ मई	शु. ०४ गुरौ मृगे गुरोर्युतिः
७ मई	शु. १० बुधे उफा. केतोर्युतिः
८ मई	शु. ११ गुरौ उफा. भद्रा दोषः, केतोर्युतिः
९ मई	शु. १२ शुक्रे हस्ते शनेर्वेधः
	मार्गशीर्ष मास
१७ नवं.	कृ. १३ चंद्रे चित्रा. शनेर्वेधः
१ दिसं	शु. ११ चंद्रे रेवत्यां व्यतिपातः
सन२०२६	**फाल्गुन मास**
१८ फर.	शु. ०१ बुधे शते राहु युतिः
१९ फर.	शु. ०२ गुरौ उभा. शनेर्युतिः
२० फर.	शु. ०३ शुक्रे उभा. शनेर्युतिः
	चैत्र मास
५ मार्च	कृ. ०२ गुरौ हस्ते शनेर्वेधः
६ मार्च	कृ. ०३ शुक्रे हस्ते भद्रा दोषः
६ मार्च	कृ. ०३ शुक्रे चित्रा. भद्रा दोषः

अग्रेऽभावः

॥ अथ विवाहभेदाः ॥

धर्मसिन्धु - ४८३

ब्राह्मो दैव आर्षः प्राजापत्य आसुरो गान्धर्वो राक्षसः पैशाच इत्यष्टौ **B** विवाहाः । योग्यवरमाहूयालंकृत्य कन्यार्पणं दैवः । वरादेकं गोमिथुनं द्वे वा गृहीत्वा तस्मै कन्याऽर्पणमार्षः । इदं गोमिथुनग्रहणं न निन्दितम्, तस्य कुमारीपूजनार्थत्वेन कन्याविक्रयाभावात् । त्वयैतयैव सह गृहधर्म आचरणीय एतस्या जीवनपर्यन्तं विवाहानन्तरं चतुर्थाश्रमो वा न कार्य इत्याभाष्य कन्यादानं प्राजापत्यः । ज्ञातिभ्यो यथेच्छं धनं दत्वा विवाह आसुरः । वरवध्वोरिच्छयान्योन्यसंयोगो गान्धर्वः । युद्धादिना बलाद्धरणं राक्षसः । चौर्येण कन्याहरणं पैशाचः ।

ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच ये आठ प्रकार के विवाह होते हैं । योग्य वर को बुलाकर अलंकृत करके कन्यादान विधि से उसे देने को ब्राह्म विवाह कहते हैं । यज्ञ में ऋत्विक् के कार्य करने वाले को अलंकृत करके कन्या के अर्पण को दैव कहते है । वर से एक जोड़ी या दो जोड़ी गाय और बैल लेकर उसे कन्या के अर्पण को आर्ष विवाह कहते हैं । यह गाय बैल की जोड़ी लेना निन्दित नहीं है, क्योंकि वह कुमारी पूजन के निमित्त होने से कन्या विक्रय नहीं है । आप इसी के साथ जीवन पर्यन्त गृहस्थ धर्म का आचरण करे तथा विवाह के बाद सन्यास आश्रम में न जायँ ऐसा कह कर जो कन्यादान किया जाय उसे प्राजापत्य विवाह करते हैं । कन्या के भाई बन्धु की इच्छानुसार धन देकर विवाह करने को आसुर कहते हैं । वर और वधू की इच्छा से परस्पर संयोग को गान्धर्व विवाह कहते हैं । युद्ध आदि से जबर्दस्ती कन्या लेने को राक्षस विवाह कहते हैं । चोरी से कन्या-हरण को पैशाच विवाह कहते हैं ।

B. १. मनुः - 'ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः । गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ आठों विवाहों के याज्ञवल्क्योक्त लक्षण - 'ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलंकृता । तजः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम् ॥ यज्ञस्थ ऋत्विजे दैव आदायार्षस्तु गोद्वयम् । चतुर्दश प्रथमजः पुनात्युत्तरजश्च षट् ॥ इत्युक्त्वा चरतां धर्म सह वा दीयतेऽर्थिने । स कायः पावयेत्तजः षट् षड् वंश्यान् सहात्मना ॥ आसुरो द्रविणादानाद् गान्धर्वः समयान्मिथः । राक्षसो युद्धहरणात् पैशाचः कन्यकाच्छलात् ॥'

नारद ने ब्राह्म आदि चार विवाहों में ही काल का नियम बतलाया है - 'प्राजापत्यब्राह्मदैवविवाहा ऋषिसंज्ञकाः । उक्तकालेषु कर्तव्याश्चत्वारः फलदायकाः ॥ गान्धर्वासुरपैशाच्यराक्षसास्याश्च सर्वदा ।' गृह्यपरिशिष्ट में भी कहा है - 'धर्म्येषु विवाहेषु कालपरीक्षणं नाधर्म्येषु' इसलिये गृह्यकार का - 'सार्वकालमे के विवाहम्' यह वचन गान्धर्वादि चार विवाहों अथवा अत्यासन्न ऋतुकाल वाली कन्या के लिये है ।

बल से अपहृत कन्याओं के सम्बन्ध में वसिष्ठ बौधायन ने कहा है - 'बलादपहृता कन्या मन्त्रैर्यदि न संस्कृता । अन्यस्मै विधिवद्देया यथा कन्या तथैव सा ॥' इति ।

धर्मसिन्धु - ४८४, अथ विवाहभेदाः

पूर्वचतुषु पूर्वः पूर्वः श्रेष्ठः । उत्तरेषूत्तर उत्तरो निन्द्यः । तत्र विप्रस्य ब्राह्मदैवौ प्रशस्तो । क्षत्रियस्य गान्धर्वराक्षसौ । आसुरो वैश्यस्य आर्षप्राजापत्यपैशाचाः सर्वेषाम् । संकटे राक्षसभिन्नाः पञ्चः । सर्वेष्वपि विवाहेषु तत्तत्प्रकारैः कन्यापरिग्रहोत्तरं स्वस्वगृह्यरीत्या विवाहहोमादिविधिरावश्यकः । दानविधिना दानं सर्वत्र न भवति ।

ले. - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री), मुम्बई

॥ अथ विवाहप्रकरणं व्याख्यायते ॥ - पीयूषधारा पृ. ३०

तत्र विवाहशब्देन पाणिग्रहणाख्यः संस्कारविशेष उच्यते - ते च विवा अष्टौ । उक्तञ्च मनुना -

'चतुर्णामपि वर्णानां प्रेत्य चेह हिताहितान् । अष्टाविमान्समासेन स्त्रीविवाहान्निबोधत ॥ ब्राह्मौ दैवतस्था चाऽऽर्षः प्राजापत्यस्तथाऽऽसुरः । गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ।' अथ अष्टविधाविवाहलक्षणानि -

एषां लक्षणान्याह याज्ञवल्क्यः -

१. 'ब्राह्मो विवाह आहूय दीयते शक्त्यलङ्कृता । तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम् ॥
२. यज्ञस्थऋत्विजे दैव (३) आदायार्षस्तु गोद्वयम् । चतुर्दश प्रथमजः पुनात्युत्तरजश्च षट् ॥
४. इत्युक्त्वाचरतां धर्म सह या दीयतेऽर्थिने । स कायः पावयेत्तज्जः षट् षड्वंश्यान्सहात्मना
५. आसुरो द्रविणादानाद् (६) गान्धर्वः समयान्मिथः ।
७. राक्षसो युद्धहरणात् (८) पैशाचः कन्यकाछलात् ॥' इति ।

कायः प्राजापत्यः । छलं वंचना । एत्रेषु कालनियमानियमव्यवस्था -

एषां कालनियममाह नारदः - 'प्राजापत्यब्राह्मादैवविवाहा ऋषिसंज्ञकाः । उक्तकाले कर्त्तव्याश्चत्वारः फलदायकाः ॥ गान्धर्वासुरकपैशाच्यराक्षसास्याश्च सर्वदा ।' इति । अत एव 'सार्वकालमेके विवाहम् ।' इति गृह्यकारवचनं गान्धर्वादिविवाहविषयम् ।

विवाह प्रकरण की व्याख्या - पाणिग्रहण संस्कार विशेष का नाम विवाह है । विवाह आठ प्रकार के होते हैं - (१) ब्राह्म, (२) दैव, (३) आर्ष, (४) प्राजापत्य, (५) आसुर, (६) गन्धर्व (७) राक्षस, (८) पैशाच ।

(१) अलंकारादिकों से वर-कन्या का पूजन कर विचारवान् विवेकीवर को दान स्वरूप में कन्या ब्राह्म विवाह है । इससे उत्पन्न प्रजा पूर्वापर की २१ पीढ़ी तक को पवित्र करती है ।

(२) ज्योतिष्टोमादि यज्ञ में यथाविधि यज्ञ सम्पन्न कराने वाले ब्राह्मण की अलंकरणों से पूजा कर कन्या दी जाती है, यह दैव विवाह है । इससे उत्पन्न प्रथम सन्तान १४ पीढ़ी तक (अपने पूर्व की) प करती है ।

(३) अर्थ ग्रहण लोभ की भावना रहित भावना से, वाग (वाणी) की सिद्धि के लिए एक या दो ज गौ (गाय और बैल) वर से लेकर इसे दान में ज कन्या दी जाती है उसे आर्ष विवाह कहते हैं ।

(४) पूर्व में अलंकारादिकों से कन्या पूजन कर, 'तुम दोनों आपस में (स्त्री-पुरुष) धर्म स्वीकार क इत्यादि आदेश के साथ जो कन्या दान दिया जाता है उसे प्राजापत्य विवाह कहते है ।

(५) कन्या के सम्बन्धियों तथा कन्या के पिता की यथा शक्ति शास्त्रीय धन परिमाणमापक धन दे किये गये विवाह का नाम आसुर विवाह है ।

(६) वरकन्या में अन्योऽन्य परस्पर के अनुराग के उत्पन्न सम्बन्ध का नाम गन्धर्व विवाह है । इसे क सम्भव विवाह कहते हैं ।

(७) बलात्कार से कन्या का अपहरण राक्षस विवाह कहलाता है । कन्या पक्षीय समाज को नष्ट उनका अंगच्छेद आदिक करते हुए तोड़-फोड़ के साथ 'हे पिता, हे भ्राता, मैं अनाथ हूँ मेरा अपहरण रहा है' इत्यादि चिल्लाती हुई अश्रुप्रवाह करती हुई कन्या के अपहरण पूर्वक किये गये विवाह का राक्षस विवाह है ।

(८) मद्य मद विह्वल निर्जन देश में शील संरक्षण रहित निद्राऽभिभूत मैथुन मात्र प्रवृत्ति जिस विवाह में हो उसे पैशाच विवाह कहा है ।

इस प्रकार उत्तरोत्तर संख्या के विवाह को कम गुण कहते हुए ब्राह्म विवाह सर्वोत्तम और पै विवाह अत्यन्त निन्द्य है ।

ले. - पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री), मु

☞ अतिरिक्त सुविधा के अन्तर्गत (चतुर्मासारम्भ पर्यन्त)

२० मार्च से २ अप्रेल तक, श्री चैत्र शुक्लपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

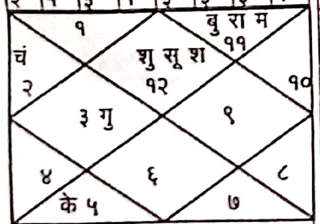
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
क्षयः	१	गु	५५	३८	२८	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
सिंधारा	२	शु	४९	५०	२६	३४	रेव	४९	३४	२६	२८	ब्र	३८	५३	२२	११	बा	२२	५१	१५	४७	२९/५८	६/३८	६/३८	२९	३०	२०	मेषे २६।२८	११।०५।०६।३४	५९।३९
गणगोर	३	श	४३	२९	२४	०१	अश्वि	४५	०३	२४	३८	ऐ	३०	५४	१८	५९	तै	१६	४४	१३	१९	३०/०३	३७	३८	३०	१	२१	मेषे	११।०६।०६।१३	५९।३७
काल	४	र	३६	५२	२१	२१	भर	४०	१८	२२	४३	वै	२२	३८	१५	३९	व	१०	१३	१०	४१	०७	३६	३९	१	२	२२	वृषे २८।१४	११।०७।०५।५०	५९।३५
सुस्थिर	५	सो	३०	१७	१८	४२	कृति	३५	३६	२०	४९	वि	१४	२०	१२	१९	ब	३	३५	८	०१	११	३५	३९	२	३	२३	वृषे	११।०८।०५।२५	५९।३२
मातङ्ग	६	मं	२४	०१	१६	१०	रोहि	३१	१४	१९	०३	प्री	६/५८	१४/३८	१/२९	०३/५७	तै	२४	०१	१६	१०	१५	३४	४०	३	४	२४	मिथु. ३०।१५	११।०९।०४।५७	५९।३०
अमृत	७	बु	१८	१५	१३	५१	मृग	२७	२५	१७	३०	सौ	५१	१७	२७	०३	व	१८	१५	१३	५१	१९	३२	४०	४	५	२५	मिथु.	११।१०।०४।२७	५९।२८
रामनव	८	गु	१३	१४	११	४९	आर्द्रा	२४	२०	१६	१५	शो	४४	४४	२४	२५	ब	१३	१४	११	४९	२३	३१	४१	५	६	२६	मिथु.	११।११।०३।५५	५९।२६
लुम्बक	९	शु	९	००	१०	०६	पुन	२२	०६	१५	२०	अ	३८	५४	२२	०४	कौ	९	००	१०	०६	२७	३०	४१	६	७	२७	कर्के ९।३२	११।१२।०३।२१	५९।२३
मित्र	१०	श	५	४३	८	४६	पुष्य	२०	४६	१४	४७	सु	३३	४९	२०	०१	ग	५	४३	८	४६	३२	२९	४२	७	८	२८	कर्के	११।१३।०२।४४	५९।२१
ए.व्र.	११	र	३	२२	७	४९	श्ले	२०	२२	१४	३७	धृ	२९	२९	१८	१६	वि	३	२२	७	४९	३६	२८	४२	८	९	२९	सिंहे १४।३७	११।१४।०२।०५	५९।१९
प्र.व्र.	१२	सो	१	५६	७	१३	मघा	२०	५४	१४	४८	शू	२५	५४	१६	४८	बा	१	५६	७	१३	४०	२७	४३	९	१०	३०	सिंहे	११।१५।०१।२३	५९।१६
धूम्र	१३	मं	१	२९	७	०१	पूफा	२२	२१	१५	२२	गं	२३	०३	१५	३९	तै	१	२९	७	०१	४४	२६	४३	१०	११	३१	कन्या २१।३४	११।१६।००।४०	५९।१४
प्रवर्धमा	१४	बु	१	५८	७	१२	उफा	२४	४५	१६	१८	वृ	२०	५९	१४	४८	व	१	५८	७	१२	४८	२५	४४	११	१२	१	कन्या	११।१६।५९।५४	५९।१२
पूर्णिमा	१५	गु	३	२६	७	४६	हस्त	२८	०६	१७	३८	ध्रु	१९	४०	१४	१६	ब	३	२६	७	४६	५२	२३	४४	१२	१३	२	कन्या	११।१७।५९।०६	५९।०९

केतकी अहर्गणः ५४६२ वसंतर्तू रविरुत्तरे, मार्च-अप्रेल २०२६

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
संवत्सरारंभःगुरुवासरे [Bशयन व्र.,शिवशक्ति पू.,सव्वाल १०,E
चंद्रदर्शनम् (मु.३०), पंचक समाप्तिः २६।२८,श्रृंगार (सिंधारा) C
मन्वादि, मत्स्योत्पत्तिः, अरुन्धती व्रतं पूजनञ्च, गणगौरी A
भ. १०।४१ उ. २१।२१ या., भा. चैत्रारंभः [D पूभा. भौमः २०।५७
कल्पादि, डोलोत्सवः [G (सौरः २२।२१) [H शुक्रः २७।५३
स्कन्द षष्ठी व्र. [C देशाचारे, सायन मेषे भानुः १९।५५, D
भ.१३।५१ उ. २४।४७ या., अशोककलिका प्राशनं, मेषे अश्वि. H
भवान्युत्पत्तिः,श्री रामनवमी [F मीने भौमः १५।०४ [I शनिः१३।१७
उदया नवमी [A पूजा, मनोरथ तृतीया व्र., सौभाग्य B
भ. २०।१५ उ., शत.-२ राहुः २३।२९, मघा.-४ केतुः २३।२९
भ. ७।४९ या., कामदा ११ व्र., लक्ष्मीकान्त दोलोत्सवः
प्रदोषः, हरि दमनोत्सवः [E मार्गी बुधः ११।४०, उभा.-३ I
जैन महावीर जयंती, शिव पूजन विशेषः, रेव. रविः १९।२३ G
भ. ७।१२ उ. १९।२६ या., मन्वादि, पूर्णिमा व्रतं, अप्रेल ४ J
श्री हनुमज्जयंती, पूर्णिमा पुण्यं, बैशाख स्नानारंभः, F
[J ता. ३०, पूभा. बुधः १८।२३

अयनांशाः २४।१२।२९

पं.५० चै.शु. ५ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	२	११	११	१०	४
०८	२१	१४	२०	२६	१०	१३	१३
१३	५३	२८	५८	२५	१२	३८	३८
१०	१०	०३	०२	५३	५२	०८	०८
५९	४७	१६	२	७४	७	३	३
२८	०४	०१	२५	०७	२९	११	११
उभा	पूभा	श	पुन	रे	उभा	श	पूफा
२	१	३	१	३	३	३	१



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

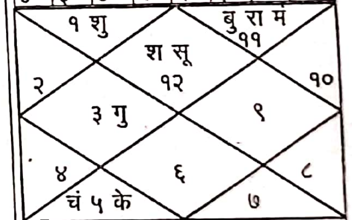
ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. मार्च	मेष दिवा	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या सायँ	तुला रात्रौ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन प्रातः
११।०५।१३।५४	२ शु	२०	७।४९	९।२६	११।२२	१।३७	३।५७	६।१४	८।२९	१०।४९	१।०७	३।१२	४।५५	६।२३
११।०६।१३।३३	३ श	२१	७।४५	९।२२	११।१८	१।३३	३।५३	६।१०	८।२५	१०।४५	१।०३	३।०८	४।५१	६।१९
११।०७।१३।१०	४ र	२२	७।४१	९।१८	११।१४	१।२९	३।४९	६।०६	८।२२	१०।४१	१२।५९	३।०४	४।४७	६।१५
११।०८।१२।४४	५ चं	२३	७।३८	९।१४	११।१०	१।२५	३।४५	६।०२	८।१८	१०।३७	१२।५५	३।००	४।४३	६।११
११।०९।१२।१६	६ मं	२४	७।३४	९।१०	११।०६	१।२१	३।४१	५।५८	८।१४	१०।३३	१२।५१	२।५६	४।३९	६।०८
११।१०।११।४६	७ बु	२५	७।३०	९।०६	११।०२	१।१७	३।३७	५।५४	८।१०	१०।२९	१२।४७	२।५२	४।३५	६।०४
११।११।११।१४	८ गु	२६	७।२६	९।०२	१०।५८	१।१३	३।३३	५।५०	८।०६	१०।२५	१२।४३	२।४८	४।३१	६।००
११।१२।१०।३९	९ शु	२७	७।२२	८।५८	१०।५४	१।०९	३।२९	५।४६	८।०२	१०।२१	१२।४०	२।४४	४।२७	५।५६
११।१३।१०।०२	१० श	२८	७।१८	८।५४	१०।५०	१।०५	३।२५	५।४२	७।५८	१०।१७	१२।३६	२।४०	४।२३	५।५२
११।१४।०९।२३	११ र	२९	७।१४	८।५०	१०।४६	१।०१	३।२१	५।३८	७।५४	१०।१३	१२।३२	२।३६	४।१९	५।४८
११।१५।०८।४१	१२ चं	३०	७।१०	८।४६	१०।४२	१२।५७	३।१७	५।३४	७।५०	१०।०९	१२।२८	२।३२	४।१५	५।४४
११।१६।०७।५७	१३ मं	३१	७।०६	८।४२	१०।३९	१२।५३	३।१३	५।३०	७।४६	१०।०५	१२।२४	२।२८	४।११	५।४०
११।१७।०७।११	१४ बु	१	७।०२	८।३८	१०।३५	१२।४९	३।०९	५।२६	७।४२	१०।०१	१२।२०	२।२४	४।०८	५।३६
११।१८।०६।२२	१५ गु	२	६।५८	८।३४	१०।३१	१२।४५	३।०६	५।२२	७।३८	९।५७	१२।१६	२।२०	४।०४	५।३२

मास फलम्

पूर्णिमा हस्त युक्त होने से समर्घता हो । पूर्वा भाद्रपद पर मंगल होने से तिल, वस्त्र, कपास, सुपारी आदि महँगे हो । अश्विनी में शुक्र होने से ब्राह्मण जाति में विरोध हो । जौ, तिल, उड़द कम हों । अश्विनी में स्थित शुक्र अश्वपालकों को पीड़ित करता है ।

अयनांशाः २४।१२।३०

पं.५१ चै.शु.१२ सो. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	१०	२	०	११	१०	४
१५	२७	१७	२१	०५	११	१३	१३
०८	२२	५८	१८	०४	०५	१५	१५
४७	१७	२३	४५	०१	११	५४	५४
५९	४६	४६	३	७३	७	३	३
१४	५६	०६	४१	५३	२८	११	११
उभा	पूभा	श	पुन	अ	उभा	श	म
४	३	४	१	२	३	२	४



१०

३ अप्रेल से १७ अप्रेल तक, श्री वैशाख कृष्णपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक | वसंतर्तू रविरुत्तरे चैत्रकृष्णेति गुर्जराः, अप्रेल २०२६

गाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
सल	१	शु	५	५६	८	४५	चित्रा	३२	२८	१९	२२	व्या	१९	१०	१४	०३	कौ	५	५६	८	४५	३०/५६	६/२२	६/४५	१३	१४	३	तुला. ६।२७	११।१८।५८।१५	५९।०७	
सिद्धि	२	श	९	२९	१०	०९	स्वा	३७	५२	२१	३०	ह	१९	२९	१४	०९	ग	९	२९	१०	०९	३१/००	२१	४५	१४	१५	४	तुला.	११।१९।५७।२२	५९।०५	भ. २३।०० उ.
.व्र.	३	र	१४	०३	११	५८	विशा	४४	१३	२४	०१	व	२०	३४	१४	३४	वि	१४	०३	११	५८	०४	२०	४६	१५	१६	५	वृश्चि. १७।२१	११।२०।५६।२७	५९।०२	भ. ११।५८ या., चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २२।०१, भर. शुक्रः २३।३१
मानस	४	सो	१९	३३	१४	०८	अनु	५१	२०	२६	५१	सि	२२	२१	१५	१६	बा	१९	३३	१४	०८	०९	१९	४६	१६	१७	६	वृश्चि.	११।२१।५५।२९	५९।००	अनुसूया जयंती, उभा. भौमः २१।३०
मुद्गर	५	मं	२५	४१	१६	३४	ज्ये	५८	५२	२९	५१	व्य	२४	३६	१६	०८	तै	२५	४१	१६	३४	१३	१८	४७	१७	१८	७	धनु. २९।५१	११।२२।५४।३०	५८।५८	
ध्वजा	६	बु	३१	५८	१९	०४	मूल	...	...	...	...	व	२६	५९	१७	०४	व	३१	५८	१९	०४	१७	१७	४८	१८	१९	८	धनु.	११।२३।५३।२८	५८।५६	भ. १९।०४ उ.
धूम्र	७	गु	३७	५२	२१	२५	मूल	६	२०	८	४८	प	२९	०५	१७	५४	वि	५	०२	८	१७	२१	१६	४८	१९	२०	९	धनु.	११।२४।५२।२३	५८।५३	भ. ८।१७ या.
प्रवर्धमा	८	शु	४२	४६	२३	२१	पूषा	१३	०५	११	२९	शि	३०	३२	१८	२८	बा	१०	३०	१०	२७	२५	१५	४९	२०	२१	१०	मक. १८।०५	११।२५।५१।१७	५८।५१	बूढो बास्योड़ो, मीने बुधः २६।१४
राक्षस	९	श	४६	११	२४	४२	उषा	१८	३७	१३	४०	सि	३०	५४	१८	३५	तै	१४	४३	१२	०७	२९	१४	४९	२१	२२	११	मक.	११।२६।५०।०७	५८।४९	
गद	१०	र	४७	४८	२५	२०	श्रव	२२	३१	१५	१३	सा	२९	५६	१८	११	व	१७	१५	१३	०७	३३	१३	५०	२२	२३	१२	कुंभे २७।४३	११।२७।४८।५६	५८।४७	भ. १३।०७ उ. २५।२० या., पंचक प्रारम्भः २७।४३
ए.व्र.	११	सो	४७	२६	२५	१०	धनि	२४	३४	१६	०१	शु	२७	२८	१७	११	ब	१७	५३	१३	२१	३७	१२	५०	२३	२४	१३	कुंभे	११।२८।४७।४३	५८।४४	वरुथिनि ११ व्र., उभा. बुधः १६।०५
मृत्यु	१२	मं	४५	०६	२४	१३	शत	२४	४०	१६	०३	शु	२३	२६	१५	३३	कौ	१६	३२	१२	४७	४०	११	५१	२४	२५	१४	कुंभे	११।२९।४६।२७	५८।४२	मेषे अश्वि. रविः ८।४२ (सौरः ११।४३)
प्र.व्र.	१३	बु	४०	५६	२२	३२	पूभा	२२	५४	१५	१९	ब्र	१७	५३	१३	१९	ग	१३	१५	११	२८	४४	१०	५१	२५	२६	१५	मीने ९।३४	०।००।४५।०९	५८।४०	भ. २२।३२ उ., प्रदोषः, मासिकशिवरात्री व्र.
छत्र	१४	गु	३५	१०	२०	१३	उभा	१९	२९	१३	५६	ऐ	१०	५७	१०	३१	वि	८	१४	९	२६	४८	०८	५२	२६	२७	१६	मीने	०।०१।४३।४९	५८।३७	भ. ९।२६ या., कृत्ति. शुक्रः २०।४६
अमाव.	३०	शु	२८	०९	१७	२३	रेव	१४	४२	१२	००	वै	३/५३	५३/५४	७/२७	१७/४१	च	१	४९	६	५१	५२	०७	५२	२७	२८	१७	मेषे १२।००	०।०२।४२।२६	५८।३५	पंचक समाप्तिः १२।००, देवपितृकार्येऽमा., उभा.-४ शनिः १३।५१

अयनांशाः २४।१२।३१

पं.५२ बै.कृ. ४ सो. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	१०	२	०	११	१०	४
२२	०२	२४	२९	१३	११	१२	१२
०२	५०	२३	४८	४०	५७	५३	५३
४४	२४	०७	०८	३०	१६	३९	३९
५९	४६	६५	४	७३	७	३	३
००	४७	२४	५१	३९	२४	१०	१०
रे	पूभा	पूभा	पुन	भ	उभा	श	म
२	४	२	१	१	३	२	४



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अप्रे.	मेष प्रातः	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला सायँ	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
११।१९।०५।३२	१ शु	३	६।५४	८।३०	१०।२७	१२।४२	३।०२	५।१८	७।३४	९।५३	१२।१२	२।१६	४।००	५।२८
११।२०।०४।३८	२ श	४	६।५०	८।२६	१०।२३	१२।३८	२।५८	५।१४	७।३०	९।४९	१२।०८	२।१३	३।५६	५।२४
११।२१।०३।४३	३ र	५	६।४६	८।२३	१०।१९	१२।३४	२।५४	५।११	७।२६	९।४६	१२।०४	२।०९	३।५२	५।२०
११।२२।०२।४५	४ चं	६	६।४२	८।१९	१०।१५	१२।३०	२।५०	५।०७	७।२२	९।४२	१२।००	२।०५	३।४८	५।१६
११।२३।०१।४५	५ मं	७	६।३८	८।१५	१०।११	१२।२६	२।४६	५।०३	७।१९	९।३८	११।५६	२।०१	३।४४	५।१२
११।२४।००।४३	६ बु	८	६।३४	८।११	१०।०७	१२।२२	२।४२	४।५९	७।१५	९।३४	११।५२	१।५७	३।४०	५।०८
११।२४।५९।३८	७ गु	९	६।३१	८।०७	१०।०३	१२।१८	२।३८	४।५५	७।११	९।३०	११।४८	१।५३	३।३६	५।०५
११।२५।५८।३१	८ शु	१०	६।२७	८।०३	९।५९	१२।१४	२।३४	४।५१	७।०७	९।२६	११।४४	१।४९	३।३२	५।०१
११।२६।५७।२२	९ श	११	६।२३	७।५९	९।५५	१२।१०	२।३०	४।४७	७।०३	९।२२	११।४०	१।४५	३।२८	४।५७
११।२७।५६।१०	१० र	१२	६।१९	७।५५	९।५१	१२।०६	२।२६	४।४३	६।५९	९।१८	११।३६	१।४१	३।२४	४।५३
११।२८।५४।५७	११ चं	१३	६।१५	७।५१	९।४७	१२।०२	२।२२	४।३९	६।५५	९।१४	११।३३	१।३७	३।२०	४।४९
११।२९।५३।४०	१२ मं	१४	६।११	७।४७	९।४३	११।५८	२।१८	४।३५	६।५१	९।१०	११।२९	१।३३	३।१६	४।४५
००।००।५२।२२	१३ बु	१५	६।०७	७।४३	९।३९	११।५४	२।१४	४।३१	६।४७	९।०६	११।२५	१।२९	३।१२	४।४१
००।०१।५१।०१	१४ गु	१६	६।०३	७।३९	९।३५	११।५०	२।१०	४।२७	६।४३	९।०२	११।२१	१।२५	३।०८	४।३७
००।०२।४९।३९	३० शु	१७	५।५९	७।३५	९।३२	११।४६	२।०६	४।२३	६।३९	८।५८	११।१७	१।२१	३।०४	४।३३

संक्रांति फलम्

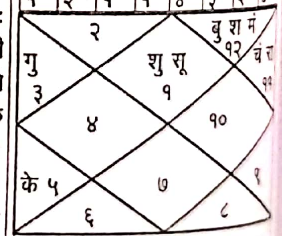
ता. १४ अप्रेल २०२६

वैशा. कृ. १२ भौमे मेषेऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. ८।४२ वारात् ४ नक्षत्रात् ४ वारनाम महोदरी चोरान् सुखदा नक्षत्रनाम महोदरी चोरान् सुखदा पूर्वान्हे १ प्रहर व्यापिनी नृपतीन् हन्ति, पूर्वे गमनमाग्नेयां दृष्टिः कौलवकरणे प्रविष्टा महर्घफलं सिंहवाहनं वृषभोपवाहनं कष्टकारक नीलवस्त्रं खड्गायुधं ताम्रपात्रं मिष्ठान्नभक्षणं रक्तचंदनलेपनं सर्पजातिः वकुलपुष्पं मोतीभूषणं हरित्कंचुकी गतालकावस्था (उभी) मु. १५ धान्यभावे महर्घता वत्स पश्चिमा. राहु दक्षिणे मूलं पाताले विवाहस्तंभो नैऋत्यां शुक्रोदयः पश्चिमायाम्। पुण्यकालः चंद्रे (स्टै.) २६।४२ से भौमे १४।४२ तक। (दान-मेष)।

अयनांशाः २४।१२।३२

पं. १ बै.कृ.१३ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	११	२	०	११	१०	४
००	०९	०५	२२	२४	१३	१२	१२
५२	५०	२९	३७	४२	०३	२५	२५
३२	२४	३०	४४	००	१५	०४	०४
५८	४६	८४	६	७३	७	३	३
४२	३१	१९	१७	१९	१४	११	११
अ	उभा	उभा	पुन	भ	उभा	श	म
१	२	१	१	४	३	२	४



☞ अतिरिक्त सुविधा के अन्तर्गत (चतुर्मासारम्भ पर्यन्त)

१८ अप्रेल से १ मई तक, श्री वैशाख शुक्लपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
सौम्य	१	श	२०	१६	१४	१३	अश्वि	८	५७	९	४१	प्री	४४	२३	२३	५२	ब	२०	१६	१४	१३	३१ ५६	६ ०६	६ ५३	२८	२९	१८	मेषे	०।०३।४१।०१	५८।३३
काल	२	र	११	५५	१०	५२	भर	२ ५६	३८ १०	७ २८	०९ ३४	आ	३४	४१	१९	५८	कौ	११	५५	१०	५२	३२ ००	०६	५३	२९	१	१९	वृषे १२।३०	०।०४।३९।३४	५८।३१
अक्षया	३	सो	३	३२	७	२९	रोहि	५०	०४	२६	०६	सौ	२५	०५	१६	०७	ग	३	३२	७	२९	०४	०५	५४	३०	२	२०	वृषे	०।०५।३८।०५	५८।२९
क्षयः	४	सो	५५	२९	२८	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
राक्षस	५	मं	४८	१२	२५	२०	मृग	४४	४०	२३	५६	शो	१५	५६	१२	२६	ब	२१	४५	१४	४५	०७	०४	५५	१	३	२१	मिथु. १२।५८	०।०६।३६।३४	५८।२६
मुसल	६	बु	४१	५७	२२	४९	आर्द्रा	४०	१७	२२	१०	अ	५ ५९	२९ ५७	४ ३०	०२ ०१	कौ	१४	५७	१२	०१	११	०३	५५	२	४	२२	मिथु.	०।०७।३५।००	५८।२४
सिद्धि	७	गु	३६	५८	२०	४९	पुन	३७	१०	२०	५४	धृ	५३	३१	२७	२६	ग	९	१९	९	४५	१५	०२	५६	३	५	२३	कर्के १५।०९	०।०८।३३।२४	५८।२२
उत्पात	८	शु	३३	२३	१९	२२	पुष्य	३५	२५	२०	११	शू	४८	१३	२५	१८	वि	५	०१	८	०१	१९	०१	५६	४	६	२४	कर्के	०।०९।३१।४६	५८।२०
मानस	९	श	३१	१२	१८	२९	श्ले	३५	०५	२०	०२	गं	४४	०४	२३	३८	बा	२	०८	६	५१	२२	००	५७	५	७	२५	सिंहे २०।०२	०।१०।३०।०६	५८।१८
मुद्गर	१०	र	३०	२४	१८	०९	मघा	३६	०६	२०	२५	वृ	४१	०१	२२	२३	तै	०	४०	६	१५	२६	५ ५६	५७	६	८	२६	सिंहे	०।११।२८।२४	५८।१६
ए.व्र.	११	सो	३०	५३	१८	१९	पूफा	३८	२०	२१	१८	ध्रु	३८	५५	२१	३२	व	०	३१	६	१०	३०	५८	५८	७	९	२७	कन्या २७।३५	०।१२।२६।३९	५८।१३
धाता	१२	मं	३२	२८	१८	५६	उफा	४१	३८	२२	३६	व्या	३७	४०	२१	०१	ब	१	३३	६	३४	३३	५७	५८	८	१०	२८	कन्या	०।१३।२४।५३	५८।११
प्र.व्र.	१३	बु	३४	५९	१९	५६	हस्त	४५	५१	२४	१७	ह	३७	१०	२०	४८	कौ	३	३८	७	२३	३७	५६	५९	९	११	२९	कन्या	०।१४।२३।०४	५८।०९
चर	१४	गु	३८	२२	२१	१६	चित्रा	५०	५१	२६	१६	व	३७	१९	२०	५१	ग	६	३६	८	३४	४०	५५	७ ००	१०	१२	३०	तुला. १३।१४	०।१५।२१।१४	५८।०७
पूर्णिमा	१५	शु	४२	३१	२२	५५	स्वा	५६	३६	२८	३३	सि	३८	०३	२१	०८	वि	१०	२३	१०	०४	४४	५५	००	११	१३	१	तुला.	०।१६।१९।२१	५८।०५

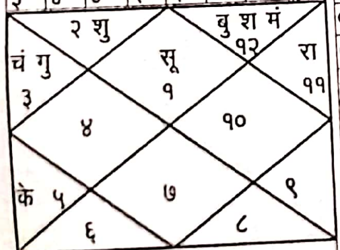
केतकी अहर्गणः ५४९१ वसंतर्तू रविरुत्तरे, अप्रेल-मई २०२६

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
चंद्रदर्शनम् (मु.१५) [E (सौरः २७।५७), रोहि. शुक्रः १९।२२, F
कल्पादि, शिवाजी जयंती, परशुराम जयंती, जिल्काद ११, D
भ. १७।५१ उ. २८।१६ या., युगादि, अक्षय तृतीया, C
[A बैशाखस्नानपूर्त्तिः, धर्म प्रीत्यर्थ जलकुंभदानं, मई ५ ता. ३१
मृगे रे. ६ ऽ।।।।ऽऽऽ।। रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(७), श्री B
श्री रामानुज जयंती, रेव. बुधः १५।३९ [F अगस्त्यास्तः २६।२३
भ. २०।४९ उ., गंगोत्पत्ति, रेव. भौमः २५।५५
भ. ८।०१ या. [D वृषे शुक्रः १४।१६
सीता ९, बुधास्तः पूर्वस्याम् ८।५५
[B आद्यशंकराचार्य जयंती, भा. बैशाखारंभः, पुन.-२ गुरुः १४।०१
भ. ६।१० उ. १८।१९ या., मोहिनी ११ व्र., भर. रविः २४।३२ E
भौमोदयः पूर्वस्याम् १२।२४
प्रदोषः [C सायन वृषे भानुः ६।४७, शनेरुदयः पूर्वस्याम् २१।५१
भ. २१।१६ उ., नृसिंह १४, मेषे अश्वि. बुधः ७।०८
भ. १०।०४ या., कूर्मोत्पत्तिः, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, A

अयनांशाः २४।१२।३३

पं. २ बै.शु. ६ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	११	२	१	११	१०	४
०७	१५	१६	२३	०३	१३	१२	१२
४२	१५	००	२४	१४	५३	०२	०२
४६	२२	४७	४७	२६	२१	४९	४९
५८	४६	९७	७	७३	७	३	३
२९	१७	५१	१६	०३	०२	१०	१०
अ	उभा	उभा	पुन	कृ	उभा	श	म
३	४	४	२	२	४	२	४



|| दैनिक लग्न प्रवेश सारणी || स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ||

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. अप्रे.	मेष प्रातः	वृष दिवा	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला सायं	वृश्चिक रात्रौ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
००।०३।४८।१४	१ श	१८	५।५५	७।३१	९।२८	११।४२	२।०२	४।१९	६।३५	८।५४	११।१३	१।१७	३।०१	४।२९
००।०४।४६।४६	२ र	१९	५।५१	७।२७	९।२४	११।३८	१।५९	४।१५	६।३१	८।५०	११।०९	१।१३	२।५७	४।२५
००।०५।४५।१७	३ चं	२०	५।४७	७।२३	९।२०	११।३५	१।५५	४।११	६।२७	८।४६	११।०५	१।०९	२।५३	४।२१
००।०६।४३।४५	५ मं	२१	५।४३	७।२०	९।१६	११।३१	१।५१	४।०८	६।२३	८।४२	११।०१	१।०६	२।४९	४।१७
००।०७।४२।११	६ बु	२२	५।३९	७।१६	९।१२	११।२७	१।४७	४।०४	६।१९	८।३९	१०।५७	१।०२	२।४५	४।१३
००।०८।४०।३५	७ गु	२३	५।३५	७।१२	९।०८	११।२३	१।४३	४।००	६।१५	८।३५	१०।५३	१२।५८	२।४१	४।०९
००।०९।३८।५७	८ शु	२४	५।३१	७।०८	९।०४	११।१९	१।३९	३।५६	६।१२	८।३१	१०।४९	१२।५४	२।३७	४।०५
००।१०।३७।१६	९ श	२५	५।२८	७।०४	९।००	११।१५	१।३५	३।५२	६।०८	८।२७	१०।४५	१२।५०	२।३३	४।०१
००।११।३५।३४	१० र	२६	५।२४	७।००	८।५६	११।११	१।३१	३।४८	६।०४	८।२३	१०।४१	१२।४६	२।२९	३।५८
००।१२।३३।४९	११ चं	२७	५।२०	६।५६	८।५२	११।०७	१।२७	३।४४	६।००	८।१९	१०।३७	१२।४२	२।२५	३।५४
००।१३।३२।०२	१२ मं	२८	५।१६	६।५२	८।४८	११।०३	१।२३	३।४०	५।५६	८।१५	१०।३३	१२।३८	२।२१	३।५०
००।१४।३०।१३	१३ बु	२९	५।१२	६।४८	८।४४	१०।५९	१।१९	३।३६	५।५२	८।११	१०।३०	१२।३४	२।१७	३।४६
००।१५।२८।२२	१४ गु	३०	५।०८	६।४४	८।४०	१०।५५	१।१५	३।३२	५।४८	८।०७	१०।२६	१२।३०	२।१३	३।४२
००।१६।२६।२९	१५ शु	१	५।०४	६।४०	८।३६	१०।५१	१।११	३।२८	५।४४	८।०३	१०।२२	१२।२६	२।०९	३।३८

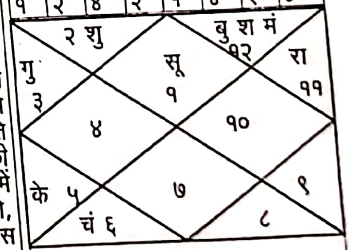
मास फलम्

इस माह में पांच शुक्रवार होने से प्रजा की वृद्धि हो।। प्रजावृद्धिस्तुभार्गवे ।। कृ. चतुर्दशी को गुरुवार होने से पृथ्वी पर अन्नोत्पत्ति उत्तम हो। शुक्रवारी अमावस होने से उद्धत मेघों से जलभ्रंश हो और खेती में बहुत उपद्रव हों तथा चौरो के उपद्रव भी नित्य रहें। अमावस्या रेवती योग सुभिक्ष और सुखद है। अमावस को रेवती होने से सुभिक्ष हो। शुक्ला चतुर्थी का क्षय होने से मूंग घी महगे हों। शुक्ला ३ को रोहिणी होने से सुभिक्ष हो। बैशाख शुक्ला पंचमी को मंगलवार होने से युद्ध हो। बैशाख शु. चतुर्दशी को गुरुवार, शुक्रवार होने से पृथ्वी पर अन्नोत्पत्ति उत्तम हो। पूर्णिमा स्वाति युक्त होने से दुर्भिक्ष हो। मंगलवार की सक्रांति होने से धान्यादि एवं लाल वर्ण वाली सभी वस्तुओं के भाव तेज हों, प्रजा में विग्रह हों, कहीं-कहीं हिंसादि हो, अग्निभय हो, घृत तेल लवण रस कपूर चंदन ये सब महँगे हों।

अयनांशाः २४।१२।३४

पं. ३ बै.शु.१३ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	११	२	१	११	१०	४
१४	२०	२८	२४	११	१४	११	११
३१	३८	०३	१८	४४	४१	४०	४०
२८	३७	५९	३३	५६	५९	३४	३४
५८	४६	११०	८	७२	६	३	३
१६	०२	२१	११	४६	४८	१०	१०
भ	रे	रे	पुन	रो	उभा	श	म
१	२	४	२	१	४	२	४



☞ अतिरिक्त सुविधा के अन्तर्गत (चतुर्मासारम्भ पर्यन्त)

२ मई से १६ मई तक, श्री प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८, दिमासू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

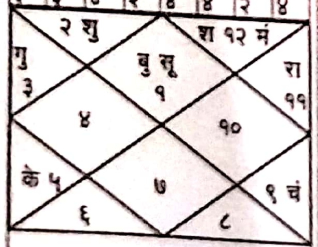
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
शुभ	१	श	४७	२१	२४	५०	विशा	…	…	…	…	व्य	३९	२०	२१	३८	बा	१४	५२	११	५१	३२ / ४७	५ / ५४	७ / ०१	१२	१४	२	वृश्चि. २४।२६	०।१७।१७।२६	५८।०३
उत्पात	२	र	५२	४९	२७	०१	विशा	३	०२	७	०६	व	४१	०६	२२	२०	तै	२०	०२	१३	५४	५१	५३	०१	१३	१५	३	वृश्चि.	०।१८।१५।२९	५८।०१
मानस	३	सो	५८	४८	२९	२३	अनु	१०	०१	९	५३	प	४३	१७	२३	११	व	२५	४६	१६	११	५४	५२	०२	१४	१६	४	वृश्चि.	०।१९।१३।३०	५७।५९
च.व्र.	४	मं	…	…	…	…	ज्ये	१७	२५	१२	५०	शि	४५	४२	२४	०८	ब	३१	५४	१८	३७	५७	५२	०२	१५	१७	५	धनु. १२।५०	०।२०।११।३०	५७।५७
ध्वजा	४	बु	५	०१	७	५१	मूल	२४	५७	१५	५०	सि	४८	०५	२५	०५	बा	५	०१	७	५१	३३ / ०१	५१	०३	१६	१८	६	धनु.	०।२१।०९।२७	५७।५५
धाता	५	गु	११	०३	१०	१५	पूषा	३२	१३	१८	४३	सा	५०	०९	२५	५४	तै	११	०३	१०	१५	०४	५०	०४	१७	१९	७	मक. २५।२४	०।२२।०७।२२	५७।५३
आनन्द	६	शु	१६	२७	१२	२४	उषा	३८	४३	२१	१८	शु	५१	२९	२६	२५	व	१६	२७	१२	२४	०७	४९	०४	१८	२०	८	मक.	०।२३।०५।१६	५७।५२
सुस्थिर	७	श	२०	४३	१४	०६	श्रव	४३	५७	२३	२३	शु	५१	४५	२६	३१	ब	२०	४३	१४	०६	१०	४९	०५	१९	२१	९	मक.	०।२४।०३।०७	५७।५०
मातङ्ग	८	र	२३	२३	१५	०९	घनि	४७	३१	२४	४९	ब्र	५०	४०	२६	०४	कौ	२३	२३	१५	०९	१३	४८	०५	२०	२२	१०	कुंभे १२।११	०।२५।००।५७	५७।४८
अमृत	९	सो	२४	०९	१५	२७	शत	४९	०९	२५	२७	ऐ	४८	००	२४	५९	ग	२४	०९	१५	२७	१६	४७	०६	२१	२३	११	कुंभे	०।२५।५८।४५	५७।४६
काण	१०	मं	२२	४९	१४	५४	पूभा	४८	४२	२५	१५	वै	४३	३९	२३	१५	वि	२२	४९	१४	५४	१९	४७	०७	२२	२४	१२	मीने १९।२३	०।२६।५६।३१	५७।४४
ए.व्र.	११	बु	१९	२३	१३	३१	उभा	४६	१४	२४	१६	वि	३७	४०	२०	५०	बा	१९	२३	१३	३१	२२	४६	०७	२३	२५	१३	मीने	०।२७।५४।१५	५७।४२
प्र.व्र.	१२	गु	१४	०२	११	२३	रेव	४१	५७	२२	३२	प्री	३०	०९	१७	४९	तै	१४	०२	११	२३	२५	४६	०८	२४	२६	१४	मेषे २२।३२	०।२८।५१।५७	५७।४१
वज्र	१३	शु	७	०१	८	३३	अश्वि	३६	११	२०	१३	आ	२१	२०	१४	१७	व	७	०१	८	३३	२८	४५	०८	२५	२७	१५	मेषे	०।२९।४९।३८	५७।३९
क्षयः	१४	शु	५८	४०	२९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अमाव.	३०	श	४९	२९	२५	३२	मर	२९	२१	१७	२९	सौ	११	३३	१०	२२	च	२४	१०	१५	२४	३१	४४	०९	२६	२८	१६	वृषे २२।४५	१।००।४७।१७	५७।३७

ग्रीष्मर्तू रविरुत्तरे वैशाखकृष्णेति गुर्जराः, मई २०२६
यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
[C अंगारकी चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २२।३७
नारद जयंती, वीणादानं
भ. १६।११ उ. २९।२३ या.
मूले रे. ८ ।।।ऽ।।।ऽ।। रात्रौ लग्न १०, C
भर. बुधः २७।२६ [D टैगोर जयन्ती
उषा. रे. ६ ।ऽ।।ऽऽ।।।ऽ रात्रौ लग्न गोधूलि(७), १०, D
भ. १२।२४ उ. २५।१९ या., मृगे शुक्रः १९।४१
[B वृषे बुधः २४।०३, पुन.-३ गुरुः २१।१७, मिथुने शुक्रः ८।३५
पंचक प्रारम्भः १२।११
भ. २७।१७ उ., कृत्ति. रविः १८।४३ (सौरः २२।५५), E
भ. १४।५४ या. [E मेषे अश्वि. भौमः १२।००
अपरा ११ व्र., कृत्ति. बुधः ११।१८
पंचक समाप्तिः २२।३२, प्रदोषः, वृषे रविः २९।३६, B
भ. ८।३३ उ. १८।५६ या., मासिकशिवरात्री व्र., वृषे सौरः १०।०
[A अधिक मासारंभः, भाऊका ३०, वट सावित्री व्र. (मरु.)
शनैश्चर जयन्ती, देवपितृकार्येऽमा., बटपूजनम् मरुस्थले, A

अयनांशाः २४।१२।३५

पं. ४ प्र.ज्ये.कृ. ४ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	११	०	२	१	११	१०	४
२१	२५	११	२५	२०	१५	११	११
१८	५९	३०	१८	१३	२८	१८	१८
४३	५७	३८	२७	२०	४९	२०	२०
५८	४५	१२१	९	७२	६	३	३
०४	४४	३१	००	२७	३१	१०	१०
म	रे	अ	पुन	रो	उभा	श	म
३	३	४	२	४	४	२	४



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. मई	मेष रात्रौ	वृष प्रातः	मिथुन दिवा	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक सायँ	धनु रात्रौ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
००।१७।२४।३४	१ श	२	५।००	६।३६	८।३२	१०।४७	१।०७	३।२४	५।४०	७।५९	१०।१८	१२।२२	२।०५	३।३४
००।१८।२२।३७	२ र	३	४।५६	६।३२	८।२९	१०।४३	१।०३	३।२०	५।३६	७।५५	१०।१४	१२।१८	२।०१	३।३०
००।१९।२०।३८	३ चं	४	४।५२	६।२८	८।२५	१०।३९	१२।५९	३।१६	५।३२	७।५१	१०।१०	१२।१४	१।५८	३।२६
००।२०।१८।३७	४ मं	५	४।४८	६।२४	८।२१	१०।३५	१२।५६	३।१२	५।२८	७।४७	१०।०६	१२।१०	१।५४	३।२२
००।२१।१६।३४	४ बु	६	४।४४	६।२०	८।१७	१०।३२	१२।५२	३।०८	५।२४	७।४३	१०।०२	१२।०६	१।५०	३।१८
००।२२।१४।२९	५ गु	७	४।४०	६।१६	८।१३	१०।२८	१२।४८	३।०४	५।२०	७।३९	९।५८	१२।०२	१।४६	३।१४
००।२३।१२।२२	६ शु	८	४।३६	६।१३	८।०९	१०।२४	१२।४४	३।०१	५।१६	७।३६	९।५४	११।५९	१।४२	३।१०
००।२४।१०।१३	७ श	९	४।३२	६।०९	८।०५	१०।२०	१२।४०	२।५७	५।१२	७।३२	९।५०	११।५५	१।३८	३।०६
००।२५।०८।०३	८ र	१०	४।२८	६।०५	८।०१	१०।१६	१२।३६	२।५३	५।०८	७।२८	९।४६	११।५१	१।३४	३।०२
००।२६।०५।५०	९ चं	११	४।२४	६।०१	७।५७	१०।१२	१२।३२	२।४९	५।०५	७।२४	९।४२	११।४७	१।३०	२।५८
००।२७।०३।३६	१० मं	१२	४।२१	५।५७	७।५३	१०।०८	१२।२८	२।४५	५।०१	७।२०	९।३८	११।४३	१।२६	२।५४
००।२८।०१।२०	११ बु	१३	४।१७	५।५३	७।४९	१०।०४	१२।२४	२।४१	४।५७	७।१६	९।३४	११।३९	१।२२	२।५१
००।२८।५९।०२	१२ गु	१४	४।१३	५।४९	७।४५	१०।००	१२।२०	२।३७	४।५३	७।१२	९।३०	११।३५	१।१८	२।४७
००।२९।५६।४३	१३ शु	१५	४।०९	५।४५	७।४१	९।५६	१२।१६	२।३३	४।४९	७।०८	९।२६	११।३१	१।१४	२।४३
०१।००।५४।२१	३० श	१६	४।०५	५।४१	७।३७	९।५२	१२।१२	२।२९	४।४५	७।०४	९।२३	११।२७	१।१०	२।३९

संक्रांति फलम्

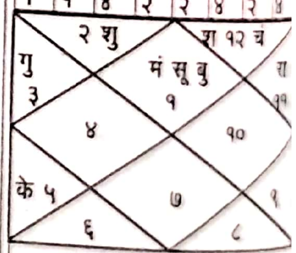
ता. १४ मई २०२६

प्र.ज्ये. कृ. १२ गुरौ वृषेऽर्कः प्र.·(स्टै.) टा. २९।३६ वारात् ३ नक्षत्रात् ५ वारनाम नंदा गणकान् सुखदा नक्षत्रनाम ध्वांक्षी वैश्यान् सुखदा प्रभात रात्रि ४ प्रहर व्यापिनी गोरक्षकान् हन्ति, पश्चिमे गमनं वायव्यां दृष्टिः वणिजकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं महिषवाहनं उष्ट्रोपवाहनं क्लेशकारक श्यामवस्त्रं तोमरायुधं खप्परपात्रं दधिभक्षणं अलक्तकलेपनं मृगजातिः अर्कपत्रपुष्पं मणीभूषणं पाण्डुकंचुकी प्रगल्भावस्था (बैठी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स उत्तरे राहु पश्चिमा. मूलं पाताले विवाहस्तंभो ऽग्निकोणे शुक्रोदयः पश्चिमायाम् । पुण्यकालः (स्टै.) २३।१२ से २९।३६ तक । (दान- गौ) ।

अयनांशाः २४।१२।३६

पं. ५ प्र.ज्ये.कृ.११बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	०	२	१	११	१०	४
२८	०१	२६	२६	२८	१६	१०	१०
०४	१९	१०	२३	३९	१३	५६	५६
३८	१२	०२	५१	२६	२८	०५	०५
५७	४५	१३०	९	७२	६	३	३
५३	२५	१२	४६	०६	११	११	११
कृ	अ	भ	पुन	मृ	उभा	श	म
१	१	४	२	२	४	२	४



अतिरिक्त सुविधा के अन्तर्गत (चतुर्मासारम्भ पर्यन्त)

१६ जून से २९ जून तक, श्री द्वि.ज्येष्ठ शुक्लपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८, दिमा सू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
क्षयः	१	सो	५७	१६	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चर	२	मं	४८	१०	२४	५४	आर्द्रा	२६	२३	१६	११	वृ	४७	१४	२४	३२	बा	२२	३६	१४	४१	३४/२४	५/३८	७/२४	२६	२९	१६	मिथु.	२।००।२२।५१	५७।००
गद	३	बु	४०	०७	२१	४१	पुन	१९	५५	१३	३६	ध्रु	३७	५५	२०	४८	तै	१३	५९	११	१४	२४	३८	२४	२७	१	१७	कर्के ८।१२	२।०१।१९।५१	५६।५९
शुभ	४	गु	३३	२७	१९	०१	पुष्य	१४	४५	११	३२	व्या	२९	४७	१७	३३	व	६	३५	८	१६	२५	३८	२४	२८	२	१८	कर्के	२।०२।१६।५०	५६।५९
मृत्यु	५	शु	२८	३०	१७	०२	श्ले	११	११	१०	०७	ह	२३	०१	१४	५१	ब	०	४५	५	५७	२५	३८	२४	२९	३	१९	सिंहे १०।०७	२।०३।१३।४९	५६।५८
पद्म	६	श	२५	२५	१५	४९	मघा	९	२६	९	२५	व	१७	४७	१२	४५	तै	२५	२५	१५	४९	२५	३९	२५	३०	४	२०	सिंहे	२।०४।१०।४७	५६।५८
छत्र	७	र	२४	१७	१५	२२	पूफा	९	३७	९	३०	सि	१४	०७	११	१८	व	२४	१७	१५	२२	२५	३९	२५	३१	५	२१	कन्या १५।३८	२।०५।०७।४५	५६।५७
श्रीवत्स	८	सो	२५	०२	१५	४०	उफा	११	४२	१०	२०	व्य	११	५८	१०	२६	ब	२५	०२	१५	४०	२५	३९	२५	१	६	२२	कन्या	२।०६।०४।४२	५६।५७
सौम्य	९	मं	२७	२९	१६	३९	हस्त	१५	२९	११	५१	व	११	१२	१०	०८	कौ	२७	२९	१६	३९	२५	३९	२५	२	७	२३	तुला. २४।५०	२।०७।०१।३८	५६।५६
गंगा	१०	बु	३१	२२	१८	१३	चित्रा	२०	४२	१३	५६	प	११	३६	१०	१८	ग	३१	२२	१८	१३	२५	४०	२५	३	८	२४	तुला.	२।०७।५८।३५	५६।५६
ए.व्र.	११	गु	३६	१८	२०	११	स्वा	२७	००	१६	२८	शि	१२	५४	१०	४९	व	३	४४	७	०९	२४	४०	२६	४	९	२५	तुला.	२।०८।५५।३१	५६।५६
मातङ्ग	१२	शु	४१	५२	२२	२५	विशा	३३	५९	१९	१६	सि	१४	४९	११	३६	ब	९	०१	९	१७	२४	४०	२६	५	१०	२६	वृश्चि. १२।३३	२।०९।५२।२६	५६।५५
प्र.व्र.	१३	श	४७	४६	२४	४७	अनु	४१	१७	२२	११	सा	१७	०४	१२	३०	कौ	१४	४८	११	३६	२३	४०	२६	६	११	२७	वृश्चि.	२।१०।४९।२१	५६।५५
काण	१४	र	५३	४०	२७	०९	ज्ये	४८	३९	२५	०८	शु	१९	२५	१३	२७	ग	२०	४३	१३	५८	२३	४१	२६	७	१२	२८	धनु. २५।०८	२।११।४६।१६	५६।५५
पूर्णिमा	१५	सो	५९	२४	२९	२६	मूल	५५	५१	२८	०१	शु	२१	४४	१४	२३	वि	२६	३३	१६	१८	२२	४१	२६	८	१३	२९	धनु.	२।१२।४३।११	५६।५५

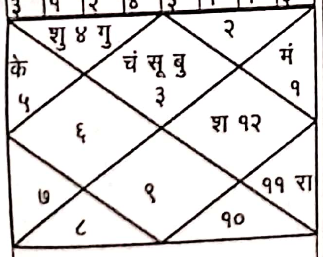
केतकी अहर्गणः ५५५० ग्रीष्मर्तू रविरुत्तरे, जून २०२६

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है ।
[A दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, भा. आषाढारंभः, आर्द्रा. B
चंद्रदर्शनम् (मु.४५), कृत्ति. भौमः ८।२५
रंभा व्रतं, प्रताप जयंती, मोहोर्रम १ सन १४४८ हि.
भ. ८।१६ उ. १९।०१ या. [E प्रदोषः, वट सावित्री व्रतारंभः
पुष्ये-१ गुरुः ७।५० [F दक्षिणायन प्रारम्भ १३।४८
वृषे भौमः २२।४८, सन्त टेऊँराम पुण्य तिथि
भ. १५।२२ उ. २७।२५ या., सायन कर्के भानुः, सायन F
हस्ते रे.६ SIIIISSSII रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(९),१०, १२, ३, A
[C साध्य व्र., कबीर जयंती
गंगा दशहरा व्र. [G सं.स्त्री.स्त्री.चं.सू.वाहन स्वर अल्पवृष्टिः
भ. ७।०९ उ. २०।११ या., निर्जला ११ व्र.
[D १४।१६, श्लेषा. शुक्रः २२।४७, अयन करिदिन, G
अनुरा. रे. ६ SSIISSIIII रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(९), १०, E
भ. २७।०९ उ. [B रविः ११।५३ (सौरः २०।३२), कर्के बुधः D
भ. १६।१८ या., मन्वादि, गुर्जराणां वटसावित्री व्रतं, अब्द C

अयनांशाः २४।१२।४२

पं.१० द्वि.ज्ये.शु.३ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	०	२	३	३	११	१०	४
०१	२७	२६	०२	१०	१९	०९	०९
३८	१८	११	५४	०४	१२	०४	०४
४६	३३	३२	११	०३	१५	४९	४९
५७	४३	५१	१२	६९	३	३	३
१७	३३	११	१९	३२	४७	११	११
मृ	कृ	पुन	पुन	पु	रे	श	म
३	१	२	४	३	१	१	३



॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प. प्रातः	वार तिथि	ता. जून	मेष रात्रौ	वृष रात्रौ	मिथुन प्रातः	कर्क दिवा	सिंह दिवा	कन्या दिवा	तुला दिवा	वृश्चिक दिवा	धनु सायँ	मकर रात्रौ	कुंभ रात्रौ	मीन रात्रौ
०२।००।२९।४८	२ मं	१६	२।०३	३।३९	५।३५	७।५०	१०।१०	१२।२७	२।४३	५।०२	७।२०	९।२५	११।०८	१२।३७
०२।०१।२६।४८	३ बु	१७	१।५९	३।३५	५।३१	७।४६	१०।०६	१२।२३	२।३९	४।५८	७।१६	९।२१	११।०४	१२।३३
०२।०२।२३।४७	४ गु	१८	१।५५	३।३१	५।२७	७।४२	१०।०२	१२।१९	२।३५	४।५४	७।१२	९।१७	११।००	१२।२९
०२।०३।२०।४६	५ शु	१९	१।५१	३।२७	५।२३	७।३८	९।५८	१२।१५	२।३१	४।५०	७।०८	९।१३	१०।५६	१२।२५
०२।०४।१७।४४	६ श	२०	१।४७	३।२३	५।१९	७।३४	९।५४	१२।११	२।२७	४।४६	७।०५	९।०९	१०।५२	१२।२१
०२।०५।१४।४१	७ र	२१	१।४३	३।१९	५।१५	७।३०	९।५०	१२।०७	२।२३	४।४२	७।०१	९।०५	१०।४८	१२।१७
०२।०६।११।३८	८ चं	२२	१।३९	३।१५	५।११	७।२६	९।४६	१२।०३	२।१९	४।३८	६।५७	९।०१	१०।४४	१२।१३
०२।०७।०८।३५	९ मं	२३	१।३५	३।११	५।०७	७।२२	९।४२	११।५९	२।१५	४।३४	६।५३	८।५७	१०।४०	१२।०९
०२।०८।०५।३१	१० बु	२४	१।३१	३।०७	५।०४	७।१८	९।३८	११।५५	२।११	४।३०	६।४९	८।५३	१०।३६	१२।०५
०२।०९।०२।२७	११ गु	२५	१।२७	३।०३	५।००	७।१४	९।३४	११।५१	२।०७	४।२६	६।४५	८।४९	१०।३३	१२।०१
०२।०९।५९।२२	१२ शु	२६	१।२३	२।५९	४।५६	७।१०	९।३१	११।४७	२।०३	४।२२	६।४१	८।४५	१०।२९	११।५७
०२।१०।५६।१७	१३ श	२७	१।१९	२।५५	४।५२	७।०७	९।२७	११।४३	१।५९	४।१८	६।३७	८।४१	१०।२५	११।५३
०२।११।५३।१२	१४ र	२८	१।१५	२।५१	४।४८	७।०३	९।२३	११।३९	१।५५	४।१४	६।३३	८।३८	१०।२१	११।४९
०२।१२।५०।०७	१५ चं	२९	१।११	२।४८	४।४४	६।५९	९।१९	११।३६	१।५१	४।११	६।२९	८।३४	१०।१७	११।४५

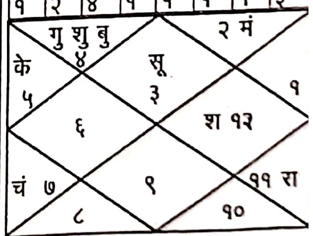
मास फलम्

इस माह में पांच सोमवार होने से धान्य सस्ता हो। ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को सोमवार होने से समर्धता हो। ज्येष्ठ कृष्णा एकादशी में रेवती होने से खण्ड वृष्टि हो। सोमवारी अमावस होने से सुभिक्ष क्षेम आरोग्य वर्षा का प्रबल उदय-धान्य की उत्पत्ति और प्रजा सुख हो। अमावस्या मृगशिरा योग सुभिक्ष और सुखद है। ज्येष्ठ सुदी दौयज को आर्द्रा में वर्षा हो तो दुर्भिक्ष करे। पूर्णिमा मूल युक्त होने से दुर्भिक्ष हो। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को ज्येष्ठा का अभाव होने से महर्धता हो। आर्द्रा में बुध होने से वर्षा अधिक हो, गेहूँ तिल उड़द सस्ते हों, मनुष्य सुखी रहें और ग्रहपात तथा पवन का प्रवाह हो। सोमवार की सक्रांति होने से दक्षिण की पवन चले, धान्यादि सभी वस्तुओं के भाव मंदे हो, रस घृत किराणे की वस्तुएं तेज हों, लोक, महाजन प्रसन्न हों, प्रजा में सद्भाव अधिक हो।

अयनांशाः २४।१२।४३

पं.११ द्वि.ज्ये.शु.१०बु.इष्टघटी ०।००

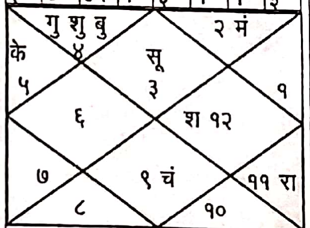
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	३	३	३	११	१०	४
०८	०२	००	०४	१८	१९	०८	०८
१९	२२	४७	२१	०८	३६	४२	४२
३७	०६	२८	२४	४१	५३	३३	३३
५७	४३	२३	१२	६८	३	३	३
१४	०७	०५	३८	४८	१०	११	११
आ	कृ	पुन	पु	श्ले	रे	श	म
१	२	४	१	१	१	१	३



३० जून से १४ जुलाई तक, श्री आषाढ़ कृष्णपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८,																						दिमा सू. सू. तारीख						स्टै.	प्रातः	दैनिक	वर्षर्त्तू रविर्दक्षिणे द्वि.ज्येष्ठकृष्णेति गुर्जराः, जून-जुलाई २०२६
योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति	यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।
मित्र	१	मं	...	...	...	...	पूषा	...	...	...	...	ब्र	२३	५१	१५	१४	बा	३२	०९	१८	३३	३४/२१	५/४१	७/२६	९	१४	३०	धनु.	२।१३।४०।०६	५६।५४	वक्री बुधः १२।३०
श्रीवत्स	१	बु	४	४७	७	३७	पूषा	२	४३	६	४७	ऐ	२५	४०	१५	५८	कौ	४	४७	७	३७	२१	४२	२६	१०	१५	१	मक. १३।२७	२।१४।३७।००	५६।५४	जुलाई ७ ता. ३१
ध्वाङ्क्ष	२	गु	९	४३	९	३५	उषा	९	१०	९	२२	वै	२७	०५	१६	३२	ग	९	४३	९	३५	२०	४२	२६	११	१६	२	मक.	२।१५।३३।५४	५६।५४	भ.२२।२९ उ., बुधास्तः पश्चिमायाम् १२।३२, रेव.-२ शनिः ९।११
च.व्र.	३	शु	१३	५८	११	१८	श्रव	१४	५८	११	४२	वि	२७	५६	१६	५३	वि	१३	५८	११	१८	१९	४३	२६	१२	१७	३	कुंभे २४।४४	२।१६।३०।४८	५६।५४	भ.११।१८ या., पंचक प्रारम्भः २४।४४,चतुर्थीव्रतं चन्द्रोदयः २१।५७
प्रवर्धमा	४	श	१७	२१	१२	३९	धनि	१९	५३	१३	४०	प्री	२८	०३	१६	५६	बा	१७	२१	१२	३९	१८	४३	२६	१३	१८	४	कुंभे	२।१७।२७।४३	५६।५४	रोहि. भौमः २२।२६,पुष्ये-२ गुरुः २५।३४,सिंहे मघा. शुक्रः १५।५३
राक्षस	५	र	१९	३१	१३	३२	शत	२३	३९	१५	११	आ	२७	११	१६	३६	तै	१९	३१	१३	३२	१६	४३	२६	१४	१९	५	कुंभे	२।१८।२४।३७	५६।५४	[B अश्व वर्षाश्रेष्ठः
मुसल	६	सो	२०	१५	१३	५०	पूभा	२५	५९	१६	०७	सौ	२५	१२	१५	४८	व	२०	१५	१३	५०	१५	४४	२६	१५	२०	६	मीने ९।५७	२।१९।२१।३१	५६।५४	भ. १३।५०उ. २५।४४या., उभा. रे.९ ।।।।।ऽ।।।। रात्रौ लग्न २, A
सिद्धि	७	मं	१९	२१	१३	२९	उभा	२६	४२	१६	२५	शो	२१	५३	१४	२९	ब	१९	२१	१३	२९	१४	४४	२६	१६	२१	७	मीने	२।२०।१८।२५	५६।५४	(व) मिथुने बुधः १३।२०
उत्पात	८	बु	१६	४३	१२	२६	रेव	२५	४३	१६	०२	अ	१७	११	१२	३७	कौ	१६	४३	१२	२६	१२	४५	२६	१७	२२	८	मेषे १६।०२	२।२१।१५।२०	५६।५५	पंचक समाप्तिः १६।०२
मानस	९	गु	१२	२२	१०	४२	अश्वि	२३	०१	१४	५७	सु	११	०५	१०	११	ग	१२	२२	१०	४२	११	४५	२५	१८	२३	९	मेषे	२।२२।१२।१४	५६।५५	भ. २१।३६ उ.
ए.व्र.	१०	शु	६	२६	८	२०	भर	१८	४६	१३	१६	धृ	३	४०	७	१४	वि	६	२६	८	२०	०९	४६	२५	१९	२४	१०	वृषे १८।४५	२।२३।०९।०९	५६।५५	भ. ८।२० या., योगिनी ११ व्र.स्मार्त
क्षयः	११	शु	५९	१०	२९	२५	०	०	०	०	०	शू	५५	०९	२७	४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	[A पुन. रविः ११।३० (सौरः २१।५८), सं.स्त्री.पु.चं.सू.वाहन B
ए.व्र.	१२	श	५०	५०	२६	०६	कृति	१३	१४	११	०४	गं	४५	४३	२४	०३	कौ	२५	०६	१५	४८	०८	४६	२५	२०	२५	११	वृषे	२।२४।०६।०४	५६।५५	योगिनी ११ व्र.वैष्ण.
प्र.व्र.	१३	र	४१	५२	२२	३१	रोहि	६/५९	४५/४६	८/२९	२९/४१	वृ	३५	४३	२०	०४	ग	१६	२५	१२	२०	०६	४६	२५	२१	२६	१२	मिथु. १९।०६	२।२५।०२।५९	५६।५६	भ. २२।३१ उ., प्रदोषः, मासिकशिवरात्री व्र.
काल	१४	सो	३२	४०	१८	५१	आर्द्रा	५२	४०	२६	५१	ध्रु	२५	२७	१५	५८	वि	७	१६	८	४१	०४	४७	२५	२२	२७	१३	मिथु.	२।२५।५९।५५	५६।५६	भ. ८।४१ या.
अमाव.	३०	मं	२३	३९	१५	१५	पुन	४५	५६	२४	१०	व्या	१५	१९	११	५५	ना	२३	३९	१५	१५	०२	४७	२४	२३	२८	१४	कर्के १८।४९	२।२६।५६।५१	५६।५६	देवपितृकार्येऽमा.

अयनांशाः २४।१२।४४

पं.१२ आ.कृ. १ बु. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	३	३	३	११	१०	४
१५	०७	०१	०५	२६	१९	०८	०८
००	२२	५७	५०	०७	५७	२०	२०
११	३५	४४	३४	५२	०८	१८	१८
५७	४२	७	१२	६७	२	३	३
१३	४०	३५	५३	५८	३१	११	११
आ	कृ	पुन	पु	श्ले	रे	श	म
३	४	४व	१	३	१	१	३



४ शु

॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	जून	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ
०२।१३।४७।०१	१ मं	३०	१।०७	२।४४	४।४०	६।५५	९।१५	११।३२	१।४७	४।०७	६।२५	८।३०	१०।१३	११।४१
०२।१४।४३।५५	१ बु	१	१।०३	२।४०	४।३६	६।५१	९।११	११।२८	१।४३	४।०३	६।२१	८।२६	१०।०९	११।३७
०२।१५।४०।४९	२ गु	२	१२।५९	२।३६	४।३२	६।४७	९।०७	११।२४	१।४०	३।५९	६।१७	८।२२	१०।०५	११।३३
०२।१६।३७।४४	३ शु	३	१२।५६	२।३२	४।२८	६।४३	९।०३	११।२०	१।३६	३।५५	६।१३	८।१८	१०।०१	११।२९
०२।१७।३४।३८	४ श	४	१२।५२	२।२८	४।२४	६।३९	८।५९	११।१६	१।३२	३।५१	६।०९	८।१४	९।५७	११।२६
०२।१८।३१।३२	५ र	५	१२।४८	२।२४	४।२०	६।३५	८।५५	११।१२	१।२८	३।४७	६।०५	८।१०	९।५३	११।२२
०२।१९।२८।२६	६ चं	६	१२।४४	२।२०	४।१६	६।३१	८।५१	११।०८	१।२४	३।४३	६।०१	८।०६	९।४९	११।१८
०२।२०।२५।२०	७ मं	७	१२।४०	२।१६	४।१२	६।२७	८।४७	११।०४	१।२०	३।३९	५।५८	८।०२	९।४५	११।१४
०२।२१।२२।१४	८ बु	८	१२।३६	२।१२	४।०८	६।२३	८।४३	११।००	१।१६	३।३५	५।५४	७।५८	९।४१	११।१०
०२।२२।१९।०९	९ गु	९	१२।३२	२।०८	४।०४	६।१९	८।३९	१०।५६	१।१२	३।३१	५।५०	७।५४	९।३७	११।०६
०२।२३।१६।०४	१० शु	१०	१२।२८	२।०४	४।००	६।१५	८।३५	१०।५२	१।०८	३।२७	५।४६	७।५०	९।३३	११।०२
०२।२४।१२।५९	१२ श	११	१२।२४	२।००	३।५७	६।११	८।३१	१०।४८	१।०४	३।२३	५।४२	७।४६	९।२९	१०।५८
०२।२५।०९।५४	१३ र	१२	१२।२०	१।५६	३।५३	६।०७	८।२७	१०।४४	१।००	३।१९	५।३८	७।४२	९।२५	१०।५४
०२।२६।०६।४९	१४ चं	१३	१२।१६	१।५२	३।४९	६।०३	८।२४	१०।४०	१२।५६	३।१५	५।३४	७।३८	९।२२	१०।५०
०२।२७।०३।४५	३० मं	१४	१२।१२	१।४८	३।४५	५।५९	८।२०	१०।३६	१२।५२	३।११	५।३०	७।३४	९।१८	१०।४६

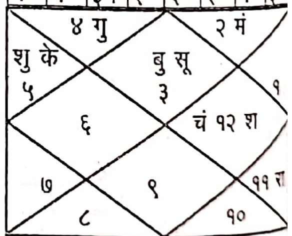
संक्रांति फलम्

ता. १६ जुलाई २०२६

आषा. शु. २ गुरौ कर्केऽर्कः प्र. (स्टै.) टा. २३।१३ वारात् ४ नक्षत्रात् ६ वारनाम नंदा गणकान् सुखदा नक्षत्रनाम घोरा शूद्रान् सुखदा मध्यरात्रि २ प्रहर व्यापिनी राक्षसान् हन्ति, उत्तरे गमनं, ऐशान्यां दृष्टिः गरकरणे प्रविष्टा मध्यमफलं हस्तीवाहनं खरोपवाहनं लक्ष्मीकारक रक्तवस्त्रं धनुष्यायुधं लोहपात्रं दुग्धभक्षणं गोरोचनलेपनं पशुजातिः विल्वपुष्पं मुकुटभूषणं श्वेतकंचुकी प्रौढावस्था (बैठी) मु. ३० धान्यभावे सम वत्स उत्तरे राहु पश्चिमा. मूलं भूमौ विवाहस्तंभो ऽग्निकोणे शुक्रोदयः पश्चिमायाम् । पुण्यकालः (स्टै.) ११।१३ से २३।१३ तक। (दान-घृत, धेनु)।

अयनांशाः २४।१२।४५

पं.१३ आ.कृ. ८ बु. इष्टघटी ०।००							
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	३	४	११	१०	४
२१	१२	२९	०७	०४	२०	०७	०७
४०	१९	३८	२१	००	१२	५८	५८
४०	५६	४५	१७	५०	४६	०२	०२
५७	४२	३३	१३	६७	१	३	३
१३	१३	५८	०५	००	५१	११	११
पुन	रो	पुन	पु	म	रे	श	म
१	१	३व	२	२	२	१	३



॥ त्र्यशीति-उत्तर-द्विसहस्रतमे विक्रमाब्दे (२०८३), सिद्धार्थनाम संवत्सरे, अष्टचत्वारिंशदधिक-एकोनविंशति-शततमे शालिवाहनशकाब्दे (१९४८) ॥

अतिरिक्त सुविधा के अन्तर्गत (चतुर्मासारम्भ पर्यन्त)

१५ जुलाई से २९ जुलाई तक, श्री आषाढ़ शुक्लपक्ष संवत् २०८३, शाकः १९४८, दिमासू. सू. तारीख स्टै. प्रातः दैनिक

योगाः	ति.	वा.	घ.	प.	घं.	मि.	नक्षत्र	घ.	प.	घं.	मि.	यो.	घ.	प.	घं.	मि.	क.	घ.	प.	घं.	मि.	घ.प	उ.	अ.	भा.	मु.	इं.	चंद्रः	सौर र. स्प.	गति
मातङ्ग	१	बु	१५	१५	११	५४	पुष्य	४०	००	२१	४८	ह	५ ५६	३८ ४५	८ २८	०३ ३०	ब	१५	१५	११	५४	३४ ००	५ ४८	७ २४	२४	२९	१५	कर्के	२।२७।५३।४७	५६।५७
अमृत	२	गु	७	५०	८	५७	श्ले	३५	१४	१९	५४	सि	४८	५५	२५	२२	कौ	७	५०	८	५७	३३ ५८	४८	२४	२५	१	१६	सिंहे १९।५४	२।२८।५०।४४	५६।५७
काण	३	शु	१	४७	६	३२	मघा	३१	५८	१८	३६	व्य	४२	२१	२२	४५	ग	१	४७	६	३२	५६	४९	२३	२६	२	१७	सिंहे	२।२९।४७।४१	५६।५८
क्षयः	४	शु	५७	२२	२८	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
लुम्बक	५	श	५४	४७	२७	४४	पूफा	३०	२७	१८	००	व	३७	१६	२०	४४	ब	२५	५०	१६	०९	५४	४९	२३	२७	३	१८	कन्या २३।५८	३।००।४४।३९	५६।५८
मित्र	६	र	५४	०९	२७	२९	उफा	३०	५१	१८	१०	प	३३	४४	१९	१९	कौ	२४	१३	१५	३१	५२	५०	२३	२८	४	१९	कन्या	३।०१।४१।३७	५६।५९
वज्र	७	सो	५५	२५	२८	००	हस्त	३३	०९	१९	०६	शि	३१	४४	१८	३२	ग	२४	३२	१५	३९	५०	५०	२२	२९	५	२०	कन्या	३।०२।३८।३६	५६।५९
ध्वाङ्क्ष	८	मं	५८	२८	२९	१४	चित्रा	३७	१४	२०	४५	सि	३१	१२	१८	२०	वि	२६	४३	१६	३२	४७	५१	२२	३०	६	२१	तुला. ७।५०	३।०३।३५।३६	५७।००
धूम्र	९	बु	…	…	…	…	स्वा	४२	५१	२३	००	सा	३१	५३	१८	३७	बा	३०	३३	१८	०५	४५	५१	२१	३१	७	२२	तुला.	३।०४।३२।३६	५७।०१
प्रवर्धमा	९	गु	२	५५	७	०२	विशा	४९	३३	२५	४१	शु	३३	३१	१९	१६	कौ	२	५५	७	०२	४२	५२	२१	१	८	२३	वृश्चि. १८।५९	३।०५।२९।३७	५७।०२
राक्षस	१०	शु	८	२५	९	१४	अनु	५६	५३	२८	३८	शु	३५	४४	२०	१०	ग	८	२५	९	१४	४०	५३	२०	२	९	२४	वृश्चि.	३।०६।२६।३८	५७।०२
ए.व्र.	११	श	१४	२३	११	३८	ज्ये	…	…	…	…	ब्र	३८	०९	२१	०९	वि	१४	२३	११	३८	३७	५३	२०	३	१०	२५	वृश्चि.	३।०७।२३।४१	५७।०३
प्र.व्र.	१२	र	२०	२३	१४	०३	ज्ये	४	१९	७	३७	ऐ	४०	२९	२२	०५	बा	२०	२३	१४	०३	३४	५४	१९	४	११	२६	धनु. ७।३७	३।०८।२०।४४	५७।०४
लुम्बक	१३	सो	२६	०१	१६	१८	मूल	११	३०	१०	३०	वै	४२	२९	२२	५४	तै	२६	०१	१६	१८	३२	५४	१९	५	१२	२७	धनु.	३।०९।१७।४८	५७।०५
मित्र	१४	मं	३१	०२	१८	१९	पूषा	१८	०९	१३	१०	वि	४३	५७	२३	३०	व	३१	०२	१८	१९	२९	५५	१८	६	१३	२८	मक. १९।४८	३।१०।१४।५३	५७।०६
पूर्णिमा	१५	बु	३५	२०	२०	०३	उषा	२४	०६	१५	३४	प्री	४४	५२	२३	५२	वि	३	१६	७	१४	२६	५५	१८	७	१४	२९	मक.	३।११।११।५९	५७।०७

केतकी अहर्गणः ५५७९ वर्षर्त्तू रविर्दक्षिणे, जुलाई २०२६

यहाँ लिखे भद्रा ग्रह चारादि का समय स्टै.टा.में है।

चंद्रदर्शनम् (मु.३०), गुरोरस्तः पश्चिमायाम् १३।२६

श्री जगदीश रथ यात्रा, सफर २, B

भ. १७।३४ उ. २८।४६ या., G

गुरोरस्तः पश्चिमायाम्

[A गोपद्मव्रतारंभ, व्यासपूजा, गुरु पूर्णिमा

[B कर्के रविः २३।१३, निरयन दक्षिणायनारंभः, पूफा. F

स्कंध षष्ठी, सन्त टेऊँराम जयन्ती [F शुक्रः १५।५१

भ. २८।०० उ., पुष्ये रविः ११।०४ (सौरः २३।१७), पुष्ये-३ C

भ. १६।३२ या. [C गुरुः ७।०७, सं.स्त्री.स्त्री.चं.सू.वाहन E

भड़ली ९, सायन सिंहे भानुः २४।४६, बुधोदयः पूर्वस्याम् ९।०३

भा. श्रावणारंभः, मृगे भौमः २५।४२ [G कर्के सौरः ११।००

भ. २२।२६ उ., मन्वादि, आशा दशमी, मार्गी बुधः १३।३६

भ. ११।३८ या., देव शयनी ११ व्र., चातुर्मास व्रतारंभः, D

प्रदोषः, श्रावणे वर्जयेच्छाकम् [E मूषक अल्पवृष्टिः

जया पार्वती व्रतं, वक्री शनिः ११।२९

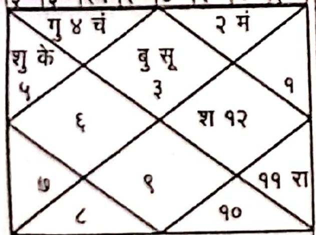
भ. १८।१९ उ., उफा. शुक्रः २५।२८ [D गोपद्मव्रतोद्यापनं

भ. ७।१४ या., मन्वादि, पूर्णिमा व्रतंपुण्यञ्च, वायु परीक्षा, A

अयनांशाः २४।१२।४६

पं.१४ आ.शु. १ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	२	३	४	११	१०	४
२८	१७	२५	०८	११	२०	०७	०७
२१	१४	१२	५३	४६	२३	३५	३५
१४	०१	०९	११	३८	३६	४६	४६
५७	४१	३७	१३	६५	१	३	३
१५	४४	०८	१२	५४	०९	११	११
पुन	रो	पुन	पु	म	रे	श	म
३	३	२व	२	४	२	१	३



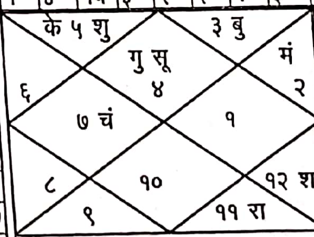
॥ दैनिक लग्न प्रवेश सारणी ॥ स्टैंडर्ड घंटा-मिनट में ॥

ब्रह्म र. स्प.	वार	ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
प्रातः	तिथि	जुला	रात्रौ	रात्रौ	रात्रौ	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सायँ	रात्रौ	रात्रौ
०२।२८।००।४२	१ बु	१५	१२।०८	१।४४	३।४१	५।५६	८।१६	१०।३२	१२।४८	३।०७	५।२६	७।३०	९।१४	१०।४२
०२।२८।५७।३८	२ गु	१६	१२।०४	१।४१	३।३७	५।५२	८।१२	१०।२९	१२।४४	३।०३	५।२२	७।२७	९।१०	१०।३८
०२।२९।५४।३६	३ शु	१७	१२।००	१।३७	३।३३	५।४८	८।०८	१०।२५	१२।४०	३।००	५।१८	७।२३	९।०६	१०।३४
०३।००।५१।३३	५ श	१८	११।५६	१।३३	३।२९	५।४४	८।०४	१०।२१	१२।३६	२।५६	५।१४	७।१९	९।०२	१०।३०
०३।०१।४८।३२	६ र	१९	११।५२	१।२९	३।२५	५।४०	८।००	१०।१७	१२।३३	२।५२	५।१०	७।१५	८।५८	१०।२६
०३।०२।४५।३१	७ चं	२०	११।४८	१।२५	३।२१	५।३६	७।५६	१०।१३	१२।२९	२।४८	५।०६	७।११	८।५४	१०।२२
०३।०३।४२।३०	८ मं	२१	११।४५	१।२१	३।१७	५।३२	७।५२	१०।०९	१२।२५	२।४४	५।०२	७।०७	८।५०	१०।१९
०३।०४।३९।३०	९ बु	२२	११।४१	१।१७	३।१३	५।२८	७।४८	१०।०५	१२।२१	२।४०	४।५८	७।०३	८।४६	१०।१५
०३।०५।३६।३१	९ गु	२३	११।३७	१।१३	३।०९	५।२४	७।४४	१०।०१	१२।१७	२।३६	४।५४	६।५९	८।४२	१०।११
०३।०६।३३।३३	१० शु	२४	११।३३	१।०९	३।०५	५।२०	७।४०	९।५७	१२।१३	२।३२	४।५०	६।५५	८।३८	१०।०७
०३।०७।३०।३५	११ श	२५	११।२९	१।०५	३।०१	५।१६	७।३६	९।५३	१२।०९	२।२८	४।४७	६।५१	८।३४	१०।०३
०३।०८।२७।३८	१२ र	२६	११।२५	१।०१	२।५७	५।१२	७।३२	९।४९	१२।०५	२।२४	४।४३	६।४७	८।३०	९।५९
०३।०९।२४।४२	१३ चं	२७	११।२१	१२।५७	२।५३	५।०८	७।२८	९।४५	१२।०१	२।२०	४।३९	६।४३	८।२६	९।५५
०३।१०।२१।४७	१४ मं	२८	११।१७	१२।५३	२।४९	५।०४	७।२४	९।४१	११।५७	२।१६	४।३५	६।३९	८।२२	९।५१
०३।११।१८।५३	१५ बु	२९	११।१३	१२।४९	२।४६	५।००	७।२०	९।३७	११।५३	२।१२	४।३१	६।३५	८।१८	९।४७

अयनांशाः २४।१२।४७

पं.१५ आ.शु. ९ बु. इष्टघटी ०।००

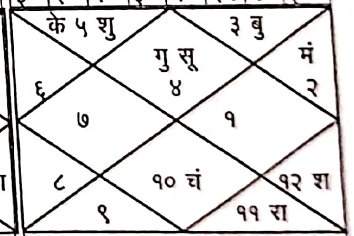
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	३	४	११	१०	४
०५	२२	२२	१०	१९	२०	०७	०७
०२	०४	०५	२५	२४	२९	१३	१३
०४	४४	४२	५०	०६	३१	३०	३०
५७	४१	७	१३	६४	०	३	३
१८	१५	४५	१६	३५	२६	११	११
पु	रो	पुन	पु	पूफा	रे	श	म
१	४	१व	३	२	२	१	३



अयनांशाः २४।१२।४८

पं.१६ आ.शु.१५ बु. इष्टघटी ०।००

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	२	३	४	११	१०	४
११	२६	२३	११	२६	२०	०६	०६
४३	५१	१७	५८	५१	३०	५१	५१
२१	५९	३१	५०	४५	२४	१५	१५
५७	४०	३४	१३	६३	०	३	३
२२	४५	३३	१८	०२	१७	११	११
पु	मृ	पुन	पु	उफा	रे	श	म
३	२	१	३	१	२व	१	३



अतिरिक्त सुविधा ☞ ॥ संवत् २०८३, शाकः १९४८ (सन २०२६-२७) मध्ये विवाह मुहूर्त्तानि रेखा सहितानि च ॥

विवाह मुहूर्त्तों के आरंभ में (१९ अप्रे. २०२६) गुरुस्थिति -
कन्या राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : गुरु राशि - मिथुन
ता. १९ जून २०२६ के विवाह मुहूर्त्तों से -
कन्या राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : गुरु राशि - कर्क

सन२०२६ **वैशाख शुक्लपक्षः**

१९ अप्रे. **२ रवौ रोहि.** रे. १० ||||||||| रात्रौ लग्न १२
(मीने शु ३ दोषः; सोग्रांगः मं श)
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-वृष
समयः मीन- उत्तर रात्री ४।३४ उपरांत ५।४७

२० अप्रे. **३ चंद्रे रोहि.** रे. ९ |||||S|||| दिवा लग्न ४, ५
(सिंहे रा ७ दोषः; सोग्रांगः के) **(भद्रा १७।५१ से)**
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-वृष
समयः कर्क- दिन ११।३४ से १।५३, सिंह- दिन १।५३ से ४।१०

२० अप्रे. **३ चंद्रे मृगे** रे. ७ S||||S|S|| रात्रौ लग्न १२
(मीने शु ३ दोषः; सोग्रांगः मं श) **(भद्रा २८।१६ यावत्)**
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-वृष
समयः मीन- उत्तर रात्री ४।१८ से ५।४३

अप्रे. **५ भौमे मृगे** रे. ६ S||||SSS|| दिवा लग्न ४, ५, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(७), ८
(सिंहे रा ७ दोषः; सोग्रांगः के, वृश्चिके रा ४ दोषः; शु ७ पूज्यः)
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-वृष
समयः कर्क- दिन ११।३० से १२।५८ यावत्

वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, कुंभ : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि-मिथुन
समयः कर्क- दिन १२।५८ उपरांत १।४९, सिंह- दिन १।४९ से ४। ६, : दिन १२।५८ उप.
अ.गोधूलि- सायँ ६। ७ से ७।४३, वृश्चिक- रात्री ८।४० से १०।५८

प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्षः

४ भौमे मूले रे. ७ |||S|S|S|| रात्रौ लग्न ८, १०, ११, १२ (वृश्चिके रा ४ दोषः;)
(शु ७ पूज्यः, कुंभे के ७ दोषः; सोग्रांगः रा, मीने शु ३ दोषः; सोग्रांगः मं श)
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-धनु
समयः वृश्चिक- रात्री ७।४५ से १०। ३, मकर- रात्री १२। ७ से १।५०,
कुंभ- रात्री १।५० से ३।१९, मीन- उत्तर रात्री ३।१९ से ४।४४

६ मई **४ बुधे मूले** रे. ८ |||S|||S|| दिवा लग्न २, ५ (सिंहे रा ७ दोषः; सोग्रांगः के)
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-धनु
समयः वृष- प्रातः ६।२० से ८।१६, सिंह- दिन १२।५० से ३। २ यावत्

७ मई **५ गुरौ उषा.** रे. ६ |S||SS|||S रात्रौ लग्न गोधूलि(७), ८, १०, ११, १२
(वृश्चिके रा ४ दोषः; शु ७ पूज्यः, मकरे चं १ २५।२४ उपरांत,
कुंभे के ७ दोषः; सोग्रांगः रा, मीने शु ३ दोषः; सोग्रांगः मं श)
वर राशि - मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-धनु
समयः गोधूलि- सायँ ६।४३ उपरांत ७।५२, वृश्चिक- रात्री ७।३७ से ९।५५,
मकर- रात्री १२। ० से १।२४ यावत्

वर राशि - मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मक
समयः कुंभ- रात्री १।४२ से ३।११, मीन- उत्तर रात्री ३।११ से ४।३६ : रात्री १।२४ स

८ मई **६ शुक्रे उषा.** रे. ७ |S||S||||S दिवालग्न २, ४ **(भद्रा १२।२४ से,** कर्के चं ७ पूज
वर राशि - मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मक
समयः वृष- प्रातः ६।१२ से ८। ८, कर्क- दिन १०।२३ से १२।२४ यावत् तदुपरांत भद्रारं

सन२०२६ **द्वि.ज्येष्ठ शुक्लपक्षः**

२२ जून **८ चंद्रे हस्ते** रे. ६ S||||SSS|| रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(९), १०, १२, २, ३
(मकरे बु गु शु ७ पूज्यः, मीने चं ७ पूज्यः; सोग्रांगः श, वृषे शु ३ दोषः; सोग्रांगः मं,
मिथुने सोग्रांगः सू)
वर राशि - मेष, वृष, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर : सूर्यराशि-मिथु
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्य
समयः अ.गोधूलि- सायँ ६।३७ से ८।१३, मकर-रात्री ८।५९ से १०।४२,मीन-रात्री १२।१०
१।३६, वृष- उत्तर रात्री ३।१२ से ५। ८, मिथुन- उत्तर रात्री ५। ८ से ५।३९

२३ जून **९ भौमे हस्ते** रे. ८ S||||||S|| दिवा लग्न ३, ४ (मिथुने सोग्रांगः सू)
वर राशि - मेष, वृष, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर : सूर्यराशि-मिथु
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समयः मिथुन- प्रातः ५।३९ उपरांत ७।२२, कर्क- प्रातः ७।२२ से ९।४२

२६ जून **१२ शुक्रे अनुरा.** रे. ६ SS||SS|||| रात्रौलग्न २ (वृषे शु ३ दोषः;चं ७ पूज्यः; सोग्रांगः
वर राशि - वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-वृश्चि
समयः वृष- उत्तर रात्री २।५६ से ४।५२

२७ जून **१३ शनौ अनुरा.** रे. ६ SS||SS|||| दिवा लग्न ४, ७, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(९), १०
(मकरे बु गु शु ७ पूज्यः)
वर राशि - वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-वृश्चि
समयः कर्क- प्रातः ७। ६ से ९।२६, तुला- दिन १।५८ से ४।१७,
अ.गोधूलि- सायँ ६।३८ से ८।१४, मकर- रात्री ८।३९ से ९।२३ यावत्

संवत् २०८३ मध्ये सूर्यग्रहणाऽभावः चंद्रग्रहणाऽभावश्च

अतिरिक्त सुविधा ☞ ॥ संवत् २०८३, शाकः १९४८ (सन २०२६-२७) मध्ये विवाह मुहूर्त्तानि रेखा सहितानि च ॥

आषाढ़ कृष्णपक्षः

सन२०२६
१ जुला. **१ बुधे उषा.** रे. ८ ||||SS|||| दिवा लग्न ७, गणितेन क्रांतिसाम्याऽभावः
वर राशि - मेष, वृष, सिंह, कन्या, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मकर
समयः तुला- दिन १।४२ से ३।५८ यावत्

६ जुला. **६ चंद्रे उभा.** रे. ९ |||||S|||| रात्रौ लग्न २, ३
(वृषे सोग्रांगः मं, मिथुने शु ३ दोषः; सोग्रांगः सू) **(भद्रा २५।४४ यावत्)**
वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मीन
समयः वृष- रात्री २।१७ से ४।१३, मिथुन- उत्तर रात्री ४।१३ से ५।४४

मार्गी गुरोः मघादि पंचपाद (सिंहे) प्रवेशः (१ नवं. २०२६, स्टै. ९।१७)
अग्रे मघादि पंचपादत्वादभावः-'मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ।'
वक्री गुरोः पंचपाद-सिंहस्थ समाप्तिः (२३ जन. २०२७, स्टै. १८।२७)

माघ कृष्णपक्षः

सन२०२७
२४ जन. **२ रवौ मघा.** रे. ९ ||||S||||| दिवा लग्न १०, २
(मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू रा, वृषे शु ७ पूज्यः) **(भद्रा २१।३४ से)**
वर राशि - मेष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि-सिंह
समयः मकर- प्रातः ७।२५ उपरांत ८।३२, वृष- दिन १। २ से २।५८

२५ जन. **३ चंद्रे उफा.** रे. ८ ||||S|S|| रात्रौ लग्न ७, ९, १०
(तुला. रा ४ दोषः, मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू रा)
वर राशि - मेष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि-सिंह
समयः तुला- रात्री १। ५ उपरांत २।१९, धनु- उत्तर रात्री ४।३७ से ६।४२

वर राशि - मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समयः मकर- उत्तर रात्री ६।४६ उपरांत ७।२४ : उत्तर रात्री ६।४६ उपरांत

२६ जन. **५ भौमे उफा.** रे. ८ ||||S|S|| दिवा लग्न १०, १२, २, रात्रौ लग्न गोधूलि(४)
(मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू रा, मीने चं ७ पूज्यः;सोग्रांगः श, वृषे शु ७ पूज्यः)
वर राशि - मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समयः मकर- प्रातः ७।२४ उपरांत ८।२४, मीन- प्रातः ९।५३ से ११।१९,
वृष- दिन १२।५५ से २।५०, गोधूलि- सायँ ५।१३ से ६।४९

३० जन. **९ शनौ अनुरा.** रे. ८ S||||||S|| रात्रौ लग्न ९, १०
(मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू रा)
वर राशि - वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-वृश्चिक
समयः धनु- रात्री ४।१८ से ६।२२, मकर- उत्तर रात्री ६।२२ से ७।२२

३१ जन. **१० रवौ अनुरा.** रे. ८ S||||||S|| दिवा लग्न १०, १२, २, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(४)
(मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू रा, मीने सोग्रांगः श, वृषे चं ७ पूज्यः)
वर राशि - वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-वृश्चिक
समयः मकर- प्रातः ७।२२ उपरांत ८। ५, मीन- प्रातः ९।३३ से १०।५९,
वृष- दिन १२।३५ से २।३१, अ.गोधूलि- सायँ ५।१७ से ६।५३ **(भद्रा १९।३६ से)**

माघ शुक्लपक्षः

सन२०२७
९ फर. **३ भौमे उभा.** रे. ९ |||||S|||| रात्रौ लग्न ९, १०
(मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः सू रा)
वर राशि - मेष, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मीन
समयः धनु- रात्री ३।३८ से ५।४३, मकर- उत्तर रात्री ५।४३ से ७।१६

१० फर. **४ बुधे उभा.** रे. १० |||||||||| दिवा लग्न २, ३, रात्रौ लग्न ९
(मिथुने शु ७ पूज्यः) **(भद्रा १४।४८ से २७। ८ यावत्)**
वर राशि - मेष, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मीन
समयः वृष- दिन ११।५६ से १।५२, मिथुन- दिन १।५२ से २।४८ यावत् तदुपरांत भद्रारंभः,
धनु- रात्री ३।३४ से ४। ९ यावत्

१६ फर. **१० भौमे मृगे** रे. ८ |S||||S|| दिवा लग्न ३, रात्रौ लग्न गोधूलि(५), ७
(मिथुने चं १ १४।३३ उपरांत; शु ७ पूज्यः,गोधुल्यां मं १; सोग्रांगः मं, तुला.शु ३ दोषः;रा ४ दोषः)
वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, मकर : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-वृष
समयः मिथुन- दिन १।२८ से २।३३ यावत्

वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि-मिथुन
: दिन २।३३ उप.
समयः गोधूलि- सायँ ५।३० से ७। ६, तुला- रात्री १०।३४ से १२।४८ यावत्

फाल्गुन कृष्णपक्षः

सन२०२७
२७ फर. **७ शनौ अनुरा.** रे. ७ S||||SS|| दिवा लग्न २, ४, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, ७, ९, १०
(वृषे चं ७ पूज्यः, कर्के रा ७ दोषः; बु शु ७ पूज्यः, अ.गोधुल्यां मं १; सोग्रांगः मं,
तुला. रा ४ दोषः, मकरे के ७ दोषः; गु ७ पूज्यः; सोग्रांगः रा)
वर राशि - वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-वृश्चिक
समयः वृष- दिन ११।३६ उपरांत १२।४५, कर्क- दिन २।५९ से ५।१९,
अ.गोधूलि- सायँ ५।३७ से ७।१३, तुला- रात्री ९।५१ से १२। ९,
धनु- रात्री २।२८ से ४।३२, मकर- उत्तर रात्री ४।३२ से ६।१५

२८ फर. **८ रवौ अनुरा.** रे. ७ S||||S|S|| दिवा लग्न १२, २ (मीने सोग्रांगः श, वृषे चं ७ पूज्यः)
वर राशि - वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-वृश्चिक
समयः मीन- प्रातः ७।४३ से ९। ९, वृष- दिन १०।४५ से १२।४१

भद्रा दोषः- भद्राकाल में विवाह और विवाहाङ्गकृत्य सर्वथा निषेध हैं । **यथा** - न कुर्यान्मङ्गलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन । कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत्सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥' इति ॥ - पीयूषधारा -मु. चिन्तामणि पृ. ४९. **॥ अपि च ॥** श्रीपतिः- न सिद्धिमायाति कृतं च विष्ट्यां विषारिघातादिकमत्र सिद्धम् ॥ - निर्णयसिन्धु भाषा टीका, खेमराज. परि.१, पृ.३३

अतिरिक्त सुविधा ☞ ॥ संवत् २०८३, शाक: १९४८ (सन २०२६-२७) मध्ये विवाह मुहूर्त्तानि रेखा सहितानि च ॥

१ मार्च १ चंद्रे मूले रे. ८ IIIIISSII रात्रौ लग्न ७, १०
(तुला. रा ४ दोष:, मकरे के ७ दोष:; गु ७ पूज्य:; सोग्रांग: रा)
वर राशि - मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-धनु
समय: तुला- रात्री ११। ६ उपरांत १२। २, मकर- उत्तर रात्री ४।२४ से ६। ७

मार्च १० भौमे मूले रे. ८ IIIISISII दिवा लग्न १२, २, ३ (भद्रा १५।३० से)
(मीने सोग्रांग: श, मिथुने चं ७ पूज्य:)
वर राशि - मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-धनु
समय: मीन-प्रात: ७।३५ से ९। १, वृष-दिन १०।३७ से १२।३३, मिथुन-दिन १२।३३ से २।४७

मार्च ११ बुधे उषा. रे. ६ ISSशुIIISSII रात्रौ लग्न १०
(मकरे चं १ २९।२३ उपरांत; के ७ दोष:; गु ७ पूज्य:; सोग्रांग: रा)
वर राशि - मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-धनु
समय: मकर- उत्तर रात्री ४।१६ से ५।२३ यावत्

फाल्गुन शुक्लपक्ष:

मार्च १ भौमे उषा. रे. ९ IIIISIII दिवा लग्न ४, रात्रौ लग्न ९, ११
(कर्क रा ७ दोष:; बु शु ७ पूज्य:, कुंभे सोग्रांग: सू)
वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मीन
समय: कर्क- दिन ३।४२ उपरांत ४।३९, धनु- रात्री १।४८ से ३।५२,
कुंभ- उत्तर रात्री ५।३५ से ६।५०
अग्रे मीनेऽर्क:

॥ कात्यायनोक्त विवाह मुहूर्त्ता: नक्षत्र चतुष्टयी ॥

वैशाख शुक्लपक्ष:

१३ बुधे चित्रा. रे. ७ IIIISSSIII रात्रौ लग्न १०, ११, १२
(कुंभे के ७ दोष:; सोग्रांग: रा, मीने शु ३ दोष:; चं ७ पूज्य:; सोग्रांग: मं श)
वर राशि - मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समय: मकर-रात्री १२।३१ से २।१४, कुंभ-रात्री २।१४ से ३।४२, मीन-उत्तररात्री ३।४२ से ५। ८

१४ गुरौ चित्रा. रे. ७ IIIISSSIII दिवा लग्न २, ४, ५, रात्रौ लग्न ८
(सिंहे रा ७ दोष:; सोग्रांग: के, वृश्चिके रा ४ दोष:; शु ७ पूज्य:) (भद्रा २१।१६ से)
वर राशि - मेष, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समय: वृष- प्रात: ६।४४ से ८।४०, कर्क- दिन १०।५४ से १।१४

वर राशि - मेष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, कुंभ : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि-तुला
समय: सिंह- दिन १।१४ उपरांत ३।३०, : दिन १।१४ उप.
वृश्चिक- रात्री ८। ५ से ९।१६ यावत् तदुपरांत भद्रारंभ:

प्र.ज्येष्ठ कृष्णपक्ष:

शनौ धनि. रे. ८ SIIIIISII रात्रौ लग्न ११, १२
के ७ दोष:; सोग्रांग: रा, मीने शु ३ दोष:; सोग्रांग: मं श)
राशि - मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-मकर
: कुंभ- रात्री १।३५ से ३। ३, मीन- उत्तर रात्री ३। ३ से ४।२९

१० मई ८ रवौ धनि. रे. ८ SIIIIISII दिवा लग्न ५, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(७), ८
(सिंहे रा ७ दोष:; चं ७ पूज्य:;सोग्रांग: के,वृश्चिके रा ४ दोष:; शु ७ पूज्य:)
वर राशि - मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ, मीन : सूर्यराशि-मेष
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि-कुंभ
समय: सिंह- दिन १२।३५ से २।५१, अ.गोधूलि- सायँ ६।१७ से ७।५३,
वृश्चिक- सायँ ७।२५ से ९।४४ : दिन १२।११ उ

द्वि.ज्येष्ठ शुक्लपक्ष:

सन२०२६ २३ जून १ भौमे चित्रा. रे. ८ IIIISISIII दिवा लग्न ७, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि, १०, १२, १
(मकरे बु गु शु ७ पूज्य:, मीने चं ७ २४।५० यावत्; सोग्रांग: श, मिथुने सोग्रांग: सू)
वर राशि - मेष, वृष, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समय: तुला- दिन २।१४ से ४।३२, अ.गोधूलि- सायँ ६।३७ से ८।१३,
मकर- रात्री ८।५५ से १०।३८, मीन- रात्री १२। ६ से १२।५० यावत्

वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर, कुंभ : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि-तुला
समय: मीन-रात्री १२।५० उप. १।३२,मिथुन-उत्तररात्री ५। ४ से ५।४० ::रात्री १२।५० उ

आषाढ़ कृष्णपक्ष:

सन२०२६ ८ जुलाई ८ बुधे अश्वि. रे. ७ SIIISISII रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(९), १०, ११, २, ३
(मकरे गु ७ पूज्य:, कुंभे के ७ दोष:; शु ७ पूज्य:; सोग्रांग: रा, वृषे सोग्रांग: मं,
मिथुने शु ३ दोष:; सोग्रांग: सू)
वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ : सूर्यराशि-मिथुन
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि-मेष
समय: अ.गोधूलि-सायँ ६।३८ से ८।१४,मकर-रात्री ७।५६ से ९।३९,कुंभ-रात्री ९।३९ से ११। ७,
वृष- रात्री २। ९ से ४। ५, मिथुन- उत्तर रात्री ४। ५ से ५।४५

मार्गी गुरो: मघादि पंचपाद (सिंहे) प्रवेश: (१ नव. २०२६, स्टे. ९।१७)
वक्री गुरो: पंचपाद-सिंहरथ समाप्ति: (२३ जन. २०२७, स्टे. १८।२७)

माघ कृष्णपक्ष:

सन२०२७ २७ जन. ६ बुधे चित्रा. रे. ८ SIIIISIIII रात्रौ लग्न ७ (तुला. रा ४ दोष:) (भद्रा २७।५५ से)
वर राशि - मेष, वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या तुला वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि-कन्या
समय: तुला- रात्री ११।५५ उपरांत २।११

माघ शुक्लपक्ष:

सन२०२७ १२ फर. ६ शुक्रे अश्वि. रे. ९ IIIIISIIII दिवा लग्न २, ३, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(४), ७, ९
(मिथुने शु ७ पूज्य:, तुला. शु ३ दोष:; रा ४ दोष:; चं ७ पूज्य:) (महापात मोक्ष: ८।१७)
वर राशि - मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन : सूर्यराशि-मकर
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि-मेष
समय: वृष- दिन ११।४८ से १।४४, मिथुन-दिन १।४४ से ३।५८,अ.गोधूलि-सायँ ५।२७ से ७। ३,
तुला- रात्री १०।५० से १। ८, धनु- रात्री ३।२७ से ५।११ यावत्

फाल्गुन शुक्लपक्ष:

सन२०२७ ११ मार्च ३ गुरौ अश्वि. रे. ९ IIIIISIIII दिवा लग्न २, ३, ४, रात्रौ लग्न अ. गोधूलि(५), ९
(कर्क रा ७ दोष:; बु शु ७ पूज्य:) (भद्रा २७।२७ से)
वर राशि - मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ : सूर्यराशि-कुंभ
कन्याराशि- मेष वृष मिथुन कर्क सिंह तुला वृश्चिक धनु कुंभ मीन : चंद्रराशि-मेष
समय: वृष-दिन ११।२२ उप. ११।५७, मिथुन-दिन ११।५७ से २।१२, कर्क-दिन २।१२ से ४।३२,
अ.गोधूलि- सायँ ५।४४ से ७।२०, धनु- रात्री १।४० से ३।२७ यावत् तदुपरांत भद्रारंभ:
(दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभि:)

ो । स उग्र अंग: ॥ स सहित:, उग्र उग्रग्रहाणाम् (सूर्य,मंगल,शनि,राहु,केतु), अंग: लग्न: ॥ भाव- लग्न में उक्त ग्रहों में से कोई एक भी ग्रह हो तो मुहूर्त्तों में सोग्रांग: लिखा रहता है।

|| संवत् २०८३, शाक: १९४८, सन २०२६-२७ मध्ये गेहारंभादि (भूमि पूजन) मुहूर्त्ताः ||

|| गेहारंभ (भूमि पूजन) मुहूर्त्ताः ||

श्रावण मासः

सन२०२६ २८ अग. **शु. १५ शुक्रे शते** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या.तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५
भूमि-पूजन (शिलान्यास) आग्नेय कोणे : सूर्यराशि सिंह

|| वृषचक्र-रहिताः गेहारंभ मुहूर्त्ताः ||

फाल्गुन मासः

सन२०२७ ४ मार्च **कृ. ११ गुरौ उषा.** लग्न २, अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः वृष- दिवा १०।२९ से १२।२५, अभि.- दिवा १२।१८ से १।०६
भूमि-पूजन (शिलान्यास) वायव्य कोणे : सूर्यराशि कुंभ

१० मार्च **शु. ०२ बुधे उभा.** लग्न २
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः वृष- दिवा १०।०५ से १०।५२ यावत्
भूमि-पूजन (शिलान्यास) वायव्य कोणे : सूर्यराशि कुंभ

|| नूतनगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ||

द्वि.ज्येष्ठ मासः

सन२०२६ २७ जून **शु. १३ शनौ अनुरा.** अभिजिति
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि वृश्चिक
समयः अभि.- दिवा १२।०९ से १२।५७

फाल्गुन मासः

सन२०२७ ४ मार्च **कृ. ११ गुरौ उषा.** लग्न २, अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष कर्क सिंह कन्या वृश्चिक धनु मकर मीन : चंद्रराशि मकर
समयः वृष- दिवा १०।२९ से १२।२५, अभि.- दिवा १२।१८ से १।०६

|| कुंभचक्ररहिताः नूतनगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ||

फाल्गुन मासः

सन२०२७ १० मार्च **शु. ०२ बुधे उभा.** लग्न २
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि मीन
समयः वृष- दिवा १०।०५ से १०।५२ यावत्

|| जीर्णगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ||

वैशाख मासः

सन२०२६ २४ अप्रे. **शु. ०८ शुक्रे पुष्ये** अभिजिति (भद्रा ८।०१ तक)
यजमान राशि- वृष मिथुन कर्क कन्या तुला वृश्चिक मकर कुंभ मीन : चंद्रराशि कर्क
समयः अभि.- दिवा १२।०४ से १२।५२

|| कुंभचक्ररहिताः जीर्णगृहप्रवेश (वास्तु) मुहूर्त्ताः ||

श्रावण मासः

सन२०२६ २८ अग. **शु. १५ शुक्रे शते** अभिजिति
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि कुंभ
समयः अभि.- दिवा १२।०७ से १२।५५

माघ मासः

सन२०२७ २९ जन. **कृ. ०८ शुक्रे स्वातौ** अभिजिति, २ (महापात मोक्षः १०।३६)
यजमान राशि- मेष वृष मिथुन सिंह कन्या तुला धनु मकर कुंभ : चंद्रराशि तुला
समयः अभि.- दिवा १२।१९ से १।०७, वृष- दिवा १२।४३ से २।३९

(दृष्टिदोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधिभिः)

परे लग्नशुद्ध्या कुयोगादिनाशम् -

व्याख्या- अथ परे आचार्या लग्नशुद्ध्या समीचीन-लग्नबलेन कुयोगानां मृत्युक्रकचादीनां नाशं भवंतीति शेषः । - पीयूषधारा (पृष्ठ ४६, श्लो.४२)

अर्थ- लग्न शुद्धि के समय तिथि, नक्षत्र और विष्कुंभादि योग द्वारा उत्पन्न हुए मृत्यु-क्रकचादि कुयोग स्वयं नष्ट हो जाते हैं (जैसे सूर्योदय होने पर अंधेरा नष्ट हो जाता है) ।

विशेष- किसी एक विद्वान् के द्वारा बताये हुए शुद्धलग्न मुहूर्त्त को दूसरा विद्वान् (बालबुद्धि वाला) यजमान को यह कह कर भ्रमित (गुमराह) कर देता है कि उस दिन मृत्यु-क्रकचादि कुयोग होने से यह मुहूर्त्त अच्छा नहीं है । नोट- ऐसे बालमति के विद्वानों से करवद्ध प्रार्थना है कि ज्योतिष-शास्त्र का उपहास (मजाक) न करें । कहा भी है- "नानाशास्त्र विचक्षणश्च पुरुषांनिन्दन्ति मूर्खाः सदा इति" । अपि च -

खलो मृगयते दोषं गुणपूर्णेषु वस्तुषु । वने पुष्पफलाकीर्णे पुरीषमिव सूकरः ॥

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादास्तेषु केवलम् । प्रत्यक्षम् ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥
- वेंकटेशबापू केतकर, ज्योतिर्गणित

तत्तद् गतिवशान्नित्यं यथादृक्तुल्यतां ग्रहाः । प्रयान्ति तत्प्रवक्ष्यामि स्फुटीकरणमादरान् ॥
- सूर्य सि. स्पष्टा. श्लो (१४)

(अक्षांशः २७°२९' उ., रेखांशः ९४°५८'पू.)

मुख्य व्रतोत्सव तालिका संवत् २०८२, (सन २०२५-२०२६)

(तिथि में - शु. से शुक्लपक्ष और कृ. से कृष्णपक्ष)

मार्च — चैत्रमास शुक्लपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
३०। ३ रवि	शु. १	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
३०। ३ रवि	शु. १	नया संवत आरम्भ
३०। ३ रवि	शु. १	नवरात्र आरम्भ
३०। ३ रवि	शु. १	घटस्थापन
३०। ३ रवि	शु. १	ध्वजारोपण
३०। ३ रवि	शु. १	गुडी पड़वा (महाराष्ट्र)
३०। ३ रवि	शु. १	कल्पादि
३१। ३ सोम	शु. २	मत्स्योत्पत्ति
३१। ३ सोम	शु. २	अरुन्धती व्रत-पूजा
३१। ३ सोम	शु. २	सिंधारा
अप्रेल २०२५		
१। ४ मंगल	शु. ३	मन्वादि
१। ४ मंगल	शु. ३	अंगारक विनायक चतुर्थी
१। ४ मंगल	शु. ३	गणगोर पूजा समापन
१। ४ मंगल	शु. ३	मनोरथ तृतीया व्रत
१। ४ मंगल	शु. ३	सौभाग्य शयन व्रत
१। ४ मंगल	शु. ३	शिवशक्ति पूजा
२। ४ बुध	शु. ५	गुड फ्रायडे (ईसाई)
२। ४ बुध	शु. ५	कल्पादि
२। ४ बुध	शु. ५	डोलोत्सव
३। ४ गुरु	शु. ६	स्कन्द षष्ठी व्रत
५। ४ शनि	शु. ८	भवान्युत्पत्ति
५। ४ शनि	शु. ८	अष्टमी की कड़ाई
५। ४ शनि	शु. ८	अशोककलिका प्राशन
६। ४ रवि	शु. ९	श्री रामनवमी
८। ४ मंगल	शु.११	कामदा एकादशी व्रत
८। ४ मंगल	शु.११	श्रीश्यामबाबा जागरण
८। ४ मंगल	शु.११	लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव
९। ४ बुध	शु.१२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
९। ४ बुध	शु.१२	हरि दमनोत्सव
१०। ४ गुरु	शु.१३	प्रदोष व्रत
१०। ४ गुरु	शु.१३	जैन महावीर जयंती
११। ४ शुक्र	शु.१४	शिव पूजन विशेष
१२। ४ शनि	शु.१५	मन्वादि
१२। ४ शनि	शु.१५	पूर्णिमा व्रत और पुण्य
१२। ४ शनि	शु.१५	बैशाख स्नान प्रारम्भ
१३। ४ रवि	शु.१५	हनुमान जयंती
१३। ४ रवि	शु.१५	अश्वमेधयज्ञफल

अप्रेल — वैशाखमास कृष्णपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
१४। ४ सोम	कृ. १	डा. आम्बेडकर जयन्ती
१६। ४ बुध	कृ. ३	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०।४३
१७। ४ गुरु	कृ. ४	अनुसूया जयंती
२१। ४ सोम	कृ. ८	कालाष्टमी
२१। ४ सोम	कृ. ८	बूढो बास्योड़ो
२२। ४ मंगल	कृ. ९	कृष्णानौमी
२४। ४ गुरु	कृ.११	वरुथिनि एकादशी व्रत
२५। ४ शुक्र	कृ.१२	प्रदोष व्रत
२६। ४ शनि	कृ.१३	मासिक शिवरात्री व्रत
२७। ४ रवि	कृ.१४	देव-पितृकार्य में अमावस्या

अप्रेल — वैशाखमास शुक्लपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
२९। ४ मंगल	शु. २	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
२९। ४ मंगल	शु. २	शिवाजी जयंती
२९। ४ मंगल	शु. २	परशुराम जयंती
३०। ४ बुध	शु. ३	त्रेता युगादि
३०। ४ बुध	शु. ३	कल्पादि
३०। ४ बुध	शु. ३	अक्षय तृतीया (आखातीज)
मई २०२५		
१। ५ गुरु	शु. ४	महाराष्ट्र दिवस, विश्व श्रम दिवस
१। ५ गुरु	शु. ४	विनायक चतुर्थी
२। ५ शुक्र	शु. ५	श्री आद्यशंकराचार्य जयंती
२। ५ शुक्र	शु. ५	श्री रामानुज जयंती
३। ५ शनि	शु. ६	गंगोत्पत्ति
३। ५ शनि	शु. ६	गंगापूजन
६। ५ मंगल	शु. ९	शुक्लानौमी
६। ५ मंगल	शु. ९	सीता नवमी
७। ५ बुध	शु.१०	टैगोर जयन्ती
८। ५ गुरु	शु.११	मोहिनी एकादशी व्रत
८। ५ गुरु	शु.११	श्रीश्यामबाबा जागरण
९। ५ शुक्र	शु.१२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
९। ५ शुक्र	शु.१२	प्रदोष व्रत
११। ५ रवि	शु.१४	नृसिंह चतुर्दशी
१२। ५ सोम	शु.१५	कूर्मोत्पत्ति
१२। ५ सोम	शु.१५	पूर्णिमा व्रत और पुण्य
१२। ५ सोम	शु.१५	बैशाखस्नानपूर्त्ति
१२। ५ सोम	शु.१५	धर्म प्रीत्यर्थ जलकुंभदान

मई — ज्येष्ठमास कृष्णपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
१४। ५ बुध	कृ. २	नारद जयंती, वीणादान
१६। ५ शुक्र	कृ. ४	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २१।२२
२०। ५ मंगल	कृ. ७	कालाष्टमी
२१। ५ बुध	कृ. ८	कृष्णानौमी
२३। ५ शुक्र	कृ.११	अपरा एकादशी व्रत स्मार्त, वैष्णव
२४। ५ शनि	कृ.१२	अपरा एकादशी व्रत निम्बा.
२५। ५ रवि	कृ.१३	प्रदोष व्रत
२५। ५ रवि	कृ.१३	मासिक शिवरात्री व्रत
२६। ५ सोम	कृ.१४	शनि जयंती
२६। ५ सोम	कृ.१४	भाऊका अमा.
२६। ५ सोम	कृ.१४	पितृकार्य में अमावस्या
२७। ५ मंगल	कृ.३०	नेहरुजी पुण्य तिथि
२७। ५ मंगल	कृ.३०	भाऊका-करिदिन (महाराष्ट्र)
२७। ५ मंगल	कृ.३०	वटपूजन (राजस्थान)
२७। ५ मंगल	कृ.३०	देवकार्य में अमावस्या

मई — ज्येष्ठमास शुक्लपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
२८। ५ बुध	शु. १	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
२८। ५ बुध	शु. १	करिदिन (महाराष्ट्र)
२८। ५ बुध	शु. १	श्री गंगादशाश्वमेधस्नान प्रारम्भ
२९। ५ गुरु	शु. ३	रंभा व्रत
२९। ५ गुरु	शु. ३	महाराणा प्रताप जयंती
३०। ५ शुक्र	शु. ४	विनायक चतुर्थी
जून २०२५		
३। ६ मंगल	शु. ८	दुर्गाष्टमी
३। ६ मंगल	शु. ८	धूमावती जयंती
४। ६ बुध	शु. ९	शुक्लानौमी
५। ६ गुरु	शु.१०	गंगा दशहरा व्रत
७। ६ शनि	शु.११	निर्जला एकादशी व्रत
७। ६ शनि	शु.११	श्रीश्यामबाबा जागरण
८। ६ रवि	शु.१२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
८। ६ रवि	शु.१२	प्रदोष व्रत
८। ६ रवि	शु.१२	वटसावित्री व्रत प्रारम्भ (गुजरात)
१०। ६ मंगल	शु.१४	वटसावित्री व्रत पूर्त्ति (गुजरात)
१०। ६ मंगल	शु.१४	अब्द साध्य व्रत
११। ६ बुध	शु.१५	तारा (गुरु अस्त)
११। ६ बुध	शु.१५	मन्वादि
११। ६ बुध	शु.१५	पूर्णिमा व्रत और पुण्य
११। ६ बुध	शु.१५	कबीर जयंती
११। ६ बुध	शु.१५	ज्येष्ठी योग

जून — आषाढ़मास कृष्णपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
१४। ६ शनि	कृ. ३	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०।५१
१८। ६ बुध	कृ. ७	कालाष्टमी
२०। ६ शुक्र	कृ. ९	कृष्णानौमी
२१। ६ शनि	कृ.१०	सायन दक्षिणायनारंभः स्टै. ८।०२
२२। ६ रवि	कृ.११	अयन करिदिन
२२। ६ रवि	कृ.११	योगिनी एकादशी व्रत
२३। ६ सोम	कृ.१३	प्रदोष व्रत
२३। ६ सोम	कृ.१३	मासिक शिवरात्री व्रत
२५। ६ बुध	कृ.३०	देव-पितृकार्य में अमावस्या

जून — आषाढ़मास शुक्लपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
२६। ६ गुरु	शु. १	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती४५)
२७। ६ शुक्र	शु. २	श्री जगदीश रथ यात्रा
२८। ६ शनि	शु. ३	विनायक चतुर्थी
३०। ६ सोम	शु. ५	स्कन्द षष्ठी
जुलाई २०२५		
४। ७ शुक्र	शु. ९	शुक्लानौमी
४। ७ शुक्र	शु. ९	भड़ली नवमी
५। ७ शनि	शु.१०	मन्वादि
५। ७ शनि	शु.१०	आशा दशमी
६। ७ रवि	शु.११	तारा शुद्ध (गुरु उदय)
६। ७ रवि	शु.११	देव शयनी एकादशी व्रत
६। ७ रवि	शु.११	श्रीश्यामबाबा जागरण
६। ७ रवि	शु.११	चतुर्मास व्रत प्रारम्भ
६। ७ रवि	शु.११	गोपद्मव्रतोद्यापन
६। ७ रवि	शु.११	हरिवासर २२।४२ से
७। ७ सोम	शु.१२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
७। ७ सोम	शु.१२	श्रावण में शाक-सब्जी छोड़ने का व्रत
७। ७ सोम	शु.१२	हरिवासर ५।२१ तक
८। ७ मंगल	शु.१३	प्रदोष व्रत
८। ७ मंगल	शु.१३	जया पार्वती व्रत
१०। ७ गुरु	शु.१५	मन्वादि
१०। ७ गुरु	शु.१५	पूर्णिमा व्रत और पुण्य
१०। ७ गुरु	शु.१५	वायु परीक्षा
१०। ७ गुरु	शु.१५	गोपद्म व्रत प्रारम्भ
१०। ७ गुरु	शु.१५	व्यासपूजा
१०। ७ गुरु	शु.१५	गुरु पूर्णिमा
१०। ७ गुरु	शु.१५	आषाढी योग

जुलाई — श्रावणमास कृष्णपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
११। ७ शुक्र	कृ. १	नक्त व्रत प्रारम्भ
१२। ७ शनि	कृ. २	बृहत्तल्पा
१४। ७ सोम	कृ. ४	चतुर्थीव्रत चन्द्रोदय २०।४१
१५। ७ मंगल	कृ. ५	नागपंचमी (राजस्थान)
१८। ७ शुक्र	कृ. ८	कालाष्टमी
१९। ७ शनि	कृ. ९	कृष्णानौमी
२१। ७ सोम	कृ.११	कामिका एकादशी व्रत
२२। ७ मंगल	कृ.१२	प्रदोष व्रत
२३। ७ बुध	कृ.१३	मासिक शिवरात्री व्रत
२४। ७ गुरु	कृ.३०	हरियाली अमा.
२४। ७ गुरु	कृ.३०	देव-पितृकार्य में अमावस्या

जुलाई — श्रावणमास शुक्लपक्ष

तारीख वार	तिथि	व्रतोत्सव-त्यौहार
२६। ७ शनि	शु. २	चंद्रदर्शन (मुहुर्त्ती३०)
२६। ७ शनि	शु. २	सिंधारा
२७। ७ रवि	शु. ३	तीज
२७। ७ रवि	शु. ३	स्वर्णगौरी व्रत
२७। ७ रवि	शु. ३	मधुश्रवा व्रत (गुजरात)
२७। ७ रवि	शु. ३	सुकृत तृतीया व्रत
२८। ७ सोम	शु. ४	विनायक चतुर्थी
२८। ७ सोम	शु. ४	वरद चतुर्थी
२८। ७ सोम	शु. ४	दूर्वा गणपति व्रत
२८। ७ सोम	शु. ४	रोटक व्रत प्रारम्भ
२८। ७ सोम	शु. ४	सोमेश्वरपूजन
२९। ७ मंगल	शु. ५	नागपंचमी
२९। ७ मंगल	शु. ५	नागदष्ट व्रत
३०। ७ बुध	शु. ६	कल्की जयंती
३०। ७ बुध	शु. ६	वर्णषष्ठी
३१। ७ गुरु	शु. ७	शीतला
३१। ७ गुरु	शु. ७	तुलसी जयंती
अगस्त २०२५		
१। ८ शुक्र	शु. ७	तिलकपुण्यतिथि
१। ८ शुक्र	शु. ७	दुर्गाष्टमी
३। ८ रवि	शु. ९	शुक्लानौमी
५। ८ मंगल	शु.११	पवित्रा एकादशी व्रत
५। ८ मंगल	शु.११	श्रीश्यामबाबा जागरण
६। ८ बुध	शु.१२	श्रीश्यामबाबा द्वादशी ज्योत्
६। ८ बुध	शु.१२	प्रदोष व्रत
६। ८ बुध	शु.१२	भाद्रपद में दही छोड़ने का व्रत
६। ८ बुध	शु.१२	पवित्रारोपण
८। ८ शुक्र	शु.१४	हयग्रीव जयंती
८। ८ शुक्र	शु.१४	सूणमाण्डणा भद्रा के पहिले

संवत् २०८२, विभिन्न नगरों में दिन के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै. समय में)

॥ 卐 धनतेरस 卐 ॥ ता. १८ अक्टूबर २०२५ शनिवार

शहर	रामगढ	मुम्बई	गंगानगर	जौधपुर	बाराँ,रा.	रोहतक	लुधियाना	गौहाटी	गोलाघाट	तिनसुकिया	सिल्लीगुडी	कटक	पटना	वृन्दावन	अयोध्या	इलाहाबाद	हरद्वार	जबलपुर	बिलासपुर	मैसूर	तिरुपति	त्रिवेंद्रम	धर्मसाला	श्रीनगर
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सूर्योदय	६।३६	६।३७	६।४२	६।४४	६।२७	६।३०	६।३५	५।२७	५।१८	५।१३	५।४१	५।४६	५।५३	६।२४	६।०६	६।०६	६।२५	६।१२	६।०२	६।१७	६।०७	६।१३	६।३४	६।४२
चौ.मान	१।२५	१।२७	१।२४	१।२५	१।२५	१।२५	१।२४	१।२५	१।२५	१।२५	१।२५	१।२६	१।२५	१।२५	१।२५	१।२५	१।२४	१।२६	१।२६	१।२८	१।२८	१।२९	१।२४	१।२३
काल	८।०१	८।०४	८।०७	८।०९	७।५३	७।५५	७।५९	६।५२	६।४४	६।३८	७।०६	७।१२	७।१८	७।४९	७।३१	७।३१	७।४९	७।३८	७।२८	७।४५	७।३५	७।४२	७।५८	८।०५
शुभ	९।२५	९।३०	९।३१	९।३५	९।१८	९।१९	९।२३	८।१७	८।०९	८।०३	८।३१	८।३९	८।४३	९।१४	८।५६	८।५७	९।१३	९।०३	८।५४	९।१३	९।०२	९।१०	९।२२	९।२९
रोग	१०।५०	१०।५७	१०।५५	११।००	१०।४३	१०।४४	१०।४७	९।४३	९।३४	९।२८	९।५६	१०।०५	१०।०९	१०।३९	१०।२१	१०।२२	१०।३८	१०।२९	१०।२०	१०।४०	१०।३०	१०।३९	१०।४६	१०।५२
उद्वेग	१२।१५	१२।२४	१२।२०	१२।२५	१२।०९	१२।०८	१२।११	११।०८	१०।५९	१०।५३	११।२१	११।३१	११।३४	१२।०४	११।४६	११।४७	१२।०२	११।५५	११।४६	१२।०८	११।५८	१२।०७	१२।०९	१२।१५
चल	१३।४०	१३।५०	१३।४४	१३।५०	१३।३४	१३।३३	१३।३५	१२।३३	१२।२४	१२।१८	१२।४६	१२।५८	१२।५९	१३।२९	१३।११	१३।१३	१३।२६	१३।२१	१३।१२	१३।३६	१३।२५	१३।३६	१३।३३	१३।३९
लाभ	१५।०५	१५।१७	१५।०८	१५।१५	१५।००	१४।५८	१५।००	१३।५८	१३।४९	१३।४३	१४।११	१४।२४	१४।२५	१४।५४	१४।३६	१४।३८	१४।५१	१४।४७	१४।३८	१५।०४	१४।५३	१५।०४	१४।५७	१५।०२
अमृत	१६।२९	१६।४४	१६।३३	१६।४१	१६।२५	१६।२२	१६।२४	१५।२३	१५।१४	१५।०८	१५।३७	१५।५०	१५।५०	१६।१९	१६।०१	१६।०३	१६।१५	१६।१३	१६।०४	१६।३२	१६।२१	१६।३३	१६।२१	१६।२५
काल	१७।५४	१८।१०	१७।५७	१८।०६	१७।५०	१७।४७	१७।४८	१६।४९	१६।३९	१६।३३	१७।०२	१७।१७	१७।१५	१७।४४	१७।२६	१७।२९	१७।३९	१७।३८	१७।३०	१८।००	१७।४८	१८।०१	१७।४५	१७।४९

संवत् २०८२, विभिन्न नगरों में रात्रि के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै. समय में)

॥ 卐 धनतेरस 卐 ॥ ता. १८ अक्टूबर २०२५ शनिवार

शहर	रामगढ	मुम्बई	गंगानगर	जौधपुर	बाराँ,रा.	रोहतक	लुधियाना	गौहाटी	गोलाघाट	तिनसुकिया	सिल्लीगुडी	कटक	पटना	वृन्दावन	अयोध्या	इलाहाबाद	हरद्वार	जबलपुर	बिलासपुर	मैसूर	तिरुपति	त्रिवेंद्रम	धर्मसाला	श्रीनगर
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सूर्यास्त	१७।५४	१८।१०	१७।५७	१८।०६	१७।५०	१७।४७	१७।४८	१६।४९	१६।३९	१६।३३	१७।०२	१७।१७	१७।१५	१७।४४	१७।२६	१७।२९	१७।३९	१७।३८	१७।३०	१८।००	१७।४८	१८।०१	१७।४५	१७।४९
चौ.मान	१।३५	१।३३	१।३६	१।३५	१।३५	१।३५	१।३६	१।३५	१।३५	१।३५	१।३५	१।३४	१।३५	१।३५	१।३५	१।३५	१।३६	१।३४	१।३४	१।३२	१।३२	१।३१	१।३६	१।३७
लाभ	१९।२९	१९।४४	१९।३३	१९।४१	१९।२५	१९।२२	१९।२४	१८।२३	१८।१४	१८।०८	१८।३७	१८।५०	१८।५०	१९।१९	१९।०१	१९।०३	१९।१५	१९।१३	१९।०४	१९।३२	१९।२१	१९।३३	१९।२१	१९।२५
उद्वेग	२१।०५	२१।१७	२१।०८	२१।१५	२१।००	२०।५८	२१।००	१९।५८	१९।४९	१९।४३	२०।१२	२०।२४	२०।२५	२०।५४	२०।३६	२०।३८	२०।५१	२०।४७	२०।३८	२१।०४	२०।५३	२१।०४	२०।५७	२१।०२
शुभ	२२।४०	२२।५०	२२।४४	२२।५०	२२।३४	२२।३३	२२।३६	२१।३३	२१।२४	२१।१८	२१।४७	२१।५८	२२।००	२२।२९	२२।११	२२।१३	२२।२७	२२।२१	२२।१२	२२।३६	२२।२५	२२।३६	२२।३३	२२।३९
अमृत	२४।१५	२४।२४	२४।२०	२४।२५	२४।०९	२४।०९	२४।१२	२३।०८	२२।५९	२२।५३	२३।२२	२३।३२	२३।३४	२४।०४	२३।४६	२३।४८	२४।०२	२३।५५	२३।४६	२४।०८	२३।५८	२४।०७	२४।१०	२४।१६
चल	२५।५१	२५।५७	२५।५६	२६।००	२५।४४	२५।४४	२५।४८	२४।४३	२४।३४	२४।२८	२४।५७	२५।०५	२५।०९	२५।३९	२५।२१	२५।२२	२५।३८	२५।३०	२५।२०	२५।४०	२५।३०	२५।३९	२५।४६	२५।५२
रोग	२७।२६	२७।३१	२७।३१	२७।३५	२७।१८	२७।२०	२७।२४	२६।१८	२६।०९	२६।०४	२६।३२	२६।३९	२६।४४	२७।१५	२६।५६	२६।५७	२७।१४	२७।०४	२६।५४	२७।१३	२७।०३	२७।१०	२७।२२	२७।२९
काल	२९।०१	२९।०४	२९।०७	२९।१०	२८।५३	२८।५५	२९।००	२७।५३	२७।४४	२७।३९	२८।०७	२८।१३	२८।१९	२८।५०	२८।३१	२८।३२	२८।५०	२८।३८	२८।२८	२८।४५	२८।३५	२८।४२	२८।५९	२९।०६
लाभ	३०।३६	३०।३७	३०।४३	३०।४५	३०।२८	३०।३१	३०।३५	२९।२८	२९।१९	२९।१४	२९।४२	२९।४६	२९।५३	३०।२५	३०।०६	३०।०७	३०।२५	३०।१२	३०।०२	३०।१७	३०।०७	३०।१३	३०।३५	३०।४३

संवत् २०८२, विभिन्न नगरों में लग्नप्रवेश (स्टै. समय में)

॥ 卐 धनतेरस 卐 ॥ ता. १८ अक्टूबर २०२५ शनिवार (उदयारम्भ) ॥ कर्के त्याज्यम् ॥

शहर	रामगढ	मुम्बई	गंगानगर	जौधपुर	बाराँ,रा.	रोहतक	लुधियाना	गौहाटी	गोलाघाट	तिनसुकिया	सिल्लीगुडी	कटक	पटना	वृन्दावन	अयोध्या	इलाहाबाद	हरद्वार	जबलपुर	बिलासपुर	मैसूर	तिरुपति	त्रिवेंद्रम	धर्मसाला	श्रीनगर
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
तुला	६।३३	६।३४	६।३९	६।४१	६।२४	६।२७	६।३१	५।२४	५।१५	५।१०	५।३८	५।४३	५।५०	६।२१	६।०३	६।०३	६।२१	६।०९	५।५९	६।१४	६।०४	६।१०	६।३१	६।३८
वृश्चिक	८।५२	८।४६	९।००	८।५८	८।४०	८।४७	८।५३	७।४२	७।३३	७।२९	७।५६	७।५६	८।०७	८।४०	८।२१	८।२०	८।४२	८।२४	८।१३	८।२०	८।१२	८।१४	८।५४	९।०४
धनु	११।१०	११।००	११।१९	११।१६	१०।५८	११।०६	११।१३	९।५९	९।५१	९।४७	१०।१४	१०।११	१०।२४	१०।५८	१०।३९	१०।३७	११।०२	१०।४०	१०।२९	१०।३२	१०।२४	१०।२४	११।१५	११।२५
मकर	१३।१५	१३।०६	१३।२३	१३।२१	१३।०३	१३।१०	१३।१७	१२।०४	११।५६	११।५२	१२।१९	१२।१७	१२।२९	१३।०३	१२।४३	१२।४२	१३।०६	१२।४६	१२।३५	१२।४०	१२।३२	१२।३३	१३।१८	१३।२८
कुंभ	१४।५८	१४।५६	१५।०५	१५।०६	१४।४८	१४।५३	१४।५८	१३।४९	१३।४०	१३।३६	१४।०३	१४।०६	१४।१४	१४।४६	१४।२८	१४।२७	१४।४८	१४।३२	१४।२२	१४।३४	१४।२५	१४।२९	१४।५८	१५।०६
मीन	१६।२७	१६।३३	१६।३२	१६।३६	१६।२०	१६।२०	१६।२३	१५।१९	१५।१०	१५।०५	१५।३३	१५।४२	१५।४५	१६।१५	१५।५७	१५।५८	१६।१४	१६।०६	१५।५७	१६।१७	१६।०७	१६।१५	१६।२२	१६।२८
मेष	१७।५३	१८।०८	१७।५५	१८।०४	१७।४९	१७।४५	१७।४६	१६।४७	१६।३८	१६।३१	१७।००	१७।१५	१७।१४	१७।४२	१७।२५	१७।२७	१७।३८	१७।३७	१७।२८	१७।५८	१७।४६	१७।५९	१७।४३	१७।४७
वृष	१९।२९	१९।५२	१९।३०	१९।४२	१९।२८	१९।२१	१९।२०	१८।२५	१८।१६	१८।०८	१८।३७	१८।५८	१८।५२	१९।१९	१९।०२	१९।०६	१९।१२	१९।१७	१९।१०	१९।४७	१९।३४	१९।५१	१९।५५	१९।१८
मिथुन	२१।२५	२१।५२	२१।२५	२१।३९	२१।२५	२१।१६	२१।१५	२०।२२	२०।१३	२०।०५	२०।३४	२०।५७	२०।४९	२१।१५	२०।५९	२१।०३	२१।०८	२१।१६	२१।०९	२१।४९	२१।३६	२१।५५	२१।०९	२१।११
कर्क	२३।४०	२४।०५	२३।४०	२३।५३	२३।३९	२३।३१	२३।३०	२२।३६	२२।२७	२२।१९	२२।४९	२३।११	२३।०४	२३।३०	२३।१३	२३।१७	२३।२३	२३।२९	२३।२२	२४।०१	२३।४८	२४।०६	२३।२५	२३।२७
सिंह	२६।००	२६।१९	२६।०२	२६।१२	२५।५७	२५।५२	२५।५३	२४।५५	२४।४६	२४।३९	२५।०८	२५।२५	२५।२२	२५।५०	२५।३२	२५।३५	२५।४५	२५।४६	२५।३८	२६।१०	२५।५८	२६।१३	२५।४९	२५।४२
कन्या	२८।१७	२८।२७	२८।२१	२८।२७	२८।११	२८।१०	२८।१२	२७।१०	२७।०१	२६।५५	२७।२३	२७।३५	२७।३६	२८।०६	२७।४८	२७।५०	२८।०३	२७।५८	२७।४९	२८।१३	२८।०२	२८।१२	२८।१०	२८।१६

संवत् २०८२, विभिन्न नगरों में दिन के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै. समय में)

॥ 卐 श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् 卐 ॥ ता. २० अक्टूबर २०२५ सोमवार

शहर	रामगढ घं. मि.	मुम्बई घं. मि.	गंगानगर घं. मि.	जौधपुर घं. मि.	बारॉं,रा. घं. मि.	रोहतक घं. मि.	लुधियाना घं. मि.	गौहाटी घं. मि.	गोलाघाट घं. मि.	तिनसुकिया घं. मि.	सिल्लीगुडी घं. मि.	कटक घं. मि.	पटना घं. मि.	वृन्दावन घं. मि.	अयोध्या घं. मि.	इलाहाबाद घं. मि.	हरद्वार घं. मि.	जबलपुर घं. मि.	बिलासपुर घं. मि.	मैसूर घं. मि.	तिरुपति घं. मि.	त्रिवेंद्रम घं. मि.	धर्मसाला घं. मि.	श्रीनगर घं. मि.
सूर्योदय	६।३७	६।३८	६।४४	६।४५	६।२८	६।३१	६।३६	५।२८	५।२०	५।१४	५।४२	५।४७	५।५४	६।२६	६।०७	६।०७	६।२६	६।१३	६।०३	६।१७	६।०८	६।१३	६।३६	६।४३
चौ.मान	१।२४	१।२६	१।२४	१।२५	१।२५	१।२४	१।२४	१।२५	१।२५	१।२५	१।२५	१।२६	१।२५	१।२५	१।२५	१।२५	१।२४	१।२५	१।२६	१।२८	१।२७	१।२८	१।२३	१।२३
अमृत	८।०१	८।०४	८।०७	८।१०	७।५३	७।५५	८।००	६।५३	६।४४	६।३९	७।०७	७।१३	७।१९	७।५०	७।३२	७।३२	७।५०	७।३८	७।२९	७।४५	७।३५	७।४१	७।५९	८।०६
काल	९।२६	९।३१	९।३१	९।३५	९।१८	९।२०	९।२४	८।१८	८।०९	८।०४	८।३१	८।३९	८।४४	९।१५	८।५६	८।५७	९।१४	९।०४	८।५४	९।१२	९।०२	९।१०	९।२२	९।२९
शुभ	१०।५०	१०।५७	१०।५५	११।००	१०।४३	१०।४४	१०।४७	९।४३	९।३४	९।२८	९।५६	१०।०५	१०।०९	१०।३९	१०।२१	१०।२२	१०।३८	१०।२९	१०।२०	१०।४०	१०।३०	१०।३८	१०।४६	१०।५२
रोग	१२।१५	१२।२३	१२।१९	१२।२५	१२।०८	१२।०८	१२।११	११।०७	१०।५९	१०।५३	११।२१	११।३१	११।३४	१२।०४	११।४६	११।४७	१२।०२	११।५५	११।४६	१२।०८	११।५७	१२।०७	१२।०९	१२।१५
उद्वेग	१३।३९	१३।५०	१३।४३	१३।४९	१३।३३	१३।३२	१३।३५	१२।३२	१२।२३	१२।१७	१२।४६	१२।५७	१२।५९	१३।२८	१३।१०	१३।१२	१३।२६	१३।२०	१३।११	१३।३६	१३।२५	१३।३५	१३।३२	१३।३८
चल	१५।०३	१५।१६	१५।०७	१५।१४	१४।५९	१४।५६	१४।५८	१३।५७	१३।४८	१३।४२	१४।१०	१४।२३	१४।२४	१४।५३	१४।३५	१४।३७	१४।५०	१४।४६	१४।३७	१५।०३	१४।५२	१५।०४	१४।५६	१५।०१
लाभ	१६।२८	१६।४२	१६।३१	१६।३९	१६।२४	१६।२१	१६।२२	१५।२२	१५।१३	१५।०६	१५।३५	१५।४९	१५।४९	१६।१७	१६।००	१६।०२	१६।१३	१६।११	१६।०३	१६।३१	१६।२०	१६।३२	१६।१९	१६।२४
अमृत	१७।५२	१८।०९	१७।५५	१८।०४	१७।४९	१७।४५	१७।४६	१६।४७	१६।३८	१६।३१	१७।००	१७।१५	१७।१४	१७।४२	१७।२४	१७।२७	१७।३७	१७।३७	१७।२९	१७।५९	१७।४७	१८।००	१७।४२	१७।४६

संवत् २०८२, विभिन्न नगरों में रात्रि के चौघड़ियों का समाप्तिकाल (स्टै. समय में)

॥ 卐 श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् 卐 ॥ ता. २० अक्टूबर २०२५ सोमवार

शहर	रामगढ घं. मि.	मुम्बई घं. मि.	गंगानगर घं. मि.	जौधपुर घं. मि.	बारॉं,रा. घं. मि.	रोहतक घं. मि.	लुधियाना घं. मि.	गौहाटी घं. मि.	गोलाघाट घं. मि.	तिनसुकिया घं. मि.	सिल्लीगुडी घं. मि.	कटक घं. मि.	पटना घं. मि.	वृन्दावन घं. मि.	अयोध्या घं. मि.	इलाहाबाद घं. मि.	हरद्वार घं. मि.	जबलपुर घं. मि.	बिलासपुर घं. मि.	मैसूर घं. मि.	तिरुपति घं. मि.	त्रिवेंद्रम घं. मि.	धर्मसाला घं. मि.	श्रीनगर घं. मि.
सूर्यास्त	१७।५२	१८।०९	१७।५५	१८।०४	१७।४९	१७।४५	१७।४६	१६।४७	१६।३८	१६।३१	१७।००	१७।१५	१७।१४	१७।४२	१७।२४	१७।२७	१७।३७	१७।३७	१७।२९	१७।५९	१७।४७	१८।००	१७।४२	१७।४६
चौ.मान	१।३६	१।३४	१।३६	१।३५	१।३५	१।३६	१।३६	१।३५	१।३५	१।३६	१।३५	१।३४	१।३५	१।३६	१।३५	१।३५	१।३६	१।३५	१।३४	१।३२	१।३३	१।३२	१।३७	१।३७
चल	१९।२८	१९।४२	१९।३१	१९।३९	१९।२४	१९।२१	१९।२२	१८।२२	१८।१३	१८।०६	१८।३५	१८।४९	१८।४९	१९।१७	१९।००	१९।०२	१९।१४	१९।११	१९।०३	१९।३१	१९।२०	१९।३२	१९।१९	१९।२४
रोग	२१।०४	२१।१६	२१।०७	२१।१४	२०।५९	२०।५७	२०।५९	१९।५७	१९।४८	१९।४२	२०।१०	२०।२३	२०।२४	२०।५३	२०।३५	२०।३७	२०।५०	२०।४६	२०।३७	२१।०३	२०।५२	२१।०४	२०।५६	२१।०१
काल	२२।३९	२२।५०	२२।४३	२२।५०	२२।३४	२२।३२	२२।३५	२१।३३	२१।२४	२१।१७	२१।४६	२१।५७	२१।५९	२२।२८	२२।११	२२।१२	२२।२६	२२।२०	२२।१२	२२।३६	२२।२५	२२।३५	२२।३३	२२।३८
लाभ	२४।१५	२४।२३	२४।२०	२४।२५	२४।०९	२४।०८	२४।११	२३।०८	२२।५९	२२।५३	२३।२१	२३।३१	२३।३४	२४।०४	२३।४६	२३।४७	२४।०२	२३।५५	२३।४६	२४।०८	२३।५७	२४।०७	२४।०९	२४।१५
उद्वेग	२५।५१	२५।५७	२५।५६	२६।००	२५।४४	२५।४४	२५।४८	२४।४३	२४।३४	२४।२८	२४।५७	२५।०५	२५।०९	२५।४०	२५।२१	२५।२२	२५।३८	२५।३०	२५।२०	२५।४०	२५।३०	२५।३८	२५।४६	२५।५३
शुभ	२७।२६	२७।३१	२७।३२	२७।३५	२७।१९	२७।२०	२७।२४	२६।१८	२६।०९	२६।०४	२६।३२	२६।३९	२६।४४	२७।१५	२६।५७	२६।५७	२७।१४	२७।०४	२६।५५	२७।१३	२७।०३	२७।१०	२७।२३	२७।३०
अमृत	२९।०२	२९।०४	२९।०८	२९।११	२८।५४	२८।५६	२९।०१	२७।५३	२७।४५	२७।४०	२८।०७	२८।१३	२८।१९	२८।५१	२८।३२	२८।३२	२८।५१	२८।३९	२८।२९	२८।४५	२८।३५	२८।४२	२९।००	२९।०७
चल	३०।३८	३०।३८	३०।४४	३०।४६	३०।२९	३०।३२	३०।३७	२९।२९	२९।२०	२९।१५	२९।४३	२९।४७	२९।५४	३०।२६	३०।०७	३०।०८	३०।२७	३०।१३	३०।०३	३०।१७	३०।०८	३०।१३	३०।३६	३०।४४

संवत् २०८२, विभिन्न नगरों में लग्नप्रवेश (स्टै. समय में)

॥ 卐 श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् 卐 ॥ ता. २० अक्टूबर २०२५ सोमवार (उदयारम्भ) ॥ कर्के त्याज्यम् ॥

शहर	रामगढ घं. मि.	मुम्बई घं. मि.	गंगानगर घं. मि.	जौधपुर घं. मि.	बारॉं,रा. घं. मि.	रोहतक घं. मि.	लुधियाना घं. मि.	गौहाटी घं. मि.	गोलाघाट घं. मि.	तिनसुकिया घं. मि.	सिल्लीगुडी घं. मि.	कटक घं. मि.	पटना घं. मि.	वृन्दावन घं. मि.	अयोध्या घं. मि.	इलाहाबाद घं. मि.	हरद्वार घं. मि.	जबलपुर घं. मि.	बिलासपुर घं. मि.	मैसूर घं. मि.	तिरुपति घं. मि.	त्रिवेंद्रम घं. मि.	धर्मसाला घं. मि.	श्रीनगर घं. मि.
तुला	६।२५	६।२६	६।३१	६।३३	६।१६	६।१९	६।२४	५।१६	५।०८	५।०२	५।३०	५।३५	५।४२	६।१३	५।५५	५।५५	६।१४	६।०१	५।५१	६।०६	५।५७	६।०२	६।२३	६।३१
वृश्चिक	८।४४	८।३८	८।५२	८।५१	८।३३	८।३९	८।४५	७।३४	७।२५	७।२१	७।४८	७।४८	७।५९	८।३२	८।१३	८।१२	८।३४	८।१६	८।०५	८।१२	८।०४	८।०६	८।४६	८।५६
धनु	११।०२	१०।५२	११।१२	११।०८	१०।५०	१०।५८	११।०६	९।५१	९।४३	९।३९	१०।०६	१०।०३	१०।१६	१०।५०	१०।३१	१०।२९	१०।५४	१०।३२	१०।२१	१०।२४	१०।१६	१०।१६	११।०७	११।१७
मकर	१३।०७	१२।५९	१३।१६	१३।१३	१२।५५	१३।०२	१३।०९	११।५६	११।४८	११।४४	१२।११	१२।०९	१२।२१	१२।५५	१२।३६	१२।३४	१२।५८	१२।३८	१२।२७	१२।३२	१२।२४	१२।२५	१३।१०	१३।२०
कुंभ	१४।५०	१४।४८	१४।५७	१४।५८	१४।४०	१४।४५	१४।५०	१३।४१	१३।३२	१३।२८	१३।५५	१३।५८	१४।०६	१४।३९	१४।२०	१४।१९	१४।४०	१४।२५	१४।१४	१४।२६	१४।१७	१४।२१	१४।५०	१४।५८
मीन	१६।१९	१६।२५	१६।२४	१६।२८	१६।१२	१६।१२	१६।१६	१५।११	१५।०२	१४।५७	१५।२५	१५।३४	१५।३७	१६।०८	१५।४९	१५।५१	१६।०६	१५।५८	१५।४९	१६।०९	१५।५९	१६।०७	१६।१४	१६।२०
मेष	१७।४५	१८।००	१७।४८	१७।५६	१७।४१	१७।३७	१७।३८	१६।३९	१६।३०	१६।२३	१६।५२	१७।०७	१७।०६	१७।३४	१७।१७	१७।१९	१७।३०	१७।२९	१७।२१	१७।५०	१७।३८	१७।५१	१७।३५	१७।३९
वृष	१९।२१	१९।४४	१९।२२	१९।३४	१९।२०	१९।१३	१९।१२	१८।१७	१८।०८	१८।००	१८।३०	१८।५०	१८।४४	१९।११	१८।५४	१८।५८	१९।०४	१९।०९	१९।०२	१९।३९	१९।२६	१९।४३	१९।०७	१९।१०
मिथुन	२१।१७	२१।४५	२१।१७	२१।३१	२१।१७	२१।०९	२१।०७	२०।१४	२०।०५	१९।५७	२०।२६	२०।४९	२०।४२	२१।०७	२०।५१	२०।५५	२१।००	२१।०८	२१।०१	२१।४२	२१।२९	२१।४७	२१।०१	२१।०३
कर्क	२३।३२	२३।५८	२३।३२	२३।४६	२३।३१	२३।२४	२३।२२	२२।२९	२२।१९	२२।११	२२।४१	२३।०३	२२।५६	२३।२२	२३।०५	२३।०९	२३।१५	२३।२१	२३।१४	२३।५३	२३।४१	२३।५८	२३।१७	२३।१९
सिंह	२५।५२	२६।११	२५।५४	२६।०४	२५।४९	२५।४४	२५।४५	२४।४७	२४।३८	२४।३१	२५।००	२५।१७	२५।१४	२५।४२	२५।२५	२५।२८	२५।३७	२५।३८	२५।३०	२६।०२	२५।५१	२६।०५	२५।४१	२५।४४
कन्या	२८।०९	२८।१९	२८।१३	२८।१९	२८।०३	२८।०२	२८।०५	२७।०२	२६।५३	२६।४७	२७।१६	२७।२७	२७।२९	२७।५८	२७।४०	२७।४२	२७।५६	२७।५०	२७।४१	२८।०५	२७।५४	२८।०४	२८।०२	२८।०८

॥ सिंगापुर (सिंगापुर) के लिए - प्रमुख त्योहार तालिका, विदेश ॥

संवत् २०८२, शाकः १९४७, सन २०२५-२६ (विदेश के, स्टै. समय में)

स्थल सिंगापुर (सिंगापुर) ॥ विदेश ॥ (अक्षांशाः १° १६' , रेखांशाः १०३° ४७')
City: Singapur, Videsh, (Lat 1° 16', Lon 103° 47'), Zone Time (Hours) 8

त्योहार	तारीख	वार	मास पक्ष	तिथि घं.मि.	नक्षत्र घं.मि.	सूर्योदय	सूर्यास्त
गुड़ीपड़वा	३० मार्च २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	१ १५।२१	रेव १९।०३	७।०९	७।१०
चैत्रीयनवरात्रारंभ	३० मार्च २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	१ १५।२१	रेव १९।०३	७।०९	७।१०
श्रीरामनवमी	६ अप्रेल २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	९ २१।५४	पुन ७।५८	७।०७	७।०८
महावीर जयन्ती	१० अप्रेल २०२५	गुरु	चैत्र शुक्ल	१३ २७।३६	पूफा १४।५६	७।०६	७।०७
हनुमान जयन्ती	१३ अप्रेल २०२५	रवि	चैत्र शुक्ल	१५ ८।२२	चित्रा २३।३५	७।०५	७।०६
अक्षय तृतीया	३० अप्रेल २०२५	बुध	वैशाख शुक्ल	३ १६।४५	रोहि १८।४७	७।०१	७।०३
बुद्ध पूर्णिमा	१२ मई २०२५	सोम	वैशाख शुक्ल	१५ २४।५५	स्वा ८।४४	७।००	७।०३
रक्षाबंधन	९ अगस्त २०२५	शनि	श्रावण शुक्ल	१५ १५।५१	श्रव १६।४८	७।०९	७।१२
	(पूरादिन शुद्ध है)						
जन्माष्टमी व्रतं सर्वेषाम्	१६ अगस्त २०२५	शनि	भाद्रपद कृष्ण	८ २४।०४	भर ८।३५	७।०८	७।१०
हरितालिका	२६ अगस्त २०२५	मंगल	भाद्रपद शुक्ल	३ १६।२०	हस्त अहोरात्र	७।०६	७।०८
गणेशचतुर्थी	२७ अगस्त २०२५	बुध	भाद्रपद शुक्ल	४ १८।०७	हस्त ८।२८	७।०६	७।०७
शारदीय नवरात्रारंभ	२२ सितंबर २०२५	सोम	आश्विन शुक्ल	१ २९।२५	उफा १३।५४	६।५८	६।५७
विजया दशमी	२ अक्टूबर २०२५	गुरु	आश्विन शुक्ल	१० २१।४०	उषा ११।४२	६।५५	६।५४
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	२१ अक्टूबर २०२५	मंगल	कार्तिक कृष्ण	३० २०।२५	चित्रा २५।२७	६।५०	६।४८
गुर्जराणाम् नूतनसंवत्सरारम्भः	२२ अक्टूबर २०२५	बुध	कार्तिक शुक्ल	१ २२।४५	स्वा २८।१८	६।५०	६।४८
नानक जयन्ती	५ नवंबर २०२५	बुध	कार्तिक शुक्ल	१५ २१।२२	अश्वि १२।१२	६।५०	६।४७
शकम्भरी जयन्ती	३ जनवरी २०२६	शनि	पोष शुक्ल	१५ १८।०४	आर्द्रा १९।५७	७।११	७।०७
मकरेऽर्कः	१४ जनवरी २०२६	बुध	माघ कृष्ण	११ २०।२६	अनु २९।३४	७।१६	७।१२
	मकरे रवि १७।०४, (पुण्यकालः स्टें. १७।०४ तः गुरुवासरे १५ जनवरी ९।०४ यावत्)						
मकर सक्रान्ति	१५ जनवरी २०२६	गुरु	माघ कृष्ण	१२ २२।५०	ज्ये अहोरात्र	७।१६	७।१२
महाशिवरात्री	१५ फरवरी २०२६	रवि	फाल्गुन कृष्ण	१३ १९।३६	उषा २२।१६	७।२०	७।१८
होलिका दहन	२ मार्च २०२६	सोम	फाल्गुन शुक्ल	१४ २०।३०	श्ले १०।२१	७।१८	७।१६
	होलिका दहन भद्रा पुच्छकाले (२७।५७ बजे के बाद)						

परामर्शदाता - श्रीयुत विशालवावू श्यामसुन्दरजी रूईया, ओर्चिट टांवर मुम्बई

स्थल - सिंगापुर (सिंगापुर), स्टै. समय में

संवत् २०८२, आश्विन कृष्णपक्ष में श्राद्धतिथि निर्णय
सन २०२५

पूर्णिमा	(पूनम)	का श्राद्ध	रविवार	७ सितंबर (भाद्रपद शुक्लपक्ष)	
प्रतिपदा	(एकम)	”	सोमवार	८ सितंबर	
द्वितीया	(दूज)	”	मंगलवार	९ सितंबर	
तृतीया	(तीज)	”	बुधवार	१० सितंबर	
चतुर्थी	(चोथ)	”	गुरुवार	११ सितंबर	मध्यान्ह ३।१६ बजे के पहले
पंचमी	(पांच)	”	शुक्रवार	१२ सितंबर	मध्यान्ह १२।२९ बजे के पहले
षष्ठी	(छठ)	”	शुक्रवार	१२ सितंबर	मध्यान्ह १२।२९ बजे के बाद
सप्तमी	(सातं)	”	शनिवार	१३ सितंबर	प्रातः९।५३ बजे के बा
अष्ठमी	(आठं)	”	रविवार	१४ सितंबर	प्रातः७।३२ बजे के बा
नवमी	(नौमी)	”	सोमवार	१५ सितंबर	
दशमी	(दस)	”	मंगलवार	१६ सितंबर	
एकादशी		”	बुधवार	१७ सितंबर	
द्वादशी	(बारस)	”	गुरुवार	१८ सितंबर	
त्रयोदशी	(तेरस)	”	शुक्रवार	१९ सितंबर	
चतुर्दशी	(चौदस)	”	शनिवार	२० सितंबर	
अमावस्या	(मावस)	”	रविवार	२१ सितंबर	

॥ शुभम् ॥

पञ्चाङ्गगणितकर्ता :- पं. ग्यारसीलाल शर्मा (शास्त्री)
- *वैजयन्ती संगणक (Vaijayanti Computers)*

स्वर्गीय पण्डित मनीरामजी श

दिनका चौघडिया.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रा	ला	शु	चं	का
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
ला	शु	च	का	उ	अ	रो
अ	रा	ला	शु	चं	का	उ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	च	का	उ	अ	रो	ला
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का



रात्रिका चौघडिया.

र	चं	मं	बु	गु	शु	श
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
अ	रो	ला	शु	चं	का	उ
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

मुम्बयीनगरे श्रेष्ठो वेङ्कटेश्वरनामकः । मुद्रालयो वरीवर्ति नानाग्रन्थप्रकाशकः ॥१॥ यत्र प्रबन्धोऽनुदिनं प्रभूतो ददाति मोदं विदुषां जनानाम् । श्रीक्षेमराजाधिकृतं च मान्यं मुद्रागृहे शोभित ईक्षणीयम् ॥ २ ॥ बहवः शास्त्रिणश्चात्र कृतशास्त्रपरिश्रमाः । अनेकविद्याकुशला नियुक्ताः शोधकर्मणि ॥३ ॥ नागधातुकृतानेकविधकीलकयोजने । निपुणाः सन्ति चान्येऽपि बहवः कार्मणा जनाः ॥४॥



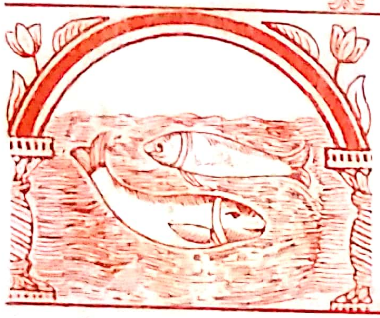
राशि मेष स्वामी भौम क्षत्रिय वर्ण चतुष्पाद चरस्व. लालरंग

रा. वृषभ स्वा. शुक्र वैश्य वर्ण च. खा. स्थि. स्व. श्वेत रङ्ग.

रा. मिथुन स्वा. बुध शुद्रवर्ण मा. जा. द्विस्व हरितरङ्ग.

रा. कर्क स्वामी चन्द्र विप्रवर्ण जलच. जा. चरस्व पाटलरंग.

रा. सिंह. स्वा. सू. क्षत्रियवर्ण स्थि. स्व. धूम्ररङ्ग. चतुष्पाद.



रा. मीन. स्वा. गु. विप्रवर्ण जलचरजा. द्विस्व. पीतरंग

पूर्व मानव पंचांगस्य गणितम् तत्कालीन सीकरनरेशाज्ञानुसारं पंडित मनीराम शर्मणा कृतं मुंबापुर्य्यां श्रीकृष्णसुतेन क्षेमराजेन स्वकीये श्रीवेंकटेश्वर (स्टीम्) मुद्रणागारे मुद्रितम् प्रकाशितञ्च।गणकगणानां प्रीत्यै पंचांगमिदम् रामटेकड़ी औद्योगिक क्षेत्र पुणे स्थित खेमराज श्रीकृष्णदासाधिकृत श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् मुद्रणालये मुद्रणालयाध्यक्षार्थ संजय बजाज महोदयेन मुद्रितम् प्रकाशितञ्च।



रा. कन्या स्वा. बुध मानवजा. वैश्यवर्ण द्विस्व. चित्रविचित्र रंग



रा. कुम्भ स्वा. श. शुद्रवर्ण मा. जा. स्थि. स्व शामरंग

रा. मकर स्वा. श. वैश्यवर्ण ज. जा. चरस्व. लालपीतरङ्ग.

राशि धन स्वा गुरू क्षत्रियवर्ण मा. जा. द्विस्व. पीतरंग.

रा. वृश्चिक. स्वा. भौम. विप्रवर्ण की. जा. स्थि. स्व. सौ. रं.

रा. तुला. स्वा. शु. मा. जा. शू. व. चरस्व कृष्ण रंग.